ॐ

श्री सर्वतोभद्र महार्चना

रचयिता

आचार्य वसुनन्दी मुनि

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रकाशक

निर्ग्रन्थ ग्रन्थमाला समिति

नोएडा (उत्तर प्रदेश)

SarvatoPooja 11 / 1

कृति	:	श्री सर्वतोभद्र महार्चना
मंगल आशीर्वाद	:	परम पूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानन्द जी मुनिराज
कृतिकार	:	आचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज
संपादन	:	मुनि श्री प्रज्ञानंद
संस्करण	:	प्रथम 1000 प्रतियाँ (ईस्वी सन् 2021)
मूल्य	:	सदुपयोग
प्राप्ति स्थान	:	निर्ग्रन्थ ग्रन्थमाला समिति ई. 102 केशर गार्डन, सै. 48 नोएडा - 201301 मो. 9971548889, 9867557668
अक्षरांकन	:	डिस्केन कॉम्प्यु आर्ट, आणंद
मुद्रक	:	भगवती मुद्रणालय, अहमदाबाद

दो शब्द

जैन दर्शन में व्यक्ति की नहीं बल्कि उसके व्यक्तित्व की पूजा की जाती है, जैन दर्शन ही हर आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति देखता है, भक्ति से भगवान बनने का सीधा मार्ग दिखाता है। सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में देव पूजा ही प्रथम सोपान है और सम्यग्दर्शन ही मोक्ष की प्रथम सीढ़ी है।

अभिषेक एवं पूजा की परम्परा अनादि निधन है, अष्टाह्निका पर्व में सौधर्मेन्द्र चतुर्निकाय के देवों के साथ नन्दीश्वर द्वीप में जाकर चारों दिशाओं में आठ दिन तक लगातार अभिषेक, पूजन करता है, भक्ति के प्रभाव से मिथ्यादृष्टि देव सम्यक्त्व को प्राप्त करते हैं।

तिलोयपण्णत्ती में आचार्य श्री यतिवृषभ स्वामी ने एवं त्रिलोकसार में सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य श्री नेमिचन्द्र स्वामी ने उल्लेखित किया है : जब देव उपपाद शैय्या से जन्म लेकर उठते हैं तो सम्यक्दृष्टि देव अवधिज्ञान से जानकर पूर्व जन्म में की गई जिन भक्ति का स्मरण करके आत्म कल्याण की भावना से अभिषेक, पूजन करते हैं जबकि मिथ्यादृष्टि देव जिनेन्द्र भगवान को कुल देवता मानकर पूजा करते हैं।

गृहस्थ जीवन में होने वाले दोषों से श्रावक चाहकर भी नहीं बच पाता है, उससे दोष/पाप होते रहते हैं; उनके निराकरण के लिए तीर्थंकरों ने अपनी देशना में श्रमण धर्म के साथ श्रावक धर्म का भी विवेचन किया है।

आचार्य पद्मनन्दी महाराज ने पद्मनन्दी पंचविंशतिका नामक ग्रन्थ में श्रावक के षट् कर्मों का वर्णन किया है –

देवपूजा गुरुपास्ति स्वाध्यायः संयमस्तपः ।
दानं चेति गृहस्थानां षट्कर्माणि दिने-दिने ॥

अर्थ - देवपूजा, गुरु की उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप और दान श्रावक के ये छह आवश्यक कर्त्तव्य हैं जिन्हें प्रत्येक गृहस्थ को आत्मा की विशुद्धि के लिए प्रतिदिन करना चाहिए।

इनमें से भी देवपूजा और दान का विशेष महत्व है, आचार्य भगवन् श्री कुंदकुंद स्वामी ने कहा भी है -

"दाणं पूया मुख्यं, सावय धम्मो"

पूजा किसी सांसारिक प्रलोभन से न की जाकर अपने मनुष्य जीवन के चरम ध्येय को पाने के उद्देश्य से की जाती है। निष्काम भावना से पूजन करने से पाप कर्मों का क्षय एवं पुण्य कर्मों का संचय होता है।

स्वामी कार्तिकेयजी कहते हैं कि आत्म कल्याण के लिए ही की गई पूजन संवर एवं निर्जरा का कारण बनती है।

हम सभी गुजरात वासियों के सातिशय पुण्योदय से प. पू. राष्ट्रसंत, सिद्धान्त चक्रवर्ती, क्षपकराज शिरोमणि, श्वेतपिच्छाचार्य श्री १०८ विद्यानन्दजी मुनिराज के परम प्रभावक शिष्य प. पू. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, वात्सल्य मूर्ति आचार्य श्री १०८ वसुनन्दीजी मुनिराज ससंघ (१६ पिच्छीधारी) का गुजरात प्रांत की पावन धरा पर दिनांक २२ जुलाई २०२१ को प्रथम बार मंगल पदार्पण हुआ और प. पू. आचार्य श्री विद्यासागर तपोवन तारंगाजी वालों को पू. आचार्यश्री का ईस्वी सन २०२१ का पावन वर्षायोग कराने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वर्षायोग में अनेक कार्यक्रम आचार्यश्री ससंघ के सान्निध्य में एवं उनके आशीर्वाद से सानंद सम्पन्न हुए, पू. आचार्यश्री की अमृतमयी वाणी से श्री धवलाजी भाग ६ एवं ७, श्री पूज्यपाद श्रावकाचार, द्रव्य संग्रह, मृत्यु महोत्सव, गोम्मटसार कर्मकाण्ड इत्यादि ग्रन्थों का धर्मोपदेश सुनकर लाभ प्राप्त हुआ। वर्षायोग में पू. आचार्य श्री की लेखनी से प्राकृत भाषा में नवीन कृतियों का सृजन हुआ और मात्र १५ दिन की अल्प अवधि में श्री श्री १००८ सर्वतोभद्र महार्चना की रचना हुई। पू. आचार्यश्री का वात्सल्य हमेशा सभी भव्यात्माओं को प्राप्त होता रहता है, आचार्यश्री का पूरा संघ अनुशासित और सरल स्वभावी है, हमको आचार्यश्री के संघ की सेवा करने का सौभाग्य मिला। हम अल्पज्ञ हैं, जाने-अनजाने में कोई अविनय हुई हो तो हम सबसे क्षमा चाहते हैं, इसी भावना के साथ...

इत्यलम्

दिनांक १५ नवम्बर २०२१

ब्रा.ब्र. सुनील भैया (गुना)
विद्यासागर तपोवन तारंगाजी

संपादकीय

नश्वर जगत में शाश्वत पथ दर्शायक 'आचार्य परमेष्ठी' मध्य दीपक सम स्वकल्याण के साथ पर कल्याण की भावना से अभियुक्त होते हैं और संप्रति काल में साक्षात् तीर्थंकर के समान जिनशासन के महान् रथ का प्रवर्तन करते हैं । आगम व लोकाचार के अनुसार उनकी प्रवृत्ति जिनशासन की प्रभावना, स्वहित एवं बहुजनों के हित स्वरूप होती है । आचार्य भक्ति में कहा भी है –

बहुजनहितकर चर्या - नभयाननघान्महानुभाव विधानान् ।

उक्त सूक्ति गाथा को चरितार्थ करने में प्रमुख परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, अक्षर शिल्पी, स्याद्वाद केसरी, निर्ग्रन्थ गौरव आचार्य भगवन् गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज जिनशासन व जैन संस्कृति के संवर्द्धन व संरक्षण हेतु अनेक (साधिक ३००) आगम ग्रंथों का लेखन, अनुवाद व संपादन करके श्रुत महोदधि में महासरिता स्वरूप अपनी विशुद्ध भावनाओं की विनयाञ्जलि समर्पित कर रहे हैं ।

परम पूज्य गुरुदेव की लेखनी से प्रसूत जैन साहित्य जैन वाङ्मय के प्रति उनकी सम्यक् आराधना का प्रतीक है । इस साहित्य से बाल, युवा, वृद्ध या सामान्य गृहस्थ ही नहीं विद्वत् जगत भी लाभान्वित हैं और अणुव्रती व महाव्रती भी इन ग्रंथों का अध्ययन-अध्यापन कर सम्यक् रत्नत्रय की आराधना कर रहे हैं । क्योंकि जहाँ बालबोध हेतु 'कलमपट्टीबुद्धिका' जैसी लघु कृति की रचना वहीं दूसरी ओर सिद्धान्त, चरणानुयोग, न्याय, नय, राजनैतिक, सामाजिक इत्यादि कृतियों के साथ साथ जिनागम की मूलभाषा प्राकृत भाषा में पैंतीस बृहद् प्राकृत ग्रंथों की रचना की है । हिंदी, संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी भाषाओं में साहित्य रचना के साथ ही सर्वमानव जगत के हितार्थ मीठे प्रवचन (भाग : १-६) व गुरुत्तं (भाग : १-१५) के रूप में अनेक प्रवचन साहित्य की निधि समाज को प्राप्त है । अपनी कृतियों में कविता काव्याञ्जलि आदि के साथ ही गुरुवरश्री ने अनेक पूजन विधानों की रचना करके श्रावकों को

SarvatoPooja 11 / 3

वाङ्मय

जिनभक्ति के लिए प्रेरित किया है । णमोकार महार्चना, नंदीश्वर महार्चना, सम्मेदशिखर विधान, कल्याण मंदिर विधान, श्री शांतिनाथ विधान आदि चौबीस तीर्थंकरों के विधान इत्यादि के साथ ही इस **'श्री सर्वतोभद्र महार्चना'** का परम पूज्य गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज ने अपनी विशुद्धप्रज्ञा व अनूठी जिनभक्ति से अभिसंचित होकर अल्प समय में ही केवली भगवन् श्री वरदत्त-सायरदत्त एवं वरंग आदि साढ़े तीन करोड़ महामुनिराजों की मोक्षस्थली सिद्धक्षेत्र तारंगाजी के सिद्धशिला व कोटिशिला जैसे सुर-नर पूज्य पर्वत शृंखलाओं की तलहटी में स्थित आचार्य विद्यासागर तपोवन में वर्षायोग के दौरान महारचना की ।

यूँ तो कोई व्यक्ति किसी ना किसी एक विद्या में पारंगत होता है और उसी क्षेत्र में उत्कर्ष को प्राप्त करता है किन्तु परम पूज्य गुरुदेव का विराट व्यक्तित्व समग्र विद्याओं का समन्वय है । जिसे देखकर महान-महान अध्येता भी विस्मित होकर भक्ति से नतमस्तक हो जाते हैं । गुरुवर श्री ने इस महार्चना की रचना में स्व के अंतरंग में उदीयमान परम विशुद्धि रूप सूर्य से प्रस्फुटित जिनभक्तिरूपी किरणों को सरल, सैद्धान्तिक, युक्ति, तर्क समन्वित, भक्तिरस व अलंकारों से परिपूर्ण, अभिबोधक नाना छंदों में संयोजित किया है । जिस प्रकार आचार्य भगवन् श्री पूज्यपाद स्वामीजी ने अर्हद्भक्ति में नाना छन्दों में क्रीड़ा की है उसी प्रकार गुरुवरश्री ने लगभग बानवें (९२) छन्दों में मनोहारी छन्दक्रीड़ा करते हुए इस महार्चना को रचा है ।

प्रस्तुत श्री सर्वतोभद्र महार्चना जिनशासन की सबसे बडी अर्चना है जिसमें कि त्रिलोक सम्बन्धित संपूर्ण नवदेवताओं की अर्चना की गई है । आचार्य भगवन्तों ने विभिन्न प्रकार की पूजाओं का निर्देश किया है –

प्रोक्ता पूजार्हतामिज्या सा चतुर्धा सदार्चनम् ।
चतुर्मुख महः कल्पद्रुमाश्चाष्टाह्निकोऽपि च ॥

(म.पु./३८/२६)

पूजा चार प्रकार की है सदार्चन (नित्यमह), चतुर्मुख (सर्वतोभद्र), कल्पद्रुम और आष्टाह्निक ।

'पूजा द्विप्रकारा द्रव्यपूजा भावपूजा चेति''

(भ.आ./वि./४७/१५९/२०)

पूजा के द्रव्यपूजा और भावपूजा ऐसे दो भेद हैं ।

णाम-ट्ठाण-दव्वे-खित्ते काले वियाणा भावे य ।
छव्विह पूया भणिया समासओ जिणवरिंदे हिं ।।

(वसुनंदि श्रावकाचार ३८१)

नाम, स्थापना, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा संक्षेप से छः प्रकार की पूजा जिनेन्द्रदेव ने कही है ।

पूजा च त्रिविधा प्रोक्ता नित्य नैमित्तिकी तथा ।
काम्या च गृहिभिः कार्या पाप प्रत्यूहवारिणी ।।

(सर्वो.श्लो.सं./पृ.१७४)

नित्या, नैमित्तिकी और काम्या के भेद से पूजा तीन प्रकार की कही गई है । यह पूजा पापजन्य विघ्नों को नष्ट करने वाली है अतः गृहस्थों के द्वारा करने योग्य है ।

नित्या चतुर्मुख्या च कल्पद्रुमाभिधानका ।
भवत्याष्टाह्निकी पूजा दिव्यध्वजेति पञ्चधा ।।

(सर्वो.श्लो.सं./पृ.१७४)

नित्यपूजा, चतुर्मुखपूजा, कल्पद्रुमपूजा, आष्टाह्निकीपूजा और दिव्यध्वज (इन्द्रध्वज) के भेद से जिनपूजा पाँच प्रकार की होती है ।

नित्यमह (सदार्चनपूजा)

तत्रनित्यमहो नाम शश्वाज्जिनग्रहं प्रति ।
स्वगृहान्नीयमानार्चा गंधपुष्पाक्षतादिका ।।

(म.पु./३८/२७)

प्रतिदिन अपने घर से गन्ध, पुष्प, अक्षत आदि ले जाकर जिनालय में श्री जिनेन्द्र की पूजा करना सदार्चन अर्थात् 'नित्यमह' कहलाता है ।

अथवा भक्तिपूर्वक अर्हंत देव की प्रतिमा और मंदिर का निर्माण कराना तथा दान पत्र लिखकर ग्राम, खेत आदि का दान देना भी सदार्चन कहलाता है ।।२८।।

इसके सिवाय अपनी शक्ति अनुसार नित्यदान देते हुए महामुनियों की जो पूजा की जाती है उसे भी नित्यमद् समझना चाहिये ।

SarvatoPooja 11 / 4

सर्वतोभद्र महार्चना -

महामुकुटबद्धैश्च क्रियामाणो महामहः ।
चतुर्मुखः स विज्ञेयः सर्वतोभद्र इत्यपि ।।

महामुकुटबद्ध राजाओं के द्वारा जो महायज्ञ किया जाता है, उसे चतुर्मुख यज्ञ जानना चाहिये, इसका दूसरा नाम 'सर्वतोभद्र' भी है ।

कल्पद्रुम महार्चना -

दत्वा किमिच्छिकं दानं सम्राड् भिर्यः प्रवर्त्यते ।
कल्पद्रुममहः सोऽयं जगदाशाप्रपूरणः ।।

(म.पु./३८/३१)

जो चक्रवर्तियों के द्वारा किमिच्छिक दान देकर किया जाता है और जिसमें जगत् के सर्व जीवों की आशाएँ पूर्ण की जाती हैं, वह 'कल्पद्रुम' नाम का यज्ञ कहलाता है ।

अष्टाह्निका एवं इन्द्रध्वज महार्चना -

अष्टाह्निको महः सार्वजनिकोरूढ एव सः ।
महानैन्द्रध्वजोऽन्यस्तु सुरराजैः कृतो महः ।।

(म.पु./३८/३२)

चौथा अष्टाह्निक यज्ञ है जिसे सभी लोग करते हैं । और जो जगत में प्रसिद्ध है । इनके अतिरिक्त एक ऐन्द्रध्वज (इन्द्रध्वज) महायज्ञ भी है जिसे इन्द्र किया करता है ।

अथवा नन्दीश्वर पर्व में इन्द्रों द्वारा नंदीश्वरद्वीप में आठ दिन तक पूजा की जाती है । वह अष्टाह्निक पूजा एवं अकृत्रिम चैत्यालयों में अथवा पंचकल्याणकों में देवों द्वारा जो पूजन की जाती है वह इन्द्रध्वज पूजा है ।

उक्त प्रकार की पूजा में से 'सर्वतोभद्र' नाम की महार्चना का स्वरूप बृहद् है । जिसमें अधोलोक के ७,७२,००,०००, मध्यलोक के ४५८ एवं ऊर्ध्वलोक के ८४,९७,०२३ अकृत्रिम चैत्यालयों की पूजन एवं भवनवासियों के भवनों, व्यन्तरों के भवन-भवनपुर व आवासों, ज्योतिष देवों के विमानों, सौधर्मादि कल्पवासियों के कल्पों में शाश्वत विराजित जिनबिम्बों, चैत्यवृक्षों आदि की अर्चना तथा नवग्रैवेयक, नवअनुदिश एवं पंचअनुत्तरों

के जिनालयों की अर्चना साथ ही समस्त नवदेवताओं की आराधना की जाती है । इसका आशय यह है कि इस महार्चना में समग्र का समावेश है ।

प्रस्तुत विधान परम पूज्य आचार्य गुरुवरश्री की विशुद्धि व भक्ति का ही प्रतिफल है जो कि मात्र १५ दिन में ही इस महोदधि स्वरूप महार्चना की रचना हुई है । साधिक ९२ मनोहारी छन्दों में निबद्ध इस महार्चना में ८४ पूजायें, १९०२ अर्घ्य, ८६ पूर्णार्घ्य हैं । विधान में चैत्य-चैत्यालयों की भक्ति के साथ ही सिद्धान्त भी दृष्टिगोचर होता है । आचार्य भगवन् श्री नेमिचन्द्राचार्य द्वारा विरचित त्रिलोकसार ग्रंथराज का एवं कतिपय श्रीमत् यतिवृषभाचार्य विरचित तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ का आधार लेकर महार्चना का लेखन सम्पन्न हुआ है ।

प्रस्तुत विधान कृति में प्रारंभ में आवश्यकरूप की जाने वाली सिद्धभक्ति, चैत्यभक्ति, पंचमहागुरुभक्ति इत्यादि भक्तियों को लिपिबद्ध किया गया है । विशेषता यह है कि भक्तियों का उद्भव परम पूज्य आचार्य भगवन् श्री वसुनंदीजी मुनिराज की लेखनी से ही हुआ है जो कि प्राकृत भाषा में और आर्यादि छंदों में निबद्ध होते हुए भक्ति रस से परिपूर्ण हैं ।

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस महार्चना को पढ़कर श्रद्धालुगण भक्तिरस में अभिषिक्त हो अपार आनंद का अनुभव करेंगे, जो आनंद सातिशय पुण्य का अर्जन कराने में समर्थ है और परम्परा से कर्मक्षय का भी कारण है । क्योंकि विविध छन्दों में निबद्ध काव्य रचना में गांभीर्य व अर्थपूर्ण भक्ति का ऐसा समावेश है जिसे पढ़कर भक्त भगवान से एकीभावमय हो जाता है ।

कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य भगवन् श्री वीरसेनस्वामीजी ने जिनभक्ति का माहात्म्य बताते हुए लिखा है -

विघ्नाप्रणश्यन्ति भयं न जातु, न दुष्टदेवा परिलंघयन्ति ।
अर्थान्यथेष्टांश्चसदा लभन्ते, जिनोत्तमानां परिकीर्तनेन ॥

जिनेन्द्रदेव का कीर्तन (स्तुति, भक्ति, अर्चना आदि) करने से समस्त विघ्नों का नाश होता है, किसी भी प्रकार का भय नहीं होता, दुष्ट देव जिनभक्ति का उल्लंघन नहीं करते और समस्त इच्छित पदार्थों की प्राप्ति सहज ही हो जाती है ।

परम पूज्य गुरुदेव भी कई बार जिनभक्ति-पूजा-आराधना की महिमा दर्शाते हुए कहते हैं ।

जिनपूजा सम पुण्य ना दूजा, कथित तत्त्व आगम वरणी ।
कोटि कार्य छोड़ के हमको, जिनवर की पूजन करनी ॥

अनेक कार्य करने से जिनपूजा सिद्ध नहीं होती किन्तु मात्र एक जिनपूजा करने से हमारे अनेक कार्य सिद्ध हो जाते हैं ।

भव्य जीवों के कल्याणार्थ परमपूज्य आचार्य भगवन् के द्वारा इस विधान को लिखाने का श्रेय विद्यासागर तपोवन तारंगा के ट्रस्टी श्रीमान किरीटभाई दोशी, मुंबई (महाराष्ट्र) एवं श्रीमान सुनीलभाई शाह, गांधीनगर (गुजरात) को प्राप्त हो तो कोई अतिशयोक्ति नहीं क्योंकि क्षेत्र पर सर्वप्रथम ता. ५-११-२०२१ से १४-११-२०२१ तक होने जा रही सर्वतोभद्र महार्चना के आयोजन की प्रार्थना के उपरान्त उक्त महानुभावों ने पूज्य गुरुवरश्री से भावभीनी प्रार्थना करते हुए निवेदन किया कि– 'आचार्यश्री समय तो अल्प है फिर भी हमारा निवेदन है कि यदि सर्वतोभद्र विधान आपके द्वारा रचित प्राप्त हो तो हमें अत्यंत आनंद की प्राप्ति होगी, और अनेक श्रावकगण इससे लाभान्वित होंगे । कृपया हमारा निवेदन स्वीकार कर लीजिए । आपकी महती अनुकंपा हम सभी पर होगी ।'

इस निवेदन को पूज्य गुरुवर ने सहर्ष और सहज ही स्वीकार करते हुए कहा - "देखते हैं, आप भी भावना भाइये, हम प्रयास करते हैं ।' परिणाम यह हुआ कि लगभग १५ दिनों में बृहद् महार्चना का लेखन पूर्ण हुआ व परम पूज्य गुरुदेव की जन्म तिथि अश्विन कृष्ण अमावस्या को प्रिन्टिंग के लिये भेज दिया गया ।

यह हमारा परम सौभाग्य है कि इस महार्चना के संपादन का कार्य हमें प्राप्त हुआ है । इस विधान के सम्पादन में मुझ अल्पज्ञ के द्वारा जो त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन उसे संशोधित करके पढ़ें और हंसवत् गुणग्राही दृष्टि से अच्छाइयों को परम पूज्य गुरुवरश्री का आशीर्वाद समझकर ग्रहण करें । इस विधान की पाण्डुलिपि तैयार करने में संघस्थ समस्त त्यागी-व्रतियों का प्रशंसनीय सहयोग प्राप्त हुआ तथा प्रकाशन व

मुद्रण में बा.ब्र.सुनील भैयाजी (गुना), श्री सुरेन्द्रपालजी जैन (प्रधान-शंकर नगर दिल्ली), श्री संजयजी बाकलीवाल (सूरत), श्री सुभाषभाई एवं श्री सुनीलभाई शाह (नि. तलोद, प्र. गांधीनगर) इत्यादि महानुभावों का प्रत्यक्ष व परोक्ष सहयोग प्राप्त हुआ है उन सभी को परम पूज्य आचार्य गुरुवर का मंगलमय 'शुभाशीष' ।

हम स्वयं को गौरवशाली मानते हैं व परम सौभाग्यशाली समझते हैं कि संयम प्रदाता, बोधिमार्ग प्रदर्शक ऐसे महान् आचार्य गुरुवर के पावन चरण सान्निध्य में रहकर अध्ययन करने एवं उनकी लेखनी से प्रसूत आगम संस्तुत ग्रंथ हमें प्राप्त हो रहे हैं । जैन वाङ्मयरूपी महोदधि के संवर्धक पूर्णेन्दु सदृश परम पूज्य आचार्यश्री वसुनंदीजी मुनिराज का पावन मंगलमय आशीर्वाद समस्त मानवजाति को युग-युगान्तर तक प्राप्त होता रहे और उनके आशीष की छत्रछाया में भव्य जीव संयम से पुष्पित, पल्लवित एवं फलित होते रहें । इसी पुण्य भावना के साथ परम पूज्य गुरुवर के श्री चरण युगल में अनन्तशः नमोस्तु ! नमोस्तु ! नमोस्तु !

इति शुभम् भूयात्

जैनं जयतु शासनम् | विश्व कल्याण कारकम्

शुभ मिति अश्विन सुदी षष्ठी
वीर निर्वाण संवत् २५४८
सोमवार ११ अक्टूबर २०२१
श्री सिद्धक्षेत्र तारंगाजी
(गुजरात)

ॐ ह्रीं नमः
गुरु चरणाम्बुज चंचरीक
मुनि प्रज्ञानंद

SarvatoPooja 11 / 6

विधान में प्रयुक्त छन्द विवरण

- युगल मुनि शिवानंद, प्रशमानंद

काव्यशास्त्रविनोदेन, कालं गच्छति धीमताम् ।
व्यसनेन च मूर्खाणां, निद्रया कलहेन वा ॥

बुद्धिमान् एवं विद्वान् मनुष्य अपना समय काव्य शास्त्र के पठन-पाठन में लगाते हैं अर्थात् व्यतीत करते हैं । जबकि मूर्ख मनुष्य अपना समय सोने में, व्यसन में और कलह में लगाते हैं ।

व्यवस्थित शब्दों का समूह रस, अलंकार, शब्द सौष्ठव से युक्त सारभूत हो और उन्हें किसी लयबद्ध तरीके से गाया जा सके वह काव्य या छंद कहलाता है । जो कि श्रोता व पाठक दोनों के चित्त को विशुद्धि व आनन्द से परिपूरित करने वाला होता है । जिस काव्य में जिस रस की प्रधानता होती है वह काव्य श्रोता के चित्त में उस प्रकार के रस को समुत्पन्न करने में समर्थ होता है । विषय कषाय में आसक्त निमग्न बहुधा संसारी प्राणी एक बार भक्ति, वैराग्य वा शांत रस से पराङ्मुख दृष्टिगोचर होते हैं । जो प्राणी एक बार भक्ति, वैराग्य वा शांत रस में निमग्न होकर जब हितार्थ रसास्वाद करने लगता है तब उसे सारा संसार सारहीन व व्यर्थ सा प्रतीत होता है । इसके साथ-साथ भक्ति धारा में अविरत गतिशील प्राणी चित्त में विद्यमान पाप मल को प्रक्षालित करने में समर्थ होते हैं । साथ ही सातिशय पुण्य का बंध तो होता ही है । आत्मानुशासन से विहीन जीवन असभ्य वा पशुतुल्य माना जाता है । जीवन जीने के भी कुछ कायदे-कानून होते हैं । दो तटों के मध्य प्रवाहवान सरिता स्वकीय लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ होती है ।

काव्यों की क्या मर्यादा है, किस रस के साथ कौन से काव्य की रचना करनी चाहिए, किस छंद में कितने अक्षर, मात्रादि होते हैं, कहाँ पर यति होना चाहिए, यह सब जानने की जिज्ञासा एक काव्य प्रेमी में नैसर्गिक होती है । प्रस्तुत **'श्री सर्वतोभद्र महार्चना'** में प्रयुक्त काव्यों का लक्षण, स्वरूप तथा अन्य विशेषताओं को संक्षेप में ही प्रस्तुत किया है ।

विस्तार से जानने के इच्छुक महानुभाव लेखक के **'कव्वमाला'** ग्रंथ का अध्ययन करें तो अधिक श्रेयस्कर होगा ।

१. **आचलीबद्ध चौपाई :-** यह १५-१५ मात्राओं का छंद है । इसके साथ द्विपदी दुम भी होती है ।

२. **हरिगीतिका :-** यह २८ मात्रा का होता है । यति १६, १२ पर होती है । अन्त में लघु गुरु या नगण आवश्यक है । इसकी गति ठीक रखने के लिए प्रत्येक चरण की पाँचवी, बारहवीं, उन्नीसवीं और छब्बीसवीं मात्राओं को लघु रखना चाहिए ।

३. **चउबोला :-** यह बहुत ही मनहारी व सरल छंद है । इसमें ३० मात्राएँ होती हैं । यति १६, १४ पर । इस छंद को कहीं दो व कहीं चार पंक्तियों का माना है ।

४. **त्रिभंगी :-** इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं । प्रत्येक चरण के आदि में जगण (।ऽ।) वर्जित है । १०, ८, ८, ६ पर यति । अन्त में गुरु वर्ण का होना आवश्यक है ।

५. **दोहा :-** सर्व प्रसिद्ध इस दोहा छंद में चार चरण होते हैं । इसके प्रथम-तृतीय चरणों में १३-१३ और द्वितीय-चतुर्थ चरणों में ११-११ मात्राएँ होती हैं ।

६. **सवैया/रूपक सवैया :-** इसमें ३१ मात्राएँ होती हैं । १६, १५ पर यति होती है ।

७. **नरेंद्र अथवा जोगीरासा :-** इसके प्रत्येक चरण में २८ मात्राएँ होती हैं । तथा १६, १२ पर यति होती है ।

८. **अडिल्ल :-** इसके प्रत्येक चरण में २१-२१ मात्राएँ होती हैं ।

९. **विष्णुपद :-** इसके प्रत्येक चरण में २६ मात्राएँ होती हैं । १६, १० पर यति होती है ।

१०. **नलिन :-** यह २६ मात्राओं का छंद है । १४, १२ पर यति होती है ।

११. **रोला :-** इसके प्रत्येक चरण में २३ मात्राएँ होती हैं । ११, १२ पर यति । कहीं कहीं इस छंद की २४ मात्राएँ भी स्वीकार की गई हैं ।

SarvatoPooja 11 / 7

१२. **कुमुद :-** इस छंद में १०-१० मात्रा पर यति है । प्रत्येक चरण के अंत में लघु-गुरु आवश्यक है ।

१३. **भुजंग प्रयात :-** जिस छंद के प्रत्येक चरण में चारों यगण (।ऽऽ) हों उसे भुजंग प्रयात कहते हैं । वर्ण १२ होते हैं ।

१४. **शंभू :-** इसके प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं । ८, ८, १६ पर यति होती है ।

१५. **पादाकुलक :-** इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में १६-१६ मात्राएँ होती हैं । आदि में द्विकल अनिवार्य है ।

१६. **मुकुलोत्तर :-** इस छंद के प्रत्येक चरण में १६-१६ मात्राएँ होती हैं । एवं इसके साथ द्विपदी दुम भी होती है ।

१७. **विद्युनमाला :-** इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में ८ वर्ण होते हैं । विशेषता यह है कि सभी वर्ण गुरु (ऽ) होते हैं ।

१८. **कुण्डलिया :-** यह छन्द दोहा + रोला से बनता है । कुल मात्राएँ १४४ होती हैं । विशेषता यह है कि दोहे का अंतिम चरण, रोला का आदि चरण बनता है तथा रोला के अंतिम चरण (छंदान्त) में प्रायः वही शब्द आने चाहिए जो छन्द के प्रारंभ (दोहे की आदि) में आते हैं ।

१९. **चामर :-** इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में १५ वर्ण होते हैं । क्रमशः (रगण, जगण, रगण, जगण, रगण) होते हैं ।

२०. **सारंगी अथवा चित्रा छंद :-** जिस छन्द के प्रत्येक चरण में पाँच-पाँच मगण हों उसे सारंगी या चित्रा छंद कहते हैं ।

२१. **सोरठा :-** यह दोहे का उलटा होता है । इसके प्रथम-तृतीय चरणों में ११-११ तथा द्वितीय-चतुर्थ चरणों में १३-१३ मात्राएँ होती हैं ।

२२. **चौपाई :-** इसके प्रत्येक चरण में १६-१६ मात्राएँ होती हैं । चरणान्त में जगण (।ऽ।) या तगण (ऽऽ।) कदापि न रखना चाहिए और दो गुरु ही होने चाहिए ।

२३. **पायत्ता :-** इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में १४-१४ मात्राएँ होती हैं । व अंत में दो गुरु रखने चाहिए ।

२४. **पद्धरी :-** इसके प्रत्येक चरण में १६-१६ मात्राएँ होती है । अन्त में लघु होना आवश्यक है ।

२५. **विधाता** :- यह २८ मात्रा का छंद है । १४-१४ पर यति होती है ।

२६. **गीतिका** :- यह एक मात्रिक छंद है । इसके चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में १४ और १२ यति से २६ मात्राएँ होती हैं । अन्त में क्रमशः लघु-गुरु होता है ।

२७. **मद अवलिप्त कपोल** :- इसके प्रत्येक चरण में २४ मात्राएँ होती हैं । ११-१३ पर यति होती है ।

२८. **द्रुतविलंबित अथवा सुंदरी छंद** :- यह वर्णिक छन्द है । इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में १२ वर्ण एक नगण, दो भगण तथा एक रगण (न. र. भ. र.) होते हैं ।

२९. **मोदक** :- जिस छंद के प्रत्येक चरण में १२ वर्ण एवं सर्व भगण हों उसे मोदक छंद कहते हैं ।

३०. **चन्द्रोदय** :- इस छंद के प्रथम व तृतीय चरण में १७-१७ मात्रा एवं द्वितीय व चतुर्थ चरण में १८-१८ मात्राएँ होती हैं ।

३१. **वसंततिलका** :- यह वर्णिक छंद है । इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में १४ वर्ण एक तगण, एक भगण, दो जगण व दो गुरु (त., भ., २ ज., २ गु.) होते हैं ।

३२. **हुल्लास** :- यह चौपाई और त्रिभंगी के योग से बनता है । कुल मात्राएँ १९२ होती हैं ।

३३. **इन्द्रवज्रा** :- यह वर्णिक छंद है । इसमें ११ वर्ण दो तगण, एक जगण व दो गुरु (२ त., ज., २ गु.) होते हैं ।

३४. **नाराच** :- यह वर्णिक छंद है । इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में १६ वर्ण एक जगण, एक रगण, एक जगण, एक रगण, एक जगण व एक गुरु (ज., र., ज., र., ज., गु.) होता है ।

३५. **मोतियदाम/मोतीदाम** :- जिस छन्द के प्रत्येक चरण में चार-चार जगण हों उसे मोतीदाम छन्द कहते हैं ।

३६. **सुगीतिका** :- यह २८ मात्रा का होता है । इसमें चार चरण होते हैं व चारों चरणों के आदि में सगण होता है ।

३७. **कुसुमविचित्रा** :- यह वर्णिक छंद है । इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में १२ वर्ण एक नगण, एक यगण, एक नगण, एक यगण (न., य., न., य.) होते हैं ।

SarvatoPooja 11 / 8

३८. **स्वागत** :- यह वर्णिक छंद है । इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में ११ वर्ण एक रगण, एक नगण, एक भगण व दो गुरु (र., न., भ., २ गु.) होते हैं ।

३९. **कवित्त** :- इसमें ३२ मात्राएँ होती हैं । १४-१८ पर यति होती है ।

४०. **चक्र** :- यह वर्णिक छंद है । इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में १४ वर्ण एक भगण, तीन नगण, एक लघु, एक गुरु (भ., न., ल., गु.) होते हैं ।

४१. **लोलतरंग** :- यह वर्णिक छंद है । इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में ११ वर्ण तीन भगण, दो गुरु (३ भ., २ गु.) होते हैं ।

४२. **लक्ष्मीधरा** :- यह वर्णिक छंद है । इसके प्रत्येक चरण में चार-चार रगण होते हैं ।

४३. **क्रीड़ा** :- यह वर्णिक छंद है । इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में ८ वर्ण एक यगण, एक रगण, दो गुरु (य., र., २ गु.) होते हैं ।

४४. **शुद्ध गीता** :- यह २८ मात्रा का छंद है । अन्त में दो गुरु या मगण आवश्यक है ।

४५. **मृदुल/मोटन** :- यह वर्णिक छंद है । इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में १० वर्ण तीन भगण, एक गुरु (३भ., गु.) होते हैं ।

४६. **मनोरमा** :- यह वर्णिक छंद है । इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में १० वर्ण एक नगण, एक रगण, एक जगण, एक गुरु (न., र., ज., गु.) होता है ।

४७. **भुजंगी** :- यह वर्णिक छंद है । इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में ११ वर्ण तीन यगण, लघु, गुरु (३ य., ल., गु.) होते हैं ।

४८. **द्रुतमध्यक** :- इसमें चार चरण होते हैं । प्रथम-तृतीय चरण में ११ तथा द्वितीय-चतुर्थ चरण में १२ वर्ण होते हैं ।

४९. **त्रोटक** :- इस छन्द में चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में चार-चार सगण (।।ऽ) होते हैं ।

५०. **तामरस** :- यह वर्णिक छंद है । प्रत्येक चरण में १२ वर्ण एक नगण, दो जगण, एक यगण (न., २ ज., य.) होते हैं ।

५१. **नील** :- इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में १६ वर्ण पाँच भगण व एक गुरु (५ भ., गु.) होता है ।

५२. **प्रियंवदा** :- इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में १२ वर्ण एक नगण, एक भगण, एक जगण, एक रगण (न., भ., ज., र.) होता है ।

५३. **प्रमिताक्षर** :- इसके प्रत्येक चरण में १२ वर्ण एक सगण, एक जगण, दो सगण, (स., ज., २ स.) होते हैं ।

५४. **प्रमानिका** :- इसके प्रत्येक चरण में ८ वर्ण एक जगण, एक रगण, एक लघु, एक गुरु (ज., र., लघु, गुरु) होता है ।

५५. **रथोद्धता** :- इसके प्रत्येक चरण में ११ वर्ण एक रगण, एक नगण, एक रगण, एक लघु व एक गुरु (र., न., र., ल., गु.) होते हैं ।

५६. **विदित** :- इसके प्रथम व तृतीय चरण में १३ मात्रा एवं द्वितीय व चतुर्थ चरण में १० मात्राएँ होती हैं ।

५७. **उपेन्द्रवज्रा** :- इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में ११ वर्ण एक जगण, एक तगण, एक जगण व दो गुरु (ज., त., ज., २ गु.) होते हैं ।

५८. **शार्दूलविक्रीडित** :- इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में १९ वर्ण एक मगण, एक सगण, एक जगण, एक सगण, दो तगण, एक गुरु (म., स., ज., स., २ त., गु.) होते हैं ।

५९. **तरलनयन** :- इस छंद के प्रत्येक चरण में १२-१२ वर्ण होते हैं एवं चार नगण अर्थात् सभी वर्ण लघु ही होते हैं ।

६०. **स्रग्धरा** :- इस छंद के प्रत्येक चरण में २१-२१ वर्ण एक मगण, एक रगण, एक भगण, एक नगण व तीन यगण (म., र., भ., न., ३ य.) होते हैं ।

६१. **शिखरिणी** :- इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में १७-१७ वर्ण होते हैं । एक यगण, एक भगण, एक नगण, एक सगण, एक लघु व एक गुरु (य., भ., न., स., ल., गु.) होते हैं । प्रत्येक चरण में ११ मात्रा के बाद यति आती है ।

६२. **हरिणी** :- इस छंद में चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में १७-

SarvatoPooja 11 / 9

१७ वर्ण एक नगण, एक सगण, एक मगण, एक रगण, एक सगण व एक लघु, एक गुरु (न., स., म., र., स., लघु, गुरु) होते हैं । ६-४-७ वर्ण पर यति होती है ।

६३. **मंदाक्रांता** :- इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में १७-१७ वर्ण होते हैं । उसमें एक मगण, एक भगण, एक नगण, दो तगण, व दो गुरु (म., भ., न., २ त., २ गुरु) होते हैं ।

६४. **पृथ्वी** :- इस छंद में चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में १७-१७ वर्ण होते हैं । उसमें एक जगण, एक सगण, एक जगण, एक सगण, एक यगण व अंत में एक लघु व गुरु (ज., स., ज., स., य., लघु-गुरु) होते हैं ।

६५. **किरीट** :- इस छंद में चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में २४-२४ वर्ण होते हैं । व सर्व ८ भगण होते हैं ।

६६. **धरा** :- इस छंद में प्रत्येक चरण में ८ वर्ण होते हैं । उसमें एक तगण, एक मगण व लघु-गुरु (त., म., लघु-गुरु) होते हैं ।

६७. **द्रुमिल** :- इस छंद में प्रत्येक चरण में २४ वर्ण होते हैं । इसमें आठों ही सगण (।।ऽ) होते हैं ।

६८. **मैनावली** :- इस छंद में चारों ही चरणों में चार-चार तगण होते हैं ।

६९. **हाकलिका** :- इसके प्रत्येक चरण में १४-१४ मात्राएँ और १२-१२ वर्ण होते हैं ।

७०. **षट्पद** :- यह दो छंदों के योग से बनता है । प्रथम मदअवलिप्त कपोल के २४ मात्रा वाले चार चरण और द्वितीय दोहा इस प्रकार कुल १४४ मात्रा का षट्पद होता है ।

७१. **मदिरा** :- इस छंद में चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में २२ वर्ण होते हैं । उनमें सात भगण व एक गुरु (७ भ. + १ गु.) होता है ।

७२. **शालिनी** :- इस छंद के चार चरण में प्रत्येक में ११-११ वर्ण होते हैं । जिसमें एक मगण, दो तगण, दो गुरु (म., २ त., २ गु.) होते हैं ।

७३. **अनंगशेखर** :- इस छंद में ३२ वर्ण होते हैं । प्रत्येक वर्ण क्रम से एक लघु व एक गुरु होता है ।

७४. **प्रभव** :- इस छंद में चार चरण होते हैं । प्रथम व तृतीय चरण में १२-१२ मात्राएँ एवं द्वितीय व चतुर्थ चरण में १४-१४ मात्राएँ होती हैं ।

७५. **चण्डी** :- इस छंद में चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में ११ वर्ण एक रगण, एक नगण, एक भगण, दो गुरु (र., न., भ., २ गु.) होते हैं ।

७६. **साखती** :- इस छंद के प्रत्येक चरण में १० वर्ण तीन भगण व एक गुरु होता है ।

७७. **मनहरन** :- यह ३१ वर्णों का छंद है । इसमें १६-१५ पर यति होती है । गुरु, लघु का कोई नियम नहीं है ।

७८. **मत्ता** :- इस छंद के चारों चरणों में १०-१० वर्ण होते हैं । उसमें एक मगण, एक भगण, एक सगण व एक गुरु होता है ।

७९. **उभयलाघव** :- इस छंद के प्रत्येक चरण में १६-१६ मात्राएँ होती हैं व अंत में दो लघु अनिवार्य हैं ।

८०. **अशोक पुष्पमंजरी** :- इस छंद में ३१ वर्ण होते हैं । प्रत्येक वर्ण क्रम से एक गुरु व एक लघु होता है ।

८१. **रूपमाला** :- यह २४ मात्रा का छंद है । इसके आदि में रगण (ऽ।ऽ) और अंत में एक गुरु तथा लघु होता है । १४, १० पर यति होती है ।

८२. **शुभ गीत** :- इस छंद में २७ मात्राएँ होती हैं । यति १५, १२ पर होती है ।

८३. **श्रीनंदी छंद** :- यह छंद अत्यंत माधुर्य को लिए है । इसके प्रत्येक चरण में १९-१९ मात्राएँ होती हैं ।

८४. **हरिनी** :- इसमें चार चरण होते हैं । प्रत्येक चरण में ११ वर्ण तीन जगण, एक लघु व एक गुरु (३ ज., ल., गु.) होता है ।

८५. **चंद्रवर्त्म** :- इस छंद के प्रत्येक चरण में १२ वर्ण एक रगण, एक नगण, एक भगण, एक सगण (र., न., भ., स.) होते हैं ।

८६. **सार छंद** :- इस छंद में २३ मात्राएँ होती हैं । यति १३, १० मात्रा पर होती है ।

SarvatoPooja 11 / 10

८७. **घत्ता छंद** - इस छंद में एक पद में ३२ मात्राएँ होती हैं । १०, ८, ८, ६ पर यति होती है ।

८८. **राग-टप्पा**

८९. **शेर चाल**

९०. **मराठी चाल**

९१. **नंदीश्वर चाल**

९२. **श्री सिद्धचक्र पाठ चाल**

परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्यश्री वसुनन्दीजी मुनिराज द्वारा इस विधान में ९२ छंद प्रयुक्त हुए हैं । यद्यपि मात्र १५ दिनों के अन्तर्गत लिखे गए इस विधान में विभिन्न छंदों का प्रयोग अत्यन्त विस्मयकारी है । प्रथमतः इतने बृहद् विधान की रचना जिसमें 'त्रिलोकसार' तथा 'तिलोयपण्णत्ति' जैसे ग्रन्थों का सार है । और पुनः छंदों के अनुसार उन्हें ढालना, यथार्थ में यह पूज्य गुरुदेव की तीव्र अद्‌भुत मेधा का परिचायक है ।

विधान में प्रयुक्त छंदों का यहाँ लक्षण कहा गया जिन्हें पढ़कर के भी एक सुखद अनुभूति होती है । काव्य अपनी स्वकीय विद्या से जब पढ़ा जाता है तभी उसका परिपूर्ण सौंदर्य प्रकट होता है । जिस प्रकार कोई भी युवती अव्यवस्थित वस्त्र या शोभा को प्राप्त नहीं होती उसी प्रकार यथेष्ठ चाल के बिना बोला गया छंद चित्त में आनंदोत्पन्न करने में समर्थ नहीं होता । तथा वह व्यक्ति शिष्ट व सभ्य व्यक्तियों की सभा में हास-परिहास का पात्र बनकर रह जाता है । इससे उसके मन में एक हीन भावना भी जाग्रत हो सकती है । अतः यहाँ छंदों का संक्षिप्त विवरण किया गया है, इसे पढ़ें व आगे बढ़ें । अज्ञानतावश वा प्रमादवश यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन संशोधन कर यथेष्ट अर्थ को ग्रहण करें ।

अकृत्रिम चैत्यालय
(संक्षिप्त विवरण)

- आर्यिका वर्द्धस्वनंदनी

भवणव्विंतर जोइस - विमाणणरतिरियलोयजिणभवणे।
सव्वामरिंदणरवइ - संपूजिय वंदिए वंदे ॥२॥

- त्रिलोकसार

भवनवासी, व्यंतर, ज्योतिषी, विमानवासी, मनुष्यलोक और तिर्यग्लोक में देवेंद्र एवं चक्रवर्ती से पूजित और वंदित जितने जिनमंदिर हैं, उन्हें मैं नमस्कार करता हूँ ।

मध्यलोक, ऊर्ध्वलोक व अधोलोक, इस प्रकार यह लोक तीन भेद रूप कहा जाता है । तीनों ही लोकों में अकृत्रिम चैत्य व चैत्यालय विद्यमान हैं । सर्वप्रथम मध्यलोक के चैत्यालयों का यहाँ विवरण करते हैं ।

णमह णरलोयजिणघर, चत्तारि सयाणि दोविहीणाणि ।
बावण्णं चउ चउरो, णंदीसर कुंडले रुचगे ॥५६१॥ त्रि.सा.

मनुष्य लोक संबंधित दो कम चार सौ (३९८) जिनमंदिरों को तथा तिर्यग्लोक संबंधी नंदीश्वर द्वीप कुण्डलगिरि और रुचकगिरि में क्रम से स्थित बावन, चार और चार मंदिरों को नमस्कार हो ।

मध्य लोक का प्रथम द्वीप जंबूद्वीप प्रसिद्ध है । उसमें ७८ जिन-चैत्यालय सुशोभित हैं । सर्वप्रथम सुदर्शन मेरु चार वनों में सोलह जिनालय हैं । हिमवन्, महाहिमवन्, निषध, नील, रुक्मि व शिखरिणी इन छः कुलाचलों पर छः जिनमंदिर विराजमान हैं । भरतक्षेत्र में एक, ऐरावत क्षेत्र में एक एवं विदेह क्षेत्र में ३२ विजयार्द्ध पर्वत हैं । इस प्रकार कुल चौंतीस विजयार्द्ध पर्वतों पर चौंतीस शाश्वत जिनालय हैं । विदेह क्षेत्र में विभाग करने वाले सोलह वक्षार पर्वतों पर सोलह जिन चैत्यालय हैं । चार गजदंत पर्वतों पर चार जिन चैत्यालय हैं । उत्तम भोगभूमियों देव कुरु व उत्तर कुरु में एक-एक वृक्ष पर स्थित एक-एक अर्थात् दो जिनालय हैं ।

इसी प्रकार धातकी खंड में जानना चाहिए । विशेषता यह है कि वहाँ रचना दूनी होने से अर्थात् मेरु कुलाचलादि दुगुने होने से चैत्यालयों

SarvatoPooja 11 / 11

की संख्या भी दूनी होगी । अर्थात् ७८ × २ = १५६ जिन चैत्यालय । यहाँ धातकी खंड को दो भागों में विभाजित करने वाले दो इष्वाकार जिनालय हैं । इन प्रत्येक पर एक-एक कुल दो जिन चैत्यालय स्थित हैं । इस प्रकार धातकी खंड में कुल १६८ अकृत्रिम जिन चैत्यालय हैं । पुष्करार्द्ध की भी इसी सदृश रचना होने से वहाँ भी १५८ अकृत्रिम जिन चैत्यालय जानने चाहिए । पुनः मानुषोत्तर पर्वत पर चार जिनालय हैं ।

अष्टम नंदीश्वर द्वीप में एक दिशा में एक अंजनगिरि, चार दधिमुख व आठ रतिकर हैं । इन पर अकृत्रिम जिनालय हैं । इस प्रकार एक दिशा में तेरह जिनालय हैं । तब चारों दिशाओं में बावन जिन चैत्यालय देवों द्वारा सदैव वंदनीय है । ग्यारहवें कुण्डलवर द्वीप को दो भागों में विभाजित करने वाले वलयाकार रूप स्थित कुंडलागिरि के चारों दिशाओं में एक-एक, इस प्रकार चार जिनालय हैं । इसी प्रकार तेरहवें रुचकवर द्वीप को दो भागों में विभाजित करने वाले वलयाकार रुचकगिरि पर चारों दिशाओं में एक-एक अर्थात् चार जिन चैत्यालय हैं । इस प्रकार कुल चैत्यालय = जंबूद्वीप (७८) + धातकीखंड (१५८) + पुष्करार्द्ध द्वीप (१५८) + मानुषोत्तर गिरि (४) + नंदीश्वर द्वीप (५२) + कुंडलगिरि (४) + रुचकगिरि (४) = ४५८

इस प्रकार मध्य लोक के अकृत्रिम चैत्यालय कहे । अब अधोलोक में भवनवासी के भवनों में कुल सात करोड़ बहत्तर लाख जिनमंदिर जानने चाहिए एवं ऊर्ध्व लोक में वैमानिक देवों के विमान में चौरासी लाख सत्तानवे हजार तेईस अकृत्रिम जिन चैत्यालय हैं । कहा भी है —

भवणेसु सत्तकोडी, बाहत्तरिलक्ख होंति जिणगेहा ।
भवणामरिंदमहिया, भवणसमा ताणि वंदामि ॥

भवनों में भवनवासी देव और उनके इंद्रों से पूजित भवनों की संख्या सदृश सात करोड बाहत्तर लाख जिनमंदिर हैं ।

चुलसीदिलक्खसत्ताणउदिसहस्से तहेव तेवीसे ।
सव्वे विमानसमगेजिणिंदगेहे णमंसामि ॥

ऊर्ध्वलोक में संपूर्ण विमानों की संख्या ८४,९७,०२३ है । प्रत्येक विमान में एक-एक जिनमंदिर है, अतः ऊर्ध्वलोक के संपूर्ण जिनमंदिरों का

प्रमाण भी ८४,९७,०२३ है । मैं उन सभी जिनमंदिरों को प्रणाम करता हूँ ।

इस प्रकार भवनवासी, वैमानिक एवं मध्यलोक संबंधी ८,५६,९७,४८१ जिनमंदिर हैं । ज्योतिष देवों के ज्योतिर्बिंब असंख्यात है, अतः उनके चैत्यालय भी असंख्यात हैं । इसी प्रकार व्यंतर देवों के भवन, भवनपुर व आवास भी असंख्यात हैं एवं उनके जिनमंदिर भी असंख्यात हैं ।

उन सभी अकृत्रिम एवं समस्त कृत्रिम चैत्य चैत्यालयों की अर्चना, नवदेवों की वंदना इस विधान के अंतर्गत की गई है ।

इस प्रकार विधान के अंतर्गत आचार्य गुरुवर ने ज्ञान के माध्यम से तीनों लोकों के अकृत्रिम चैत्यालयों के दर्शन मानो करा दिए हों । कहा भी है –

सरस्वत्यै नमस्तस्यै, विमलज्ञानमूर्तये ।
विचित्रालोकयात्रेयं, यत्प्रसादात्प्रवर्तते ॥

विमलज्ञान की मूर्ति रूप उन सरस्वती देवी के लिए नमस्कार हो जिनकी कृपा से तीनों लोकों की यात्रा में जीव समर्थ होता है ।

आचार्य गुरुवर ने विधान के अंतर्गत सभी चैत्यालयों की स्थिति का ज्ञान स्पष्ट रूप से कराया है । जिसका पठन व श्रवण भव्यों के लिए अत्यंत विशुद्धि पूर्ण एवं आनंददायक है । मैं आचार्य भगवन् की तीक्ष्ण बुद्धि व अगाध ज्ञान से स्वयं विस्मित हूँ । अत्यल्प समय मात्र १५ दिनों में इतने बृहद् विधान का लेखन अपने आप में एक आश्चर्य ही तो है । जबकि संघ में प्रातः भक्ति, धवला जी पु.७ की वाचना, दोपहर द्रव्य संग्रहादि की वाचना चल रही हो नितप्रति लगभग दो सौ महामंत्र की माला करते हुए, समाजों को भी निर्देशन देते हुए किस प्रकार इस विधान की रचना की यह अत्यंत अद्भुत है ।

पूज्य आचार्य गुरुवर श्री वसुनंदीजी मुनिराज के चरणों में सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्ति सहित नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु...

SarvatoPooja 11 / 12

अनुक्रमणिका

विषय		पृष्ठ
	सिद्ध भक्ति	28
	चैत्य भक्ति	29
	पंचमहागुरु भक्ति	32
	मंगलाचरण	१
१.	त्रैलोक्य पूजन	३
२.	मध्यलोक जिनालय पूजन	१४
३.	सुदर्शन मेरु पूजन	१८
४.	जम्बूद्वीप कुलाचल जिनालय पूजन	२५
५.	जम्बूद्वीप वक्षारगिरि जिनालय पूजन	३०
६.	जम्बूद्वीप गजदंत पर्वत जिनालय पूजन	३७
७.	जम्बूद्वीप विजयार्द्धगिरि जिनालय पूजन	४२
८.	जम्बूद्वीप जम्बूवृक्ष शाल्मली वृक्ष जिनालय पूजन	५१
९.	जम्बूद्वीप भरत क्षेत्र भूतकालीन तीर्थंकर पूजन	५६
१०.	जम्बूद्वीप भरत क्षेत्र वर्तमानकालीन तीर्थंकर पूजन	६३
११.	जम्बूद्वीप भरत क्षेत्र भविष्यत्कालीन तीर्थंकर पूजन	७२
१२.	जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र भूतकालीन तीर्थंकर पूजन	७९
१३.	जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र वर्तमानकालीन तीर्थंकर पूजन	८६
१४.	जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र भविष्यत्कालीन तीर्थंकर पूजन	९३
१५.	जम्बूद्वीप विद्यमान तीर्थंकर पूजन	१००
१६.	विजय मेरु पूजन	१०५
१७.	पूर्व धातकीखण्डद्वीप कुलाचल जिनालय पूजन	११२
१८.	पूर्व धातकीखण्डद्वीप वक्षारगिरि जिनालय पूजन	११७

१९. पूर्व धातकीखण्डद्वीप गजदंत जिनालय पूजन १२५
२०. पूर्व धातकीखण्डद्वीप विजयार्द्ध गिरि जिनालय पूजन १३०
२१. पूर्व धातकीखण्डद्वीप धातकीवृक्ष शाल्मलीवृक्ष जिनालय पूजन १४१
२२. पूर्व धातकीखण्डद्वीप भरत क्षेत्र भूतकालीन तीर्थंकर पूजन १४६
२३. पूर्व धातकीखण्डद्वीप भरत क्षेत्र वर्तमानकालीन तीर्थंकर पूजन १५४
२४. पूर्व धातकीखण्डद्वीप भरत क्षेत्र भविष्यत्कालीन तीर्थंकर पूजन १६१
२५. पूर्व धातकीखण्डद्वीप ऐरावतक्षेत्र भूतकालीन तीर्थंकर पूजन १६८
२६. पूर्व धातकीखण्डद्वीप ऐरावतक्षेत्र वर्तमानकालीन तीर्थंकर पूजन १७५
२७. पूर्व धातकीखण्डद्वीप ऐरावतक्षेत्र भविष्यत्कालीन तीर्थंकर पूजन १८३
२८. पूर्व धातकीखण्ड विहरमाण तीर्थंकर पूजन १९०
२९. अचलमेरु पूजन १९५
३०. पश्चिम धातकीखण्डद्वीप कुलाचल जिनालय पूजन २०२
३१. पश्चिम धातकीखण्डद्वीप वक्षारगिरि जिनालय पूजन २०७
३२. पश्चिम धातकीखण्डद्वीप गजदंत जिनालय पूजन २१४
३३. पश्चिम धातकीखण्डद्वीप विजयार्ध जिनालय पूजन २१९
३४. पश्चिम धातकीखण्डस्थ धातकी शाल्मली वृक्ष जिनालय पूजन २२८
३५. पश्चिम धातकीखण्डद्वीप भरतक्षेत्र भूतकालीन तीर्थंकर पूजन २३३
३६. पश्चिम धातकीखण्डद्वीप भरतक्षेत्र वर्तमानकालीन तीर्थंकर पूजन २४०
३७. पश्चिम धातकीखण्डद्वीप भरतक्षेत्र भविष्यत्कालीन तीर्थंकर पूजन २४८
३८. पश्चिम धातकीखण्डद्वीप ऐरावतक्षेत्र भूतकालीन तीर्थंकर पूजन २५६
३९. पश्चिम धातकीखण्डद्वीप ऐरावतक्षेत्र वर्तमानकालीन तीर्थंकर पूजन २६४
४०. पश्चिम धातकीखण्डद्वीप ऐरावतक्षेत्र भविष्यत्कालीन तीर्थंकर पूजन २७१
४१. पश्चिम धातकीखण्डद्वीप विद्यमान तीर्थंकर पूजन २७८
४२. धातकीखण्ड द्वीप इष्वाकार जिनालय पूजन २८३

SarvatoPooja 11 / 13

४३. मंदर मेरु पूजन २८८
४४. पूर्व पुष्करार्द्धद्वीप कुलाचल जिनालय पूजन २९५
४५. पूर्व पुष्करार्द्धद्वीप वक्षार जिनालय पूजन ३००
४६. पूर्व पुष्करार्द्धद्वीप गजदंत जिनालय पूजन ३०७
४७. पूर्व पुष्करार्द्धद्वीप विजयार्द्ध जिनालय पूजन ३१२
४८. पूर्व पुष्करार्द्धद्वीपस्थ पुष्करवृक्ष शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजन ३२१
४९. पूर्व पुष्करार्द्धद्वीप भरतक्षेत्र भूतकाल तीर्थंकर पूजन ३२६
५०. पूर्व पुष्करार्द्धद्वीप भरतक्षेत्र वर्तमानकालीन तीर्थंकर पूजन ३३३
५१. पूर्व पुष्करार्द्धद्वीप भरतक्षेत्र भविष्यत्कालीन तीर्थंकर पूजन ३४२
५२. पूर्व पुष्करार्द्धद्वीप ऐरावतक्षेत्र भूतकालीन तीर्थंकर पूजन ३४९
५३. पूर्व पुष्करार्द्धद्वीप ऐरावतक्षेत्र वर्तमानकालीन तीर्थंकर पूजन ३५६
५४. पूर्व पुष्करार्द्धद्वीप ऐरावतक्षेत्र भविष्यत्कालीन तीर्थंकर पूजन ३६४
५५. पूर्व पुष्करार्द्धद्वीप विदेहक्षेत्र तीर्थंकर पूजन ३७१
५६. विद्युन्माली मेरु पूजन ३७६
५७. पश्चिम पुष्करार्द्ध कुलाचल जिनालय पूजन ३८३
५८. पश्चिम पुष्करार्ध वक्षारगिरि जिनालय पूजन ३८८
५९. पश्चिम पुष्करार्ध गजदंत जिनालय पूजन ३९४
६०. पश्चिम पुष्करार्ध द्वीपस्थ विजयार्ध पूजन ३९९
६१. पश्चिम पुष्करार्ध द्वीपस्थ पुष्करवृक्ष शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजन ४१०
६२. पश्चिम पुष्करार्धद्वीप भरतक्षेत्र भूतकालीन तीर्थंकर पूजन ४१५
६३. पश्चिम पुष्करार्धद्वीप भरतक्षेत्र वर्तमानकालीन तीर्थंकर पूजन ४२२
६४. पश्चिम पुष्करार्धद्वीप भरतक्षेत्र भविष्यत्कालीन तीर्थंकर पूजन ४२९
६५. पश्चिम पुष्करार्धद्वीप ऐरावतक्षेत्र भूतकालीन तीर्थंकर पूजन ४३६
६६. पश्चिम पुष्करार्धद्वीप ऐरावतक्षेत्र वर्तमानकालीन तीर्थंकर पूजन ४४४

६७.	पश्चिम पुष्करार्धद्वीप ऐरावतक्षेत्र भविष्यत्कालीन तीर्थंकर पूजन	४५२
६८.	पश्चिम पुष्करार्धद्वीप विदेहक्षेत्र तीर्थंकर पूजन	४६०
६९.	पुष्करार्धद्वीप इष्वाकर जिनालय पूजन	४६६
७०.	सर्वसाधु पूजन	४७१
७१.	श्री जिनागम पूजन	४७६
७२.	मानुषोत्तर जिनालय पूजन	४८४
७३.	नंदीश्वरद्वीप जिनालय पूजन	४८९
७४.	कुण्डलगिरी जिनालय पूजन	५०३
७५.	रुचकगिरी जिनालय पूजन	५०८
७६.	भवनवासी जिनालय पूजन	५१३
७७.	व्यंतरदेव जिनालय पूजन	५३५
७८.	ज्योतिष्कदेवविमानस्थ जिन चैत्य-चैत्यालय पूजन	५५५
७९.	सकल वैमानिक देव जिनालय पूजन	५८४
८०.	द्वादश कल्प चैत्य-चैत्यालय पूजन	५८८
८१.	नवग्रैवेयक जिनालय पूजन	६२५
८२.	नवअनुदिश जिनालय पूजन	६३३
८३.	पंच अनुत्तर विमानस्थ जिनालय जिनेन्द्र पूजन	६३९
८४.	सिद्धशिला पूजन	६४५
	बृहद् जयमाला	६५३
	प्रशस्ति	६५८
	आरती	६६०

SarvatoPooja 11 / 14

श्री सिद्ध भक्ति

देहातीदे सिद्धे, अतीदे रसवण्णफासगंधादु ।
पणविहसंसाररहिद - सिद्धे णमंसामि भत्तीइ ॥१॥

संसारकारणादो, णाणावरणाइ - अट्ठ - कम्मादो ।
विरहियाण सिद्धाणं - णमो णमो सुद्धभावेहिं ॥२॥

रायद्देसमोहाइ - भावकम्मादु हीणाण सुद्धाण ।
णिम्मलभावजुदाणं, णमो सया सव्वसिद्धाणं ॥३॥

अग्गिणा सुतविदसुद्ध - कणयपासाणंव सोयिदा जेहि ।
तवेण णियप्पा ताण, सिद्धाणं णमंसामि सया ॥४॥

सम्मत्तणाणचरित्त - रूव - सिवमग्गे जेहिं गच्छित्ता ।
लहिदा सस्सदसिद्धी, पणमामि ताणं सिद्धाणं ॥५॥

चित्ते उप्पज्जमाण - उत्तमखमाइ - भावेहिं णिच्चं ।
जेहिं लहिदा सिद्धी - णमो सया ताण सिद्धाणं ॥६॥

धम्मज्झाणेणं पुण, सुक्कज्झाणरूवसमत्थत्थेण ।
कम्मसत्तुविजेदू हु, सव्वविसुद्ध - सिद्धा णमामि ॥७॥

कोह-माण-जिम्ह-लोह - कसायभावादो हीणा अयला ।
अण्णकसायवज्जिदा, पणमामि णिरंजणासिद्धा ॥८॥

खओवसमिग-ओदइय-उवसमिग-भावादु रहिदा णिच्चा ।
खइयभावसहिदा चिय, सव्वसिद्धा णमंसामि हं ॥९॥

सम्मत्त - णाण - दंसण - वीरिय - सुहुमत्तवगाहणत्तेहिं ।
अगुरुलहु - अव्वाबाह - गुणजुत्ता पणमामि सिद्धा ॥१०॥

बावण्णप्पइडिणूण - बेसयप्पइडिविहीणसिद्धाणं ।
अंतातीदगुणजुदा, णमंसामि णिरुवमा सिद्धा ॥११॥

णिक्कम्मा चिय पणविह - संसारहीणा देहविहीणा हु ।
गमणागमणविहीणा, जम्ममरणविहीणा वंदे ॥१२॥

इच्छामि भंते सिद्धभत्तीए काउसग्गं कडुअ भत्तिजणिददोसा आलोयमि । दव्वभावणोकम्महीणे सम्मत्ताइ-अट्ठमूलगुणजुत्ते अणंतोत्तरपज्जायसहिदे, लोयग्गठिदे सव्वसिद्धे सया णिच्चकालं अंचेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि

दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

श्री चैत्य भक्ति

अणाइयालीणसत्तु - हंतूणि अरिहंतबिंबाणि सया ।
णमंसामि भत्तीए, अरिहावत्था - कारगाणि दु ॥१॥

विज्जमाणाण अमुत्तिग - सिद्धाण मुत्तीणं सिद्धलोयम्मि ।
भत्ती थुदी णियमेण, कम्मादो मुत्तिकारणं दु ॥२॥

पडिमा साहूणं वि, सुहासव - कारणं परंपरेणं ।
संवर - णिज्जराणं च, मोक्खस्स हेदू णमो ताण ॥३॥

तिभत्तीए तियाले, तिजोगेहि वंददि भव्वुल्लो जो ।
लहदि रयणत्तयं सो, णासदि जम्मं जरं मिच्चुं ॥४॥

भवणवासि - भवणेसु, बेसत्ततिलक्खाहियट्ठकोडी ।
जिणचेइयालयाइं, वंदे सपरमप्पपत्तीइ ॥५॥

छसत्ततिलक्खसमहिद - अट्ठसदतेतीसकोडी णिच्चं ।
णमंसामि जिणपडिमा, वीयरत्तस्स हु लद्धीए ॥६॥

मज्झलोयम्मि चउसद-अट्ठावण्ण-अकिट्टिम-जिणगिहाणि ।
भवब्भमण - णासगाणि, भत्तीए णमंसामि सया ॥७॥

इगूणदालिसहस्सा, समहिद - चउसया चउसट्ठी सया ।
रयणमयी जिणपडिमा, वंदामि सभवं णासेंदु ॥८॥

अहलोए मज्झे वा, वितंरभवणभवणपुरावासेसु ।
ठिद-असंख-जिणघर - जिणबिंबाणि परियंदामि सया ॥९॥

असंख - जोदिस - गहेसु, विज्जंति असंखचेइयालयाणि ।
तत्थ ठिद-जिणबिंबाणि, किलेस-विणासगाणि णमामि ॥१०॥

अड्ढलोए ठिद - देव - विमाणेसु विज्जमाणाणि णिच्चं ।
परियंदामि सव्वाणि, चेइआणि चेइयालयाणि ॥११॥

अघहर-णिम्मल-सस्सद-जिणबिंबाइं जिणत्त-कारणं च ।
जो को वि ताणि णमामि, सो खयदि तिव्वाहकम्माणि ॥१२॥

चुलसीदि - लक्खा सत्त - णउदिसहस्सा तेवीसा णिच्चं ।
उड्ढलोयम्मि सस्सद - जिणभवण - बिंबाणि पणमामि ॥१३॥

पत्तेयं जिणभवणे, अट्ठोत्तर - सद - णिच्च - बिंबाणि ।
वंदणीयाणि सुरेहि, पणमामि भत्ति - अणुरागेण ॥१४॥

पत्तेयं जिणबिंबं, अट्ठपाडिहेरजुदं णिद्दोसं ।
कम्मकलंकणासगं, णमामि पुण पुण थुदिं किच्चा ॥१५॥

एगणउदि - कोडी छसत्ततिलक्ख - अडसत्ततिसहस्सा ।
चउसद - चुलसीदी जिण - पडिमा उड्ढस्स णमंसामि ॥१६॥

आयंसरूव - णियपरमप्प - लद्धीइ जिणबिंबायंसा ।
जिणबिंब-दंसणेणं, विणा णेव होदि परमप्पा ॥१७॥

लोयम्मि विज्जंत-जिणचेइय - चेइयालयाणि णियमेण ।
सुह - सम्मत्ताइ - अप्पगुणाण उप्पत्तीइ हेदू ॥१८॥

जेहि भव्वेहि वंदिय, किट्टिम - चेइय - चेइयालयाइं ।
मोक्खो लहिदो ताणं, णमो सया सुद्धभावेहि ॥१९॥

जं जं अत्थं पस्सदि, तस्स भावा वि होंति तस्स रूवा ।
वीयरायं परिसत्तु, भवी लहदि वीयरायत्तं ॥२०॥

मुत्तिं चित्तं पस्सित्तु, जह बालो सिक्खेदि सहजदाए ।
तह जिणमुद्दं भव्वो, फुडदि वीयरायत्तमप्पे ॥२१॥

इच्छामि भंते! चेइयभत्तीए काउसग्गं कडुअ भत्तिजणिददोसं आलोयेमि तिलोए ठिद किट्टिमाकिट्टिमाणि सव्वजिणचेइयचेइयालयाणि सव्वदेवेहि पुज्जणीयाणि । चउविहदेवा दिव्वजलचंदणाइ - अट्ठदव्वेहि ताणि अच्चंति पुज्जंति वंदंति अहमवि इह संतो तत्थ संताइं ताणि अइसद्धा - भत्ति - भावेहि सया णिच्चकालं अच्चेमि पूजेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

पंच महागुरु भक्ति

सव्वण्हू गदरायी, गयदोसी वीयमोह - अवियारी ।
णाणावरणविहीणा, सुह-णाणणंत - जुदा वंदे ॥१॥

दंसणावरणस्स णव-पइडि-विणासगा दु जिणदेवा जे ।
अणंतदिट्ठि - संजुदा, ते सव्वदंसी णमंसामि ॥२॥

पणविहाणि दाणलाह - भोयुवभोयवीरियंतरायाणि ।
जेहि णासिदाणि ताण, णवखयियलद्धिजुदाण णमो ॥३॥

चउघाइकम्मरहिया, अणंतणाणदंसणसुहबलेहिं ।
संजुदा विज्ञमाणा, समवसरणम्मि दु परियंदामि ॥४॥

जेहिं अट्ठकम्माणि, णासिदाणि सुक्कज्झाणबलेणं ।
सुद्धप्पे अट्ठगुणा, फुडिदा सिद्धा पणमामि हं ॥५॥

घाइ-अघाइ-विहीदो, जीवविवागि-आइ-चउविहादो य ।
विमुक्का लोयसिहरे, णिवासी अच्चेमि भत्तीइ ॥६॥

दव्वभावकम्माइं, णासिदाइं झाणग्गिणा जेहि ।
ताण सुद्ध - सिद्धाणं, णमो सिवसुंदरिकंताणं ॥७॥

जस्स झाणं सिमरणं, चिंतणं अप्पविसुद्धिकारणं च ।
अघक्खय - हेदू ताण, वंदे णियलपरमप्पाणं ॥८॥

सद्दंसण - णाण - चरिय - वीरिय - तवायारेहि संजुत्ता ।
सिस्साण धम्म - जणगा, आइरिया णमामि भत्तीइ ॥९॥

छत्तीसमूलगुणजुद-सूरी संगहणिग्गहकुसला ।
धीर - वीर - गंभीरा, धम्मपवट्टगसूरी थुवमि ॥१०॥

कुसल-णायगा चउविह - संघस्स धम्माहारा पणमामि ।
रयणत्तयस्स रुक्खा, सिवफलदायगा सूरिणो य ॥११॥

अस्सिं पंचमयाले, तित्थयरोव्व भरहाइ - खेत्तेसुं ।
धम्मरह - संवाहगा, धम्माइरिया परियंदामि ॥१२॥

जे रयणत्तय - जुत्ता - पढणे पाढणे सया संलीणा ।
जिणागम - सायरम्मि हु, पाढगा सया अवगाहंति ॥१३॥

अहण्णिस - मायाराइ - बेदहंग - लीणा सुद्धचित्तेण ।
णाणमुत्ती पाढगा, केवलं लहिदुं णमंसामि ॥१४॥

एगमतं पयासेदुं, अक्कोव्व परमतं खंडिदु-मसीव ।
चक्कीव पराजिदु - मण्णाणणिवं सुणयसेणाए ॥१५॥

जहाजाद - णिग्गंथा, सगसरूवे लीणा वयणकुसला ।
णाणावरणं खयिदुं, णमामि तिसंझासु भत्तीइ ॥१६॥

विसयकसायं समिदुं, अहण्णिसं सुद्धभावसंजुत्ता ।
आरंभ - संग - हीणा, णिच्चं पणमामि णिग्गंथा ॥१७॥

सम्मत्त - सण्णाणेहि, वच्छल - वेरग्ग - भाव - संजुत्ता ।
संजमे तवे णिउणा, सुद्धप्पझाणरदा वंदे ॥१८॥

वंदे पंचमहव्वय - समिदि - गुत्तीहि जुद-विसुद्धा ।
अट्ठवीसगुणजुत्ता, चउतीसुत्तरगुणधारगा ॥१९॥

अप्पहिये आसत्ता, परहिय-भाव-जुत्ता सिवकंखी य ।
सया लोयमंगल्ला, सगहिदाय पणमामि समणा ॥२०॥

जो को वि पडिदिवसम्मि, पढदि पणगुरुभत्तिं विसुद्धीइ ।
परावट्टणं खयित्तु, पावेदि पंचमगदिणाणं ॥२१॥

इच्छामि भंते ! पंचमहागुरुभत्तीए काउसग्गं कडुअ भत्तिजणिददोसं आलोयेमि सव्वघाइकम्मविरहिदाणं, अणंतचउक्कसंजुदाणं, अट्ठपाडिहेरजुत्ताणं, सव्व-अरिहंताणं, तिविहकम्मविहीणाण, लोयसिहरे ठिदाणं, सम्मत्ताइअट्ठगुणसंजुदाणं, सव्वसिद्धाणं, पंचायार-पालणं करिदुं कराविदुं कुसला सिस्साण संगहणिग्गहदक्खाण सव्वाइरियाणं महासमणाणं रयणत्तयरूवाणं धम्मदेसणाए कुसलाणं, सव्व-उवज्झायाणं, रयणत्तय-जुदाण जहाजादरूवधारगाणं, सव्वीणग्गंथरिसीणं सव्वदा णिच्चकालं अच्चेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

श्री सर्वतोभद्र महार्चना

मंगलाचरण

(चउबोला छंद)

श्री सर्वज्ञ जिनेंद्र जिनालय, तीन लोक के मनहर हैं ।
अतिशय पुण्य प्रदायक भवि के, अशुभ अशुभतर अघहन हैं ।।
अर्हत् सिद्ध सुबिंब भव्य के, मिथ्यामल को धोते हैं ।
नवदेवों की करें वंदना, वे भावी शिव होते हैं ।।

जो निरखे जिनबिंब जिनालय, दृष्टी निर्मल वे पाते ।
अर्चन पूजन करने वाले, भव वैभव उत्तम पाते ।।
अर्हत् भक्ति वंदना जग में, कर्म निकाचित हरती है ।
नाशे शीघ्र निधत्ति कर्म को, शाश्वत मंगल करती है ।।

सिद्धों का शुभ ध्यान लगावें, निश्चित सिद्धी पाते हैं ।
सिद्ध गुणों में लीन रहें वे, आठों कर्म नशाते हैं ।।
जिनवचनों को उर धरने से, ज्ञानावरण विनशता है ।
उभय दान वे निश्चित पाते, वाणी सरल सरसता है ।।

कर्म विनाशक शाश्वत जग में, भगवन् ने जिन धर्म कहा ।
जो भविजन निज चित में धारें, पाते हैं वे मुक्ति महा ।।
सूरिजन की पूजन जग में, सर्व मोह का नाश करे ।
पाँचों संयम धारे चित् में, पंचम गति को शीघ्र वरें ।।

बहुश्रुतवंत जगत् में निश्चित, ज्ञानमूर्ति शुभ कहलाते ।
उनकी अर्चा पूजा करके, स्वयं बुद्ध भवि हो जाते ।।
साधुगण की वैय्यावृत्ति अरु, पूजन वंदन जो करते ।
तन के रोग मिटाकर सारे, मुक्तिरमा निश्चित वरते ।।

चैत्य भक्ति युत अवलोकन से, मिथ्यात्रय का तिमिर नशे ।
शिवपंथी वह निश्चित बनता, शाश्वत सिद्ध क्षेत्र निवसे ।।

SarvatoPooja / 1

अति निर्मल परिणाम बनाकर, जिन पूजन करने आया ।
सर्वतोभद्र विधान उत्तम, उसे रचाने हूँ आया ।।

मैं अल्पज्ञ बाल सम किंकर, जिनगुण का रसपान करूँ ।
प्रबल भावना जिनगुण पाने, अतः प्रभो गुणगान करूँ ।।
जो भी भव्य विधान भाव युत, वर्ष एक में नित्य करें ।
निश्चित भवसुख पाकर नरवर, इन्द्र राज शिव सौख्य वरें ।।

इति श्री जिनसर्वतोभद्रमहामहप्रतिज्ञापनाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

(१)

त्रैलोक्य पूजा

अथ स्थापना

चउबोला छंद

सर्व पूज्य त्रैलोक्य विराजित, अर्हत् सिद्ध आदि भगवन् ।
तीर्थंकर अरु सर्व केवली, जिनवर चैत्य रु चैत्यसदन ।।
कृत्रिम अरु अकृत्रिम जिनालय, सूरि आदि नव देव नमन ।
शुद्ध भाव से उर थापन हित, करूँ भक्तिमय आह्वानन ।।

दोहा–**निज उर अम्बुज में सदा, करूँ नित्य शुभ ध्यान ।**
अर्चन कर भवदधि तरूँ, लहूँ सिद्ध शुभ थान ।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बार्हत्सिद्धसाधुकेवलि-प्रज्ञप्तधर्मजिनागमतीर्थक्षेत्रसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बार्हत्सिद्धसाधुकेवलि-प्रज्ञप्तधर्मजिनागमतीर्थक्षेत्रसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बार्हत्सिद्धसाधुकेवलि-प्रज्ञप्तधर्मजिनागमतीर्थक्षेत्रसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

आँचलीबद्ध चौपाई छंद

शीतल सुरभित निर्मल नीर, पूजूँ सर्व जिनेश्वर वीर ।
परम हित होय, जय-जय सर्व भव्य हित होय ।।
तीन लोक के पूज्य जिनेश, भक्ति भाव युत जजें हमेश ।
परम हित होय, जय-जय सर्व भव्य हित होय ।।
ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बार्हत्सिद्धसाधुकेवलि-प्रज्ञप्तधर्मजिनागमतीर्थक्षेत्रेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

बावन विधि शुभ चंदन लाय, नादि काल का ताप नशाय ।
परम हित होय॰ ।।
ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बार्हत्सिद्धसाधुकेवलि-प्रज्ञप्तधर्मजिनागमतीर्थक्षेत्रेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

SarvatoPooja / 2

शशि रश्मि सम तंदुल लाय, अक्षय पद हितु चरण चढ़ाय ।
परम हित होय, जय-जय सर्व भव्य हित होय ।।
तीन लोक के पूज्य जिनेश, भक्ति भाव युत जजें हमेश ।
परम हित होय, जय-जय सर्व भव्य हित होय ।।
ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बार्हत्सिद्धसाधुकेवलि-प्रज्ञप्तधर्मजिनागमतीर्थक्षेत्रेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सर्व ऋतु के पुष्प मंगाय, परम ब्रह्म हितु चरण चढ़ाय ।
परम हित होय॰ ।।
ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बार्हत्सिद्धसाधुकेवलि-प्रज्ञप्तधर्मजिनागमतीर्थक्षेत्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

सर्वभक्ष्य मिष्ठान्न मंगाय, जिन पद भेंट क्षुधा नशि जाय ।
परम हित होय॰ ।।
ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बार्हत्सिद्धसाधुकेवलि-प्रज्ञप्तधर्मजिनागमतीर्थक्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

गौ घृत के शुभ दीप जलाय, अर्पित कर त्रय तम नशि जाय ।
परम हित होय॰ ।।
ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बार्हत्सिद्धसाधुकेवलि-प्रज्ञप्तधर्मजिनागमतीर्थक्षेत्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

वसुविध धूप वह्नि में खेय, कर्म नाश मुक्ति पद देय ।
परम हित होय॰ ।।
ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बार्हत्सिद्धसाधुकेवलि-प्रज्ञप्तधर्मजिनागमतीर्थक्षेत्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

श्रेष्ठ वृक्ष के सुफल मंगाय, जिन पद भेंट मोक्ष पद पाय ।
परम हित होय॰ ।।
ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बार्हत्सिद्धसाधुकेवलि-प्रज्ञप्तधर्मजिनागमतीर्थक्षेत्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

नीरादिक वसु द्रव्य मिलाय, पद अनर्घ हितु चरण चढ़ाय ।
परम हित होय॰ ।।
ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बार्हत्सिद्धसाधुकेवलि-प्रज्ञप्तधर्मजिनागमतीर्थक्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–**तीन लोक के तीर्थ शुभ, अरु नवदेव महान ।**
जो पूजें नित भक्ति वश, लहें सकल वरदान ॥

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ बत्तीस इंद्र पूजित जिनालय अर्घ

दोहा–**वसुविध द्रव्य सजायके, पूजें नर सुर इन्द्र ।**
जिनवर अर्चन भक्ति से, बनें स्वयं अहमिन्द्र ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

नरेन्द्र छंद (तर्ज - वंदे जिनवरं...)

भवनवासि के असुर इंद्र की, जिन भक्ति मन भावन ।
निज परिकर युत पूजें जिन को, बरसे भक्ती सावन ॥
तीन लोक के सर्व केवली, सिद्ध सूरि अरु पाठक ।
मुनि वृष आगम चैत्य भवनजिन, पूज बनें आराधक ॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

नागकुमार वंदना करता, निज परिकर संयुक्ता ।
वंदन पूजन अर्चन हेतू, शुभ भावों से युक्ता ॥ तीन॰

ॐ ह्रीं नागकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

जिन भक्ति में गाते नाचते, सुर सुपर्ण भी आए ।
अतिशय पुण्य सुअर्जन हेतू, निज परिकर भी लाए ॥ तीन॰

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

द्वीप इंद्र भी शुभ भावों से, नवदेवों को वंदें ।
निज परिवार सहित आकर श्री, जिनपद में आनंदे ॥ तीन॰

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

SarvatoPooja / 3

उदधि इंद्र कोमल परिणामी, सहित देवियाँ आए ।
रत्नों से जिनवर पूजन कर, मन में अति हर्षाए ॥ तीन॰

ॐ ह्रीं उदधिकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

निज परिवार सहित श्रद्धा युत, विद्युतेन्द्र जिनभक्ता ।
नवदेवों की पूज रचाए, जिन वृष में अनुरक्ता ॥ तीन॰

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

इंद्र स्तनित भी वंदन हेतु, जिन चरणों में आए ।
अतिशय श्री जिन अर्चन करने, को सुरांगना लाए ॥ तीन॰

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

दिक्कुमार यह इंद्र मनोहर, निज परिकर युत आए ।
जिन साधु वृष गी[1] चैत्यालय, चैत्य पूज हर्षाए ॥ तीन॰

ॐ ह्रीं दिक्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

अग्नि इंद्र परिवार सहित कर, भावों का संयोजन ।
जिन पूजन को आए पाने, आतम का शुभ भोजन ॥ तीन॰

ॐ ह्रीं अग्निकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

वायु इंद्र निज परिकर लेकर, जिन पूजा को आए ।
सम्यग्दृष्टा निकट भव्य को, ही यह अर्चन भाए ॥ तीन॰

ॐ ह्रीं वायुकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥10॥

१. जिनवाणी

चौपाई

किन्नर इंद्र सहित परिवारा, बहे अहर्निश भक्तिधारा ।
तीन लोक के चैत्य जजे हैं, याम वसु जिननाम भजे हैं ।।

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

इंद्र किंपुरुष भक्ति नीर में, अवगाहन करते पल-पल में ।
निज परिवार सहित नित अर्चें, नवदेवों के शुभ पद चर्चें ।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

इंद्र महोरग वैभवधारी, संग देवियाँ मंगलकारी ।
तीन लोक नवदेव सुखारी, पूजें भक्तियुक्त हितकारी ।।

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

निज परिवार सहित निष्ठा से, जजें इंद्र गंधर्व शक्ति से ।
रत्नपुंज जिनपद अर्पण कर, नव देवों को पूजें हितकर ।।

ॐ ह्रीं गन्धर्वेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

यक्ष इंद्र अति मोद मनाते, देवी युत जिन पूज रचाते ।
माथ सदा जिन पद में धरते, सम्यग्दर्शन निर्मल करते ।।

ॐ ह्रीं यक्षेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

राक्षस इंद्र जजें निष्ठा से, परिकर भी पूजें श्रद्धा से ।
तीन लोक के सर्व जिनालय, भव्यों को मानो पुण्यालय ।।

ॐ ह्रीं राक्षसेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

SarvatoPooja / 4

भूत इंद्र परिवार संग ले, भक्ति का शुभ शाश्वत रंग ले ।
नव देवों का अर्चन करते, सिद्धों के पुनि वसुगुण वरते ।।

ॐ ह्रीं भूतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

पिशाचेंद्र देवी युत आवें, जिनवर पादपद्म सिर नावें ।
पूजा नव देवों की करके, हर्षायें निज अघ सब हरके ।।

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

(अडिल्ल छंद)

ज्योतिष सुर शशि इंद्र परिकर युत आए,
निजगृह में जिनगुण भक्ति युत नित गाए ।
तीन लोक के नवदेवों को भाव से,
पायें शुभ गुण जो पूजें नित चाव से ।।

ॐ ह्रीं चन्द्रेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

सूर्य प्रतीन्द्र जिनपूजा करने आए ।
देव अंगना युत भक्ति कर हर्षाए ।। तीन०

ॐ ह्रीं सूर्येन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

विधाता छंद (तर्ज - तुम्हारे दर्श बिन प्रभु...)

शची इत्यादि देवी युत, इन्द्र सौधर्म है आया ।
जिनेश्वर अर्चना वंदन, भक्ति के भाव शुभ लाया ।।
अर्ह शिव साधु जिनवाणी, बिंब जिनगृह धरम वंदन ।
पूजते तीन लोकों के, नष्ट होते करम बंधन ।।

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

श्रीमती आदि देवी युत, इंद्र ऐशान भी आवे ।
रत्नमय थाल कर लेकर, शीश जिनवर चरण नावे ।।
अर्ह शिव साधु जिनवाणी, बिंब जिनगृह धरम वंदन ।
पूजते तीन लोकों के, नष्ट होते करम बंधन ।।

ॐ ह्रीं ईशानेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।22।।

लिए परिवार अर्चन को, इन्द्र सानत सुभक्ति से ।
अर्चते पार भव से हो, परम वंदन सुयुक्ति से ।।
अर्ह शिव०

ॐ ह्रीं सानत्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

रत्नमणि अर्घ्य को लेकर, इंद्र माहेंद्र जजते हैं ।
पूर्ण परिवार युत अर्हत्, सिद्ध नित नाम जपते हैं ।।
अर्ह शिव०

ॐ ह्रीं माहेंद्रेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

ब्रह्म अरु स्वर्ग ब्रह्मोत्तर, सुअधिपति ब्रह्म आते हैं ।
यजें परिवार युत नित ही, अनूपम सौख्य पाते हैं ।।
अर्ह शिव०

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।25।।

लांतव स्वर्ग अरु कापिष्ठ, के शुभ इंद्र लांतव हैं ।
सपरिकर पूजते जिनपद, मिटे भव दुक्ख आतप हैं ।।
अर्ह शिव०

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।26।।

शुक्र महाशुक्र स्वर्गों के, इन्द्र महाशुक्र आते हैं ।
सपरिकर वीतरागी जिन, सुनिर्मल चित्त ध्याते हैं ।।
अर्ह शिव साधु जिनवाणी, बिंब जिनगृह धरम वंदन ।
पूजते तीन लोकों के, नष्ट होते करम बंधन ।।

ॐ ह्रीं महाशुक्रेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।27।।

सहस्रारेन्द्र कहलाते, सुअग्रिम युगल स्वर्गों के ।
सपरिकर पूजते जिन को, देव सम्पूर्ण वर्गों के ।।
अर्ह शिव०

ॐ ह्रीं सहस्रारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।28।।

इन्द्र आनत सुश्रद्धायुत, देवियों संग नित आते ।
प्रभो की अर्चना से ही, पलायन पाप कर जाते ।।
अर्ह शिव०

ॐ ह्रीं आनतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।29।।

इंद्र प्राणत की जिनभक्ति, सदा सम्यक्त्व की कारक ।
सपरिकर वीतरागी जिन, पूजते पाप संहारक ।।
अर्ह शिव०

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।30।।

इंद्र आरण सुश्रद्धा से, प्रभो गुणगान नित करते ।
सपरिकर अर्घ्य अर्पण कर, सकल संताप ही हरते ।।
अर्ह शिव०

ॐ ह्रीं आरणेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।31।।

इंद्र अच्युत करें पूजन, सपरिकर शुभ्र भावों से ।
अर्घ्य ले पूजता जो भी, मुक्ति पाए विभावों से ॥
अर्हं शिव॰

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धि-सर्वकृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-क्षेत्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥32॥

पूर्णार्घ्य

दोहा—भवनवासि के इन्द्र दस, व्यंतर के वसु जान ।
ज्योतिष के दो कल्प के, बारह इंद्र महान ॥
अलिवत जिनपद में सदा, ये बत्तीसों इंद्र ।
बसे वंदते पूजते, होने स्वयं जिनेन्द्र ॥

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशदिन्द्रैः स्वपरिवारसहितैः पादपद्मार्चिताय त्रिलोकसम्बन्धिसर्व-कृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बजिनालयजिनसिद्धसाधुजिनधर्मजिनागमजिनक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य - ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

तरलनयन छंद

सिरि जिनवर सुख दरसन, मनु जन जन हु सब अघहन ।
नमन नमन कर हरसत, नित हि भगति रस बरसत ॥

नरेन्द्र छंद (रोम-रोम...)

तीन लोक के कृत्रिम अकृत्रिम, जिनमंदिर नित ध्याऊँ ।
भक्तिवश कर नमस्कार, अक्षय शाश्वत पद पाऊँ ॥
अतिशय पुण्य उदय अब आया, अर्चन महा रचाएँ ।
भाव शुद्ध कर, मन निर्मल कर, श्री जिन महिमा गाएँ ॥

जय जय जय जिनबिंब जिनालय, स्वर्णरत्नमय प्यारे ।
मध्यलोक चउशत अट्ठावन, पूजूँ जिनगृह सारे ॥
ढाईद्वीप नग मानुषोत्तर, नंदीश्वर अति न्यारा ।
कुण्डल पर्वत रुचकगिरि का, अद्‌भुत अजब नजारा ॥

SarvatoPooja / 6

अधोलोक में भवनवासि सुर-गण के भवन मनोहर ।
सात कोटि अरु लाख बहत्तर, मानो दिव्य धरोहर ॥
जितने-जितने भवन बताए, उतने ही जिनमंदिर ।
मानथंभ शुभ चैत्य वृक्ष युत, पूजूँ जिन अतिसुंदर ॥

व्यंतर देवों से संबंधित, नहीं भवन की गणना ।
असंख्यात ही जिनगृह उनको, पूज सुश्रेणी[1] चढ़ना ॥
रत्नमयी सब जिनबिंबों को, आनंदित हो पूजूँ ।
नित्य गुणों का चिंतन कर अब, श्री जिनसम ही हूजूँ ॥

हैं संख्यात भाग ज्योतिष देवों के ज्योति विमाना ।
असंख्यात ही सब विमान अरु, जिनगृह ये पहचाना ॥
चंद्र सूर्य नक्षत्र ग्रहों में, अरु तारों में शोभित ।
जिन चैत्यालय पूजूँ निशदिन, करें भविक मन मोहित ॥

वैमानिक के लाख चौरासी, सहस सतानव[2] शाश्वत ।
अरु तेवीस देव चैत्यालय, सदा शुद्ध मन ध्यावत ॥
ऊर्ध्वलोक के जिनमंदिर को, नमूँ-नमूँ श्रद्धा से ।
जिनस्वरूप मैं भी पा जाऊँ, निज आतम निष्ठा से ॥

आठ करोड लाख अरु छप्पन, सहस सतानव गाऊँ ।
चार शतक इक्यासी जिनगृह, तीन लोक के ध्याऊँ ॥
रत्न स्वर्णमय अति मनमोहक, चैत्यालय सुखकारी ।
जिनप्रतिमाओं से शोभित वे, निश्चित ही अघहारी ॥

प्रति जिनगृह में आठ एक सौ, जिनप्रतिमा मनभाई ।
नौ सौ पच्चिस कोटि तिरेपन, लाख सहस सत्ताईस ॥
नौ सौ अड़तालिस कुल मणिमय, पूजूँ भक्ति विशेषा ।
जिनबिंबों को भाव सहित मैं, वंदन करूँ हमेशा ॥

भाग्यशाली पुण्यशाली मैं, धन्य घड़ी शुभ आई ।
नवदेवों को वंदन कर मम, मन बगिया हर्षायी ॥

---

१. क्षपकश्रेणी २. ९७

सूरी पाठक सर्व साधु अरु, जिनवृष अति हितकारी ।
चैत्य जिनालय जिनआगम को, नित-नित धोक हमारी ।।

घत्ता

जय जय जिन प्रतिमा, जिनवर महिमा, सम्यक् के शुभ हेतु कहे ।
कर्म निधत्ति, और निकाचित, जिनभक्ति से शीघ्र दहें ।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बार्हत्सिद्धसाधु-केवलिप्रज्ञाप्तधर्मजिनागमजिनक्षेत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja / 7

(२)

मध्यलोक जिनालय पूजा

अथ स्थापना

हरिगीतिका छंद

त्रैलोक्य के शुभ मध्य में कटि, सम सुमध्यम लोक है ।
देवता नव जहँ विराजित, देत सुर नर धोक हैं ।।
मणिरत्नमय शाश्वत जिनालय, बिंब भविजन वंद्य हैं ।
चउ शतक आठ पचास ऊपर, पूज होत सुवंद्य हैं ।।

दोहा—**सर्वभद्र शुभ चैत्य जिन, चैत्यालय सुखकार ।**
आह्वानन कर भक्तिवश, पूजूँ करि जयकार ।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिपञ्चमेर्वादिचतुःशताष्टपञ्चाशज्जिनालयजिनबिम्ब-समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिपञ्चमेर्वादिचतुःशताष्टपञ्चाशज्जिनालयजिनबिम्ब-समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिपञ्चमेर्वादिचतुःशताष्टपञ्चाशज्जिनालयजिनबिम्ब-समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।।

अथ अष्टक

हरिगीतिका छंद

अत्यंत निर्मल सुखद शीतल, सुरसरित जल ले जजूँ ।
दुठ जन्म-मृत्यू-जरत नाशन, भाववश त्रय विधि भजूँ ।।
वसु द्रव्य का शुभ थाल लेकर, नित्य अर्चन हम करें ।
चतु शतक अट्ठावन जिनालय, पूजके वसुगुण धरें ।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतुःशताष्टपञ्चाशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

मलयागिरी का सकल चंदन, ताप तन का नित हरे ।
जिनवर चरण की अर्चना भव, ताप हरने नित करें ।।
वसुद्रव्य का० ।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतुःशताष्टपञ्चाशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

शुभ ओस बिंदू सम सु उज्ज्वल, सुखद तंदुल लाय के ।
अक्षय सुपद की भावना रख, पाद पद्म चढ़ाय के ।।
वसुद्रव्य का० ।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतुःशताष्टपञ्चाशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

मम सुमन सम शुभ मन बना निज, सुमन जिनवर पद धरें ।
विनशे मदन सुविकार मन के, ब्रह्ममय शुभ गुण वरें ।।
वसुद्रव्य का० ।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतुःशताष्टपञ्चाशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

शुभ इष्ट मिष्ट सुपक्व मनहर, सर्व व्यंजन लावता ।
अति दुःखद दुस्सह रोग क्षुध यह, नाशने सुचढ़ावता ।।
वसुद्रव्य का० ।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतुःशताष्टपञ्चाशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

हैं दीप जितने विश्व में वे, नित्य तम को नाशते ।
अंतर तिमिर त्रय नाशने जिन, पद चढ़ा निज भासते ।।
वसुद्रव्य का० ।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतुःशताष्टपञ्चाशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

कर्पूर अगर लवंग आदिक, धूप दसविधि सुखमयी ।
खेकर अनल जिन चरण सम्मुख, लहूँ शाश्वत शिवमही ।।
वसुद्रव्य का० ।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतुःशताष्टपञ्चाशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

शुभ अक्ष सुखकर नित्य मनहर, सकल फल जिनपद धरें ।
संसार सागर तैरकर हम, मुक्ति वामा को वरें ।।
वसुद्रव्य का० ।।

SarvatoPooja / 8

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतुःशताष्टपञ्चाशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

जल चंदनं निर्मल सुतंदुल, पुष्प चरु दीपक धरूँ ।
शुभ धूप फल जिनपद चढ़ाकर, शुभ्र शिवपद को वरूँ ।।
वसु द्रव्य का शुभ थाल लेकर, नित्य अर्चन हम करें ।
चतु शतक अट्ठावन जिनालय, पूजके वसुगुण धरें ।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतुःशताष्टपञ्चाशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा—**कृत्रिम अकृत्रिम सदा, मध्यलोक जिनबिंब ।**
अर्चूं पूजूँ भक्तिवश, लखूँ शुद्ध निजबिंब ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता - **शाश्वत चैत्यालय, नित पुण्यालय, मध्यलोक के नित्य जजूँ ।**
वसु द्रव्य बनाऊँ, मंगल गाऊँ, पूजा कर सब दोष तजूँ ।।

तर्ज - श्री सिद्धचक्र का पाठ...

श्री मध्यलोक की शान, चैत्यसुखखान, नित्य सुखकारी ।
पूजें जिनगृह अघहारी ।।

शाश्वत शुभ स्वयं सिद्ध मंदिर, मणिरत्नमयी अतिशय सुंदर ।
पूजाकर निश्चित भविजन होए सुखारी, पूजें जिनगृह अघहारी ।।

सोलह सुमेरु के कहलाए, गजदंतगिरि के चउ भाए ।
हिमवन् आदि पर छः जिनगृह मनहारी, पूजें जिनगृह अघहारी ।।

जंबू तरु आदि दो मणिमय, वक्षार गिरि के सोलह हैं ।
रजताचल के चौंतीस भवन दुखहारी, पूजें जिनगृह अघहारी ।।

यूँ जंबूद्वीप के अठहत्तर, अकृत्रिम चैत्यालय मनहर ।
भवि वीतरागता पाए शुभ हितकारी, पूजें जिनगृह अघहारी ।।

अतएव एक सौ छप्पन हैं, दो इष्वाकार गिरी पर हैं ।
यूँ मिलकर इक शत अट्ठावन गुणकारी, पूजें जिनगृह अघहारी ।।

शुभ पुष्करार्द्ध में भी इतने, हैं खंड धातकी में जितने ।
त्रय शत अट्ठावन ढाई द्वीप में भारी, पूजें जिनगृह अघहारी ।।

मानुषोत्तर के चार कहें, मिथ्यात्व भवि का क्षण में दहें ।
जिनमें स्थित जिनप्रतिमाएँ अति प्यारी, पूजें जिनगृह अघहारी ।।

नंदीश्वर के बावन जिनगृह, श्री कुण्डल रुचक गिरि के गृह ।
ये चउ-चउ सोहें जिनकी छवि अतिन्यारी, पूजें जिनगृह अघहारी ।।

चउ शत अट्ठावन शास्त्र कहें, ये मध्य लोक में साज रहे ।
दर्शन से पुलकित नर सुर विद्याधारी, पूजें जिनगृह अघहारी ।।

मानुषोत्तर गिरि से आगे, मानुष न कदापि जा पावें ।
अतएव यहीं से वंदें हम चितहारी, पूजें जिनगृह अघहारी ।।

दोहा–जिनके दर्शन भक्ति से, चिन्मय नित्य प्रकाश ।
शाश्वत पद निज उर धरूँ, करूँ कर्म सब नाश ।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसम्बन्धिचतुःशताष्टपञ्चाशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja / 9

३

सुदर्शन मेरु पूजा

अथ स्थापना

चउबोला छंद (तर्ज - धीमें धीमें पगिया)

मध्य लोक में नाभि समा यह, जंबुद्वीप शुभ द्वीप कहा ।
षोडश भव्य जिनालय संयुत, मेरु सुदर्शन नित्य महा ।।
उसी मेरु के जिन चैत्यालय, की पूजन करने आए ।
आह्वानन कर भक्ति भाव से, पुलकित उर से हर्षाए ।।

दोहा - मेरु सुदर्शन नित्य शुभ, जिनवर सहित विशेष ।
तीर्थंकर प्रभु का जहाँ, होत जन्म अभिषेक ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।।

अथ अष्टक

चउबोला छंद

क्षीरोदधि का निर्मल जल ले, जिनचरणों में धार करें ।
जन्म जरा मृतु नशकर भविजन, शीघ्र भवोदधि पार करें ।।
मेरु सुदर्शन नित्य विराजित, जिनगृह प्रतिमा रत्नमयी ।
अर्चन पूजन भक्ति करके, भविजन पायें मोक्ष मही ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

मलयागिरि का शीतल चंदन, जन जन का तन-ताप हरे ।
जिन चरणों में भक्ति भाव से, अर्पण कर भव-ताप हरें ।।
मेरु सुदर्शन०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

अक्षत धवल अनूपम जग में, अक्षय पद के कारक हैं ।
अक्षत से जिनवर अर्चन ही, बन जाती भव तारक है ।।
मेरु सुदर्शन नित्य विराजित, जिनगृह प्रतिमा रत्नमयी ।
अर्चन पूजन भक्ति करके, भविजन पायें मोक्ष मही ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

विकसित सुमनों सा सुरभित मन, ले जिनचरणों में आया ।
काम वासना नष्ट करूँ मैं, निर्विकार बनने आया ।।
मेरु सुदर्शन०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

चरुवर तन का पोषक जग में, अक्ष अनिन्द्रिय सुखदायी ।
जिनचरणों में भेंट करें तो, मिले स्वत्व की प्रभुताई ।।
मेरु सुदर्शन०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

तमहर दीप प्रकाशक जग में, नंत ज्ञान के हेतु कहे ।
जिनवर चरणन नित्य धरें वे, पावें भवदधि सेतु अरे ।।
मेरु सुदर्शन०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

अगर तगर कर्पूर लवंगादिक मिश्रित ये धूप बनी ।
खेय हुताशन में जब भविजन, कर्म प्रकृतियाँ सर्व हनीं ।।
मेरु सुदर्शन०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

सरस सुगंधित नयन मनोहर, सुफल मोद के कारण हैं ।
जिनवर चरण चढ़ावें भवि वे, सब विधि होय निवारण हैं ।।
मेरु सुदर्शन०

SarvatoPooja / 10

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

जल चंदन तंदुल अरु गंधित, पुष्प चरू दीपक लाए ।
धूप सु फल मिश्रित कर सुंदर, अर्घ्य चढ़ा अति हर्षाए ।।
मेरु सुदर्शन नित्य विराजित, जिनगृह प्रतिमा रत्नमयी ।
अर्चन पूजन भक्ति करके, भविजन पायें मोक्ष मही ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–मेरु सुदर्शन चार वन, तिनमें जिनगृह जान ।
पुष्पांजलि अर्पित करूँ, करुँ जिनवर गुणगान ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ

दोहा–जम्बूद्वीप सुमध्य में, गिरि उत्तुंग विशाल ।
मेरु सुदर्शन चैत्य की, वंदन करूँ त्रिकाल ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

नरेन्द्र छंद (तर्ज - रोम रोम से...)

भू पर शोभित भद्रसाल वन, के पूरब जिनगेहा ।
आठ एक सौ प्रतिमा पूजूँ, युत अतिभक्ति नेहा ।।
जंबुद्वीप शुभ गिरी सुदर्शन, मंदिर अतिशयकारी ।
शाश्वत प्रतिमाएँ जजि बनते, शिवपद के अधिकारी ।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

भद्रसाल वन दक्षिणदिश के, चैत्यालय मनहारी ।
उनमें सुंदर शांत भाव युत, प्रतिमा सोहे प्यारी ।।
जंबुद्वीप शुभ०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

चलो जजें इस वन के माही, पश्चिम दिश के मंदिर ।
नील केश युत सोहें जिसमें, प्रतिमाएँ अति सुंदर ॥
जंबुद्वीप शुभ गिरी सुदर्शन, मंदिर अतिशयकारी ।
शाश्वत प्रतिमाएँ जजि बनते, शिवपद के अधिकारी ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

भद्रसाल वन उत्तर दिश में, चैत्यालय सुखकारी ।
धनुष पाँच सौ ऊँची प्रतिमा, तिन पद धोक हमारी ॥
जंबुद्वीप शुभ॰

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थोत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

दूजा वन नंदन जो मन को, करे सदा आनन्दित ।
पूजूँ पूरब दिश जिन प्रतिमा, पाप करे जो खण्डित ॥
जंबुद्वीप शुभ॰

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

नंदनवन की दक्षिण दिश के, चैत्यों का शुभ वंदन ।
भाव सहित करने से भवि का, मिटे जगत का क्रंदन ॥
जंबुद्वीप शुभ॰

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

पश्चिम दिश नंदनवन जिन गृह, पावन जिसका कण-कण ।
मन मोहक प्रतिमाएँ मानो, बोल पड़ेंगी तत्क्षण ॥
जंबुद्वीप शुभ॰

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

उत्तर दिश जिनदेव सदन का, सुंदर अजब नजारा ।
जिनवर के जय जयकारों से, गूँज उठा नभ सारा ॥
जंबुद्वीप शुभ॰

SarvatoPooja / 11

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थोत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

साढ़े बासठ सहस योजना, ऊपर नंदनवन से ।
तीजा वन सौमनस पूर्व जिन, वंदन करता मन से ॥
जंबुद्वीप शुभ गिरी सुदर्शन, मंदिर अतिशयकारी ।
शाश्वत प्रतिमाएँ जजि बनते, शिवपद के अधिकारी ॥

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दक्षिण दिश जिन बिम्ब मनोहर, सदन मध्य में सोहे ।
नव-नव कोंपल की शोभा युत, हस्त-पाद मन मोहे ॥
जंबुद्वीप शुभ॰

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥10॥

वन सौमनस दिशा पश्चिम जिन, पूज-पूज हर्षाऊँ ।
भाव विशुद्धि के बल से मैं, आठों कर्म नशाऊँ ॥
जंबुद्वीप शुभ॰

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥11॥

उत्तर के उत्तुंग जिनालय, खचित रत्न मणि मुक्ता ।
उनमें स्थित जिन प्रतिमाएँ, वीतरागता युक्ता ॥
जंबुद्वीप शुभ॰

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थोत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥12॥

सबसे ऊपर पांडुक वन इस, प्रथम शुभ्र मेरू पर ।
जिसकी पूरब दिश में मनमोहक जिन प्रतिमा जिन घर ॥
जंबुद्वीप शुभ॰

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिपाण्डुकवनस्थपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥13॥

नमस्कार शत पांडुक वनथित, दक्षिण दिश के देवा ।
जिनके पद कमलों की करते, देव निरंतर सेवा ।।
जंबुद्वीप शुभ गिरी सुदर्शन, मंदिर अतिशयकारी ।
शाश्वत प्रतिमाएँ जजि बनते, शिवपद के अधिकारी ।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिपाण्डुकवनस्थदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

पांडुक वन में पश्चिम दिश के, जिनबिम्बों का अर्चन ।
भवदधि तारक पाप विदारक, श्री जिन पद का चर्चन ।।
जंबुद्वीप शुभ०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिपाण्डुकवनस्थपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

उत्तरदिश जिन श्रेष्ठ जजें सुर, मुनि पांडुक वन जाकर ।
हम पूजें इह जिनगृह प्रतिमा, उत्तम भाव लगाकर ।।
जंबुद्वीप शुभ०

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिपाण्डुकवनस्थोत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

पूर्णार्घ्य

उपेन्द्रवज्रा छंद (तर्ज - तं गोम्मटेसं पणमामि)

सुमेरु शैलेन्द्र विराजमाना, जिनालया शाश्वत पूज्यमाना ।
अनादि से शाश्वत बिंब भाए, सुरेन्द्र योगी गुणगान गाए ।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।। शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य - ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः ।। (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता–जय मेरु सुदर्शन, जिनवर दर्शन, पाप ताप संताप हरे ।
शुभ भाव बनाएँ, जिनगुण गाएँ, शुद्धातम गुण नित्य वरें ।।

गीतिका छंद

द्वीप जंबू के सुमध्या, नाभि सम मेरू महा ।
है सुदर्शन रत्नमणिमय, युक्त जिनगृह से अहा ।।

SarvatoPooja / 12

सम्यक्त्व को निर्मल करे, ये महामहिमा धरें ।
एक क्षण का ध्यान भी शुभ, पूजकों का दुख हरे ।।

सहस योजन नींव चित्रा, भूमि पर जिनकी कही ।
मूल भू पर भद्रशाला विपिन अनुपम है सही ।।
मेरु के चहुँ ओर शोभे, चार चैत्यालय सहित ।
नाश दोषों का करें नित, रत्न व मणियों जड़ित ।।

पाँच शत योजन सु ऊपर, वन सुनंदन सोहता ।
चउ ओर चैत्यालय चतुः, भव्य का मन मोहता ।।
बासठ हजार व पाँच सौ, योजनों वन सौमनस ।
नित्य जिनगृह चार सोहें, नित झरे जिन भक्तिरस ।।

योजन सहस छत्तीस पर, वन सु पांडुक दिव्य है ।
चार चैत्यालय जजें आसन्न निश्चित भव्य है ।।
चालीस योजन चूलिका युत, शुभ सुदर्शन मान है ।
निन्यानवे सहस ऊँचा, जिनधर्म करि गान है ।।

मेरु के सोलह जिनालय, अखिल गुण की खान हैं ।
मोक्ष के कारक सदा शुभ, नित्य ये जिनधाम हैं ।।
शत आठ उत्तर प्रतिसदन, चैत्यमहिमावान् हैं ।
पूजकर करता सुनिश्चित, आत्मगुण रसपान है ।।

दोहा–तीनों योग विशुद्ध कर, उत्तम द्रव्य मँगाय ।
वसुविध नशने जिन जजूँ, आतम शुद्ध हिताय ।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(४)

जंबूद्वीप कुलाचल जिनालय पूजन

अथ स्थापना

चउबोला छंद

जंबुदीप के सकल कुलाचल, जो जिनमंदिर शोभित हैं ।
हिमवन् आदि महान गिरीवर, चैत्य सदन सुरमोहित हैं ।।
अष्टोत्तर शत रत्नमयी जिन, प्रतिमा प्रति जिनगृह सोहें ।
निकट भव्य दर्शन अर्चन कर, जिनगुण में ही नित मोहें ।।

दोहा- **जंबूद्वीप के सर्व नग, चैत्य जिनालय जान ।**
आह्वानन कर पूजता, होय सकल अघ हान ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

तर्ज (श्री वीर महाअतिवीर...)

सुरसरिता का शुचि नीर, जिन चरणन लाए ।
जन्मादि विनाशन हेत, चढ़ा जिनगुण गाए ।।
श्री चैत्य सदन संयुक्त, जंबूद्वीप कहा ।
पूजें नित जिन को भव्य, पाते सुगुण अहा ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

चंदन आदी शुभ द्रव्य, जनहित सुखकारी ।
जिन चरण चढ़ावे भक्त, चेतन अघहारी ।। श्री चैत्य०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

शुभ शालि अखंडित लाय, जिनपद अग्र धरूँ ।
अक्षयपद नित सुखदाय, आतम रमण करूँ ।।
श्री चैत्य सदन संयुक्त, जंबूद्वीप कहा ।
पूजें नित जिन को भव्य, पाते सुगुण अहा ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

ये पुष्प सुकोमल आज, ले जिन चरण जजूँ ।
अविकार दशा के काज, आठों याम भजूँ ।। श्री चैत्य०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

अमृत सम शुभ पकवान, जिनवर चरण धरूँ ।
मम क्षुधा रोग नशि जाय, जिनचरणा विचरूँ ।। श्री चैत्य०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

परमोत्तम दीपक लाय, नीराजन करते ।
वे निकट भव्य नर श्रेष्ठ, मुक्तिवधू वरते ।। श्री चैत्य०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

वर धूप दशांगी लाय, पावक में खेऊँ ।
वसु कर्म प्रकृतियाँ नाश, करने जिन सेवूँ ।। श्री चैत्य०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

श्रीफल द्राक्षा बादाम, जिन चरणन भेंटूँ ।
शुद्धात्मज सुख को पाय, जन्म मरण मेटूँ ।। श्री चैत्य०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

नीरादि द्रव्य वसु लाय, अर्घ्य बनावत हैं ।
शुभ पद अनर्घ्य के हेत, चरण चढ़ावत हैं ।।
श्री चैत्य सदन संयुक्त, जंबूद्वीप कहा ।
पूजें नित जिन को भव्य, पाते सुगुण अहा ।।

ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–**हिमवन् आदि कुलगिरि, जंबूद्वीप प्रसिद्ध ।**
अष्ट द्रव्य लेकर जजूँ, होने शाश्वत सिद्ध ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–**प्रथम द्वीप में वर्षधर, छह पर्वत शुभ जान ।**
तहाँ विराजे जिन सदन, प्रणमूँ जिन भगवान ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

मद अवलिप्त कपोल छन्द

प्रथम शैल हिमवान, कूट जहँ ग्यारह राजित ।
ता मधि पहिले कूट, शुभ्र श्री जिनगृह साजित ।।
प्रथम द्वीप शुभ जंबु, कुलाचल के जिनगेहा ।
हम सब मिलकर पूज, धरें जिन चरणन नेहा ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिहिमवत्पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

तुंग महाहिमवान, कूट जहँ अष्ट विराजे ।
पूर्व दिशा का कूट, वीतरागी जहँ साजे ।।

प्रथम दीप०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिमहाहिमवत्पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

निषध महीधर धरे, कूट नौ मंडित रतनन ।
हम पूजें वह कूट, विराजे जिसमें श्रीजिन ।।

प्रथम दीप०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिनिषधपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

धरणीधर शुभ नील, धरे नव कूट जु सुंदर ।
पूर्वदिशा शुभ कूट, सदन जिन बना मनोहर ।।
प्रथम द्वीप शुभ जंबु, कुलाचल के जिनगेहा ।
हम सब मिलकर पूज, धरें जिन चरणन नेहा ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिनीलपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

आठ कूट नग रुक्मि, ऊँचाई पच्चिस योजन ।
लखकर श्री जिन धाम, हुए आनंदित लोचन ।।

प्रथम दीप०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिरुक्मिपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

एकादश जहँ कूट, कुलाचल शिखरिण जाकर ।
सिद्ध आयतन वहाँ, जजें हम भाव लगाकर ।।

प्रथम दीप०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिशिखरिन्पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

पूर्णार्घ्य

हरिनी छंद

सुजंबु कुलाचल शोभ तनी,
सदा जिन पूजत योगि गुनी ।
सुद्रव्य सजा जिन पूज करूँ,
नमामि जिनेश सुभाव वरूँ ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

जाप्य–ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता

हिमवन आदिक नग, कारक शिवमग, चित्त धरें नित जिन चरणा ।
जिनपूज रचावें, सु मरण पावें, शाश्वत पावें जिन शरणा ।।

हरिगीतिका

षट्हिमवनादी शुभ कुलाचल, द्वीप जंबू में सुभग ।
ये षट्गिरी ही क्षेत्र सात करें विभाजित शुभ विशद ।।
है भित्ति सम सम व्यास में वे, शोभते अनुपम गिरी ।
दोउ पार्श्वभाग रतनमणिमय, स्पर्श लवणोदधि करी ।।

हिमवन् महाहिमवन् निषध अरु, नील रुक्मि सु शिखरिणी ।
योजन शतक द्विशतक चउशत, जानते ऊँचे गुणी ।।
योजन शतक चउ द्विशतक शत, गणधरादि बताइया ।
प्रत्येक पर इक इक सदन जिन, गीत जिनवर गाइया ।।

कलधौत अर्जुन तप्त स्वर्णिम, वर्ण वैडूर्या कहा ।
रूप्या स्वर्णिम इस ही क्रम से, जानते गिरि के महा ।।
इन पर विराजित मंदिरों को, भाव वश जो वंदते ।
रत्नत्रय को पाएँ भवि वे, छूटते विधि बंधतैं ।।

दोहा–षट् कुल पर्वत पर सुभग, चैत्यालय सुखकार ।
शाश्वत जिनमंदिर जजूँ, ये निश्चित अघहार ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(५)

जंबूद्वीपस्थ वक्षारगिरि जिनालय पूजन

अथ स्थापना

चउबोला छंद

जंबूद्वीप विदेह क्षेत्र में, शाश्वत तुरिय काल वर्तन ।
षोडश हैं वक्षार गिरी शुभ, करें देव जिनगृह अर्चन ।।
प्रतिजिनगृह में अष्टोत्तर शत, मनभावन जिनप्रतिमा हैं ।
गणधर ना कह सकें पूर्णतः, जिनकी सम्यक् गरिमा है ।।

दोहा–गिरि वक्षार सु जिनभवन, बिंब सु उपमातीत ।
आह्वानन कर नित जजूँ, सुनूँ स्वात्म संगीत ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

चउबोला छंद

जल अनादि से भविजन के तन, शुद्ध नहीं कर पाता है ।
जन्मादिक त्रय रोग नशें जो, जिनपद नीर चढ़ाता है ।।
जम्बूद्वीप वक्षार गिरि के, सकल जिनालय का वंदन ।
क्षायिक भाव नित्य पाने को, करूँ चैत्य जिन अभिनंदन ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

देह मात्र को शीतल करता, मलयागिरि आदी चंदन ।
जिन चरणों की पूजन से मिट, जाता है भव का क्रंदन ।।
जंबूद्वीप वक्षार०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

अक्षत सेवन करके भी भवि, ना अक्षय पद पा सकते ।
जिनवर चरण चढ़ाकर अक्षत, मुक्ति वधू परिणा सकते ।।
जम्बूद्वीप वक्षार गिरि के, सकल जिनालय का वंदन ।
क्षायिक भाव नित्य पाने को, करूँ चैत्य जिन अभिनंदन ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सब ऋतु के शुभ कुसुम मनोहर, जिनवर चरण चढ़ाते हैं ।
कामवासना नाश करें हम, शैलेशी पद पाते हैं ।।
जंबूद्वीप वक्षार०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

नादि काल से षट्रस मिश्रित, व्यंजन खाते आए हैं ।
क्षुधा वेदनी के निर्मूलन, चरु जिनचरण चढ़ाए हैं ।।
जंबूद्वीप वक्षार०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

लौकिक दीपक जग के सारे, मिथ्यातम नहिं हर पाते ।
चेतन का त्रय तिमिर मिटाने, दीप चढ़ा चिद् सुख पाते ।।
जंबूद्वीप वक्षार०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

सु धूप दशांगी अग्नि खेते, वातावरण सुवासित हो ।
जिनचरणों में अर्पण करके, द्रव्य कर्म वसु नाशित हो ।।
जंबूद्वीप वक्षार०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

जग के सारे फल पाकर भी, जीवन निष्फल ही रहता ।
फल जिनवर को भेंट करूँ तो, चेतन में चिरसुख बहता ।।
जंबूद्वीप वक्षार०

SarvatoPooja / 16

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

वसुविध द्रव्य मिलाकर हमने, उत्तम अर्घ्य बनाया है ।
पद अनर्घ्य के पाने हेतू, जिनपद आज चढ़ाया है ।।
जम्बूद्वीप वक्षार गिरि के, सकल जिनालय का वंदन ।
क्षायिक भाव नित्य पाने को, करूँ चैत्य जिन अभिनंदन ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–**गिरि वक्षार सु चैत्य जिन, जंबूद्वीप विशेष ।**
जो पूजें नित भाव से, बनते सिद्ध महेश ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–**जम्बूद्वीप विदेह में, गिरि वक्षार महान ।**
वहाँ विराजित देव जिन, करें पाप की हान ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

चउबोला छंद

'चित्रकूट' वक्षार गिरी शुभ, स्वर्णमयी आभा लगती ।
अकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय, को पूजे सारी जगती ।।
सीता नदी के उत्तर तट पर, गिरि वक्षार सुशोभित हैं ।
सिद्धकूट पर चैत्यालय जिन, बिंबों पर मन मोहित है ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थसीतानद्युत्तरतटे चित्रकूटवक्षारपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

'पद्मकूट' वक्षार जिनालय, भविचित पद्म विकास रहे ।
पुण्य सातिशय प्राप्त करे फिर, उसकी महिमा कौन कहे ।।
सीता नदी के उत्तर०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थसीतानद्युत्तरतटे पद्मकूटवक्षारपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

स्वर्णमयी वक्षारगिरी का, 'नलिन' सुपावन नाम कहा ।
ऋद्धीधारी नगन दिगम्बर, मुनी शैल पर जजें अहा ।।
सीता नदी के उत्तर०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थसीतानद्युत्तरतटे नलिनकूटवक्षार-पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

'एकशैल' वक्षारगिरी पर, सुर खग नित्य सु आवत हैं ।
श्री जिन मुद्रा के दर्शन कर, निज सम्यक्त्व दृढ़ावत हैं ।।
सीता नदी के उत्तर तट पर, गिरि वक्षार सुशोभित हैं ।
चित्रकूट पर चैत्यालय जिन, बिंबों पर मन मोहित है ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थसीतानद्युत्तरतटैकशैलवक्षारपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

शंभु छंद (तर्ज–सुर नर किन्नर)

वक्षारगिरी 'त्रिकूट' शिख पर, नभचुंबित शिखरों से शोभित ।
जिन चैत्यालय चित शुद्ध करें, भविजन को करते हैं मोहित ।।
सीता नदि के दक्षिणतट पर, वक्षारगिरी चउ राजित हैं ।
नदी ओर के सिद्धकूट पर, जिनगृह जिनवर साजित हैं ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे त्रिकूटाचलवक्षार-पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

'वैश्रवण' गिरि जो स्वर्णमयी, जिन मंदिर की शोभा भारी ।
इनका अर्चन पूजन करके, कर लो शिवपुर की तैयारी ।।
सीतानदी के दक्षिण॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे वैश्रवणवक्षार-पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

वक्षारगिरी 'अंजन आत्मा', है स्वर्णमयी आभा वाला ।
इनका दर्शन वा चिंतन शुभ, नाशे विधि का अंजन काला ।।
सीतानदी के दक्षिण॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटेऽञ्जनात्मावक्षार-पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

'अञ्जनगिरि' के शिख की शोभा, जिनवर से मानी जाती है ।
इसलिए मुनि सुरनर द्वारा, वह वंदनीय कहलाती है ।।
सीतानदी के दक्षिण॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटेऽञ्जनगिरिवक्षार-पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

SarvatoPooja / 17

जय 'श्रद्धावान' वक्षार गिरि, शुभ सिद्धकूट के जिन मंदिर ।
श्रद्धा से शीश नवाकर हम, ध्यावें निज को निज के अंदर ।।
सीतोदा के दक्षिण तट पर, वक्षार गिरी उत्तुंग महा ।
पनशत योजन ऊपर जिनगृह, जिनवर जजते हम नित्य अहा ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे श्रद्धावान्वक्षार-पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

'विजटावान्' सिद्धकूट न्यारा, महिमा जिसकी गणधर गाते ।
धनु पंच शतक अवगाहन युत, जिनवर जजकर भवि सुख पाते ।।
सीतोदा के दक्षिण॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे विजटावान्-वक्षारपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

'आशीविष' गिरि वक्षार महा, जिस पर अकृत्रिम चैत्यालय ।
शाश्वत जिन निज आलय धरके, पा जाऊँ शाश्वत सिद्धालय ।।
सीतोदा के दक्षिण॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे आशीविष-वक्षारपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

वक्षार शैल शुभ 'सुखावह', जिसके शिख से सुख बहता है ।
क्योंकि जिन वीतराग गिरि का, मुख स्रोत भवन में रहता है ।।
सीतोदा के दक्षिण॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे सुखावहवक्षार-पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

है 'चन्द्रमाल' वक्षार सुभग, नख से शिख तक जो स्वर्णमयी ।
जिन चैत्यालय वंदन करके, आतम अनुभूति पाऊँ नई ।।
पश्चिम विदेह सीतोदा के, उत्तर तट चउ वक्षार बसे ।
जज सिद्धकूट के शाश्वत जिन, भवि शाश्वत कर्मारण्य नशें ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानद्युत्तरतटे चन्द्रमालवक्षार-पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

'सूर्यमाल' वक्षार शैल ज्यों, कंचन सूर्य उगा कोई ।
जिन चैत्यालय जो भी अर्चे, है बड़भागी जग में वो ही ।।
पश्चिम विदेह सीतोदा के उत्तर॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानद्युत्तरतटे सूर्यमालवक्षार-पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

है 'नागमाल' वक्षार अचल, जहँ सुर नर मुनि विहरण करते ।
हम भी प्रत्यक्ष शुभ दर्श लहें, तातें परोक्ष जिन चित् धरते ।।
पश्चिम विदेह सीतोदा के, उत्तर तट चउ वक्षार बसे ।
जज सिद्धकूट के शाश्वत जिन, भवि शाश्वत कर्मारण्य नशें ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानद्युत्तरतटे नागमालवक्षार-पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

है 'देवमाल' वक्षार अचल, जहँ जिन मन्दिर ज्यों दिव्यमणी ।
हम भी वसु द्रव्य लिए जजते, जिसको पूजें सब देवगणी ।।
पश्चिम विदेह॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानद्युत्तरतटे देवमालवक्षार-पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

पूर्णार्घ्य

इंद्रवज्रा छंद

जंबू सुवक्षार गिरि महा है,
चैत्यालया सोलह ही वहाँ हैं ।
पूजा करूँ नित्य सुभक्ति देवा,
पाऊँ पुनः शाश्वत मोक्ष मेवा ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिषोडशवक्षारगिरिस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य - ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः ।

जयमाला

घत्ता–वक्षार जिनिंदा, जजें मुनिंदा, नर पुंगव अरु इंद्र जजें ।
नशते औदायिक, लहते क्षायिक, पारिणामिक सु नित्य भजें ।।

नरेन्द्र छंद (तर्ज - रोम रोम से..)

जंबुद्वीप सु विदेह क्षेत्र में, गिरि वक्षार लुभाए ।
क्षेत्र विदेहा करें विभाजित, सोलह सब मन भाए ।।

SarvatoPooja / 18

आठ पूर्व में आठ प्रतीची, कनकमयी गुणकारी ।
स्वर्णवेदि बहु विपिनों से युत, पर्वत ये मनहारी ।।

सीता नदी के उत्तर तट पर, चित्रकूट गिरि भाए ।
पद्मकूट नलिन एकशैल सु, चार कूट कहलाए ।।
अरु सीता के दक्षिण तट पर, त्रिकुट वैश्रवण गिरिवर ।
अंजनात्म अरु अंजन जाने, जिन पर राजित जिनवर ।।

सीतोदा के दक्षिण तट पर, श्रद्धावान् विजटावान् ।
आशीविष अरु गिरी सुखावह, मनु करि जिनवर गुणगान् ।।
सीतोदा के उत्तर तट पर, चंद्रमाल अति सोहे ।
सूर्यमाल अरु नागमाल युत, देवमाल मन मोहे ।।

कुलाचलों के पार्श्वभाग में, चार शतक ये ऊँचे ।
क्रमशः बढ़ते नदी के तट पर, पाँच शतक हैं ऊँचे ।।
हर पर्वत पर एक-एक शुभ, सिद्धकूट सुखकारी ।
जिन पर रत्नमयी जिनगेहा, भव्यों के अघहारी ।।

क्षायिक सम्यक् क्षायिक चारित, जिनभक्ती से पाऊँ ।
अति विशुद्ध निर्मल मन करके, क्षपक श्रेणि चढ़ जाऊँ ।।
सुख करता दुख हरता निश्चित, जिन सदनों का वंदन ।
भाव भक्ति युत शुभ भावों से, नशता भव विधि बंधन ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

६

जंबूद्वीपस्थ गजदंत पर्वत जिनालय पूजन

अथ स्थापना

दोहा

गजदंता आकार शुभ, चउ गजदंत विशाल ।
सिद्ध आयतन शोभते, गज गिरिवर के भाल ।।
सर्व चैत्य जिनवर सदन, पाप विनाशक जान ।
आह्वानन करि भक्तिवश, पूजूँ करूँ विधान ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

त्रिभंगी छंद (तर्ज - जिनवाणी पूजन)

सुरसरि शुभनीरं, निर्मल क्षीरं, शीत समीरं सम शीतल ।
त्रय रोग नशाऊँ, नीर चढ़ाऊँ, जिनगुण गाऊँ जगतीतल ।।
जिनगृह गजदंता, सिद्ध महंता, पूज भदंता अविकारी ।
जय श्री अरिहंता, कलिविधि अंता, सुगुण अनंता हितकारी ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

मलयागिरि चंदन, हरता क्रंदन, करि जिनवंदन सुखकारी ।
जिन चरण चढ़ाता, पाप नशाता, प्रभु गुण गाता अघहारी ।।
जिनगृह गजदंता०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

SarvatoPooja / 19

उज्ज्वल शुभ तंदुल, रविज्योतिर्कुल, सम जिनचरणों में लाए ।
अक्षय पद पाएँ, पाप नशाएँ, जिनभक्ति कर हर्षाए ।।
जिनगृह गजदंता, सिद्ध महंता, पूज भदंता अविकारी ।
जय श्री अरिहंता, कलिविधि अंता, सुगुण अनंता हितकारी ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

शुभ पुष्प सुकोमल, शुद्ध मनोबल, करके जिनवर चरण धरें ।
निज काम नशावें, निजगुण पावें, नवलब्धि अति शीघ्र वरें ।।
जिनगृह गजदंता०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

स्वादिष्ट सुव्यंजन, जनमनरंजन, जिन पद पूजन नित्य रचा ।
सब क्षुधा नशाऊँ, निज रस पाऊँ, जिनगुण गाऊँ धूम मचा ।।
जिनगृह गजदंता०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

गौघृत शुभदीपं, ज्ञान प्रदीपं, जजें महीपं भक्ति वरा ।
जिनपद नित वंदन, करुँ शुभ स्पंदन, ममचितनंदन नित्य हरा ।।
जिनगृह गजदंता०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

शुभ धूप दशोविध, कर्म बहूविध, के नाशन हितु खेवत हैं ।
जिनवर पद अर्चन, सुगुण सुचर्चन, मुक्ति हेतु नित सेवत हैं ।।
जिनगृह गजदंता०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

सर्वोत्तम श्रीफल, अन्य ऋतूफल, सुरस सुगंध सुसारमयी ।
मन सुकृत जागे, जिनपद आगे, नित्य चढ़ा लहुँ सिद्ध मही ।।
जिनगृह गजदंता०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

बहु द्रव्य मिलाके, अर्घ्य बनाके, थाल सजाकर जिन चर्चे ।
वसु द्रव्य सुशुद्धी, मनोविशुद्धी, भाव भक्ति युत नित अर्चे ॥
जिनगृह गजदंता, सिद्ध महंता, पूज भदंता अविकारी ।
जय श्री अरिहंता, कलिविधि अंता, सुगुण अनंता हितकारी ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा–करि भदंत जिन अर्चना, नाशे सर्व कलेश ।
चैत्यभवन जिनदेव के, वंदूँ त्रिविध हमेश ॥

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा-जंबुद्वीप में मानिए, चउ गजदंत महान् ।
तिनके जिनगृह जिन जजूँ, बनूँ नित्य गुणवान् ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

हरिगीतिका छंद

गिरिवर सुमेरू ईशान में, गजदंत माल्यवान् है ।
सीता नदी जिसकी गुफा से, निकल करति विभाग है ॥
तिस पर सुमेरु के निकट शुभ, सिद्धकूट महान है ।
उस पर जिनालय बिंब शाश्वत, पूजता अघहान है ॥

ॐ ह्रीं सुमेरुपर्वतेशानदिग्माल्यवान्गजदन्तपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

गिरि मेरु के आग्नेय में गजदंत मह सौमनस है ।
है व्यास पाँच शतक सुयोजन, नित्य भक्ती सरस है ॥ तिस॰

ॐ ह्रीं सुमेरुपर्वताग्नेयदिग्महासौमनसगजदन्तपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

गिरि मेरु के नैऋत्य में, गजदंत विद्युत्प्रभ कहा ।
जिसकी गुफा से निकल सीतोदा नदी जाती अहा ॥ तिस॰

SarvatoPooja / 20

ॐ ह्रीं सुमेरुपर्वतनैऋत्यदिग्विद्युतप्रभगजदन्तपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

गिरि मेरु के वायव्य में है, गंधमादन वर्षधर ।
शुभ स्वर्ण आभा युत जहाँ पर, देव रहते मोदधर ॥ तिस॰

ॐ ह्रीं सुमेरुपर्वतवायव्यदिग्गन्धमादनगजदन्तपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

पूर्णार्घ्य

स्वागत छंद

हस्तिदंत गिरि चार बताए, नित्य चैत्य रु जिनालय गाएँ ।
आठ द्रव्य युत पूज रचाएँ, भाव भक्ति वश शीश झुकाएँ ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिचतुर्गजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य - ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता–शुभ हस्तिदंतगिरी, स्वर्णमयगिरी, चउ मंदिर जहँ शोभित हैं ।
सद्कृत शुभ पाने, पाप नशाने, चित्त सभी का मोहित है ॥

नरेन्द्र छंद

जंबुदीप गजदंत सुशोभित, चार शैल मनहारी ।
उत्तर देव कुरू करि भाजित, ताकी शोभा न्यारी ॥
विदिशाओं में शैल मनोहर, मेरू की शुभ राजे ।
जिन पर उत्तम शाश्वत मंदिर, सुवरण मणिमय साजे ॥

शुभ ईशान अग्नि नैऋत्ये, वायु कोण में जानो ।
माल्यवान् अरु महासौमनस, विद्युत्प्रभ पहचानो ॥
गंध सुमादन चार सुपर्वत, मानो आतप हरते ।
मेरू से गिरि नील निषध तक, संस्पर्शित नित करते ॥

वैडूर्यमयी गिरी रूप्यमय, तप्त कनक अरु स्वर्णिम ।
क्रम से गिरी वर्ण शुभ माने, सर्व शैल में अग्रिम ।।
कुलाचलों के पार्श्वभाग में, चउशत योजन ऊँचे ।
मेरू पार्श्वभाग में योजन, पाँच शतक हैं ऊँचे ।।

इन ही पर इक-इक जिनमंदिर, नादिकाल से माने ।
नीर नयनमय भाव भक्तिमय, इनकी पूज रचाने ।।
आया अतिशय पुण्य उदय से, दर तेरे जिननाथा ।
तव स्वरूप को पाने तव पद, धरूँ सदा निज माथा ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिचतुर्गजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(७)

जंबूद्वीपस्थ विजयार्द्ध जिनालय पूजन

अथ स्थापना

चउबोला छंद

जंबूद्वीप सुकरम भूमि में, चौंतिस शुभ विजयार्द्ध कहे ।
जिनमंदिर शोभित हैं तिन पर, नित्य अकृत्रिम बिंब रहे ।।
जिनमंदिर जिनबिंबों की हम, अर्चन करने आये हैं ।
आह्वानन कर निर्मल उर से, जिन निज हृदय बसाए हैं ।।

दोहा—रजताचल जिनबिंब गृह, नित्य पुण्य आधार ।
द्रव्य वसू ले पूजहूँ, करें देव जयकार ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

(दोहा)

क्षीरोदधि का नीर शुभ, नाशे तन का मैल ।
जिनपद नीर चढ़ाय के, पाऊँ शिवपद गैल[१] ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

देह ताप चंदन हरे, क्षेत्र सुवासित होय ।
जिन पद अर्चन जे करें, रहे पाप ना कोय ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

अक्षत से अक्षत लहूँ, शाश्वत शुद्ध स्वरूप ।
अक्षत जिनपद भेंटकर, लखूँ शुद्ध चिद्रूप ।।

१. मार्ग

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

सुमनों सम निज मन बना, सब ऋतु सुमन चढ़ाय ।
जिनवर अर्चन नित करूँ, कामवंश नशि जाय ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

क्षुधा वेदनी मेटने, चढ़ा शुद्ध नैवेद्य ।
परम निरोगी मैं बनूँ, पा उत्तम जिन वैद्य ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

दीपक तम को नाशता, जग में करे उजास ।
जिनपद दीपक जे धरें, लहें बोधि परकाश ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

अशुभ करम फल धूप सम, अग्नि देय जलाए ।
त्रिविधि नाश निश्चित करूँ, सहज सुगुण प्रगटाय ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

शिवफल को मैं नित चहूँ, मिला न उसका रुक्ष ।
रत्नत्रय शिव देत हैं, वरूँ श्रेष्ठ यह वृक्ष ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

वस्तु का है अर्घ्य इत, चिद् गुण अनरघ होय ।
तासों वसुविधि से जजूँ, मम चित शिवमय होय ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

सोरठा

नेक जिनालय जान, चौंतीसों विजयार्द्ध में ।
लहूँ स्वात्म शुभ ज्ञान, मैं पूजूँ नित भाव से ॥

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–रजताचल पर शोभते, चैत्यालय अघहान ।
श्री जिनवर को पूजकर, पाऊँ केवलज्ञान ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अडिल्ल छंद (तर्ज - सोलह कारण पूजन)

सीता के उत्तर तट 'कच्छा' देश है ।
जैन धर्म का पग पग पर परिवेश है ॥
रूप्याचल पर शाश्वत जिनगृह भाल है ।
अर्घ्य चढ़ाऊँ जिन अर्चन शुभ ढाल है ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसीतानद्युत्तरतटे कच्छादेशमध्यविजयार्द्धपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

देश 'सुकच्छा' शोभित वापि तरु वन से ।
पावन धरती ऋषि यति आदि विचरण से ॥ रूप्याचल०

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसीतानद्युत्तरतटे सुकच्छादेशमध्यविजयार्द्धपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

देश 'महाकच्छा' शाश्वत शिवथान है ।
जिनमुद्रा धारण कर हो भगवान है ॥ रूप्याचल०

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसीतानद्युत्तरतटे महाकच्छादेशमध्यविजयार्द्धपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

देश 'कच्छकावती' मध्य गिरिराज है ।
सुर पूजन कर पाते शिव साम्राज हैं ॥ रूप्याचल०

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसीतानद्युत्तरतटे कच्छकावतीदेशमध्यविजयार्द्धपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

'आवर्ता' शुभ देश न मिथ्या मत कोई ।
जिन पूजा से भवि ने पाप विधि खोई ॥ रूप्याचल०

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसीतानद्युत्तरतटे आवर्तादेशमध्यविजयार्द्धपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

'लांगल आवर्ता' में मारि ना होती ।
इकशत तैंतिस दिन, वहाँ वर्षा होती ॥ रूप्याचल०

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसीतानद्युत्तरतटे लांङ्गलावर्तादेशमध्यविजयार्द्धपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

देश 'पुष्कला' जिनवर वृष सदा रहता ।
भवि को मोक्ष मारग नित्य खुला रहता ॥ रूप्याचल०

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसीतानद्युत्तरतटे पुष्कलादेशमध्यविजयार्द्धपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

देश 'पुष्कलावती' भक्ति भरपूर है ।
चारित धर मुनि करते विधि चकचूर हैं ॥ रूप्याचल०

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसीतानद्युत्तरतटे पुष्कलावतीदेशमध्यविजयार्द्धपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

सीता महानदि के दक्षिण तट जानो ।
'वत्सा' देश वृष वत्सल से युत मानो ॥ रूप्याचल०

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे वत्सादेशमध्यविजयार्द्धपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

देश 'सुवत्सा' में देव सब आते हैं ।
श्री अरिहंत प्रभु की पूज रचाते हैं ॥ रूप्याचल०

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे सुवत्सादेशमध्यविजयार्द्धपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥10॥

देश 'महावत्सा' में बस जिनधर्म है ।
अनुपालन कर पाए भवि शिवशर्म है ॥ रूप्याचल०

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे महावत्सादेशमध्यविजयार्द्धपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥11॥

देश 'वत्सकावती' सुहानी लगती है ।
जिनवर भक्ति सर्व सुखों से भरती है ॥ रूप्याचल०

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे वत्सकावतीदेशमध्यविजयार्द्धपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥12॥

'रम्या' देश नहीं दुर्भिक्ष वहाँ होता ।
जिन शरणागत भवकानन में न खोता ॥ रूप्याचल०

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे रम्यादेशमध्यविजयार्द्धपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥13॥

SarvatoPooja / 23

देश 'सुरम्यक' शुभ नगर परकोटों से ।
जिन भक्ति से बचता कर्मनि चोटों से ॥
रूप्याचल पर शाश्वत जिनगृह भाल है ।
अर्घ्य चढ़ाऊँ जिन अर्चन शुभ ढाल है ॥

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे सुरम्यकदेशमध्यविजयार्द्धपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥14॥

पूर्वकोटि[1] 'रमणीया' जन्मज की आयु ।
मुनि के कर्म नशाती ध्यान तीक्ष्ण वायु ॥ रूप्याचल०

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे रमणीयादेशमध्यविजयार्द्धपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥15॥

देश 'मंगलावति' सदा ही सुखकारी ।
समवशरण कि शोभा अद्‌भुत अनियारी ॥ रूप्याचल०

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे मङ्गलावतीदेशमध्यविजयार्द्धपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥16॥

सीतोदा के दक्षिण तट पर जानिए ।
भद्रसाल के निकट हु 'पद्मा' मानिए ॥
मध्यनि रजताचल पर जिनगृह शाश्वता ।
सिद्धकूट पर चैत्य जजूँ जिन शासता ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे पद्मादेशमध्यरजताचलस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥17॥

देश 'सुपद्मा' सप्त ईतियों हीन है ।
कर्म नाशने आत्मध्यान मुनि लीन है ॥ मध्यनि०

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे सुपद्मादेशमध्यरजताचलस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥18॥

देश 'महापद्मा' असि मसि कृषि आदि है ।
चौथावत् शुभ काल महान अनादि है ॥ मध्यनि०

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे महापद्मादेशमध्यरजताचलस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥19॥

---

१. उत्कृष्ट आयु एक पूर्वकोटि प्रमाण

देश 'पद्मकावती' जन्मता जो नरा ।
पाँच शतक धनु ऊँचा वो होता वरा ।।
मध्यनि रजताचल पर जिनगृह शाश्वता ।
सिद्धकूट पर चैत्य जजूँ जिन शासता ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे पद्मकावतीदेशमध्यरजताचलस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

'शंखा' देशनि धर्म शंख का घोष है ।
तीर्थंकर का वहाँ सदा उद्घोष है ।। मध्यनि०

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे शङ्खादेशमध्यरजताचलस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

'नलिनी' देश में चक्रवर्ती हलधरा ।
होते रहते तीर्थंकर आदिक वरा ।। मध्यनि०

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे नलिनीदेशमध्यरजताचलस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

'कुमुद' देश में जिनमंदिर चहुँ ओर हैं ।
मात्र एक ही जैन धर्म का शोर है ।। मध्यनि०

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे कुमुददेशमध्यरजताचलस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

'सरित' देश में केवलज्ञान प्रकाश है ।
ऋद्धिधारी यतियों का नित्य वास है ।। मध्यनि०

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे सरितदेशमध्यरजताचलस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

सीतोदा के उत्तर तट पर शोभिता ।
देशनि 'वप्रा' सुर नर किन्नर मोहिता ।। मध्यनि०

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसीतोदानद्युत्तरतटे वप्रादेशमध्यरजताचलस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।25।।

देश 'सुवप्रा' छह खंडों युत जानिए ।
एक आर्य अरु पाँच म्लेच्छ शुभ मानिए ।। मध्यनि०

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसीतोदानद्युत्तरतटे सुवप्रादेशमध्यरजताचलस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।26।।

देश 'महावप्रा' में भव्य शिव पाते ।
श्रेणी क्षपक सुचढ़ मुनि मुक्ति परिणाते ।।
मध्यनि रजताचल पर जिनगृह शाश्वता ।
सिद्धकूट पर चैत्य जजूँ जिन शासता ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसीतोदानद्युत्तरतटे महावप्रादेशमध्यरजताचलस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।27।।

देश 'वप्रकावती' कुदेव कुलिंग ना ।
जिनवर पूजें तो होवे विधि बंधना ।। मध्यनि०

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसीतोदानद्युत्तरतटे वप्रकावतीदेशमध्यरजताचलस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।28।।

'गंधा' देशनि भक्ति अर्चन में झूमें ।
जिन दर्शन कर भव दुख को पुनि न चूमे ।। मध्यनि०

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसीतोदानद्युत्तरतटे गन्धादेशमध्यरजताचलस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।29।।

देश 'सुगंधा' साधु मुनि विचरण करते ।
अष्ट कर्म कर नाश मुक्ति रमा वरते ।। मध्यनि०

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसीतोदानद्युत्तरतटे सुगन्धादेशमध्यरजताचलस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।30।।

देश 'गंधिका' धर्मी को सुख खान है ।
जिनशासन को पा करते अघहान हैं ।। मध्यनि०

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसीतोदानद्युत्तरतटे गन्धिकादेशमध्यरजताचलस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।31।।

'गन्धमालिनी' देश सबमें न्यारा है ।
जिन भक्तों को मिले जगत् किनारा है ।। मध्यनि०

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसीतोदानद्युत्तरतटे गन्धमालिनीदेशमध्यरजताचलस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।32।।

लोलतरंग छंद—भारत क्षेत्र सुमध्यनि सोहे,
श्री रजताचल चित्त सुमोहे ।
चैत्य जिनालय शाश्वत वंदूँ,
पूजन से नित मैं अति नंदूँ ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थभरतक्षेत्रसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।33।।

क्षेत्र एरावत मध्य कहा है ।
रूप्यगिरि शुभ तुंग महा है ।। चैत्य०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थैरावतक्षेत्रसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।34।।

पूर्णार्घ्य

नाराच छंद

रूप्य शैल पे सदा हि, सिद्ध कूट शोभते ।
चैत्य गेह चैत्य बिंब, नित्य चित्त मोहते ।।
रत्न अर्घ्य लायके, जिनेंद्र पाद में धरूँ ।
भक्ति अस्त्र लेय कर्म, पे प्रहार मैं करूँ ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिचतुस्त्रिंशद्विजयार्द्धपर्वतस्थजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य - ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता

हो अशुभ करम क्षय, लहूँ श्रेष्ठ जय, विजयारध जिन को वंदन ।
श्रद्धा पारसमणि, जीव अयस गनि, मम चेतन तुम हो कुंदन ।।

नरेन्द्र छंद (तर्ज - पीछी रे पीछी)

जंबुदीप में कर्मभूमि में, गिरि विजयार्द्ध सुहाना ।
एक भरत इक ऐरावत में, आगम में यूँ जाना ।।
हैं चौंतीस विदेह क्षेत्र में, सुंदर ये रजताचल ।
इनके ही नीचे गुफायें दो, नदियाँ करती कलकल ।।

पूरब से पश्चिम में फैले, क्षेत्र भाग दो भाजित ।
हैं पचास योजन विस्तृत ये, उत्तर दक्षिण साजित ।।
कुल पच्चीस योजनोत्तुंगा, कहे वर्षधर सारे ।
तीन-तीन शुभ खंड शैल के, इधर-उधर हैं न्यारे ।।

दक्षिण उत्तर दस दस योजन, छोड़ी कटनी प्यारी ।
दस योजन ऊपर जाकर मधि, तीस सु योजन धारी ।।
पुनि दस योजन ऊपर छोड़े, कटनी दस दस योजन ।
दस योजन उत्तर दक्षिण फिर, पर्वत शुभ संयोजन ।।

दूजी कटनी के पन योजन, ऊपर शिखर कहाए ।
नौ नौ कूट सुशोभित होते, जिनवृष गाथा गाएँ ।।
प्रथम कूट पर विद्याधर राजा के नगर बताए ।
दक्षिण श्रेणी में पचास, उत्तर में आठ सु गाए ।।

किन्तु भरत औ ऐरावत के, गिरी नगर हैं ऐसे ।
विदेह क्षेत्र में पचपन पचपन, दोउ श्रेणि में वैसे ।।
एक शतक दश नगर सुशोभित, वेदी रम्यवनों से ।
परिचालित रहते प्रतिक्षण जो, विद्याधारि जनों से ।।

दूजी कटनी अभियोग्य देवों के नगर बसाए ।
मणिमयपुर में देव रहें नित जिन गुण महिमा गाएँ ।।
शैल शिखर पर कांचनमय नव, कूट अती सुखदायी ।
सिद्धायतन सुपूर्वदिशागत, पर जिनमंदिर भाई ।।

नादि निधन चौंतीस गिरी पर, चौंतिस शुभ चैत्यालय ।
इन सबको जो वंदन करता, वो निश्चित पुण्यालय ।।
सभी जिनालय जिन का अर्चन, कर मैं अति सुख पाऊँ ।
शाश्वत चैत्यालय चैत्यों को, आँख मूंद नित ध्याऊँ ।।

दोहा - **जिनवर की शुभ अर्चना, भवदधि पार लगाए ।**
सम्यक् श्रद्धा ज्ञान व्रत, धरि कर मुक्ति पाये ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।33।।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

८

जंबूद्वीपस्थ जंबूशाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजन

अथ स्थापना

(चउबोला छंद)

श्रीजी युत शुभ श्रेष्ठ तरूवर, जंबू शाल्मलि रूक्ष महान् ।
तिन पर राजित शाश्वत जिनगृह, अर्हत् सिद्ध आदि भगवान् ।।
अति निर्मल परिणाम बनाकर, जिन पूजन को आए हैं ।
निज शक्ति सम द्रव्य वसु ले, पावन अवसर पाए हैं ।।

दोहा—**आह्वानन करता प्रभो, करो सदा उर वास ।**
अपने उत्तम दास को, रखो सदा निज पास ।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षसम्बन्धिजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षसम्बन्धिजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षसम्बन्धिजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

आँचलीबद्ध चौपाई छंद

चंद्रकांति सम निर्मल वारि, जिन चरणों में दे त्रय धार ।
जजूँ जिनदेव, भक्त जिनत्व लहें स्वयमेव ।।
जंबु शाल्मलि वृक्ष उदार, ता पर जिनमंदिर सुखकार ।
जजूँ जिनदेव, भक्त जिनत्व लहें स्वयमेव ।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

बावन विध चंदन की गंध, जिनपद चढ़ा लहूँ निज गंध ।
जजूँ जिनदेव, भक्त जिनत्व लहें स्वयमेव ।। जंबु०

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

SarvatoPooja 03 / 26

मुक्ता फल सम अक्षत होय, जिन पद धरें मुक्ति सुख होय ।
जजूँ जिनदेव, भक्त जिनत्व लहें स्वयमेव ।।
जंबु शाल्मलि वृक्ष उदार, ता पर जिनमंदिर सुखकार ।
जजूँ जिनदेव, भक्त जिनत्व लहें स्वयमेव ।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सुरभित सुमन समूह सु लाय, जिनपद भेंट मदन नश जाय ।
जजूँ जिनदेव, भक्त जिनत्व लहें स्वयमेव ।। जंबु०

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

इष्ट मिष्ट मिष्ठान्न बनाय, क्षुधा नाशने नित्य चढ़ाय ।
जजूँ जिनदेव, भक्त जिनत्व लहें स्वयमेव ।। जंबु०

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

जगमंगलमय दीप जलाय, जिन पद भेंट लखूँ सिद्धाय ।
जजूँ जिनदेव, भक्त जिनत्व लहें स्वयमेव ।। जंबु०

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

दसविध धूप प्रदूषण खोय, जिनपद पूजें मंगल होय ।
जजूँ जिनदेव, भक्त जिनत्व लहें स्वयमेव ।। जंबु०

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

इस युग के फल श्रेष्ठ सु लाय, लहूँ स्वात्मपद भेंट चढाय ।
जजूँ जिनदेव, भक्त जिनत्व लहें स्वयमेव ।। जंबु०

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

निज शक्ति सम रतन मंगाय, वसुविध अर्घ्य चढ़ा हर्षाय ।
जजूँ जिनदेव, भक्त जिनत्व लहें स्वयमेव ।। जंबु०

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा - **जिनवर युत यह शुभ तरू, करता नम्र प्रणाम ।**
पूजन वंदन अर्चना, करता आठों याम ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–**जम्बू शाल्मलि वृक्ष पर, जिनगृह जिन भगवान् ।**
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, करूँ सुमंगलगान ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

कुंडलिया छंद

शोभित उत्तर कुरू में, जंबूवृक्ष महान ।
जिसकी उत्तर शाख पर, जिनगृह जिन भगवान् ।।
जिनगृह जिन भगवान्, अनादि निधन कहाए ।
रत्नमयी जिनबिंब, एक सौ आठ लुभाएँ ।।
तीन कोट जिन सदन, तिन पर देवनि मोहित ।
भेंट अर्घ्य जिनगेह, जिनवर शाश्वत शोभित ।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शनमेरुसम्बन्धिजम्बूवृक्षस्थोत्तरशाखायां जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

अनुपम देव सुकुरू में, शाल्मलि तरु अभिराम ।
जिसकी दक्षिण शाख पर, वंदूँ जिन शिवधाम ।।
वंदूँ जिन शिवधाम, अर्चन को मैं आया ।
जिन पूजा कर आज, मेरा चित हर्षाया ।।
जिनबिंबों की सौम्य, प्रशांत छवि अति निरुपम ।
रत्ननि अर्घ्य चढ़ाऊँ, श्री जिन स्वामी अनुपम ।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शनमेरुसम्बन्धिशाल्मलिवृक्षस्थदक्षिण शाखायां जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

पूर्णार्घ्य

प्रमानिका छंद

जिनार्चना सदा करूँ, सुजंबु शाल्मली तरू ।
सुअर्घ्य लेय अर्चता, सदा जिनेंद्र वंदता ।।

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शनमेरुसम्बन्धि जम्बूशाल्मलिवृक्षस्थसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

SarvatoPooja 03 / 27

जयमाला

घत्ता

जयवंत जिनालय, तरु चैत्यालय, शाश्वत जिनवर नित वंदूँ ।
जिनवर गुणगाऊँ, निजगुण पाऊँ, पुनि शिवभूमि आनंदूँ ।।

नरेन्द्र छंद (तर्ज : रोम रोम से...)

मेरू की ईशान दिशा में, उत्तर कुरु में प्यारी ।
जंबू वृक्ष की स्वर्णमयी इक, स्थली गोल अति न्यारी ।।
योजन पन शत व्यास सुतल का, योजन अर्द्ध सु ऊँची ।
योजन आठ मध्य में अंता, अर्द्ध योजना ऊँची ।।

उसके बीच पीठिका सोहे, ऊँचाई वसु योजन ।
योजन बारह भूमि व्यास है, मुखहु व्यास चउ योजन ।।
उसी पीठ पर आधा योजन, अति गहरी जड़ वाला ।
मरकतमणिमय पादपीठयुत, जम्बू वृक्ष निराला ।।

पीठ से दो योजन ऊँचा रु, एक कोस है चौड़ा ।
सुदृढ़ स्कंध रत्नमयी सोहे, मनु वैभव को ओढ़ा ।।
वज्रमयी चउ शाखा जिसकी, चौड़ी आधा योजन ।
वसु योजन लंबी है जिसको, देख अचंभित लोचन ।।

नाना रत्नमयी उपशाखा, से शोभित तरु कहते ।
मूँगा वर्णी पुष्प तथा फल, शुभ मृदंग सम रहते ।।
दस योजन ऊँचा ये पूरा, अग्रभाग चउ योजन ।
मध्यभाग में छः योजन मणि, रत्नों का संयोजन ।।

उत्तर कुरुगत शुभ शाखा पर, जिनचैत्यालय भाए ।
रत्नमयी मरकतमणि हीरकमय भवि चित्त लुभाए ।।
अन्य हि तीन दिशा में शोभित, देवों के आवासा ।
आदर और अनादर यक्षों, का है यहाँ निवासा ।।

मेरु के नैऋत्य देवकुरु, वृक्ष शाल्मली जो है ।
रत्नमयी स्थली पर वह भी, तीन पीठ पर सोहे ।।

तरु जंबू सी महिमा सारी, अरु प्रमान भी जानो ।
उसकी दक्षिण शाखा पर श्री, जिनमंदिर पहचानो ।।

शाल्मली तरु पर यक्ष वेणु, वेणुधारि का वासा ।
एक लाख चालिस हजार शत, बीस वृक्ष परिवारा ।।
अर्द्ध प्रमाण मुख्य दो तरु से, इत भी जिनगृह वंदन ।
जिनबिंबों को नमूँ भावयुत, है शत शत अभिनंदन ।।

दोनों मुख्य तरू के जिनगृह, अद्भुत अतिशयकारी ।
नासदृष्टि युत अति प्रशस्त जहँ, वीतरागता भारी ।।
आठ एक सौ बिंब हर भवन, पाँच शतक धनु ऊँचे ।
नंत बार श्रद्धा युत पूजूँ, श्री जिनदेव समूचे ।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 03 / 28

(१)

जंबूद्वीप भरतक्षेत्र भूतकालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

रूपक सवैया छंद

जय निर्वाण सिंधु महासाधु, विमल सुदत्त शिरीधर जान ।
अमल सु उद्धर अंगिर सन्मति, सिंधु कुसुमअंजलि पहचान ।।
शिवगण उत्सह ज्ञानेश्वर परमेश्वर विमलेश्वर गुणखान ।
यशधर कृष्ण ज्ञान श्री शुधमति, भद्र क्रांत जिन शांत महान ।।
दोहा—भाव सहित चौबीस जिन, भरत अतीत सुज्ञान ।
आह्वानन कर नित जजूँ, लहूँ सकल गुणखान ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

रूपक सवैया

शरद पूर्ण इंदु सम उज्ज्वल, क्षीरोदधि का नीर मंगाय ।
जिनवर चरण चढ़ाकर भविजन, जन्मादिक से मुक्ती पाय ।।
जंबुद्वीप के भरत क्षेत्र में, भूतकाल तीर्थंकर जान ।
श्री निर्वाण आदि की पूजा, करें भक्त वे बनें महान ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

देह ताप के नशने को भवि, चंदन का तन लेप लगाय ।
भवाताप के नाशन हेतू, हम चंदन जिन चरण चढ़ाय ।।
जंबुदीप०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

रत्नाकर के शुद्ध रतन सम, अक्षत लाये भर-भर थाल ।
अक्षयपद के प्राप्त करन को, चरण जजें हम भक्त त्रिकाल ॥
जंबुद्वीप॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

कुसुम काम का मर्दक माना, पंच बाण से वार करे ।
जिनपद पुष्प चढ़ाकर भविजन, शीघ्र ही भवदधि पार करें ॥
जंबुद्वीप॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

षट् रस के शुभ व्यंजन छप्पन, खाकर तृप्त न हो पाया ।
क्षुधा रोग को मूल नशाने, प्रभो पद धर मैं हर्षाया ॥
जंबुद्वीप॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

बाह्य तिमिर को चंद्र अर्क वा, ज्योतिष ग्रह अरु दीप हरें ।
नीराजन कर जिनवर पूजें, भवि निज अंतर तिमिर हरे ॥
जंबुद्वीप॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

जग में अष्ट गंध का सेवन, सबविध ही दुर्गंध नशाय ।
हम आतम की गंध सु पाने, जिन पद में शुभ हवन कराय ॥
जंबुद्वीप॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

जिस फल के बिन भवि प्राणी के, निष्फल ही सब जन्म कहाय ।
शुभ शिवफल पाने को भविजन, श्रीफल जिनवर चरण चढ़ाय ॥
जंबुद्वीप॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

सकल वस्तु का मूल्य जगत में, मुद्रा से ही ज्ञात कराय ।
पद अनर्घ ही नित अनर्घ है, अर्घ्य चढ़ा भवि को मिल जाय ॥
जंबुद्वीप के भरत क्षेत्र में, भूतकाल तीर्थंकर जान ।
श्री निर्वाण आदि की पूजा, करें भक्त वे बनें महान ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा—भूतकाल चौबीस जिन, निर्वाणादि विशेष ।
शुद्ध चित्त से नित जजूँ, पाऊँ पद तीर्थेश ॥

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा—जम्बूद्वीप महान में, क्षेत्र भरत शुभ थान ।
ताके भूत जिनेश को, नमन करूँ वसु याम ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अडिल्ल छन्द (सोलह कारण पूजन....)

प्रथम तीर्थंकर श्री 'निर्वाण' प्रभु महा ।
तिनकी पूजा भवदधि से तारे अहा ॥
जम्बुद्वीप के क्षेत्र भरत जिन चाव से ।
भूतकाल चौबीसी पूजूँ भाव से ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

दूजे प्रभु 'श्री सागर' जी सुख देत हैं।
हर दुख पीड़ा क्षण भर में हर लेत हैं ॥ जम्बुद्वीप॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सागरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

'महसाधु' शुभनाम साधुता लाता है।
रटे नाम जो साधु वह बन जाता है ॥ जम्बुद्वीप॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महासाधुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

'विमलनाथ' भगवान विमल कर दीजिए।
कर्म मलों से रहित अवस्था दीजिए ॥ जम्बुद्वीप॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

भूतकाल पंचम तीर्थंकर वरदानी ।
'श्रीधर' भक्ति कर श्रीयुत होते प्राणी ।। जम्बुद्वीप०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीधरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

श्री 'सुदत्त' प्रभु वंदन बारम्बार है ।
भक्ति आपकी देती सौख्य अपार है ।। जम्बुद्वीप०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुदत्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

मनमंदिर की वेदी पर प्रभु आइये ।
'अमलप्रभ' मम विमलमति कर जाईये ।। जम्बुद्वीप०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमलप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

'उद्धरदेव' कृपा हम पर भरपूर हो ।
ऊर्ध्वलोक हो गमन कर्म चकचूर हो ।। जम्बुद्वीप०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री उद्धरदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

'अंगिरनाथ' अनाथन के तुम नाथ हो ।
भजे भाव से निश्चित उसके साथ हो ।। जम्बुद्वीप०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अङ्गिरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

समीचीन मति होय शीघ्र कल्याण हो ।
पाने सन्मति 'सन्मति' देव प्रणाम हो ।। जम्बुद्वीप०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सन्मतिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

'सिंधुदेव' की अर्चा भव से तारती ।
सब दुखहर सब सुख को भवि पर वारती ।। जम्बुद्वीप०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिंधुदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

'कुसुमांजलि' पद पद्म कुसुम अर्पण करूँ ।
पाकर प्रभु पद रज सब अघ तर्पण करूँ ।। जम्बुद्वीप०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कुसुमाञ्जलिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

'शिवगण' प्रभु चरण से जो जोड़े नाता ।
सिद्धपुरि का सीधा मारग अपनाता ।। जम्बुद्वीप०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री शिवगणजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

SarvatoPooja 03 / 30

'उत्साह' विभु नाम जाप सुख पाने का ।
भरता है उत्साह शिवपुर जाने का ।।
जम्बुद्वीप के क्षेत्र भरत जिन चाव से ।
भूतकाल चौबीसी पूजूँ भाव से ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री उत्साहजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

'ज्ञानेश्वर' प्रभु ज्ञानमयी मम कर दिया ।
उजियारा हर भवि के मन में भर दिया ।। जम्बुद्वीप०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्ञानेश्वरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

परम अवस्था पाई तव 'परमेश्वरा' ।
मेरे भी दुःख मिटे जन्म-मृत्यु-जरा ।। जम्बुद्वीप०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमेश्वराजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

'विमलेश्वर' प्रभु भूतकाल तीर्थंकरा ।
पुण्यवान नर पूजें तव क्षेमंकरा ।। जम्बुद्वीप०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विमलेश्वरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।17।।

देव 'यशोधर' नाथ आपके ध्यान से ।
बन जाते हैं शीघ्र भक्त भगवान से ।। जम्बुद्वीप०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री यशोधरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

'कृष्णमति' भगवान आप पद जो आते ।
कर्मों के काले बादल सब छट जाते ।। जम्बुद्वीप०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कृष्णमतिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

बहे ज्ञान की धार भविक भव पार हो ।
'ज्ञानमती' भगवान नमन सौ बार हो ।। जम्बुद्वीप०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्ञानमतिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

'शुद्धमती' जिनदेव छवि मन भाई है ।
शुद्धभाव युत हमने पूज रचाइ है ।। जम्बुद्वीप०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री शुद्धमतिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

'भद्रदेव' भगवान् भद्रता देते हैं ।
हर प्राणी के दुख पल में हर लेते हैं ।। जम्बुद्वीप०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री भद्रदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

'अतिक्रान्त' जिनदेव चिंतित फल दाता।
मनवांछित फल पाय भवि को सुखसाता ।।
जम्बुद्वीप के क्षेत्र भरत जिन चाव से ।
भूतकाल चौबीसी पूजूँ भाव से ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अतिक्रान्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

'शान्तनाथ' जिन सु प्रसाद को पाकर के।
शांत होय सब दुख शरण में आकर के ।। जम्बुद्वीप०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शान्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

पूर्णार्घ्य

लोलतरंग छंद

श्री जिन तीर्थ सुनायक देवा,
भाव यही कर लूँ तव सेवा ।
चौबिस भूत जिनेन्द्र कहे हैं,
अर्घ चढ़ा भवि सौख्य लहे हैं ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणादिशान्तजिनपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता

चौबीस जिनंदा, सुरपति वंदा, सौख्यनिकंदा हितकारी ।
हम जजें रात दिन, करें भक्तिजिन, रहें चरण नित बलिहारी ।।

नाराच छंद

सु जंबुद्वीप के प्रणाम हो सदा जिनेश्वरा,
अतीतकाल के महान् चारबीस ईश्वरा।
जयो सदा जिनेन्द्र अष्ट प्रातिहार्य युक्त हो,
जयो सदा जिनेन्द्र सर्व कर्मतैं विमुक्त हो ।।

SarvatoPooja 03 / 31

जयो सदा जिनेन्द्र वीतराग वीतद्वेष हो,
जयो सदा जिनेन्द्र वीतमोह वीतदोष हो ।
जयो सदा जिनेन्द्र इष्ट देव इष्ट पूरते,
जयो सदा जिनेन्द्र भक्ति युक्त होय पूजते ।।

जयो सदा जिनेन्द्र जैन धर्म का प्रचार हो,
जयो सदा जिनेन्द्र कर्म शत्रु पे प्रहार हो।
समत्व भाव नित्य हो, समत्व आत्म धर्म हो,
चरित्र धार भावना फले जु मोक्ष शर्म हो ।।

अनेक अंत युक्त वस्तु तत्त्व को बखानते,
प्रमाण रूप दिव्य वाणी मोक्ष मार्ग भाषते।
जिनेन्द्र देव धर्म तीर्थ का करे प्रवर्तना,
लखूँ निजात्म रूप दिव्य शीघ्र ये हि अर्थना ।।

दोहा—चौबीसों जिनवर नमूँ, भूतकाल भगवान ।
क्षिति अष्टम मैं भी लहूँ, पाऊँ आत्म निधान ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(१०)

जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र वर्तमानकालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

हरिगीतिका छंद

चउवीस श्री जिनदेव मंगल, हैं सदा जग उत्तमा ।
उर पद्म पर जब हो विराजित, नष्ट हो अघ का तमा ।।
शुभ भाव युक्त सुभक्ति थापित, मैं करूँ निज चित्त में ।
भव नाश कर्मन काट के सु प्रवेश हो शिव दुर्ग में ।।
दोहा–वृषभादि चौबीस जिन, मंगल रूप महान ।
आह्वानन करता विभो, पाऊँ आतम ज्ञान ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

त्रिभंगी छंद

गंगा शुचि नीरं, सलिल गहीरं, हरि सब पीरं, भरि झारी ।
धवला इव चीरं, सुगुण सुसीरं, भवदधि तीरं सुखकारी ।।
चौबीस जिनेश्वर, अमित गुणेश्वर, हैं परमेश्वर सुखदाता ।
तव पूज रचाऊँ, मंगल गाऊँ, अति हर्षाऊँ अघहाता ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

मलयागिरि चंदन, पाप विहंजन, हरि आक्रन्दन गुणराशी ।
हे तीर्थ सुनंदन, तव तन कुंदन, तव पद वंदन अघनाशी ।।
चौबीस०

SarvatoPooja 03 / 32

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

अक्षत अतिधवला, अतिशय अमला, कारक कमला अति सोहें ।
शुभ अर्चन विमला, भाव निरमला, रूप तुम्हारा मन मोहे ।।
चौबीस जिनेश्वर, अमित गुणेश्वर, हैं परमेश्वर सुखदाता ।
तव पूज रचाऊँ, मंगल गाऊँ, अति हर्षाऊँ अघहाता ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो ऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

हे मदन विजेता, शिवपुर नेता, सुमन समर्पित हे स्वामी ।
भविजन विधि बंदी, हो निर्बंधी, चिद आनन्दी निष्कामी ।।
चौबीस०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

शुभ खीर बनाऊँ, खाजा लाऊँ, सुचरु चढ़ाऊँ क्षुधहारी ।
बहु मोदक लाऊँ, मोद मनाऊँ, नाचूँ गाऊँ शिवकारी ।।
चौबीस०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।5।।

सुंदर उजियारे, दीप सम्हारे, अघ तम टारे परम भले ।
कर्पूर प्रजारे, रवि शशि तारे, दीप सुवारे कर्म जले ।।
चौबीस०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

जाकर वन नंदन, ले शुभ चंदन, पाप निकंदन धूप धरूँ ।
मेटूँ भव बंधन, करि जिन वंदन, हे शिवनंदन कर्म जरूँ ।।
चौबीस०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

बादाम छुहारे, पिस्ता प्यारे, ऐला थारे चरण धरूँ ।
निज भाव सम्हारे, आप हमारे, तव चरणन में प्रीत धरूँ ।।
चौबीस०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

ले पावन नीरं, चंदन सीरं, अक्षत धीरं सुमन बढ़ा ।
नैवेद्य सु खीरं, दीप फलीरं, धूप समीरं अर्घ चढ़ा ।।
चौबीस॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–वृषभादि महावीर को, सदा झुकाऊँ भाल ।
पूजन अर्चन से भविक, काटे जग जंजाल ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–आदि प्रभु से वीर तक, करें सुमंगलाचार ।
पुष्पांजलि कर पूजते, चरणों में सिर धार ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

मराठी चाल

श्री 'आदि' प्रभो नित्य ध्याऊँ, शुभ भावों से पूज रचाऊँ ।
गुण पल-पल प्रभु तेरे गाऊँ, जिनेन्द्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में क्षेत्र भरत के, जिन चौबिस जजूँ भक्ति रचके ।
अर्घ्य अर्पित करें शीश धर के, जिनेन्द्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

चौथे काल के दूजे तीर्थंकर, श्री 'अजित' जिनेश महेश्वर ।
पूजूँ भक्ति से तुमको नमनकर, जिनेंद्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।
द्वीप जंबू में॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

तीजे जिनवर हमारे हैं 'संभव', जिनकी पूज हरें दुःख भव-भव ।
शीघ्र होवे असंभव भी संभव, जिनेन्द्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

SarvatoPooja 03 / 33

'अभिनंदन' प्रभुवर का वंदन, मेटता भव्यों का भव का क्रंदन ।
देता आत्म सुगुणरूपी चंदन, जिनेंद्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में क्षेत्र भरत के, जिन चौबिस जजूँ भक्ति रचके ।
अर्घ्य अर्पित करें शीश धर के, जिनेन्द्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

मेट कुमति सुमति के जो दाता, श्री 'सुमति' प्रभु को जो ध्याता ।
उसकी भव-भव की मिटती असाता, जिनेंद्रपद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

पद्म चिह्न सुशोभित ये जिनवर, 'पद्म' नाम सुप्यारा है मनहर ।
देता मोक्ष महल रूपी चिरघर, जिनेन्द्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

सातवें श्री 'सुपार्श्वजी' देवा, पाद पद्मों की तव नित्य सेवा ।
देती सुज्ञान की श्रेष्ठ मेवा, जिनेंद्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

चंद्रमा की धवल चाँदनी सम, 'चंदप्रभ' के चरण को सभी जन ।
पूजकर मेटते निज सभी गम, जिनेंद्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

'पुष्पदंत' जी प्रभुवर हमारे, पूजा इनकी हमें भव से तारे ।
बिगड़ी किस्मत हमारी सम्हारे, जिनेंद्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

'शीतलनाथ' प्रभुवर की वाणी, सुनकर तिरते सभी भव्य प्राणी ।
पूजा इनकी है जग में प्रमाणी, जिनेंद्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

श्रेयोमार्ग के जो हैं प्रदाता, शीश उनके चरण में झुकाता ।
'श्रेयांसनाथ' हैं जग में विख्याता, जिनेंद्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

'वासुपूज्य' जिनेश्वर की अर्चा, भावना भक्ति से जो भी करता ।
वैद्यों के चक्र में ना वो पड़ता, जिनेंद्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

तेरहवें तीर्थंकर श्री 'विमलजिन', आपकी पदकमल अर्चना बिन ।
सूना लगता है जीवन का हरदिन, जिनेंद्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

है 'अनंत' गुणों के जो सिंधु, नमते उनके चरण में रवीन्दु ।
पाने उन जैसे गुण को मैं वंदूँ, जिनेंद्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

सर्व जीवों को सौख्य प्रदाता, पन्द्रहवें तीर्थंकर जो विख्याता ।
'धर्मनाथ' प्रभु को मैं ध्याता, जिनेंद्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

'शांतिनाथ' प्रभुवर जी प्यारे, भक्तों के आप ही हो सहारे ।
आपकी भक्ति भवजल से तारे, जिनेंद्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

कुंथु आदि जीवों के भी रक्षक, 'कुंथुजिन' की स्तुति पाप भक्षक ।
पूजे तुमको सभी इन्द्र यक्षक, जिनेंद्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

नाथ 'अर' की जो पूजा रचाए, उनके चरणों में चित को लगाए ।
आत्मगुण से वो निज को सजाए, जिनेंद्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में क्षेत्र भरत के, जिन चौबिस जजूँ भक्ति रचके ।
अर्घ्य अर्पित करें शीश धर के, जिनेन्द्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

मोहमल्ल को जिसने नशाया, ऐसे 'मल्लि जिनेश्वर' को ध्याया ।
पूजा जिसने तुरत सौख्य पाया, जिनेंद्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

श्रेष्ठ व्रत के प्रदाता यतीश्वर, 'मुनिसुव्रत' प्रभु परमेश्वर ।
पाए हम भी व्रतों को मुनीश्वर, जिनेंद्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

'नमि' जिन का सुध्यान लगाकर, नम्र होता जो प्रभु पद में आकर ।
उसकी कटती है भव भव की सांकल, जिनेंद्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

श्री 'नेमि' प्रभु जी खिवैया, पार कर दो भवसिंधु से नैया ।
आप ही मेरे तात व मैया, जिनेंद्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

'पार्श्वप्रभु' जी अनाथों के नाथा, मैं हूँ बालक गहो मेरा हाथा ।
आपके द्वय चरण सिर नवाता, जिनेंद्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

इस युग के हो अंतिम तीर्थंकर, कटते भक्ति से कर्म भयंकर ।
'महावीर प्रभु जी हितंकर, जिनेंद्र पद पूजन करूँ मैं नित ही ।।
द्वीप जंबू में॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

पूर्णार्घ्य

लोलतरंग छंद

श्री वृषभादिक वीर जिनंदा,
संप्रति शासन नभ के चंदा ।
भारत भू अति पावन जानी,
वंदन दे भवि को शिवधानी ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृषभादिमहावीरपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता–जिनवर तीर्थंकर, सर्व हितंकर, गुणरत्नों की पूज करूँ ।
प्रभु आप कुलंकर, हे शिवशंकर, तव पद रज को शीश धरूँ ।।

चौपाई

जयश्री वृषभ आदि जिनदेवा, घाति अघाति सर्व विधि देवा ।
धर्म कर्म उपदेश सुनाये, श्री अष्टापद मुक्ति सिधाए ।।

तुरिय काल के आदि जिनेश्वर, अजितनाथ जित हे परमेश्वर ।
कर्म शत्रु तुमने सब जीते, नित्य आत्मगुण का रस पीते ।।

संभव जिन भव का भय नाशा, तत्त्वज्ञान निज आत्म प्रकाशा ।
कर्मन नाश मुक्ति परणाई, चेतन की सब सम्पति पाई ।।

अभिनंदन जग वंदित स्वामी, नंदित नित्य रहे निष्कामी ।
अभिनंदन का वंदन कर लो, मृणमय तन को कुंदन कर लो ।।

सुमतिनाथ शुभ मति के दाता, तव पूजन से मिलती साता ।
सुमति बिना शिवपंथ न मिलता, नहीं कभी भव बंधन खुलता ।।

पद्मप्रभ उर पद्म बसाकर, पूज रचाऊँ नित हर्षाकर ।
पद्मप्रभ पद्माकर स्वामी, महापद्म चेतन अभिरामी ।।

SarvatoPooja 03 / 35

श्री सुपार्श्व भव पाश विनाशा, निशदिन नमें चरण तव दासा ।
प्रभु सुपार्श्व जिन मंगलकारी, आधि व्याधि भव भव अघहारी ।।

चन्द्रप्रभ चन्दा सम राजे, मम अंतर में सदा विराजे ।
चन्द्रकान्त मणियों सम शीतल, तुमको पूजें सकल महीतल ।।

सुविधिनाथ सब विधि के हर्ता, तीन लोक में मंगलकर्ता ।
मुक्तिवरण की कला बताई, आप स्वयं मुक्ति परिणाई ।।

शीतल जिन शुभ धर्म प्रचारक, मोह कर्म के आप विदारक ।
तीन लोक में तुम सुखकारक, अक्ष विषय अरु अघ परिहारक ।।

श्रेयनाथ श्रेयस्कर जग में, ध्यावे सो थिर हो शिव मग में ।
कर्म कलंक नशावे प्राणी, सुनकर श्रेयस्कर जिनवाणी ।।

वासुपूज्य वसुपूज्य तनुज हो, इन्द्र पूज्य तुम महामनुज हो ।
तीर्थ प्रवर्तक बाल यतीश्वर, धर्मचक्र धारक जगतीश्वर ।।

विमलनाथ तीर्थंकर न्यारे, निज में लोकालोक निहारे ।
निजानंद रत रहते निशदिन, मुक्ति मिले ना विमलचित्त बिन ।।

अनंतनाथ नंत गुणधारी, तुमको पूजें सब नर-नारी ।
हम अनंत गुण तुम सम पायें, तबलौं तुमरी पूज रचायें ।।

हे जिन धर्मनाथ शिवकंता, तुमको पूजें सुरगण संता ।
धर्म प्रवर्तक त्रिभुवन नामी, निज सुधर्म को पाया स्वामी ।।

विश्वसेन पितु ऐरा माता, शांतिनाथ सुख शांति प्रदाता ।
सकल दोषों की शांति करके, सिद्ध बनें शिव रमणी वरके ।।

कुंथु आदि सब जीव सुखारी, दया धर्म सत्यार्थ प्रचारी ।
तप कर कर्म क्षीण तुम कीन्हा, निज आतम का वैभव लीन्हा ।।

कामदेव चक्री तीर्थंकर, अरि अघ नाशक अरह जिनेश्वर ।
भव तन भोग नहीं तुम भाये, मुक्ति रमा से तुम परिणाये ।।

मोहमल्ल घातक जिन स्वामी, बालयती जिन पूर्ण अकामी ।
मल्लिनाथ जिन नाशें क्लेशा, नमन करें यति इन्द्र नरेशा ।।

मुनिसुव्रत सुव्रत के धारी, नित्य सुखामृत आत्म विहारी ।
सर्व विघ्न बाधा नश जावै, तव सेवक निज वैभव पावै ।।

नमि जिन चरण नमैं नित देवा, सुरगण मुनिगण करते सेवा ।
नील कमल तव पग में सोहे, भविजन का नित नित मन मोहे ।।

रोग-शोक-भय नाशन हारी, सकल धर्म के तुम अधिकारी ।
देह कष्ट तुम नाशें स्वामी, नेमिनाथ जिन पद अनुगामी ।।

नीलकण्ठ सम देह तुम्हारी, सब विधि अघतम नाशनहारी ।
पार्श्वनाथ भव पाश विनाशी, आत्म तत्त्व के पूर्ण प्रकाशी ।।

सन्मति वीर महति अतिवीरा, वर्धमान जिन गुण गंभीरा ।
वर्तमान जिनशासन नायक, भव्यजनों के भाग्य विधायक ।।

दोहा–वृषभादिक महावीर को, पुनि पुनि करूँ प्रणाम ।
पूजा का फल मैं लहूँ, शाश्वत शिवपुर धाम ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीन चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 03 / 36

(११)

जंबूद्वीप भरतक्षेत्र भविष्यत्कालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

चउबोला छंद

महापद्म सुरदेव सुपारस, स्वयंप्रभ सर्व आत्म जिनदेव ।
देवपुत्र श्री कुल उदंब जिन, प्रोष्ठिल जयकीर्ति मुनिदेव ।।
अर निष्पाप निष्कषाया जिन, विपुल निर्मल चित्र जिनेश ।
समाधि स्वयंभु अनिवर्तक जय, विमल देव रु नंत महेश ।।

दोहा–देव अनागत पूज्य जिन, चौबीसों तीर्थेश ।
भावी शिवपद मैं लहूँ, वंदूँ सुविधि हमेश ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

दोहा

जिनवर के शुभ चरण में, निर्मल नीर चढ़ाय ।
जन्मादिक त्रय रोग नशि, निश्चित मुक्ति पाय ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

चंदन जिनपद नित धरूँ, मम चित शीतल होय ।
भवाताप निश्चित नशे, सर्व कर्म मल धोय ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

नश्वर पद को त्यागकर, अविनश्वर पद हेत ।
अक्षत ले मैं नित जजूँ, जिनवर बिंब निकेत ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

रजत कनकमय पुष्प ले, चित्त होय अविकार ।
मन्मथ विजयी पूजता, हो जाऊँ भव पार ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

षट्रस व्यंजन नित भखूँ, मिटे न अशन कि आस ।
उत्तम चरु जिनपद धरूँ, करूँ क्षुधा का नाश ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

जिनवाणी के वचन द्वय, चित् तम करें विनाश ।
ले घृत दीपक जिन जजूँ, लहूँ ज्ञान परकाश ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

परपदार्थ की गंध से, मैं भूला निज रूप ।
जिनपद धूप चढ़ाय के, बनूँ स्वयं शिव भूप ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

जिस फल बिन जीवन विफल, जो शिवफल के हेतु ।
उत्तम फल जिनपद धरूँ, भक्ति मुक्ति का सेतु ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

नीरादिक वसु द्रव्य ले, जिनवर पूज रचाय ।
पद अनर्घ्य के हेतु मैं, जिनपद अर्घ्य चढ़ाय ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

SarvatoPooja 03 / 37

घत्ता

जय जय जिन विमलं, अतिशय अमलं, दाता जिनवर श्री कमलं ।
जय शिवपथ नायक, विघ्नविनायक, शिवसुखदायक अति धवलं ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्यपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा—श्री जिनके परसादतैं, पूर्ण होय सब काज ।
हम तव पद पूजन करें, लहें मोक्ष साम्राज ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

द्रुतविलंबित छन्द

प्रथम 'पद्ममहा' जिनराज जी, भविक को तुमसे सुत सात जी ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महापद्मजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

द्वितिय तीर्थ प्रवर्तक जानिये, मम हिये 'सुरदेव' प्रमानिये ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुरदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

प्रभु 'सुपार्श्व' सदा मम पास हो, लहुँ न मुक्ति जब तक साथ हो ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

प्रभु 'स्वयं प्रभ' आप विशेष हैं, भगत को सुख सम्पति देत हैं ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वयम्प्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

'सकल आतमभूत' हुए प्रभो, सकलद्वंद तजे हे जिन विभो ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वात्मभूतजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

सुर सुपूजित 'देवसुपुत्र' जी, हम जजें इह अर्घ सुलेय जी ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवपुत्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

कुल सु रोशन आप करा महा, 'कुलसुपुत्र' सुनाम धरा अहा ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कुलपुत्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

जिन 'उदंब' सुपूज रचाय जी, भविक पातक शीघ्र नशाय जी ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री उदम्बजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

नवक 'प्रौष्ठिल' देव सुपूजते, सुर नरेंद्र सदा पद अर्चते ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रौष्ठिलजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दसम देव जजूँ 'जयकीर्ति' जी, विनशिये मम सांकल दुःख की ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री जयकीर्तिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

'मुनिसुव्रत नाथ' अनाथ को, शरण देकर आप कृपा करो ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

नयन में 'अरदेव' समाइये, जनम मृत्यु त्रिरोग नशाईये ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

'रहित पाप' हमें प्रभु कीजिए, निज पदद्वय भक्ति सु दीजिए ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निष्पापजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

सकल चित्त सु निर्मल कीजिए, प्रभु 'कषाय रहित' अघ छीजिये ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निष्कषायजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

'विपुलनाथ' हमें भव तारिये, तनिक ओर हमारि निहारिये ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विपुलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

SarvatoPooja 03 / 38

परम पावन 'निर्मलनाथ' की, करुँ सुभक्ति घटे मम पाप जी ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्मलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

नमत हैं सुर 'चित्र सुगुप्त' जी, हम नमें धर भाव विशुद्ध जी ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री चित्रगुप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

प्रभु 'समाधि सुगुप्त' समाधि दो, नहि रहे जर रोग न आधि हो ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री समाधिगुप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

सकल तत्त्व प्रभु तुम जानिया, सकल नाम 'सयंभु' सु मानिया ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वयम्भूजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

सु 'अनिवर्तक' नाम महान है, चरण में तव नाथ प्रणाम है ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनिवर्तकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

नमत है 'जयदेव' सदा-सदा, सुफल प्राप्त करें चिर नंदिता ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री जयदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

नयन तृप्त हुए लख आपको, 'विमलनाथ' हमें निज शक्ति दो ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

लगन 'देव' जिनेंद्र लगी रहे, जु संग डोर पतंग सधी रहे ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवपालजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

'अतुल वीरज' धारि जिनंद को, हम नमें धर मोद सुबंध को ।
भरत द्वीप सु जंबु महान के, नमत भावि जिनेश सुसौख्य दें ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनन्तवीर्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

पूर्णार्घ्य

लोलतरंग छंद

जै जिन तीर्थ सुनायक स्वामी, आप भविष्यत हो शिवगामी ।
चित्त बसाकर शीश नवाते, भावि जिनेन्द्र सुपूज रचाते ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमहापद्मानन्तवीर्यपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

जम्बू के भावी, शांत स्वभावी, भरत क्षेत्र के तीर्थंकर ।
गुणमाला गाऊँ, शीश झुकाऊँ, जीवमात्र के क्षेमंकर ।।

कुसुम विचित्रा छंद

अतिशय युक्ता जिनवर प्यारे, प्रभु पन कल्याणक युत न्यारे ।
शत शत इन्द्रों युत जिन वंद्या, सुरनर पूजें सब चउ संध्या ।।

विषय कषाया सब रिपु जीते, सब अघहारी परम पुनीते ।
उभय सु लक्ष्मी युत जिन नाथा, भविजन राखें तव पद माथा ।।

जिनवर सारे अतिशय श्रेष्ठा, नमन करूँ मैं जिन जगज्येष्ठा ।
रतिपतिजेता जिनवर नामी, करम कलंका रहित सु स्वामी ।।

नय लहरों से जिन ध्वनि स्वच्छा, सब जग जानें जिन परतच्छा ।
जनम जरा मृत्यु त्रय हीना, अवगुण दोषा सरव विहीना ।।

जिनवर लोकोत्तम सुखकारी, शिवमग नेता जिन अघहारी ।
जलग्रहपीड़ा सब भयहारी, गज रण अग्नी भय रुजहारी ।।

तव पद नैना दिन अरु रैना, मिलत सु चैना सुनकर बैना ।
जिनवर अर्चा सब सुखदानी, भव तिर जाते सुरमुनि ज्ञानी ।।

SarvatoPooja 03 / 39

तुम सम मेरा इस जग माहिं, नाहिं सु अपना है जिनरायी ।
सद्पथ देना शम सम देना, मरण समाधी वर तुम देना ।।

जिनवरभावी तव चरणों को, सुर नर सेवें शिव भजने को ।
सुरतरु चिंतामणि सम दाता, अवर नहीं है जिन सम ज्ञाता ।।

मधुर सु घंटा बजहि जिनालै, भविजन पूजै वरन शिवालै ।
अब सुन म्हारी अरज जिनेशा, मम मन ध्यावै चरण हमेशा ।।

दोहा–भरत सु जंबूद्वीप के, जिन चौबीस महान ।
भावी जिनवर को सदा, पुनि पुनि करूँ प्रणाम ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(१२)

जम्बूद्वीप ऐरावत क्षेत्र भूतकालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

नरेन्द्र छंद

जम्बूद्वीप क्षेत्र ऐरावत, तीर्थंकर चउवीसा ।
भूतकाल में धर्म प्रवर्तन, किया तहाँ जगदीशा ।।
पंचरूप से वीरप्रभ जिनवर की पूजन करते ।
भविजन उनकी अर्चा करके, पुण्य खजाने भरते ।।
दोहा–आह्वानन जिनदेव का, करें भव्य आसन्न ।
सौख्य निदान रहित लहें, करें कर्म को छिन्न ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

चउबोला छंद

मैं अचित्त निर्मल जल लाया, तव युग पद पंकज धोने ।
जन्मादिक रुज नाश करन को, अक्षर अनाहार होने ।।
द्वीप जंबु शुभ ऐरावत के, भूतकाल जिनवर स्वामी ।
उत्तम श्रद्धा युत अर्चन कर, बनूँ पूर्ण मैं निष्कामी ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

हम अनादि से भवाताप से, निशदिन ही तपते आये ।
शीतल चंदन से पूजन कर, भवज्वाला नशने आये ।।
द्वीप जंबु०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

मुक्ताफल सम धवल सुअक्षत, जिनवर चरण चढ़ाता हूँ ।
अक्षयपद के प्राप्त करन को, उत्तम पूज रचाता हूँ ।।
द्वीप जंबु शुभ ऐरावत के, भूतकाल जिनवर स्वामी ।
उत्तम श्रद्धा युत अर्चन कर, बनूँ पूर्ण मैं निष्कामी ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

मृदुल सुमन सम मृदुल बना मन, सुमन समर्पित करने को ।
खड़े चरण में नाथ आपके, काम वासना हरने को ।।
द्वीप जंबु०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

इष्ट मिष्ट स्वादिष्ट मनोहर, व्यंजन लेकर आया हूँ ।
क्षुधा नशाने जिन पूजन करि, मन में अति हर्षाया हूँ ।।
द्वीप जंबु०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

शाश्वत केवल ज्योति पाने, जिन पद दीप चढ़ाता हूँ ।
ज्ञानावरण नशें सब मेरे, यही भावना भाता हूँ ।।
द्वीप जंबु०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

दशविध धूप अग्नि में खेकर, जिनवर पूज रचाता हूँ ।
अष्ट कर्म के नष्ट करन हित, प्रतिपल प्रभु को ध्याता हूँ ।।
द्वीप जंबु०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

नश्वर भव के श्रेष्ठ सकल पद, मैं शिवफल पर ललचाया ।
भूतकाल तीर्थंकर पूजन, श्रीफल ले करने आया ।।
द्वीप जंबु॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

नीरादिक वसु द्रव्य मिलाकर, उत्तम अर्घ बनाया है ।
मिले शीघ्र पद अनर्घ हम भी, जिनवर चरण चढ़ाया है ।।
द्वीप जंबु॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–निर्मल से निर्मल करूँ, मैं अपने परिणाम ।
भूतकाल जिनवर जजूँ, योगत्रय वसुयाम ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ

दोहा–ऐरावत शुभ क्षेत्र के, नमूँ भूत जिनराज ।
तव पूजन के कारने, भाव बनाये आजे ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

चामर छंद (तर्ज - सराग देव देख)

'पंच रूप' जी प्रभु प्रपंच से सुदूर हो ।
भक्तिभाव से जजूँ जु होय कर्म चूर हो ।।
जम्बुद्वीप में महा सुक्षेत्र ऐर नंदिता ।
तास भूत काल के जिनेश नित्य वंदिता ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पञ्चरूपजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

शोभते 'जिनाधरा' जिनेंद्र मध्यलोक में ।
पूजता जु भक्ति से न डूबता यु शोक में ।। जम्बुद्वीप॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनाधराजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

'साम्प्रतीक' देव आप सा न कोई दीसता ।
आप चर्न चर्च भव्य पाठ धर्म सीखता ।। जम्बुद्वीप॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री साम्प्रतिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

SarvatoPooja 03 / 41

'ऊर्जयन्त' नाम धारि देव को प्रणाम हो ।
आपकी सुभक्ति में बिताऊँ आठ याम को ।।
जम्बुद्वीप में महा सुक्षेत्र ऐर नंदिता ।
तास भूत काल के जिनेश नित्य वंदिता ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऊर्जयन्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

'आधिक्षायिका' जिनेंद्र पाँचवें सु जानिये ।
मोक्ष पंथ के सुश्रेष्ठ भव्य मीत मानिये ।। जम्बुद्वीप॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आधिक्षायिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

नन्द रु प्रमोद वृन्द देत देव षष्टमा ।
'आभिनन्दना' जजें फँसे कभी ना कष्टमा ।। जम्बुद्वीप॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अभिनन्दननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

सातवें जिनेंद्र 'रत्नसेन' नित्य मैं भजूँ ।
पाय शर्ण आपकी कु पाप ताप को तजूँ ।। जम्बुद्वीप॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री रत्नसेनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।7।।

आठवें जिनेश पूजते सु 'राम ईश्वरा' ।
भक्ति भाव से सदा जजें तुमें महेश्वरा ।। जम्बुद्वीप॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री रामेश्वरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

पूजता सदा-सदा सु हे 'अनंग उज्झिता' ।
धर्म पुण्य क्षेम से करो हमें सुसज्जिता ।। जम्बुद्वीप॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनङ्गोज्झितजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

नाम है विशेष 'विन्य आस' देव वंद्य हैं ।
आप ही जिनेश भव्य जीव के सुबंधु हैं ।। जम्बुद्वीप॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विन्यासजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

रोष नाहि द्वेष नाहि नाहि कोई खेद है ।
नाम है 'अरोष' देत नित्य सौख्य मोद है ।। जम्बुद्वीप॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरोषजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

हे जिनेंद्र 'सूविधान' भव्य जान ज्ञान दो ।
आपका शिशू विभो हमारी ओर ध्यान दो ।। जम्बुद्वीप॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुविधानजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

श्री 'प्रदत्त' नाथ आपकी प्रभा अलौकिका ।
पाद पद्म पूज होय सर्वरि विमोचिता ।। जम्बुद्वीप०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रदत्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

है 'कुमार' नाम आप विश्व को सुमार्ग दें ।
पाएँ मोक्ष राज को हमें सु नेक राह दें ।। जम्बुद्वीप०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कुमारनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

'सर्वशैल' पूजते कुपाप होय खंडिता ।
आज शुद्ध भावना सु मैं जिनेंद्र पूजता ।। जम्बुद्वीप०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वशैलजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

श्री 'प्रभंजना' जिनेश आपकी सु जाप से ।
रोग शोक क्लेश से रु मुक्त होय पाप से ।। जम्बुद्वीप०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रभञ्जनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

सन्निधी 'सुभाग्यनाथ' की सदा सदा चहें ।
होय भाग्य का उदै दरिद्रता नहीं रहे ।। जम्बुद्वीप०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौभाग्यनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

आपकी सुभक्ति में सुचित्त नित्य ही धरें ।
पूज 'वृत्तबिंदु' शीघ्र मुक्ति कंत को वरें ।। जम्बुद्वीप०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृतबिन्दुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

सिद्ध पाद स्पर्श पाए सर्व दोष जो तजे ।
सिद्धि पाए सिद्ध होय 'सिद्धनाथ' जो भजे ।। जम्बुद्वीप०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धकरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

'ज्ञानदेह' पाए ज्ञानवान् आप हो गए ।
ज्ञान में हि लीन आप कर्म सर्व खो गए ।। जम्बुद्वीप०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्ञानशरीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

'कल्पद्रूम' देव आप कल्पवृक्ष रूप हो ।
कामकुंभ को नमै जु होय रंक भूप हो ।। जम्बुद्वीप०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कल्पद्रुमजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

SarvatoPooja 03 / 42

देव 'तीर्थ सुफलेश' आप सिद्ध हो गए ।
आप तीर्थ पाए भव्य कर्म पंक धो गए ।।
जम्बुद्वीप में महा सुक्षेत्र ऐर नंदिता ।
तास भूत काल के जिनेश नित्य वंदिता ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तीर्थफलेशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

हे 'दिवाकरा' जिनेश सुप्रभात कीजिए ।
घोर रात पाप की छटे सुपुण्य दीजिए ।। जम्बुद्वीप०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिनकरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

अंत में प्रणाम 'वीरनाथ' नंत धीर दो ।
गा सकूँ सु गीत आपके सुभक्ति नीर दो ।। जम्बुद्वीप०

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवीरप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

पूर्णार्घ्य

लोलतरंग छंद

नंत चतुष्टय के तुम धारी, कर्म दले भवि को हितकारी ।
क्षेत्र इरावत के जिननाथा, देव अतीत जजूँ सुखदाता ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपञ्चरूपादिवीरप्रभपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता

श्री जिनवर वंदन, हरता क्रंदन, भव्य करें विधि नाशन को ।
वसु कर्म नशाकर, निजगुण पाकर, प्राप्त करें शिवशासन को ।।

शेर चाल (तर्ज : जय-जय श्री अरिहंत...)

जय जय जिनेश वीतरागी जिन प्रमानते ।
सुयुक्ति युक्त तत्त्व को जिनवर बखानते ।।

केवल जु दिवाकर के सु दिव्य प्रकाश से ।
अज्ञान अंधकार मिटाया प्रताप से ।।

स्यादस्ति नास्ति व अस्ति-नास्ति कहा ।
अवक्तव्य अस्ति अवक्तव्य भी तथा ।।
नास्ति अवक्तव्य अस्तिनास्ति अवक्तव्य ।
सप्तभंगी रूप धन्य आपका वक्तव्य ।।

परचतुष्टयापेक्षया नास्तित्व धर्म है ।
अरु स्वचतुष्ट से सदा अस्तित्व धर्म है ।।
पर्याय की अपेक्षा से अनित्य है सदा ।
गुण ध्रौव्यपेक्षया सु वस्तु नित्य है तथा ।।

सापेक्ष कथन बुद्धिमानों के सुयोग्य है ।
निरपेक्ष कथन मिथ्याज्ञान ये अयोग्य है ।।
जयवंत स्याद्वाद पद्धति सदा रहे ।
जयवंत जैन धर्म नित्य वर्द्धता रहे ।।

दोहा—जंबूद्वीप में कर्म भू, ऐरावत है एक ।
भूतकाल तीर्थेश जिन, उनको नमन अनेक ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 03 / 43

(१३)

जम्बूद्वीप ऐरावतक्षेत्र वर्तमानकालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

अडिल्ल छंद

बालचंद्र तीर्थंकर प्रथम सु जानिये ।
वीरसेन अंतिम तक सबको मानिये ।।
जंबुद्वीप के ऐरावत जिन वंदता ।
आह्वानन कर वर्तमान प्रभु अर्चता ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

(तर्ज - श्री वीर महा अतिवीर..)

हिमगिरि सम शीतल धार, जिनपद वार करूँ ।
मम जन्म जरा नशि जाय, भवदधि पार करूँ ।।
ऐरावत जंबूद्वीप, संप्रति के वंदन ।
तीर्थंकर प्रतिपल पूज्य, नित नित अभिनंदन ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

शीतल चंदन शुभ गंध, तन संताप हरे ।
जिनपद चर्चूं अति भक्ति, शीतल चित्त करे ।। ऐरावत०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

सुक्ति मुक्ता सम शालि, जिनपद अग्र धरूँ ।
अक्षय पद पाने आज, प्रतिपल जिन सुमरूँ ।। ऐरावत॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

मकरंद युक्त शुभ पुष्प, ले जिनवर आगे ।
पूजो जिन अर्चन काज, काम रु मद भागे ।। ऐरावत॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

उत्तम नैवेद्य चढ़ाय, श्री जिनवर अर्चन ।
निज चित्त धरूँ जिनपाद, रोग क्षुधा वर्जन ।। ऐरावत॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

गौघृत के दीप प्रजाल, नीराजन करके ।
धर चेतन दिव्य प्रकाश, अंतर तम हरके ।। ऐरावत॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

वर धूप दशांगी लाय, पावक में खेऊँ ।
मम अष्ट कर्म जल जाय, प्रतिपल जिन सेऊँ ।। ऐरावत॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

श्रीफल जिनचर्ण चढ़ाय, संयम फल चाहूँ ।
हो परम समाधी देव, जिनवच अवगाहूँ ।। ऐरावत॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

नीरादिक द्रव्य पुनीत, थाली भर अर्चूं ।
जिनपद पूजूँ प्रतियाम, जिनवच नित चर्चूं ।। ऐरावत॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थं-करेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

SarvatoPooja 03 / 44

दोहा–वर्तमान चौबीस जिन, अमितगुणों की खान ।
संप्रति जिन को पूजकर, बनूँ स्वयं भगवान् ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–श्री जिनवर पद पूजकर, मन में अति हर्षाय ।
कर्म दलन के कारणे, अर्घ्य बना हम लाय ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

पायत्ता छन्द

जिन 'बालचंद्र' छबि लखकर, हर्षित हैं सब नारी नर ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बालचन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

'सुव्रत' जिनवर को वंदन, मेटें भव-भव का क्रंदन ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

श्री 'अग्निसेन' जिन प्यारे, भव्यों के एक सहारे ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अग्निसेनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सिरि 'नंदिसेन' जग वंदित, लख हुए नयन आनंदित ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नन्दिसेनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

'श्री दत्त' जिनेश्वर भजते, सब पाप कर्म को तजते ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीदत्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

व्रत धरकर 'व्रतधर' जिन की, पूजा मनभावन नित की ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री व्रतधरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

श्री 'सोमचंद्र' जिनराया, तुम सम बनना मन भाया ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सोमचन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

'धृतिदीर्घ' नाम शुभ प्यारा, भवदधि में एक सहारा ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री धृतिदीर्घजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

श्री 'शतायुष्क' जिनदेवा, दो चिर भक्ति की मेवा ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री शतायुष्कजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

जिनदेव दशम श्री 'विवसित', लख तव मन पद्म हो विकसित ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विवसितजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

श्री 'श्रेयो' नाथ श्री दाता, तव भक्त लहें सुख साता ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रेयोजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

'विश्रुतजल' श्रुत के सागर, भर दो मम छोटी गागर ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्रुतजलजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

श्री 'सिंहसेन' अघ हंता, तव भक्त बने भगवंता ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिंहसेनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

'उपशान्त' देव तव भक्ति, मुक्ति की देती युक्ति ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री उपशान्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

तव नाम 'गुप्त शासन' है, मम मन श्रद्धा आसन है ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री गुप्तशासनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

हो नंतवीर्य के धारी, श्री 'अनंतवीर्य' सुखकारी ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनन्तवीर्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

SarvatoPooja 03 / 45

मम प्राणधार 'पारसजिन', मन मंदिर सूना तुम बिन ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

'अभिधान' नाम मन भाया, मम मिले सदा तव छाया ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अभिधानजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

'मरुदेव' प्रभु पद अर्चा, करती सुख अमृत वर्षा ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मरुदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

'श्रीधर' श्री आकर भरते, भवि मोक्ष लक्ष्मी वरते ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीधरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

श्री 'शाम कंठ' जिन मेरा, शिवघर में होय बसेरा ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री शामकण्ठजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

'अग्निप्रभ' हमें सम्हारो, भव जल से शीघ्र हि तारो ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अग्निप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

श्री 'अग्निदत्त' वंदन से, छूटे भवि विधि बंधन से ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अग्निदत्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

नमुँ 'वीरसेन' विधिहंता, जो हैं अंतिम भगवंता ।
ऐरावत क्षेत्र सु जंबू, संप्रति जिनवर को वंदूँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वीरसेनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

पूर्णार्घ्य

(लोलतरंग छंद)

क्षेत्र इरावत संप्रति नाथा,
तीर्थ दिवाकर भाग्य विधाता ।

अर्घ चढ़ा हम पूज रचायें,
आप स्वरूप व रूप सु पायें ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बालचन्द्रादिवीरसेनपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता

हे अतिशयकारी, शुभगुणधारी, जगहितकारी मंगलमय ।
प्रभु वृष संवाहक, वसुविधि दाहक, ममचिद्वाहक हे चिन्मय ।।

चौपाई

वर्तमान तीर्थंकर स्वामी, जंबुद्वीप ऐरावत नामी ।
चारों घाती कर्म नशाए, नंत चतुष्टय युक्त कहाय ।।

नंतर शाश्वत शिवपद पाया, नादिकाल का भ्रमण मिटाया ।
तिनकी पद रज नित हम वंदें, जिनभक्ति कर चिद् आनंदें ।।

प्रथम सु जंबूद्वीप बखाना, एक लाख योजन परमाना ।
हिमवनादि गिरि भेद कराए, सप्त क्षेत्र अस्तित्व कहाए ।।

भरतैरावत विदेह सु भूमि, तीनों जानी कर्म सुभूमी ।
देवकुरु उत्तरकुरु जानो, उत्तम भोग भूमि पहचानो ।।

दो जघन्य दो मध्यम मानी, यूँ षट् भोग भूमि हैं जानी ।
काल परावर्तन नहिं होवे, भोग भूमि में भोग हि भोगे ।।

विदेह क्षेत्र भी शाश्वत रूपा, काल भेद नहिं वहाँ अनूठा ।
षट् कालों का परिवर्तन है, भरतैरावत में वर्तन है ।।

उत्सर्पिणि अवसर्पिणि जानो, कल्पकाल दोनों मिल मानो ।
दोनों में छः काल गिनाए, सुखमा-सुखमा, सुखमा गाए ।।

SarvatoPooja 03 / 46

सुखमा-दुखमा, दुखमा-सुखमा, दुखमा काल छठ दुखमा-दुखमा ।
प्रथम चार कोड़ा-कोड़ी का, द्वितीय तीन कोड़ा-कोड़ी का ।।

तृतीय काल दो कोड़ाकोड़ी, अन्य तीन इक कोड़ाकोड़ी ।
इक्किस सहस वर्ष का भाई, पंचम काल महा दुखदायी ।।

षष्टम इक्किस हजार वर्षा, नहीं धर्म नहि जिनगुण चर्चा ।
पुण्य हीन यह काल बताया, बादर अग्नि भी नहीं भाया ।।

पंचम छट्टम अवधि घटा के, बचा काल चौथे का जाके ।
इस प्रकार छः काल गिनाये, गणधर स्वामी ने बतलाये ।।

प्रारंभिक त्रय भोग सु भूमि, अंतिम त्रय हैं कर्म जु भूमि ।
क्रम ये अवसर्पिणी का गाया, उत्सर्पिणि विपरीत बताया ।।

दुःखमा-सुखमा है अनुकूला, पा सकते भविजन भव कूला ।
इस हुण्डाऽवसर्पिणी जानो, तीर्थंकर चौबीस बखानो ।।

धर्म प्रवर्तन जिनवर कीना, मोक्ष मार्ग पर चले प्रवीना ।
ऐरावत के संप्रति वंदूँ, तीर्थंकर भक्तीयुत अर्चूं ।।

दोहा—वर्तमान चउवीस जिन, ऐरावत के जान ।
तिनकी भक्ति प्रसाद से, पाते भवि कल्याण ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(१४)

जम्बूद्वीप ऐरावतक्षेत्र भविष्यत्कालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

कवित्त छंद

जंबु एरावत भावि जिनेश्वर, भाव सदा शुभ निर्मल लेके ।
द्रव्य सु भावनि नौ विधि नाशन, आठ सुद्रव्यनि आज सु लेके ।।
देव पुकारुँ सु भक्ति भरा उर, आसन पे अब आय विराजो ।
मोक्ष नहीं जबलौं तबलौं मम, चित्त प्रभो नित आप हि साजो ।।

दोहा–ऐरावत शुभ क्षेत्र के, तीर्थंकर चौबीस ।
भावी जिनवर नित नमूँ, लखूँ स्वात्म जगदीश ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

चउबोला छंद

क्षीरोदधि का निर्मल जल ले, कंचन कलश भराए हैं ।
जिन चरणों में धार देत त्रय, रोगत्रय नश जाएँ हैं ।।
ऐरावत शुभ जंबुदीप के, तीर्थंकर चौबीस जजूँ ।
भावी तीर्थंकर बनने को, भावी जिनवर नित्य भजूँ ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

तन संताप मिटाने जग में, चंदन को गुणकार कहा ।
ले चंदन जिन चरण जजें जे, चिद् शीतल हो मिटे दहा ।।
ऐरावत शुभ०

SarvatoPooja 03 / 47

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

श्री जिनचर्ण धरूँ नित अक्षत, अक्षत गरिमा मैं पाऊँ ।
जग के क्षत क्षत सर्व त्याग पद, मैं अक्षर ही बन जाऊँ ।।
ऐरावत शुभ जंबुदीप के, तीर्थंकर चौबीस जजूँ ।
भावी तीर्थंकर बनने को, भावी जिनवर नित्य भजूँ ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

पुष्पों का सौरभ पाने को, निशदिन अलि गुंजार करें ।
जिनपद पुष्प चढ़ाकर हम सब, शाश्वत चित अविकार बनें ।।
ऐरावत शुभ०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

तन की भूख मिटाने को जन, निशदिन भोजन करते हैं ।
उत्तम चरुवर जिनपद धरि हम, रोग क्षुधा का हरते हैं ।।
ऐरावत शुभ०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

अर्केन्दू अंशू सम निर्मल, दिव्य ज्योति युत दीप सजे ।
अंतर तम के नाश करन को, दीपक ले हम तीर्थ भजें ।।
ऐरावत शुभ०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

दशविधि धूप हुताशन में खे, श्रमण धर्म दस मैं पाऊँ ।
तबलौं श्री जिनवर चरणों में, भाव सहित मैं रम जाऊँ ।।
ऐरावत शुभ०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

श्रीफल अरु बादाम सुपारी, जग में उत्तम फल माने ।
उत्तम से उत्तम फल शिव है, पाने जिन अर्चन ठाने ।।
ऐरावत शुभ०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

वर्ण वसू के रत्न अनेकों, द्रव्य मिलाकर लाया हूँ ।
हो अनर्घ्य पद प्राप्त मुझे जिन, चरण चढ़ा हर्षाया हूँ ।।
ऐरावत शुभ०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–जम्बू ऐरावत महा, भावी जिन तीर्थेश ।
निर्मल योगत्रय जजूँ, पाऊँ पुण्य विशेष ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–नमन भावि तीर्थेश को, भव पीड़ा हर लेय ।
चारों गति दुख मेटकर, शुभ पंचम गति देय ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

मोदक छन्द

आदिम तीर्थ प्रवर्तक वंदन, सिद्ध प्रभो मम मेटहु क्रंदन ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धार्थजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

श्री 'विमलप्रभ' निर्मल पावन, नाथ तिहारि छवी मन भावन ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विमलप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

नाम जपूँ 'जयघोष' जिनेश्वर, पार करो जग से जगदीश्वर ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री जयघोषजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

'नंदि सुसेन' विभो मम जीवन, होय सदा तव ही पद अर्पण ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री नन्दिसेनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

SarvatoPooja 03 / 48

'स्वर्ग सुमंगल' नाम जपें हम, जीवन में नहिं होय कभी गम ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र एरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वर्गमंगलजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

'वज्रधरी' मम दोष हरो विभु, कर्म वज्र चकचूर करो प्रभु ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वज्रधारीजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

मोक्ष महा फल पाए हुए जिन, नीरस जीवन है तुमरे बिन ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

पार करें 'ध्वजधर्म' विभो अब, धर्म बिना नहिं ठौर कहीं अब ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मध्वजजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

'सिद्ध सुसेन' जिनेश्वर पालक, पाप हरो समझो निज बालक ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धसेनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

'सेनमहा' तव नाम भजूँ नित, आप सुरासुर सेवित वंदित ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महासेनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

पूज सदा 'रविमित्र' जिनेश्वर, होय उजास मिटे तम नश्वर ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री रविमित्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

सत्य सदा सुखकारक जानहि, 'सत्यसुसेन' विभो दुख हानहि ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सत्यसेनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

'चन्द्रप्रभो' करने तव पूजन, मंदिर आप बनाए लियो मन ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्रनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

'चंद्रमही' तव पादनि दासन, प्राप्त करे सुख श्रेष्ठ सुरासन ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महीचन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

नाथ 'श्रुतांजन' पार लगावहि, दुःख समुद्र सु शीघ्र तिरावहि ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रुताञ्जनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

देव करें प्रभु 'देव' सु वंदन, मेट विभो भव दुःख रु क्रंदन ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवसेनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

'सुव्रतनाथ' अनाथन नाथ सु, पार हमें कर हाथ समार तू ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

जीत भये रिपु कर्म 'जिनेन्द्रम', पूजत हैं तव इंद्र नरेन्द्रम् ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनेन्द्रनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

देव 'सुपार्श्व' बसें जिस आतम, दूर होए सब कष्ट रु मातम ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

नाथ 'सुकौशल' ध्यान धरें हम, शांत सुधा रस पान करें हम ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुकौशलजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

'नाथ अनंत' भरो बल धीरज, प्राप्त करें हम क्षायिक वीरज ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

पावन निर्मल भाव बनाकर, पूज करूँ तव मोद मनाकर ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विमलजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

SarvatoPooja 03 / 49

आप सुनाम अमी बरसावहि, रोग हरे सब काम बनावहि ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमृतसेनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

'अग्निसुदत्त' तिरे अरु तारहि, हो पद में मम जीवन वारहि ।
जंबु सुद्वीपनि क्षेत्र ऐरावत, पूज करूँ जिनदेव अनागत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अग्निदत्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

पूर्णार्घ्य

लोलतरंग छंद

हे जिन नायक सर्व हितैषी,
अर्चन से निधि हो तुम जैसी ।
क्षेत्र इरावत भावि जिनेशा,
पूज करूँ जिनदेव हमेशा ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसिद्धार्थाद्यग्निदत्तपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता

सद्‌धर्म प्रचारक, कर्म विदारक, भव संहारक जिनस्वामी ।
हम युक्ति बनाएँ, भक्ती गाएँ, मुक्ती चाहें निष्कामी ।।

नरेन्द्र छंद

मध्यलोक के मध्य नाभि सम, जंबुद्वीप है प्यारा ।
उत्तरदिश में ऐरावत में, युगपरिवर्तन न्यारा ।।
तुरिय काल में चौबीसी जिन, वृष संवाहक भावी ।
पंचकल्याणक सहित जिनेश्वर, धर्ममूर्ति समभावी ।।

सुरपति शचि सहित वहाँ आकर, उत्सव पंच मनायें ।
जंबुद्वीप के भरत क्षेत्र से, हम यह पूज रचायें ।।

तीर्थंकर की पूजन निश्चित, पाप कर्म परिहारी ।
पूजक श्रोता भक्त व अर्चक, हो जाते अविकारी ॥

शुद्ध हृदय से भाव बनाकर, निर्मल वसु द्रव लाए ।
भाव सहित हमने श्री जी के, चरणों आन चढ़ाए ॥
पंच कल्याणक महिमा जग में, को मुख से कह पाते ।
अतिशय पुण्य कमाते वे जो, उनकी भावना भाते ॥

जो प्रत्यक्ष लखें कल्याणक, निकट भव्य वे जानो ।
तीव्र भक्ति करने वालों को, भावी जिनवर मानो ॥
भाव सहित हम भक्ति करके, क्षायिक सम्यक् पावें ।
नंतर क्षपक श्रेणी फिर माँढ़े, चारों घाति नशावें ॥

जिन भक्ति से घाति अघाति, शुक्ल ध्यान से नाशें ।
निश्चित पूजक बनें मुक्तिपति, निजगुण चिद् अवभासें ॥
सर्व केवली तीर्थंकर को वंदन नंत हमारा ।
भक्ति नौका पाय लहें हम, सिद्धि सदन अनियारा ॥

दोहा–भावी अर्हत् सिद्ध को, भाव सहित सिर नाय ।
परम शुद्ध परिणाम करि, हम इह पूज रचाय ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ॥
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

SarvatoPooja 03 / 50

(१५)

जम्बूद्वीप विद्यमान तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

नरेन्द्र छंद (तर्ज : रोम रोम से...)

जंबूद्वीप विदेह क्षेत्र में, चउ तीर्थंकर राजे ।
सीमंधर युगमंधर बाहु, देव सुबाहु विराजे ॥
भाव सहित आह्वानन करके, सकल योगि जिन वंदन ।
इनका दर्शन पूजन संस्तव, हरे विश्व के क्रंदन ॥

दोहा–निज जिनेन्द्र पद पावने, तीर्थंकर पद वास ।
जिनके दर्शन मात्र भी, करते मोह विनाश ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसीमन्धरयुगमन्धरबाहुसुबाहु-चतुस्तीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसीमन्धरयुगमन्धरबाहुसुबाहु-चतुस्तीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसीमन्धरयुगमन्धरबाहुसुबाहु-चतुस्तीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

नरेन्द्र छंद

क्षीरोदधि के निर्मल जल की, तुंग वीचि सम निर्मल ।
जन्मादि त्रय रोग नशाने, जिन पद अर्पित ये जल ॥
जंबूद्वीप विदेह क्षेत्र के, जिनशासक तीर्थंकर ।
भाव सहित मैं अर्चन करता, ध्यायें जग क्षेमंकर ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसीमन्धरयुगमन्धरबाहुसुबाहु-चतुस्तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

देव वृक्ष सम मलयागिरि का, चंदन बहुविध लाया ।
क्रोधानल के शांत करन को, जिनवर चरण चढ़ाया ॥
जंबूद्वीप विदेह॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसीमन्धरयुगमन्धरबाहुसुबाहु-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

हीरक सम धवलोत्तम उज्ज्वल, अक्षत पुंज चढ़ाऊँ ।
अक्षय पद के प्राप्त करन को, जिन शाश्वत गुण गाऊँ ।।
जंबूद्वीप विदेह०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसीमन्धरयुगमन्धरबाहुसुबाहु-चतुस्तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

कामदेव के बाणों ने मम, मन छलनी कर डाला ।
जिनपद पुष्प चढ़ा परिणाऊँ, मैं मुक्ति श्री बाला ।।
जंबूद्वीप विदेह०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसीमन्धरयुगमन्धरबाहुसुबाहु-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

कृष्ण सर्प सम क्षुधा वेदनी, से प्राणी दुःख पावें ।
जो चरु चरण चढ़ाता जिनवर, सो ही इसे नशावे ।।
जंबूद्वीप विदेह०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसीमन्धरयुगमन्धरबाहुसुबाहु-चतुस्तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

युक्त कर्म उद्योत चंद्र सम, हरे तिमिर जग सारा ।
रत्नदीप से करूँ आरती, मिटे मोह अँधियारा ।।
जंबूद्वीप विदेह०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसीमन्धरयुगमन्धरबाहुसुबाहु-चतुस्तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

आठ कर्म का काठ जलाने, धूप अष्टविध खेकर ।
सिद्ध समा वसु गुण पा जाऊँ, नाम सिद्ध का लेकर ।।
जंबूद्वीप विदेह०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसीमन्धरयुगमन्धरबाहुसुबाहु-चतुस्तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

जिनपद भक्त रहें जो निशदिन, कभी विफल ना होते ।
श्री फल जिनचरणों में रखकर, निज वैभव ना खोते ।।
जंबूद्वीप विदेह०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसीमन्धरयुगमन्धरबाहुसुबाहु-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

SarvatoPooja 03 / 51

हम अकिंच बालक अबोध हैं, किंकर बन अब आए ।
पद अनर्घ्य की ले अभिलाषा, जिनपद अर्घ्य चढ़ाए ।।
जंबूद्वीप विदेह क्षेत्र के, जिनशासक तीर्थंकर ।
भाव सहित मैं अर्चन करता, ध्यायें जग क्षेमंकर ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसीमन्धरयुगमन्धरबाहुसुबाहु-चतुस्तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा—अष्ट कर्म के नाशने, चउ आराधन हेत ।
चतु तीर्थंकर मैं जजूँ, पाऊँ मुक्ति निकेत ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा—जम्बूद्वीप सु मध्य में, क्षेत्र विदेह महान ।
जहाँ विराजित नित रहें, तीर्थंकर भगवान ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

विधाता छंद (तर्ज : तुम्हारे दर्श बिन...)

विदेहा पुण्डरी नगरी, प्रथम तीर्थेश सीमंधर ।
हंस पितु के यहाँ जन्में, ऋषभ चिन[1] युक्त क्षेमंकर ।।
देह से हीन होकर के, विदेही नाथ कहलाते ।
पूजकर देव तीर्थंकर, भव्य निर्वाण पद पाते ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रस्थपुण्डरीकिणीपुरीमध्यसमवशरणस्थ-सीमन्धरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

पितू श्री रूह के सुत जो, बने तीर्थेश युगमंधर ।
चिह्न गज मानते उनका, पूजता द्रव्य शुभ लेकर ।।
देह से हीन०

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रस्थविजयानगरीमध्यसमवशरणस्थ-युगमन्धरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

पिता सुग्रीव माँ विजया, के घर जन्मे प्रभु बाहु ।
आपके दर्श से कटते, सभी सकंट शनी राहू ।।
देह से हीन०

---

१. चिह्न

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रस्थसुसीमानगरीमध्यसमवशरणस्थ-बाहुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

अवध नगरी हुई पावन, सुबाहु नाथ को पाकर ।
इंद्र तांडव किया भारी, भक्ति से खूब हर्षाकर ।।

देह से हीन॰

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रस्थअयोध्यापुरीमध्यसमवशरणस्थ-सुबाहुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

पूर्णार्घ्य

अडिल्ल छंद

विद्यमान तीर्थेशों की नित अर्चना ।
प्रथम द्वीप के विदेह क्षेत्रनि वंदना ।।
करके भव्य श्री जिनवर गुण गाएँगे ।
परंपरा से सौख्य शिव पद पाएँगे ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसीमन्धरादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता

श्री जिन तीर्थंकर, सर्वहितंकर, भविक्षेमंकर सुखकारी ।
जो कर्म विभंजक, भविजन रंजक, रहित प्रवंचक अघहारी ।।

पद्धरी छंद

राजे जहँ शाश्वत तीर्थंकर, प्राणी मात्र के नित्य हितंकर ।
चिन्मय धर्म धर्मफल शुभकर, रहे सर्वदा भविजन अघहर ।।

शिव सीमा जो धारें जिनवर, नाम जिनेश्वर श्री सीमंधर ।
पंचशतक धनु काया सुंदर, मानो चिन्मय सुखद है मंदिर ।।

पूर्व कोटि आयु तीर्थंकर, भव्य जनों को नित क्षेमंकर ।
द्वितीय जिनवर श्री युगमंधर, जो नित ध्यावे उनको सुखकर ।।

SarvatoPooja 03 / 52

मंगलकर्त्ता श्री तीर्थंकर, बाहु स्वामी परम जिनेश्वर ।
कर्म सुभट को किया पराजित, बाहुस्वामी नित अपराजित ।।

घाति कर्म नाशे जिन तपकर, उभय लोक में तप है सुखकर ।
नरभव सफल किया ले संयम, अनुयायी गहते व्रत संयम ।।

देव सुबाहु धर्म मूर्ति जिन, पूजें जिनको धर्मी निशदिन ।
समवशरण में खिरी दिव्य धुनि, समकित पाते भवि जिसको सुनि ।।

समवशरण में शोभित गणधर, पूज्यनीय सब संत यतीश्वर ।
विधिहंता है सब जिन यमधर, पूजक भी बन जाते जिनवर ।।

भाव सहित हम पूज रचाकर, नाचें गाएँ अति हर्षाकर ।
भक्ति मानो शिवकर सुखप्रद, नाशे क्रोध लोभ माया मद ।।

दोहा—भक्ति भावयुत पूजते, विद्यमान तीर्थेश ।
सीमंधर आदि जजूँ, करने घाति अशेष ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसीमन्धरयुगमन्धरबाहुसुबाहु-चतुस्तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(१६)

विजयमेरु पूजन

अथ स्थापना

दोहा

विजय मेरु के चैत्य शुभ, अरु चैत्यालय नित्य ।
सोलह शाश्वत हेतु शिव, पूज बनूँ कृतकृत्य ॥
भाव सहित मैं नित करूँ, आह्वानन जिनबिंब ।
दिव्य वसू ले नित जजूँ, लखूँ शुद्ध निजबिंब ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

अडिल्ल छंद

निर्मल जल हम लाए जिन वंदन करें ।
जिनवर चरण चढ़ाय नादि क्रंदन हरें ॥
विजय मेरु के चैत्य भद्र करते सदा ।
जो पूजें धर भक्ति दुःख न लहें कदा ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

चंदन शीतलता देह संताप नशे ।
जिन चरणाग्र चढ़ाय, भक्त शिवपुर बसें ॥ विजयमेरु०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

शशिकर धवल सुतंदुल ले अर्चन करें ।
भव के सब दुखनाश सौख्य शाश्वत वरें ॥ विजयमेरु०

SarvatoPooja 04 / 53

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

विकसित सुमन विकासक चित्त सरोज है ।
काम बाण नश ब्रह्म चंद्र सित दोज है ॥ विजयमेरु०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

छप्पन विधि स्वादिष्ट व्यंजन लाए के ।
पूजें जिनवर नित्य चित्त हर्षायके ॥ विजयमेरु०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

गौघृत के शुभ दीप जला आरति करें ।
अंतस तिमिर भगाय चित्त भारति धरें ॥ विजयमेरु०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

दसविध धूप मिलाय हुताशन खेय के ।
अष्ट कर्म नशि जाय, चरण जिन सेय के ॥ विजयमेरु०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

श्रीफल आदि सुउत्तम फल जिन भेंटते ।
श्री जिन पद वे लहें, कर्म सब मेटते ॥ विजयमेरु०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

नीरादिक वसुद्रव्य मिला अर्चन करी ।
मानो अपने चित्त मोक्ष पृथ्वी धरी ॥ विजयमेरु०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा--विजयमेरु पूजन महा, सकल विजय की हेत ।
त्रिविध कर्म हम जीतकर, पावें सिद्ध निकेत ॥

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–विजय मेरु में चार वन, सोलह शुभ जिन गेह ।
ता मधि जिनवर चैत्य को, पूजूँ धर उर नेह ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

नरेन्द्र / जोगीरासा छन्द

विजय मेरु पर सबसे नीचे, भद्रसाल वन प्यारा ।
जिसकी पूरब दिश में जिनगृह, वंदन उन्हें हमारा ।
पूर्व धातकी खण्ड विजय, मेरू के चैत्य अपारा ।
नमन अनंतों जहाँ बहे नित, भक्ति रस की धारा ।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिभद्रशालवनस्थपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

भद्रसाल की दक्षिण दिश के, चैत्य सकल विधि हंता ।
पूजक पूजन करते-करते, बनें स्वयं अरहंता ।।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिभद्रशालवनस्थदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

भद्रसाल वन पश्चिम दिश के, चैत्यालय के अंदर ।
रत्नमयी वेदी पर सोहे, जिनवर अति ही सुंदर ।।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिभद्रशालवनस्थपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

उत्तर दिश में एक चैत्यालय, रत्न जड़ित जह खंभा ।
वेदि एक सौ आठ रत्नमय, उतने ही जिन बिंबा ।।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिभद्रशालवनस्थोत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

भद्रसाल से पंचशतक, योजन ऊपर नंदनवन ।
जिसकी प्राची दिश में सोहे, चैत्यालय मनमोहन ।।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

SarvatoPooja 04 / 54

विजय मेरु के नंदन वन में, देव स्वर्ग से आते ।
दक्षिण दिश के चैत्यालय में, महामह पूज रचाते ।।
पूर्व धातकी खण्ड विजय, मेरू के चैत्य अपारा ।
नमन अनंतों जहाँ बहे नित, भक्ति रस की धारा ।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

अष्ट-अष्ट मंगल द्रव्यों युत, जिनगृह प्रतिमा राजे ।
नंदनवन पश्चिम दिश जिनवर, हृदय कमल पर साजे ।।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

उत्तम-उत्तम द्रव्य सजाकर, जिन पूजा को लाया ।
नंदन उत्तरदिश जिनवर चरणों में अर्घ चढ़ाया ।।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थोत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

पचपन सहस पाँच सौ ऊपर, नंदनवन से जाने ।
वन सौमनस पूर्व जिन पूजा, कर निज को पहचानें ।।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

तीजा वन सौमनस जहाँ मन, निर्मलता भर आए ।
उसकी दक्षिण दिश जिनगृह की, शोभा किह मुख गाए ।।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

सुंदर वज्रमयी दंतावलि, ओंठ लाल ज्यों मूँगा ।
पश्चिम दिश सुंदर जिन चरणों, सब अर्पण कर दूँगा ।।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

उत्तर में उत्तुंग जिनालय, जिनकी कोई न सानी ।
बार-बार श्रद्धा युत होकर, नमते सुर मुनि ज्ञानी ।।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थोत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

इससे ऊपर अट्ठाइस दस, शतक योजना जाकर ।
पांडुक वन सोहे पूरब जिनबिंब शांत गुण आकर ।।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिपाण्डुकवनस्थपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

पांडुक वन दक्षिण दिश जिनवर, महिमा गौरवशाली ।
हाथ जोड़ हम विनत करें प्रभु, मेटो शीघ्र भवाली ।।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिपाण्डुकवनस्थदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

पांडुक वन के पश्चिम दिश के, चैत्यालय में जाकर ।
नाचे देव देवियाँ भक्ति, गावें ढोल बजाकर ।।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिपाण्डुकवनस्थपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

दिशा उदीची यक्ष सुरों से, रक्षित है जिनगेहा ।
पांडुक वन थित जिनवर पूजूँ, धर विशेष उर नेहा ।।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिपाण्डुकवनस्थोत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

SarvatoPooja 04 / 55

पूर्णार्घ्य

षट्पदी छंद

भद्रसाल पाण्डुक रु नंदन वन सुखकारा,
साथ सौमनस दिव्य जहाँ जिन दर्शन प्यारा ।
तीर्थंकर अभिषेक सौ सिंचित गिरिवर न्यारा,
विजय मेरु षोडश जिनवर को नमन हमारा ।।

दोहा—सुर असुरों से पूज्य हैं, श्री जिनगृह भगवान ।
अर्चन करके आपकी, भक्त हुए हैं महान् ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता- जय विजय सुगिरिवर, राजें जिनवर, कर्मनाशने नित्य जजूँ ।
निज शुभ गुण पाने, पाप नशाने, आठ याम जिन देव भजूँ ।।

चौपाई छंद

पूर्व धातकी खंड सुहाना, विजयमेरु दूसरा बखाना ।
कल्पद्रुमों से रम्य महा है, चार वनों से युक्त अहा है ।।

जिन चैत्यालय रूप सुजानो, भवक्षय का कारण पहचानो ।
अतः भक्ति युत पूज रचाऊँ, नमूँ नमूँ अक्षय सुख पाऊँ ।।

भद्रशाल भूमी पर सोहे, चार जिनालय युत मन मोहे ।
पाँच शतक योजन ऊपर जा, चित हर्षाए वन नंदन पा ।।

हाथ जोड़कर शीश नवाऊँ, चार जिनालय चउ दिश पाऊँ ।
योजन साढ़े पचपन सहसा, पर सौमनस विपिन शुभ दिवि सा ।।

निर्मल पूर्ण ज्ञान के हेतू, भव से मोक्षमहल तक सेतू ।
सहस अठाईस योजन जाके, मन मयूर नाचे हर्षाके ।।

पांडुक वन में चउ जिनगेहा, हम पूजें शुभ भक्ति नेहा ।
विजय मेरु के सोलह प्यारे, जिनमंदिर अतिशय युत सारे ।।

सहस चुरासी योजन जानो, ऊँचा विजयमेरु शुभ मानो ।
धन्य धन्य घड़ि अति सुखकारी, पूजें चैत्यालय अघहारी ।।

तिनमें मणिमय चैत्य सुहाने, सतरह सौ अट्ठाइस जाने ।
आध्यात्मिक रस धार बही हो, मानो मुख से बोल रही हो ।।

उन सबको नित वंदन करता, पाप कर्म क्षणभर में हरता ।
कोटि-कोटि वंदूँ जिनदेवा, प्रतिपल करें चरण की सेवा ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 04 / 56

(१७)

पूर्व धातकी खंड द्वीप कुलाचल जिनालय पूजन

अथ स्थापना

नरेन्द्र छंद

द्वीप धातकी खंड दूसरा, पूर्व रम्य अनियारा ।
हिमवन आदि कुलाचल हैं जहँ, रत्नदीप उजियारा ।।
ता ऊपर जिनभवन विराजे, शत अठ जिनवर सोहें ।
प्रतिगृह भवि जिन वंदन करते, दरशन से मन मोहे ।।

दोहा–जिनमंदिर जिनदेव का, आह्वानन सुखकार ।
भक्तिवश नित मैं जजूँ, कर-कर जयकार ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

विष्णुपद छंद (तर्ज - कहाँ गये चक्री)

घृतवर सिंधू सम जल लाकर, हम जिनवर पूजें ।
जन्मादिक त्रय रोग नशाकर, हम जिनवर हूजें ।।
द्वीप धातकी खंड पूर्व के, षट्गिरि जिनगेहा ।
जिनगृह जिनवर पूजन से हो, भविजन गत देहा ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

देह ताप संताप मिटाता, चंदन गुणकारी ।
चंदन अर्चन करे भविकजन, होते अविकारी ।।
द्वीप धातकी०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

स्फटिक मणी सम निर्मल अक्षत, जिनवर की पूजा ।
जिनपूजा सम अन्य न कोई, पुनि सुकृत दूजा ।।
द्वीप धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सब ऋतु के शुभ पुष्प मनोहर, चुन चुन कर लाए ।
जिनवर पूज रचा करके, अविकारी हो जाए ।।
द्वीप धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

षटरस मिश्रित भोजन करना, स्वभाव नादि मेरा ।
क्षुधा वेदनी नाशे चरुवर, भक्त बना तेरा ।।
द्वीप धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

मणीमय दीप सजाकर जिनवर, आरति तव गाऊँ ।
चिद् प्रकाश निज में प्रकटाकर, केवलि बन जाऊँ ।।
द्वीप धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

वसुविध धूप जलाकर जिनपद, कर्म नशें मेरे ।
जबलौं तुम सम बनूँ नहीं मैं, गुण गाऊँ तेरे ।।
द्वीप धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

SarvatoPooja 04 / 57

शिवफल पाने इष्ट मनोहर, उत्तम फल लाया ।
भव के सब फल नीरस हमको, शिवफल ही भाया ।।
द्वीप धातकी खंड पूर्व के, षट्गिरि जिनगेहा ।
जिनगृह जिनवर पूजन से हो, भविजन गत देहा ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

अमृत सम शुभ नीर आदि ले, सुंदर अर्घ्य लिया ।
पद अनर्घ की ले अभिलाषा, जिनपद भेंट दिया ।।
द्वीप धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–पूर्व धातकी खंड के, छहों कुलाचल जान ।
जिनगृह जिनवर मैं जजूँ, करूँ स्वात्म पहचान ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोह–छहों कुलाचल पर रहे, जिनमंदिर अभिराम ।
उनकी अर्चा कर लहूँ, शिवपद में विश्राम ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

चंद्रोदय छन्द (तर्ज - पैसा तो हवा का...)

पहिले नग हिमवन् ग्यारह कूट,
मम नमन है शिव कूटों के लिए ।
शुभ धातकी खंड दिशा पूरब,
हँ चलते हैं जिन पूजन के लिए ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थहिमवन्कुलाचलसम्बन्धिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।1।।

दूजे महाहिमवन कूट आठ, मम नमन है शिव कूटों के लिए ।
शुभ धातकी खंड दिशा पूरब, हँ चलते हैं जिन पूजन के लिए ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थमहाहिमवन्कुलाचलसम्बन्धिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

सजे निषध महीधर नव कूटा, मम नमन है शिव कूटों के लिए ।
शुभ धातकी खंड दिशा पूरब, हँ चलते हैं जिन पूजन के लिए ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थनिषधकुलाचलसम्बन्धिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

निर्मल नव कूट नील तुंग पर, मम नमन है शिव कूटों के लिए ।
शुभ धातकी खंड दिशा पूरब, हँ चलते हैं जिन पूजन के लिए ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थनीलकुलाचलसम्बन्धिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

रुक्मी पर्वत मध्य आठ कूट, मम नमन है शिव कूटों के लिए ।
शुभ धातकी खंड दिशा पूरब, हँ चलते हैं जिन पूजन के लिए ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थरुक्मिकुलाचलसम्बन्धिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

शिखरिणी शुभ शैल कूट ग्यारह, मम नमन है शिव कूटों के लिए ।
शुभ धातकी खंड दिशा पूरब, हँ चलते हैं जिन पूजन के लिए ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थशिखरिणकुलाचलसम्बन्धिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

पूर्णार्घ्य

मदिरा छन्द

शाश्वत राजत षट् सुकुलाचल, तापर बिंब विराजत हैं ।
नृत्य करे सुर नाग नरेश सु, किन्नर बीन बजावत है ।।
भाव समेत करें जिन अर्चन, सौम्य छवी अति छाजत है ।
जो जजते जिनबिंब अनूपम, वो नर सिद्धि सु पावत है ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

SarvatoPooja 04 / 58

जयमाला

घत्ता - जिनवर विधिहंता, मुक्ती कंता, जजि अरिहंता संत बनूँ ।
नित पुण्य बढ़ा के, संयम पाके, कर्म नशा के सिद्ध बनूँ ।।

पादाकुलक छंद (तर्ज - तारों सा चमकता)

प्राची शुभ खंड धातकी में, छः पर्वत क्षेत्र करें भाजित ।
हिमवन् आदि शुभ नाम कहे, जिन पर हैं कूट कई राजित ।।

ग्यारह वसु नव नव आठ तथा, एकादश कूट क्रमिक सोहें ।
ये रत्नमयी सब कूट सुभग, बहु गोल-गोल सब मन मोहे ।।

चौथाई पर्वत से ऊँचे, भू व्यास भी इतना ही जाने ।
उसके आधा मुख व्यास कहे, ये कूट सुरचना पहचाने ।।

व्यंतरवासि सुर अरु अंगना, इन कूटों में सुख से रहते ।
सम्यग्दृष्टि जिन पूजन से, वर पुण्य सदा अनुपम लहते ।।

प्रत्येक गिरी पर कूट प्रथम, शुभ सिद्धायतन सु नाम कहे ।
उस पर शाश्वत मंदिर सोहे, जिनबिंब भव्य के पाप दहे ।।

षट् पर्वत पर षट् जिनमंदिर, जिनमें प्रतिमाएँ प्यारी हैं ।
इक शत वसु प्रति जिनगृह में हैं, नित जिनपद धोक हमारी है ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(१८)

पूर्वधातकीखंड द्वीप वक्षारगिरि जिनालय पूजन

अथ स्थापना

विधाता छंद

**धातकी खंड पूरब के, गिरी वक्षार के भगवन ।
चैत्य गृह मैं जजूँ निशदिन, अकृत्रिम बिंब का पूजन ।।
हृदय में भाव अर्चन के, उदधि सम लहर बस आते ।
करूँ आह्वान जिनवर का, जिनेश्वर ही मुझे भाते ।।
दोहा–पूर्व धातकी खंड में, गिरि वक्षार सुजान ।
तिन पर राजित भवन जिन, वंदूँ श्री भगवान् ।।**

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्ब-समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्ब-समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्ब-समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

रूपक सवैया (तर्ज - बखतरतन के तुम)

**चंद्रकांत मणियों से निःसृत, परम शुद्ध जल भरकर लाय ।
जन्मादिक सब दोष नशाने, पूजन भक्ति करें जिनराय ।।
पूर्व धातकी खंड द्वीप के, गिरी वक्षार सुशोभित हैं ।
तिन पर राजित जिनमंदिर पर, सभी सुभव्यजन मोहित हैं ।।**

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

**बहुविध चंदन लेप किया नित, मनः ताप नहीं मिटा सके ।
जिनचरणा जे निशदिन अर्चें, सर्व शांति सुख पाए सके ।।
पूर्व धातकी॰**

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

**अक्षत सी गरिमा पाने को, अक्षत जिन पद नित्य चढ़ाय ।
निर्विकार मैं नित्य निरंजन, बनूँ लहूँ मैं मुक्तिराय ।।
पूर्व धातकी खंड द्वीप के, गिरी वक्षार सुशोभित हैं ।
तिन पर राजित जिनमंदिर पर, सभी सुभव्यजन मोहित हैं ।।**

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

**सुमनों सा मम जीवन महके, अविकारी सब सुख का धाम ।
पुष्पराज जिनचरण चढ़ाकर, मैं भी बनूँ स्वयं निष्काम ।।
पूर्व धातकी॰**

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

**षट्रस मिश्रित व्यंजन नाना, नहीं कभी क्षुधा नश पाये ।
चरुवर थाल चढ़ा जिनचरणा, शाश्वत सौख्य पाने आये ।।
पूर्व धातकी॰**

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

**ज्योतिर्ग्रह सम चमक दीप की, जिनचरणों में नित्य चढ़ाय ।
अन्तस का सर्वस तम नाशूँ, चित में केवल ज्योति जलाय ।।
पूर्व धातकी॰**

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

**वसुविध धूप मिलाकर हम सब, श्री जिनपद की पूज रचाय ।
अष्ट कर्म मम नष्ट होंय सब, ले अभिलाषा जिनपद आय ।।
पूर्व धातकी॰**

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

श्री फलादि सर्वोत्तम फल ले, जिनपद सदा हृदय में धार ।
गाऊँ ध्याऊँ पूज रचाऊँ, नाचूँ हर्षूं करि जयकार ।।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

नीर गंध अक्षत सुश्रेष्ठ शुभ, पुष्प चरू घृत दीपक लाय ।
सुरस चित्तहर फल मिश्रित कर, अर्घ्य चढ़ा जिनपद हर्षाय ।।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा - **मन वच तन से नित जजूँ, गिरि वक्षार जिनेश ।**
पुण्य गहूँ अरु अघ हरूँ, लहूँ स्वात्म सिद्धेश ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अघ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–**विदेह क्षेत्र शुभ धातकी, सोलह गिरि वक्षार ।**
चैत्य चैत्यालय मैं जजूँ, घटे दीर्घ संसार ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जोगीरासा छंद (तर्ज - पिच्छी रे पिच्छी)

सीता नदि के उत्तर तट पर, 'चित्रकूट' वक्षारा ।
भद्रसाल के निकट पहुँचकर, बोलो सब जयकारा ।।
पूर्व धातकी के विदेह में, गिरि वक्षार जिनालय ।
अर्घ चढ़ाकर जिनबिंबों को, पाते भव्य शिवालय ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिचित्रकूटवक्षारपर्वतस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

'पद्मकूट' वक्षारगिरी पर, सिद्धकूट मनहारी ।
सुर नर खग मुनि महिमा गाकर, बनते शिव अधिकारी ।।
पूर्व धातकी के॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिपद्मकूटवक्षारपर्वतस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

SarvatoPooja 04 / 60

'नलिन' गिरी वक्षार स्वर्णमय, विदेहपूर्व की शोभा ।
वहाँ अभी भी मुनि शिव पाते, तजकर कर्मन मोहा ।।
पूर्व धातकी के विदेह में, गिरि वक्षार जिनालय ।
अर्घ चढाकर जिनबिंबों को, पाते भव्य शिवालय ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिनलिनकूटवक्षारपर्वतस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

'एक शैल' वक्षार है शोभित, शुभ विदेह के माँहि ।
जिन मुद्रा कहती सब तज बन, इक आतम अवगाही ।।
पूर्व धातकी के॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्ध्यैकशैलकूटवक्षारपर्वतस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

वसंततिलका छंद

देवा अरण्यनिकटा सु 'त्रिकूट' वक्षा ।
पूजूँ जिनेंद्र तस ऊपर वास दक्षा ।।
सीता नदी सरल[1] पूर्व विदेह नामी ।
वक्षार के सदन चैत्य जजूँ सुस्वामी ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धित्रिकूटवक्षारपर्वतस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

वक्षार 'वैश्रवण' के सब चैत्य वंदूँ ।
त्रैकाल ध्यान कर के नित चित्त नंदूँ ।। सीता॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिवैश्रवणवक्षारपर्वतस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

वक्षार वर्षधर 'अंजन-आतमा' के ।
पूजें जिनेंद्र सुर साधु यहाँ सु आके ।। सीता॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्ध्यञ्जनात्मावक्षारपर्वतस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

वक्षार 'अंजन' गिरी शुभ स्वर्ण सोहे ।
तापै बने जिन निलै सुर चित्त मोहे ।। सीता॰

१. दक्षिण दिशा

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्ध्यञ्जनवक्षारपर्वतस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

हुल्लास छंद

पूर्वधातकी अपरविदेहा, सीतोदा दक्षिण जिन गेहा ।
पनशत योजन ऊपर न्यारा, सिद्धकूट कहलाता प्यारा ।।
कहलाता प्यारा, चैत्य हमारा, सुरखग द्वारा पूज्य भया ।
'श्रद्धावान्' वक्षा, देव सुरक्षा, श्रद्धा दक्षा, सौख्यभया ।।
अर्चों चैत्यालय, देवजिनालय, सब शुभ आलय, अघगालय ।
मैं पूजूँ गाऊँ, ध्यान लगाऊँ, चित्त बसाऊँ, जिनआलय ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिश्रद्धावान्वक्षारपर्वतस्थसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

पूर्व धातकी अपर विदेहा, सीतोदा दक्षिण जिन गेहा ।
कनकमयी शुभ है वक्षारा, सिद्धकूट शुभ नमन हमारा ।।
शुभ नमन हमारा, सुख विस्तारा, भाग्य हमारा, है जागा ।
वक्षार महाना, 'विजटावाना', स्वर्ण समाना, है लागा ।।
चैत्यों की अर्चा, करके चर्चा, अमृतवर्षा, अघभागा ।
शिव सुख भक्ती में, आत्मशक्ति में, जिनभक्ती में, चित्त पागा ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिविजटावान्वक्षारपर्वतस्थसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

पूर्व धातकी अपर विदेहा, सीतोदा दक्षिण जिन गेहा ।
कनकमयी शुभ है वक्षारा, सिद्धकूट जिनवर अघहारा ।।
जिनवर अघहारा, लगता प्यारा, भाग्य सँवारा, भव्यों ने ।
'आशीविष' वक्षा, देव सुरक्षा, शिव सुख लक्षा, हो मन में ।।
जिन भक्ति बढ़ाके, संयम पाके, कर्म जलाके, शिव जाऊँ ।
तिहुँ काल सु ध्याऊँ, सिद्धी पाऊँ, तव गुण गाऊँ, सिर नाऊँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्ध्याशीविषवक्षारपर्वतस्थ–जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

पूर्व धातकी अपर विदेहा, सीतोदा दक्षिण जिन गेहा ।
कनकमयी शुभ है वक्षारा, 'सुखावह' वंदित सुर द्वारा ।।

SarvatoPooja 04 / 61

वंदित सुर द्वारा, श्री वक्षारा, शाश्वत प्यारा, दर्शाया ।
शिवकूट सुध्याके, चित्त बसाके, गुणगण गाके, हर्षाया ।।
मैं पुण्य बढ़ाऊँ, दर्शन पाऊँ, पाप नशाऊँ, भक्ती करूँ ।
वसु कर्म नशाऊँ, वसुगुण पाऊँ, फिर नहि आऊँ, मुक्ती वरूँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिसुखावहवक्षारपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

अडिल्ल छंद

'चंद्र माल' वक्षार जिनालय पूजिए ।
उत्तर तट से भव सागर तर लीजिए ।।
सीतोदा दक्षिण तट पर वक्षार हैं ।
जिनगृह जिनवर मम जीवन आधार हैं ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिचन्द्रमालवक्षारपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

'सूर्यमाल' वक्षार अकृत्रिम स्वर्णमय ।
जिन स्वरूप लख रूप लहूँ निरवर्णमय ।। सीतोदा०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिसूर्यमालवक्षारपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

'नागमाल' वक्षार दिशा उत्तर बसे ।
सिद्धकूट चैत्यालय जजि वसु विधि नशे ।। सीतोदा०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिनागमालवक्षारपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

'देवमाल' वक्षार चैत्य वंदन करूँ ।
मुनि सुर खेचर पूजित जिन क्रंदन हरूँ ।। सीतोदा०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिदेवमालवक्षारपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

पूर्णार्घ्य

षट्पदी छंद

श्रद्धा हिरदै धार जिनेश्वर पूज रचाओ,
वसुविध दरब चढ़ाय झटित वसु कर्म नशाओ ।
पूर्व धातकी मध्य विदेहा गिरि वक्षारा,
तापैं राजित दिव्य जिनों को नमन हमारा ॥

दोहा–पूर्वधातकी मध्य में, गिरी वक्षार सुवर्ण ।
पुष्पांजलि से पूजते, नितप्रति जिनवर चर्ण ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

वक्षार गिरीवर, श्रेष्ठ सु जिनवर, मुनिवर भी तिन ध्यान करें ।
हम मंगल गावें, अशुभ हरावें, निर्मल चित गुणगान करें ॥

वसंततिलका छंद

प्राची दिशा गत सुधातकि खंड द्वीपा,
वक्षार शैल शुभ सोल कहे अधीपा ।
हैं चित्र पद्म शुभ आदि सुनाम वाले,
चैत्यालया थित जजें बहु भाग्यवाले ॥

ता सिद्धकूट जिन मंदिर नित्य सोहें,
सौ आठ चैत्य युत मंदिर चित्त मोहें ।
वक्षार से चदु सुभाग सुकूट ऊँचे,
ता पे जिनालय जजूँ सुहदा समूचे ॥

है धन्य आज क्षण ये जिनदेव ध्याएँ,
वंदें त्रिकाल गुण नंत सदा हि गाएँ ।

SarvatoPooja 04 / 62

पूजे दिगंबर चिदंबर भक्तियुक्ता,
होवे सदा भविक वो वसुकर्म मुक्ता ॥

शोभा महान जिनगेह अवर्णनीया,
नित्यैव देव नर से शुभ वंदनीया ।
ले भक्ति चक्र विधि आठ सु मैं नशाऊँ,
होवे मही शिव सुमंगल गीत गाऊँ ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ॥
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

(१९)

पूर्वधातकीखंड द्वीप गजदंत जिनालय पूजन

अथ स्थापना

नरेन्द्र छंद

पूर्व धातकी खण्ड द्वीप में, चउगजदन्ता सोहें ।
निकट भव्य तहँ पूजन करते, जिनवर लखि मन मोहें ।।
हम अत्यंत विमल भावों से, जिनगृह जिनवर वंदें ।
योगत्रय से आह्वानन कर, अर्चन करि आनंदें ।।
दोहा–**भाव सहित जिनदेव का, आह्वानन करि आज ।**
निज उर में थापन करूँ, पाऊँ शाश्वत राज ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

आँचलीबद्ध चौपाई

भाव सहित प्रासुक जल लाय, अघ नाशन जिन चरण चढ़ाय।
प्रभो वंदन, भव भव का हरता क्रंदन ।।
गजदंता जिन पूज रचाय, पूरब अशुभ कर्म नशि जाय ।
प्रभो वंदन, भव भव का हरता क्रंदन ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

जिन पद शीतल गंध चढ़ाय, शाश्वत निज शीतलता पाय ।
प्रभो वंदन, भव भव का हरता क्रंदन ।।
गजदंता जिन०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

मुक्ता सम अक्षत शुभ लेय, अक्षय पद हितु जिन पद सेय ।
प्रभो वंदन, भव भव का हरता क्रंदन ।।
गजदंता जिन पूज रचाय, पूरब अशुभ कर्म नशि जाय ।
प्रभो वंदन, भव भव का हरता क्रंदन ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

पुष्पों से पूजों जिनराज, पाऊँ अविकारी शिवराज ।
प्रभो वंदन भव भव का हरता क्रंदन ।।
गजदंता जिन०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

षट्रस मिश्रित व्यंजन लाय, जिनपद पूजि क्षुधा नशि जाय।
प्रभो वंदन, भव भव का हरता क्रंदन ।।
गजदंता जिन०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

जिनपद दीप धरूँ तमहार, केवलज्ञान लहूँ सुखकार ।
प्रभो वंदन, भव भव का हरता क्रंदन ।।
गजदंता जिन०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

बहु विधि धूप हुताशन खेय, शुद्धातम की गंध सुलेय ।
प्रभो वंदन, भव भव का हरता क्रंदन ।।
गजदंता जिन०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

सब ऋतु के उत्तम फल साज, जिनपद पूजि लहूँ शिवराज ।
प्रभो वंदन, भव भव का हरता क्रंदन ॥
गजदंता जिन०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

रत्न पुंज का अर्घ बनाय, जिनपद चढ़ा सुशिवपद पाय ।
प्रभो वंदन, भव भव का हरता क्रंदन ॥
गजदंता जिन०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा—चार शतक बत्तीस जिन, गिरि गजदंत सु जान ।
नित प्रति संध्या जे भजें, ते भावी भगवान ॥

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा—निज शुभ हृदय बुहार के, जिनवर सदा बसाएँ ।
जहाँ विराजे स्वयं जिन, दुःख शोक न आए ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जोगीरासा (तर्ज - रोम रोम से निकले...)

विजयमेरु ईशान दिशा में, माल्यवान गजदंता ।
है वैडूर्यमणीमय शाश्वत, नवकूटा संयुक्ता ॥
एक कूट पर जिनचैत्यालय, नादिनिधन अनियारा ।
रत्नमयी शाश्वत जिनबिंबों, को शत नमन हमारा ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिमाल्यवान्गजदन्तसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

विजयमेरु आग्नेय दिशा में, रौप्यमान छवि वाला ।
शुभ्र सौमनस गजदंता है, सात कूट सु निराला ॥
एक कूट०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिसौमनसगजदन्तसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

SarvatoPooja 04 / 64

विजयमेरु नैऋत्य दिशा में, तप्त स्वर्णमय प्यारा ।
विद्युत्प्रभ गजदंत शैल है, नौ सुकूट युत न्यारा ॥
एक कूट पर जिनचैत्यालय, नादिनिधन अनियारा ।
रत्नमयी शाश्वत जिनबिंबों, को शत नमन हमारा ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिविद्युत्प्रभगजदन्तसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

विजयमेरु वायव्य दिशा में, कांचनमय धरणीधर ।
गंध सुमादन गजदंता है, सप्त कूट युत मनहर ॥
एक कूट०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थविजयमेरुसम्बन्धिगन्धमादनगजदन्तसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

पूर्णार्घ्य

द्रुमिल / द्रमिल छंद (तर्ज - केवल रवि किरणों...)

शुभ पूरब धातकि खंड महा, गजदंत गिरी चउ शोभित हैं ।
शुभ वर्ण लिए गिरिराज सभी, जिन पे नर देवनि मोहित हैं ॥
प्रति सिद्ध सुकूट कहे उन पे, जिनगेह अनूप विराजित हैं ।
वसु द्रव्य चढ़ा जिनराज जजूँ, प्रतिमा इक सौ अठ राजित हैं ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता

शुभ चउ गजदंता, जजि गुणवंता, ता स्थित चउ जिन चैत्यालय ।
जिन बिम्ब सुध्याऊँ, अतिहर्षाऊँ, पूजक बनते पुण्यालय ॥

चामर छंद

पूर्व धातकी सुखंड हस्ति दंत चार हैं ।
जो करें सदा हि जैन धर्म का प्रचार हैं ॥

एक एक शैल पे सुकूट नित्य शोभते ।
नौ व सात नौ व सात कूट चित्त मोहतें ॥
पाँच सौ सुयोजना सुसिद्ध कूट जानिए ।
शैल नाम धारि व्यंतरा निवास मानिए ॥
तास पे जिनालया सुवर्ण रत्नवान् है ।
चैत्य वंदनीय भक्ति युक्त हो प्रणाम है ॥
नील आदि पर्वतों सु पार्श्व भाग मानते ।
कूट पे सुदिक्कुमारि वास मान जानते ॥
अन्य मध्य कूट पे सुव्यंतरा निवासते ।
नृत्य गान वे करें जिनेन्द्र भक्ति गावते ॥
एक सौ व आठ चैत्य बिम्ब सुप्रमानिये ।
पूजता सु भक्तियुक्त हो जिनेन्द्र मानिये ॥
चैत्य मानथंभ युक्त देव गेह पूजता ।
केवली सु होत लोक व अलोक सूझता ॥

दोहा–सिरि गजदंत जिनालया, रत्नमयी जिनबिम्ब ।
स्वर्ण पुष्प अर्पित करूँ, लखूँ निजातम बिम्ब ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ॥
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

SarvatoPooja 04 / 65

(२०)

पूर्वधातकीखंड द्वीप विजयार्द्धगिरि जिनालय पूजन

अथ स्थापना

दोहा–पूर्व धातकी खंड में, नेक कुलाचल जान ।
रजताचल के जिन भवन, जजूँ बनूँ भगवान् ॥
अर्चन जिनवर का सदा, अवशोषक संक्लेश ।
आह्वानन कर नित जजूँ, शाश्वत सिद्ध जिनेश ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

अडिल्ल छंद

चंद्ररश्मि सम शीतल नीर चढ़ावता ।
जन्मादिक रुज नाशन को जिन ध्यावता ॥
पूर्व धातकी रजताचल के जिनभवन ।
शिवपद हेतू श्रद्धा युत करते नमन ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय–जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

चंदन लेकर श्री जिन पद हम नित जजें ।
शाश्वत शीतलता हेतू जिनवर भजें ॥
पूर्वधातकी०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय–जिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

अक्षत सम अक्षय बनने की भावना ।
जिन पूजन ही शिवपुर की प्रस्तावना ।।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय–जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

पुष्पों सा कोमल जिनवर मम चित्त हो ।
जिन अर्चन अघक्षय का मात्र निमित्त हो ।।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय–जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

चरुवर जिनपद भेंट क्षुधा निज नाश दूँ ।
शाश्वत निजगुण पाय सिद्धपुर वास लूँ ।।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय–जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

गौघृत दीप जलाय सु नीराजन करें ।
नीराजन का भाव भव्य ले शिव वरें ।।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय–जिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

धूप दशांगी नित्य हुताशन में जला ।
सेवूँ जिनपद कुंज लहूँ शिवपद भला ।।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय–जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

सब ऋतु के सर्वोत्तम फल ले जिन जजूँ ।
पाने शाश्वत सिद्धि कर्म सारे तजूँ ।।
पूर्व धातकी॰

SarvatoPooja 04 / 66

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय–जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

नीरादिक वसु द्रव्य मिला अर्चन करें ।
पद अनर्घ्य के हेतु अर्घ्य जिनपद धरें ।।
पूर्व धातकी रजताचल के जिनभवन ।
शिवपद हेतू श्रद्धा युत करते नमन ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय–जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–रजताचल जजि रज तजूँ, आवरणादि विशेष ।
वंदूँ तीनों योग से, जिनगृह परम जिनेश ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

निज उर धर शाश्वत सदा, जिन प्रतिमा सुख खान ।
आध्यात्मिक शुभ क्षीर का, सदा करूँ रसपान ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

सवैया छंद

विदेह क्षेत्र की 'कच्छा' नगरि, खंड म्लेच्छ हैं पंच सुजान ।
आर्यखंड में तीर्थंकर हैं, जिनशासन रहता अभिराम ।।
देश मध्य विजयार्द्ध गिरी पर, रत्नमयी नवकूट महान ।
पूर्वदिशागत सिद्धकूट पर, वंदूँ जिनगृह जिन भगवान ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिकच्छादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

रत्नमयी भवनों से शोभित, कोटि छ्यानवे ग्राम कहे ।
देश 'सुकच्छा' आर्यखंड में, सौख्य शांति धन धान्य रहे ।।
देश मध्य॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिसुकच्छादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

सुंदर भवनों से आपूरित, सहस पछत्तरनगर प्रमान ।
देश 'महाकच्छा' सुआर्य में, प्रतिपल मोक्षमार्ग अविराम ॥
देश मध्य०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिमहाकच्छादेशमध्यस्थ-विजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

दिव्य मनोहर आलय पूरित, सोलह सहस खेट शुभ मान ।
देश 'कच्छकावती' आर्य में, क्षपक श्रेणि चढ़ते मुनि जान ॥
देश मध्य०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिकच्छकावतीदेशमध्यस्थ-विजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

हैं चौंतीस सहस कर्वट से, युक्त देश 'आवर्ता' ख्यात ।
दिव्य वाणि निःसृत होती है, समवशरण जिनवर विख्यात ॥
देश मध्य०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्ध्यावर्तादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

चार सहस होते मटंब जहँ, देश 'लांगलावर्ता' जान ।
स्वर्ग लोक से देव पधारें, दिव्यध्वनी का करने पान ॥
देश मध्य०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिलाङ्गलावर्तादेशमध्यस्थ-विजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

अड़तालीस सहस उत्तम शुभ, पत्तन युत हैं देश महान ।
नाम 'पुष्कला' पुष्करिणी से, शोभित सुर करते गुणगान ॥
देश मध्य०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिपुष्कलादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

परम रम्य जानो निन्यानव, सहस द्रोणमुख सुख की खान ।
देश 'पुष्कलावति' में रहता, आत्म देह का शुभ विज्ञान ॥
देश मध्य०

SarvatoPooja 04 / 67

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिपुष्कलावतीदेशमध्यस्थ-विजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

सहस अठाइस दुर्गाटवियाँ, युत यह देश लगे अभिराम ।
'वत्सा' नाम मनोहर जाने, रहे निरंतर आतम ध्यान ॥
देश मध्य विजयार्द्ध गिरी पर, रत्नमयी नवकूट महान ।
पूर्वदिशागत सिद्धकूट पर, वंदूँ जिनगृह जिन भगवान ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिवत्सादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

छप्पन अंतरद्वीप बखाने, देश 'सुवत्सा' अतिशयवान ।
देव निरंतर आते जाते, करने तीर्थंकर गुणगान ॥
देश मध्य०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिसुवत्सादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥10॥

सात शतक कुक्षीनिवास हैं, देश 'महावत्सा' शुभ जान ।
पाखंडों से आर्यखंड है, रहित सर्वदा ये पहचान ॥
देश मध्य०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिमहावत्सादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥11॥

रत्नाकर छब्बीस सहस हैं, अद्भुत रत्नों से परिपूर्ण ।
देश 'वत्सकावति' में करते, मुनिजन निज कर्मों को चूर्ण ॥
देश मध्य०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिवत्सकावतीदेशमध्यस्थ-विजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥12॥

सात-सात दिन वर्षा करते, काल मेघ जो सप्त प्रकार ।
वर्षाकाल देश 'रम्या' में, उनन्चास दिन जल की धार ॥
देश मध्य०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिरम्यादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥13॥

सात-सात दिन वर्षा करते, श्वेत मेघ द्वादशविध जान ।
वर्षा 'सुरम्यका' में करते, ये चौरासी दिन पहचान ।।
देश मध्य०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिसुरम्यकादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

वर्षा काले मर्यादित ही वृष्टि एक शत तैंतीस दिन ।
'रमणीया' सुदेश में होती, रातें सुख और सुख के दिन ।।
देश मध्य०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिरमणीयादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

इक शत बीस तरंगिणियों के होय प्रपात उत्पन्न तदा ।
देश 'मंगलावति' में रहता निर्ग्रंथों का मार्ग सदा ।।
देश मध्य०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिमङ्गलावतीदेशमध्यस्थ-विजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

वैश्य शूद्र अरु क्षत्रिय तीनों, वंश वहाँ होते शुभ नाम ।
'पद्मा' देश सुशोभित रहता, सम्यग्दृष्टी नर अविराम ।।
देश मध्य०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिपद्मादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

अत्याचार प्रवृत्ति अन्याय, वहाँ न कदाचित् भी होती ।
देश 'सुपद्मा' में सुरगण की, जिन उत्सव में भीड़ होती ।।
देश मध्य०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिसुपद्मादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

अतिवृष्टी ना अनावृष्टि है, देश 'महापद्मा' में जान ।
क्षपक श्रेणि आरोहण कर मुनि, पाते रहते केवलज्ञान ।।
देश मध्य०

SarvatoPooja 04 / 68

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिमहापद्मादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

देश 'पद्मकावती' पिछानो, नहीं है कोइ धर्माभास ।
प्रतिक्षण मोक्ष महल जा सकते, कर निज आतम पर विश्वास ।।
देश मध्य विजयार्द्ध गिरी पर, रत्नमयी नवकूट महान ।
पूर्वदिशागत सिद्धकूट पर, वंदूँ जिनगृह जिन भगवान ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिपद्मकावतीदेशमध्यस्थ-विजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

तूर्य और गीतों के शब्दों, से महा उत्सव हो गुंजित ।
'शंखादेश' में जिनभक्ति रत, रहते श्रावका अनुरंजित ।।
देश मध्य०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिशङ्खादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

कमल सु उत्पलवन सुगंध से, सहित वापी पुष्करिणी है ।
'नलिना' देश सदा तीर्थंकर, प्रभो पूजा भवतरणी है ।।
देश मध्य०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिनलिनादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

सरस मधुर फल सुंदर पुष्पों, से शोभित कानन हैं कई ।
'कुमुदा' में प्रतिमा योगीश्री, करें सु ध्यान मुनिराज यहीं ।।
देश मध्य०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिकुमुदादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

रवि शशि ब्रह्मा शिव आदिक के, वहाँ गृह मंदिर ना होते ।
'सरिता' में तीर्थंकर जिनवर, धर्म के बीज सदा बोते ।।
देश मध्य०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिसरितादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

है जघन्य अन्तर्मुहूर्त वा पूर्व कोटी उत्कृष्ट कही ।
पुरुष नारी की आयु ऐसी, कही है 'वप्रा' देश सही ॥
देश मध्य॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिवप्रादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥25॥

विविध वर्ण युत नर अरु नारी, प्रभो अर्चन अनुरक्त रहे ।
देश 'सुवप्रा' में ऋद्धीधर, मुनी आदिक के भक्त रहे ॥
देश मध्य॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिसुवप्रादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥26॥

किन्नर सुर नर दुंदुभि आदिक, वाद्य यंत्र ले सुगान करें ।
देश 'महावप्रा' में सब मिल, तीर्थंकर गुणगान करें ॥
देश मध्य॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिमहावप्रादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥27॥

पुष्प पत्र फल आदिक शोभित, घने वृक्षों की आवलियाँ ।
देश 'वप्रकावति' में गाते, देव जिन की विरुदावलियाँ ॥
देश मध्य॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिवप्रकावतीदेशमध्यस्थ-विजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥28॥

प्रात संध्य चहुँ ओर नगर में, हुआ करे नित मंगल गान ।
'गंधा' देश में संयम धारण, कर पाते मुनि शिव वरदान ॥
देश मध्य॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिगन्धादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥29॥

पाँच शतक धनु काया वाले, तप करते यतिदेव महान ।
देश 'सुगंधा' में विहार शुभ, करते तीर्थंकर भगवान ॥
देश मध्य॰

SarvatoPooja 04 / 69

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिसुगन्धादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥30॥

जिनशासन के जयघोषों से, सदा गूंजता है अभिराम ।
देश 'गंधिला' धर्म प्रवर्तक, निश्चित करते भवि कल्याण ॥
देश मध्य विजयार्द्ध गिरी पर, रत्नमयी नवकूट महान ।
पूर्वदिशागत सिद्धकूट पर, वंदूँ जिनगृह जिन भगवान ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिगन्धिलादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥31॥

ऋद्धिधारी देव सुगणधर, नारायण सु चक्री रहते ।
'गंधमालिनी' देश में हलधर, कई शुभ महापुरुष रहते ॥
देश मध्य॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसम्बन्धिगन्धमालिनीदेशमध्यस्थ-विजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥32॥

हाकलिका छन्द (तर्ज - जीवन है पानी की...)

भरतनि रजतगिरी सुभगा, जिनवर भवननि चित्त पगा ।
करमनि वसु नशने जजता, निशदिन जिनवर श्री यजता ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थभरतक्षेत्रसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥33॥

रजत अचल सु एरावत का, इक जिनगृह मणि रत्नन का ।
करमनि वसु नशने जजता, निशदिन जिनवर श्री यजता ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थैरावतक्षेत्रसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥34॥

पूर्णार्घ्य

मैनावली छंद

श्री धातकी खंड प्राची सु श्रीमान्,
चौंतीस क्षेत्रनि रुप्या गिरीवान् ।
शैलेन्द्र पे दिव्य चैत्यालया देव,
पूजें नशे कर्म जैनेश्वरा एव ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

श्रीजिनवर वंदन, पाप निकंदन, हरि आक्रंदन, शांति करें ।
शुभ ज्ञान प्रकाशे, चिद तम नाशे, सत्यबोध दे भ्रांति हरें ।।

शेर चाल (तर्ज - जय-जय श्री अरिहंत)

विजयार्द्ध पूर्व धातकी के नित्य शोभते ।
विद्याधरों की श्रेणियाँ सु नित्य मोहते ।।
चक्रवर्ती की विजय आधी यहाँ कही ।
विजयार्ध शैल नाम सार्थक हुआ सही ।।

योजन में अर्द्धशत कहे दक्षिण सु उत्तरा ।
ऊँचाई में पच्चीस योजना ये उत्तमा ।।
आभियोग्य देव दूजी कटनी राजते ।
शिखरों पे नौ नौ कूट ये मनोज्ञ साजते ।।

सिद्धायतन सुप्राचिदिशागत सुहावना ।
पूर्वमुखी है जिनालय लुभावना ।।
एक रजतशैल पर एक जिनसदन ।
चौंतीस गिरि पर कहे चौंतीस जिनभवन ।।

लम्बाई दो हजार धनुष गृह की जानिए ।
चौड़ाई एक सहस धनुष इनकी मानिए ।।
पंद्रह शतक धनुष गृह जिन ऊँचे कहाए ।
मणिरत्नमय चैत्य गृह चित्त लुभाए ।।

SarvatoPooja 04 / 70

फरफराए मंदिरों पे धर्म पताका ।
नादि से गा रही जिनेंद्र देव कि गाथा ।।
मालाएँ हजारों सुमंदिरों में सुहाती ।
जिनथान पहुँच मानों अपना भाग्य जगाती ।।

त्रय हजार छः सौ बहत्तर बताई हैं ।
प्रतिमाएँ कुल जिनालयों में श्रेष्ठ गाई हैं ।
भाव भक्ति युक्त करूँ इनकी वंदना ।
प्रभुभक्ति चक्र अग्र होए कर्म बंधना ।।

दोहा–प्राची धातकि द्वीप शुभ, तहँ विजयार्ध महान ।
तिनके सब जिनवर नमूँ, करूँ स्वात्म कल्याण ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय–जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(२१)

पूर्वधातकीखंड द्वीप धातकीवृक्ष शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजन

अथ स्थापना

विधाता छंद

धातकी खंड पूरब में, विराजित वृक्ष अनुपम हैं ।
धातकी शाल्मली दोनों, स्वर्णमणिखचित निरुपम हैं ।।
सु शाश्वत चैत्य चैत्यालय, जिनेश्वर के तहाँ साजे ।
करूँ मैं नित्य आह्वानन, चित्त पद में सदा राजे ।।
दोहा - खंड धातकी मध्य में, युग्म तरू शुभ थान ।
शाश्वत चैत्यालय तहाँ, तिन में श्री भगवान ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसम्बन्धिद्वयजिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसम्बन्धिद्वयजिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसम्बन्धिद्वयजिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

मराठी चाल

जल निर्मल कलश भर लाऊँ, जिन चरणों में नित्य चढ़ाऊँ ।
गुण तेरे प्रभो नित्य गाऊँ, जिनेन्द्र गुण चिंतन करूँ मैं नित ही ।।
पूर्वधातकी तरुवर सुप्यारे, ये अनादि निधन जग में न्यारे ।
जिन भक्तों के तुम ही सहारे, जिनेन्द्र गुण चिंतन करूँ मैं नित ही ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसम्बन्धिद्वयजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

स्वर्ण कलशों में चंदन मैं लाऊँ, जिनपद में चढ़ा हर्षाऊँ ।
प्रभु गुण पर सदा मैं लुभाऊँ, जिनेन्द्र गुण चिंतन करूँ मैं नित ही ।।
पूर्वधातकी॰

SarvatoPooja 04 / 71

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसम्बन्धिद्वयजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

अक्षत मोती समा शुभ्र लाके, श्री जिनवर की पूजन रचाके ।
भक्ति उनकी करूँ गीत गाके, जिनेन्द्र गुण चिंतन करूँ मैं नित ही ।।
पूर्वधातकी तरुवर सुप्यारे, ये अनादि निधन जग में न्यारे ।
जिन भक्तों के तुम ही सहारे, जिनेन्द्र गुण चिंतन करूँ मैं नित ही ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसम्बन्धिद्वयजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सब ऋतु के सुमन भक्त लाये, जिन पूजा से काम नशायें ।
अविकारी सुभाव बनायें, जिनेंद्र गुण चिंतन करूँ मैं नित ही ।।
पूर्वधातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसम्बन्धिद्वयजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

बहु मिष्ठान्न स्वादिष्ट लाके, नाथ अर्चूं सुपाद चढ़ाके ।
अति हर्षूं मैं पूज रचाके, जिनेंद्र गुण चिंतन करूँ मैं नित ही ।।
पूर्वधातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसम्बन्धिद्वयजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

गौघृत के सुदीप जलाए, नीराजन प्रभु की सु गाएँ ।
ज्ञान केवल सुभावना भाएँ, जिनेन्द्र गुण चिंतन करूँ मैं नित ही ।।
पूर्वधातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसम्बन्धिद्वयजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

धूप सुरभित हुताशन में खेऊँ, पाद अंबुज जिनेश्वर के सेऊँ ।
जिनभक्ति में मन को सनेहूँ, जिनेन्द्र गुणचिंतन करूँ मैं नित ही ।।
पूर्वधातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसम्बन्धिद्वयजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

श्रेष्ठ श्रीफल प्रभु पद चढ़ाके, मुक्ति मारग सुसंयम मैं पाके ।
अतिशय श्री जी के नित्य सुनाके, जिनेन्द्र गुण चिंतन करूँ मैं नित ही ।
पूर्वधातकी०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसम्बन्धिद्वयजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

श्रेष्ठ रत्नों का अर्घ्य बनाया, मैंने पूजन का थाल सजाया ।
मन मेरा प्रभु गुण लुभाया, जिनेन्द्र गुण चिंतन करूँ मैं नित ही ।।
पूर्वधातकी०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसम्बन्धिद्वयजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा—**शालमली अरु धातकी, युगल वृक्ष शुभ जान ।**
शाश्वत जिनगृह मैं जजूँ, पूजूँ नित भगवान् ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

तरलनयन छंद

जिन नयन अमृत बरसत, जिन नयनन लख हरषत ।
तुम सम लहि सुख निरखत, तव सुभगति रस बरसत ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

इन्द्रवज्रा छंद

श्री धातकी खंड सुपूर्व माँही, सोहे कुरू उत्तर भूमि ताँही ।
श्री धातकी चैत्य तरू विशाला, पूजें सुचैत्यालय जो निराला ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

मेरूनि नैऋत्य तरू विराजे, श्री शाल्मली देव कुरूनि साजे ।
चैत्यालया शाश्वत वंदता हूँ, ले आठ द्रव्य नित अर्चता हूँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

पूर्णार्घ्य

इन्द्रवज्रा छंद

श्री धातकी खंड तरू सु सोहें, दो धातकी शाल्मलि चित्त मोहें ।
चैत्यालये दो जिन राजते हैं, पूजें सदा कर्मनि नाशते हैं ।।

SarvatoPooja 04 / 72

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थद्वयजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

तरु शाश्वत युगलं, जिनवर विमलं, मम चित अमलं, नित्य रहे ।
सुन जिनवर बैना, हर्षें नैना, चित में चैना, नित्य बहे ।।

चउबोला छंद

पूर्वधातकी खंड द्वीप में, विजयमेरु अति तुंग कहा ।
उसके ईशाने उत्तर कुरु, वृक्ष धातकी रम्य महा ।।
वृक्ष नाम पे द्वीप धातकी, खंड यही जाना जाता ।
मध्यलोक में द्वीप दूसरा, यही सदा माना जाता ।।

स्वर्णमयी नानारत्नों युत, आधा योजन ऊँची है ।
एक बटे सोलह योजन ये, चौड़ी वेदि समूची है ।।
वलयाकार चार गोपुर युत, वेदिका सु अंबुज सारी ।
इक दूजे को हैं ये घेरे, रत्नमणिमय वे न्यारी ।।

पहले दूजे अंतराल में, कोई रचना नहीं कही ।
वापि वृक्ष वन सुरआवासों, से नित ही वे रिक्त रहीं ।
बाह्य वेदि से तीजे अंतर, में शत उत्तर आठ तरू ।
धातकी यक्ष देवों के हैं वे, उन स्थित जिन नमन करूँ ।।

चौथे अंतर पूरब यक्षी, देवों के चउ वृक्ष कहे ।
पंचम में वन जहाँ कोण चतु, तथा वेदिका गोल कहे ।।
षष्टम में कुछ नहीं बताया, अतः सातवें को लखकर ।
प्रती दिशा में चउ चउ सहसा, तनुरक्षक के हैं तरुवर ।।

अष्टम में ईशान व उत्तर, वायव्य में चार सहस्र ।
सामानिक देवों के तरुवर, कुल ये धातकि वृक्ष सहज ।।

नवमें में आग्नेय दिशा में, हैं बत्तीस हजार तरू ।
दसवें में अरु दक्षिण दिश में, हैं चालीस हजार तरू ।।

एकादशवें अंतराल में, अड़तालिस हजार होते ।
क्रम से आभ्यंतर मध्यम अरु, बाह्य पारिषद देवों के ।।
बारहवें में सैन्य महत्तर, सात वृक्ष दिश पश्चिम में ।
इन परिवार वृक्षों के मध्य, मुख्य धातकी अंतिम में ।।

उत्तमभोग मही नैऋत्ये, यूँ हि शाल्मली वृक्ष कहा ।
मरकत मणिमय रत्न पुष्प युत, मणिफल अति ही शोभ रहा ।।
देवकुरुनि परिवार वृक्ष थित, जिनगृह जिन को भी वंदन ।
मुख्य वृक्ष दो चैत्यालय हैं, हरें सदा भव भव क्रंदन ।।

जिन सदनों में शाश्वत जिन को, भाव सहित अभिनंदन है ।
गतरागी गतद्वेषी जिनवर, कोटि कोटि अभिनंदन है ।।
नादि निधन जिन चैत्य चैत्यालय, की पूजन कर हर्षाऊँ ।
दुःख दूर हों, कर्म चूर हों, हो समाधि ये वर चाहूँ ।।

दोहा–पूर्व धातकी खंड के, चैत्य सु वृक्ष महान ।
जिनबिम्बों को पूजकर, पावें मोक्ष निधान ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसम्बन्धिद्वयजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 04 / 73

(२२)

पूर्वधातकीखंडद्वीप भरतक्षेत्र भूतकालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

दोहा–पूर्व धातकी खण्ड में, भरत भूत कालीन ।
प्रभु रत्नप्रभ आदि हैं, रहूँ चरण नित लीन ।।
आह्वानन मैं भक्ति वश, करूँ सदा जिनदेव ।
शुभ भावों से जिन जजें, लहें मुक्ति स्वयमेव ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकर-समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकर-समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकर-समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

नरेन्द्र छंद

कोहिनूर हीरों से निर्मित, नीर क्षीर भरि लाये ।
जनम जरा मृतु नाश करन हित, जिनवर पाद चढ़ाये ।।
पूर्वधातकी खण्ड भरत के, भूतकाल जिन वंदूँ ।
उत्तम द्रव्य चढ़ा जिन ध्याऊँ, शुद्धातम आनंदूँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

चंदन उबटन लेपन करते, देह शांति कुछ पाता ।
जिन चरणों में भेंट करें यदि, चित शीतल हो जाता ।।
पूर्वधातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

हीरक मुक्ता सम तंदुल ले, जिनवर अर्चन करते ।
वैभाविक परिणति को नशने, शाश्वत सिद्धी वरते ॥
पूर्वधातकी०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

नीलम पन्ना मूंगा हीरक, पुष्प सँजोकर लाए ।
कामवेग हो नष्ट अतः मदनेश चरण चित लाए ॥
पूर्वधातकी०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

तन की भूख मिटाने को सब, निशदिन भोजन करते ।
जो चरुवर से जिनवर पूजें, क्षुधा वेदनी हरते ॥
पूर्वधातकी०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

रत्नथाल में गौघृत दीपक, कर प्रजाल हम लाए ।
आत्म देश में विद्यमान तम, उसे नशाने आए ॥
पूर्वधातकी०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

गंध सुगंध पुद्गल पर्याय, चेतन गुण न देती ।
अतः चर्ण जिन धूप चढ़ा हम, धूप कर्म नश देती ॥
पूर्वधातकी०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

शिवफल का चिंतन करने से, जग फल नीरस होते ।
श्री फल से जिनपूजा कर हम, शिव हित सुकृत बोते ॥
पूर्वधातकी०

SarvatoPooja 04 / 74

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

निज शक्ती परमोत्तम द्रव ले, सुन्दर अर्घ्य बनाऊँ ।
पद अनर्घ्य की प्राप्ति हेतु मैं, जिनपद हृदय बसाऊँ ॥
पूर्वधातकी खण्ड भरत के, भूतकाल जिन वंदूँ ।
उत्तम द्रव्य चढ़ा जिन ध्याऊँ, शुद्धातम आनंदूँ ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–भूतकाल तीर्थेश शुभ, पूर्व धातकी खंड ।
श्रद्धा युत मैं पूजहूँ, पाऊँ शील अखंड ॥

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–अठदस दोष रहित विभो, तुम पर मम विश्वास ।
तव पूजक निश्चित करे, अष्टम भू पर वास ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अडिल्ल छंद (तर्ज - सोलहकारण भाय)

रत्नत्रय दाता श्री 'रत्नप्रभ' महा ।
तीन योग से वंदन करता नित अहा ॥
पूर्व धातकी के अतीत तीर्थंकरा ।
पूजत पावें भवि निश्चित शिवसुख वरा ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री रत्नप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

'अमितनाथ' जिनदेव अमित गुण से सजे ।
निकट भव्य ही तव अर्चन कर विधि तजें ॥ पूर्व धातकी०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

'संभवजिन' के चरण भक्ति युत पूजिए ।
भव सुख उत्तम पाय कर्म चकचूरिए ॥ पूर्व धातकी०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्भवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

कर्म कलंक विनाशक जिन 'अकलंक' जी ।
शुद्ध भाव युत जजूँ लहूँ शिव अंक जी ।। पूर्व धातकी०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अकलंकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

भवि उर कुमुद विकासी, 'चन्द्र' जिनेश को ।
अर्चूं श्रद्धा युत तज सब संक्लेश को ।। पूर्व धातकी०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्रस्वामीजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

जजूँ 'शुभंकर' नाथ जगत मंगलकारी ।
अशुभ कर्म परिहारक जिनवर सुखकारी ।। पूर्व धातकी०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री शुभंकरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

सर्व तत्त्व उपदेशक जिनवर को ध्याऊँ ।
'तत्त्वनाथ' जजि आत्म तत्त्व को पा जाऊँ ।। पूर्व धातकी०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री तत्त्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

'सुंदरस्वामि' पूजक को हो भय कैसा ।
मम स्वरूप अरु रूप बने तेरे जैसा ।। पूर्व धातकी०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुन्दरस्वामीजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

देव 'पुरंधर' परम धर्म की शान हैं ।
धर्म धुरंधर सुर पूजित भगवान हैं ।। पूर्व धातकी०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुरंधरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

'स्वामिदेव' नित भव्यों से अभिनंदिता ।
जजूँ नित्य सुर इन्द्रों से जो वंदिता ।। पूर्व धातकी०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वामिदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

'देवदत्त' जिन पूजन में अनुरक्त जो ।
देव इन्द्र भूषित हो पाय शिवत्व वो ।। पूर्व धातकी०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवदत्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

वासवपूजित 'वासवदत्त' जिनेश्वरा ।
वास होय तव पद में हो परमेश्वरा ।। पूर्व धातकी०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वासवदत्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

SarvatoPooja 04 / 75

'श्रेयोनाथ' जजूँ श्रेयस के कारणे ।
करूँ श्रेय से नेह भवोदधि तारने ।।
पूर्व धातकी के अतीत तीर्थंकरा ।
पूजत पावें भवि निश्चित शिवसुख वरा ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रेयोनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

विश्ववंद्य भगवंत संत नित ध्यावते ।
'विश्वरूप' की संस्तुति कर सुख पावते ।। पूर्व धातकी०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वरूपजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

जिनके तप का तेज जगत में व्याप्त है ।
'तपस्तेज' आराधक होते आप्त हैं ।। पूर्व धातकी०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री तपस्तेजजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

श्री 'प्रतिबोध' सुदेव जजूँ उर लायके ।
लहें आत्म प्रतिबोध भव्य शिर नायके ।। पूर्व धातकी०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रतिबोधजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

आत्म सिद्धि का अर्थ जान सिद्धि लही ।
श्री 'सिद्धारथ' देव अर्च लहुँ शिव मही ।। पूर्व धातकी०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धार्थदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

यम संहारक स्वामि श्री 'संयम जिना' ।
जजूँ रहूँ ना इक पल भी संयम बिना ।। पूर्व धातकी०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री संयमजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

द्रव्यभाव नोकर्म मलों से मुक्त हो ।
'विमलनाथ' पद नमूँ विमल चित युक्त हो ।। पूर्व धातकी०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

सौ इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर नित नमूँ ।
श्री 'देवेन्द्र' जिनेश गुणामृत में रमूँ ।। पूर्व धातकी०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवेन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

'प्रवरनाथ' अरि मोह नाश मुक्ति वरी ।
जिन अर्चा ही मुक्ती की युक्ती खरी ।। पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रवरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

'विश्वसेन' जिन बैन सर्व जन कल्याणी ।
करूँ पूज दिन रैन वरूँ मुक्तिरानी ।। पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वसेनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

'मेघनंदि' पद में आनंद रहे सदा ।
तव पदाब्ज अलि भक्त लहे न दुख कदा ।। पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मेघनन्दिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

'त्रिजेतृक' जिनदेव की पूज रचायके ।
मुक्ति लहूँ जिन चरणा शीश नवायके ।। पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिजेतृकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

पूर्णार्घ्य

शुद्धगीता छंद (कर्म के खेल कैसे हैं...)

जजूँ भगवान विज्ञानी, तजी संसार की माया ।
किया उद्धार भव्यों का, स्वयं सुख सिद्ध का पाया ।।
धातकी द्वीप प्राची का, क्षेत्र आदी जु बतलाया ।
जिनेश्वर भूत के पूजूँ, लहूँ मुक्ती तरू छाया ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री रत्नप्रभादित्रिजेतृकनाथपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

श्री जिनतीर्थंकर, सर्वहितंकर, क्षेमंकर जग के स्वामी ।
कल्याण होय मम, नशे मोहतम, जजें भक्त नित शिवगामी ।।

SarvatoPooja 04 / 76

चौपाई

जिनगुण संस्तुति भवि अघहारी, तिनके चरणनि धोक हमारी ।
भाव सहित जिनवर गुणमाला, गाकर मैं पाऊँ शिवशाला ।।

सोलहकारण भाकर योगी, बनें शुद्ध आतम के भोगी ।
दरश विशुद्धि धरे चित माँही, जीव मात्र के हित वे चाही ।।

निज सम्यक्त्व शुद्ध वे पालें, दोष पचीसों निशदिन टालें ।
अंग आठ धरि दूषण छोड़ें, प्रशम आदि से नाता जोड़ें ।।

पणविध विनय धरें वे ज्ञानी, बनें शुद्ध नित आतम ज्ञानी ।
निरतिचार व्रत शील सु पालें, स्वपर आपदा क्षण में टालें ।।

रहें अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोगी, शुद्धातम रस के वे भोगी ।
धर्म धर्मफल शुभ अभिलाषा, नाशें भव वर्द्धक सब आशा ।।

त्याग शक्तितः निशदिन धारें, मोह कर्म को नित संहारें ।
इच्छा रोध करें मुनि ज्ञानी, सदा धरें चित में जिनवाणी ।।

साधु समाधि सदा मन भावे, नंत भवों को शीघ्र नशावें ।
वैय्यावृत्ति धर्म की सेवा, बिन साधु मिलती नहीं मेवा ।।

अर्हद्भक्ति सदा उर धारें, काम वासना सभी निवारें ।
सूरी भक्ति सदा उर धारें, पंचाचार सुखद वे पावें ।।

बहुश्रुतवंत भक्ति चित लावें, केवलज्ञान अनंतर पावें ।
प्रवचन भक्त होय शिवपंथी, यथाजात साधू निर्ग्रंथी ।।

षट्आवश्यक धर्म जु पालें, निश्चय रु व्यवहार सम्हालें ।
धर्मप्रभावक शासन थंभा, मोक्ष मार्ग में नित आरंभा ।।

वत्सल भाव धरम संजोगी, धर्म प्रवर्तक नित्य नियोगी ।
सोलह भावन भा वैरागी, स्वपर आत्महित में अनुरागी ।।

पूर्वधातकी जिन तीर्थेशा, तिनको वंदन नंत हमेशा ।
भक्ति भवोदधि तारणहारी, उभय लोक में नित सुखकारी ।।

दोहा–नाम मात्र तीर्थेश का, भाव सहित जो लेय।
ज्ञानावरणी नाशकर, जानें सर्व सुज्ञेय ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ॥
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

SarvatoPooja 04 / 77

(२३)

पूर्वधातकीखण्डद्वीप भरतक्षेत्र वर्तमान-कालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

नरेन्द्र छंद

पूर्व धातकी खण्ड भरत के, तीर्थंकर चउवीसा ।
वर्धमान बनने नित पूजूँ, संप्रति देव मुनीशा ॥
भक्ति भाव से आह्वानन कर, जिनवर पूज रचाने ।
बोधि समाधि सुभाव शुद्धि युत, आत्म विशुद्धि बढ़ाने ॥

दोहा–आह्वानन करता प्रभो, मम उर हो तव वास ।
सिद्ध सुगुण वसु पा सकूँ, करूँ कर्म सब नाश ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

नरेन्द्र छंद

लेकर प्रासुक नीर जिनेश्वर, पूज रचाने आया ।
दोष अठारह नाश होय मम, तव पद पर ललचाया ॥
पूर्व धातकी भरत संप्रती, चउवीसों जिन ध्याऊँ ।
धर्म प्रवर्तक तीर्थंकर भजि, तीर्थंकर बन जाऊँ ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

मलयागिरि उत्तम तरुवर का, हम चंदन ले आये ।
भवाताप के नाश करन को, जिनपद अग्र चढ़ाये ॥
पूर्व धातकी०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

अक्षत श्री जन पद नित भेंटूँ, अक्षय पद को पाने ।
जिन पद में नित वास करूँ मैं, निज को सिद्ध बनाने ।
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

सुमन मानते भविजन उत्तम, किंतु काम संवर्द्धक ।
जिनपद पुष्प करुँ अर्पण मैं, बनूँ स्वात्मगुणवर्द्धक ॥
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

जिनवर चरणों उत्तम चरुँवर, भेंटूँ क्षुधा नशाने ।
मैं अनादि से व्याकुल हूँ जिन, शुद्धातम रस पाने ॥
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

मिथ्यात्रय के कारण जग में, मैं अनादि से भटका ।
तव चरणों में दीप चढ़ाकर, मेटूँ भव का खटका ॥
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

जिन चरणों में धूप चढ़ाकर, आठों कर्म नशाऊँ ।
लहूँ शुद्ध शिववसुगुण तेरे, तीर्थ केवली ध्याऊँ ॥
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

जिस फल बिन सब जीवन निष्फल, वही सिद्धफल पाने ।
श्री फल अर्पण करने आया, आठों कर्म नशाने ॥

SarvatoPooja 04 / 78

पूर्व धातकी भरत संप्रती, चउवीसों जिन ध्याऊँ ।
धर्म प्रवर्तक तीर्थंकर भजि, तीर्थंकर बन जाऊँ ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

हे जिनेन्द्र तव पद अनर्घ हैं, उसको पाने आया ।
नीरादिक वसु द्रव्य मिलाकर, तुमको अर्घ्य चढ़ाया ॥
पूर्व धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा—**वर्तमान चौबीस जिन, भक्ति मुक्ति आधार ।**
पूर्व धातकी खण्ड के, जजूँ लहूँ शिवद्वार ॥

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

वर्तमान में शोभते, ऋद्धिवर महाराज ।
नमन उन्हें कर जोड़कर, बनते बिगड़े काज ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

नाराच छंद

जजूँ 'युगादि देव' नित्य आत्म बोध पावने,
भवाब्धि नीर सोखने कलंक कर्म नाशने ।
जजूँ सुक्षेत्र आदि पूर्व धातकी सु देवता,
प्रवर्तमान वर्तमान तीर्थ नाथ पूजता ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री युगादिदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

सिरी सु 'सिद्ध अंत' देव वंदना त्रिकाल में,
करूँ सुभाव से सदा लहूँ त्रिलोक भाल मैं । जजूँ॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धान्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

'महेशनाथ' सुप्रसिद्ध आत्मसिद्धि हेत हो,
नमूँ जिनेश को हमेश मोक्ष पंथ देत हो । जजूँ॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महेशनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

नमूँ 'परं सुअर्थ' देव टालते अनिष्ट को,
जपे सुजाप आपकी करे विधी विनष्ट वो। जजूँ॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमार्थजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

सिरी 'समुद्धरा' स्वभाव लीन देव हो बली,
जजूँ सुनाम नित्य शीघ्र पाप की बला टली। जजूँ॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री समुद्धरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

सु 'भूदरासुनाथ' चर्ण शर्ण में रहूँ सदा,
अगम्य दुर्निवार दुक्ख लेश ना रहे कदा। जजूँ॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री भूदरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

नमूँ 'उजोत' देव आप लोक में प्रधान हो,
जिनाग्र शीश जो झुका पुनीत पुण्यवान वो। जजूँ॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री उद्योतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

जजूँ जिनेश 'आर्जवा' सुमोक्ष के निमित्त को,
प्रभाव नाथ आपका स्वभाव में प्रवृत्त हो। जजूँ॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री आर्जवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

जगत्त्रयेश हो 'अभै सुनाथ' भै निवारका,
ममत्व छोड़ पूजता भवाब्धि नीर तारका। जजूँ॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अभयनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

प्रकंप 'अप्रकंप' नाथ से हुआ सुरासना,
जिनेंद्र अर्चना बिना मिले न सिद्ध आसना। जजूँ॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अप्रकम्पजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥10॥

जिनेश 'पद्मनाथ' आत्म देश में पधारिये,
निजस्वरूप सा हि नाथ अज्ञ को सँवारिये। जजूँ॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पद्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥11॥

हिये बसाय 'पद्मनन्दि' देव भव्य नंदिता,
सुअर्चना करूँ जिनेश जो शतेन्द्र वंदिता। जजूँ॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पद्मनन्दिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥12॥

SarvatoPooja 04 / 79

'प्रियंकरेश' पाद पद्म चित्त में बसायके,
जजूँ जिनेन्द्र हाथ जोड़ शीश को नवायके।
जजूँ सुक्षेत्र आदि पूर्व धातकी सु देवता,
प्रवर्तमान वर्तमान तीर्थ नाथ पूजता॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रियंकरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥13॥

जिनेश 'सूकृतेश' को जजूँ सुभक्ति भाव से,
प्रणाम हो त्रिलोक पूज्य पूजता हुँ चाव से। जजूँ॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुकृतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥14॥

जजे सुभावि सिद्ध भव्य 'भद्रनाथ' पाद को,
प्रकृष्ट भद्र ही लहे सुमोक्ष के प्रसाद को। जजूँ॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री भद्रनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥15॥

सिरी 'मुनीन्द्र चन्द्र' दर्श मुक्ति दर्श दीपका,
रहो हमेश चित्त नाथ मोक्तिका हि सीप का। जजूँ॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिचन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥16॥

किये सु पंच मुष्टि लोंच पंचवर्त नाशने,
भवी जजें सु 'पंचमुष्टि' चित्त को प्रकाशने। जजूँ॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पञ्चमुष्टिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥17॥

'त्रिमुष्टि' भक्ति से सदा विनष्ट अष्ट कर्म हो,
त्रिलोक पूज्य तीर्थ हो वरे शिवत्व शर्म वो। जजूँ॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिमुष्टिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥18॥

जिनेश 'गांगिकेश' की सुभक्ति गंगवाहिनी,
कलंक नाश भक्त साख हो जगत्प्रधायिनी। जजूँ॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री गाङ्गिकनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥19॥

गणेशनाथ हो गणप्रधान पूज्य लोक में,
जिसे मिली पदाब्ज शर्ण हो कभी न शोक में। जजूँ॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीगणनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥20॥

सुरूप 'सर्व अंग' देव श्रेष्ठ पूजता भला,
सहस्त्र नेत्र से लखें सुरेन्द्र दिव्य सी कला। जजूँ॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वाङ्गदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥21॥

चित्त रूप 'ब्रह्मइंद्र' तीर्थ आत्म में रमें ।
जजे जु भक्ति भाव भक्त सिद्धरूप ही बने ।। जजूँ॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री ब्रह्मेन्द्रनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

विनीतभाव से सुरेन्द्र वीनती सदा करे ।
सु 'इंद्रदत्त' पूज सर्व क्लेश जन्म के हरे ।। जजूँ॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री इन्द्रदत्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

जिनेन्द्र 'नायका' सुनाथ विश्ववंद्य नायका ।
करे जु पूज आपकी सुदृष्टि पाय क्षायिका ।। जजूँ॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री नायकनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

पूर्णार्घ्य

गीतिका छंद

वंदना करूँ भाव शुभ ले, धर्म चक्री की सदा,
वर्तमान जिनेश चौबिस, भरत क्षेत्रज सर्वदा ।
पूर्व धातकि द्वीप के सब, तीर्थ जिन पूजक मुदा,
तव पादपद्म हिदै बसे जबलौं विधि न हो जुदा ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीयुगादिदेवादिनायकनाथपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता–जिन अर्चन तेरी, सुखद घनेरी, शिवपुर दाता कहलाए ।
तव पद गुण गाऊँ, हृदय बसाऊँ, भव भव फेरी नश जाए ।।

पायत्ता

शुभ खंड धातकी सोहे, तहँ पूर्व भरत मन मोहे ।
जिन वर्तमान तीर्थंकर, गुण गाऊँ प्रभु क्षेमंकर ।।

वसु प्रातिहार्य युत जिनवर, तव अर्चन निश्चित अघहर ।
जिन समवशरण में राजित, मम चित में नित्य विराजित ।।

SarvatoPooja 04 / 80

है तरु अशोक की छाया, सब शोक नशे जिनराया ।
भवि लख तरु शोक नशावे, निज शाश्वत मंगल पावे ।।

त्रय छत्र सजे सिर माहीं, तुम सम सु देव अन नाहीं ।
तुम तीन लोक के राया, तव शासन भवि को भाया ।।

भामण्डल छवि सुख वाली, दिखती भवि सप्त भवाली ।
सद्दृष्टि ही लखि पावे, अरु अपने पाप नशावे ।।

मणिमय सिंहासन राजे, जिन वीतराग छवि छाजे ।
चतुरंगुल नभ में स्वामी, हम पूज बनें शिवगामी ।।

तव भक्ति में सुर राजे, नभ से सुर दुंदुभि बाजे ।
सुर नर नित मोद मनावें, अघनाश देख हर्षावे ।।

स्वर्णिम सुमनों की वर्षा, लख करके भवि मन हर्षा ।
ते सुरगण हैं बड़भागी, भवि नित्य धर्म अनुरागी ।।

सुर चौंसठ चंवर ढुरावें, जिन गुण की महिमा गावें ।
पन विध वे विघ्न नशावें, अरु निजस्वरूप लखि पावें ।।

तव दिव्य ध्वनि कल्याणी, निश्चय शिवसुख वरदानी ।
जिन वचनामृत उर धारें, वे निश्चित मोक्ष पधारें ।।

दोहा - छवी आपकी मोहनी, शांत सौम्य अविकार ।
वीतराग तीर्थेश को, वंदन करूँ हजार ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(२४)

'पूर्वधातकीखंडद्वीप भरतक्षेत्र भविष्य-कालीन तीर्थंकर पूजन'

अथ स्थापना

अडिल्ल छंद

तीर्थंकर सिद्धार्थ आदि गुण गाइये ।
अंतिम शाश्वत जिन को शीश नवाइये ॥
पूर्व धातकी भरतक्षेत्र के जिन वंदूँ ।
भावी तीर्थंकर पूजि नित आनंदूँ ॥

दोहा - पूर्व धातकी खंड शुभ, क्षेत्र भरत तीर्थेश ।
आह्वानन कर जिन जजूँ, नाशूँ कर्म अशेष ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

नलिन छंद (तर्ज - मैं चंदन बनकर...)

मैं पुष्कर लेकर प्रभुवर, चरणों में आया हूँ ।
मिट जायें दोष हमारे, ये भाव बनाया हूँ ॥
शुभ पूर्वधातकी जिनवर, अति भावसहित पूजूँ ।
भावी तीर्थंकर जजकर, मैं जिन सम ही हूजूँ ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

मैं चंदन लेकर भव का, संताप नशाता हूँ ।
श्री जिनवर पूजन के मैं, शुभ भाव बनाता हूँ ॥ शुभ॰

SarvatoPooja 04 / 81

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

अक्षत से अर्चन करने, दर तेरे आया हूँ ।
नश्वर पद जग के सारे, अब तजने आया हूँ ॥
शुभ पूर्वधातकी जिनवर, अति भावसहित पूजूँ ।
भावी तीर्थंकर जजकर, मैं जिन सम ही हूजूँ ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

शुद्धातम गंध सु पाने, पुष्पों को लाया हूँ ।
मैं अविकारी बनने को, जिन चरणों आया हूँ ॥ शुभ॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

षट्मिश्रित व्यंजन लेके, जिन पूज रचाता हूँ ।
शाश्वत [१]अमरत को पाने, नित तुमको ध्याता हूँ ॥ शुभ॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

रत्नों के दीप सजाके, हम आरति करते हैं ।
अज्ञान तिमिर को नशके, चिद्नंद सु भरते हैं ॥ शुभ॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

द्रव्यों की महिमा अनुपम, नभ मंडल महकाए ।
हम धूप चढ़ा जिन पद में, चिद् गंध सु पा जाएँ ॥ शुभ॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

अब भौतिक फल ना चाहें, सब नीरस अवभासें ।
जिनपद में फल अर्पित कर, शाश्वत फल अभिलाषें ॥ शुभ॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

---

१. अमृत

सर्वोत्तम रतन सु लेकर, शुभ अर्घ चढ़ाता हूँ ।
शाश्वत शिवफल को पाने, नित तुमको ध्याता हूँ ।। शुभ॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–पूर्वधातकी खंड के, भरत क्षेत्र तीर्थेश ।
भाव सहित भावी जजूँ, लहूँ स्वात्म सिद्धेश ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

पूर्व धातकी खंड में, भरत क्षेत्र के माँहि ।
भावी सिद्धार्थादि जिन, पूजें भाव लगाहिं ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

भुजंगप्रयात छंद

सुसिद्धि-प्रदाता जु 'सिद्धार्थ' देवा ।
सदा ही करूँ नाथ तेरी सु सेवा ।
भविष्यत् विभो क्षेत्र आदी बताई ।
यजूँ पूर्व के धातकी खण्ड माँही ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धार्थजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

नमस्ते सु 'सम्यग्गुणों' के अधीशा ।
जजूँ आपको नित्य 'सम्यग्गुणीशा' ।। भविष्यत्॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्यग्गुणजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

जितेन्द्रीय में आप हो इन्द्र रूपा ।
जजूँ श्री 'जिनेन्द्रा' जगत् में अनूपा ।। भविष्यत्॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनेन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

विधी मुक्ति की दो सु 'संपन्ननाथा' ।
निधी आत्म पाऊँ लहूँ स्वात्म साता ।। भविष्यत्॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सम्पन्ननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

SarvatoPooja 04 / 82

महाईश 'सर्वस्वस्वामी' हमारे ।
बिना आपके कौन देगा सहारे ।।
भविष्यत् विभो क्षेत्र आदी बताई ।
यजूँ पूर्व के धातकी खण्ड माँही ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वस्वामीजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

'मुनीनाथ' का ध्यान योगी लगाते ।
प्रभु अर्चना से प्रभु ही कहाते ।। भविष्यत्॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

नशे आठ कर्मा 'विशिष्टा' जिनेशा ।
तभी पूजता पाद पद्मा हमेशा ।। भविष्यत्॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विशिष्टजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

'अमर्नाथ' देवा करें देव सेवा ।
करूँ वंदना दो हमें स्वात्म मेवा ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

जजूँ 'ब्रह्मशांति' सुसाता प्रदाता ।
नमूँ जोड़ के हाथ आनंद दाता ।। भविष्यत्॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ब्रह्मशान्तिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

सभी पर्व के नाथ हे 'पर्वनाथा' ।
भवों के सभी पाप देते नशाता ।। भविष्यत्॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पर्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

जजूँ देवता श्री 'अकामूक' संता ।
जपें नाम तेरा बने मुक्ति कंता ।। भविष्यत्॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अकामुकदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

सिरी 'ध्याननाथा' जरा ध्यान देओ ।
हरो कष्ट सारे प्रभो शर्ण लेओ ।। भविष्यत्॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ध्याननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

सभी कल्पवासी जजें पाद तेरे ।
नमूँ 'कल्पदेवा' सरें काज मेरे ।। भविष्यत्॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कल्पनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

जजूँ 'संवरा' श्री जिनेशा हमेशा ।
गणेशा नरेशा नमें हैं सुरेशा ।। भविष्यत्॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री संवरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

सभी जान के स्वस्थ हो आपने में ।
जजूँ 'स्वास्थ्यनाथा' सुभक्ति सने मैं ।। भविष्यत्॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वास्थ्यनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

चलो आज 'आनंद' पूजा रचायें ।
चिदानंद सौख्यामृतेशी कहायें ।। भविष्यत्॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आनन्दनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

'रवीदेव' जैसे दिवानाथ नामी ।
हृदै मैं बिठाऊँ बनाओ अकामी ।। भविष्यत्॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री रविप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

सिरी 'चंद्रनाथा' जजूँ शीश नाके ।
लहूँ सिद्ध भूमि सुनिर्वाण पाके ।। भविष्यत्॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्रनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

'सुनंदा' जिनेशा करो वेग पारा ।
बचाओ भवों से हरो कष्ट सारा ।। भविष्यत्॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुनन्दनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

'सुकर्णेश' की भक्ति गाता निराली ।
हरें पाप सारे नशायें भवाली ।। भविष्यत्॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुकर्णनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

'सुकर्मेश' सत्कर्म कीना महाना ।
नशे कर्म आठों लहा सिद्ध बाना ।। भविष्यत्॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुकर्मदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

SarvatoPooja 04 / 83

'अमंदेव' तीर्थेश कर्मन् विजेता ।
करूँ अर्चना औ बनूँ मुक्ति नेता ।।
भविष्यत् विभो क्षेत्र आदी बताई ।
यजूँ पूर्व के धातकी खण्ड माँही ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अममदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

रहें पार्श्व में 'पार्श्व' देवा हमारे ।
करें पाद अर्चा सु देवेन्द्र सारे ।। भविष्यत्॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

बसे 'शाश्वतेशा' हिदै में निराला ।
जपे नाम की माल पायें शिवाला ।। भविष्यत्॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शाश्वतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

पूर्णार्घ्य

शुभगीत छंद

सुनीर गंधादिक लिये नित, जजत भावी जिनवरा ।
जिसके उर जिनवर विराजे, लेय शिव सुख वे नरा ।।
शुभ द्वीप पूरव धातकि का, भरतक्षेत्र सु है वरा ।
प्रभु पूज देती पूज्यता नशि, जनम मृत्यु अरु जरा ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धार्थादिशाश्वतनाथपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

जयवंत जिनंदा, नित आनंदा, भावी तीर्थंकर ध्याऊँ ।
सर्वज्ञ हितैषी, शिव उपदेशी, श्री जिन शाश्वत गुण गाऊँ ।।

पायत्ता छंद

शुभ दीप धातकी प्यारा, है पूर्व भरत अति न्यारा ।
भावी तीर्थंकर ध्याएँ, वंदन कर अति हर्षाएँ ।।

भृंगार सहित अरिहंता, भवि पूज करे अघ अंता ।
भृंगार लिए हम पूजें, जिनवर सम निज चित हूजे ।।

दर्पण है परम अनीका, है केवलज्ञान प्रतीका ।
जिन लोकालोक निहारें, हम तिनके चरण पखारें ।।

है कलश शमन का हेतू, मंगल कलशा भव सेतू ।
वसु मंगल यही प्रदाना, माने इसको गुणवाना ।

स्वास्तिक स्वस्ती का कर्ता, है तीव्र पाप का हर्ता ।
स्वास्तिक चिंतक सम दृष्टी, हो आनंदामृत वृष्टी ।।

विजना से विघ्न नशावे, नित मंगल मूल कहावे ।
हम विगत गति शुभ पाने, आये जिन शीश झुकाने ।।

है मंगल द्रव्य सु ठोना, मेटे भव भव का रोना ।
निज उर को ठोन बनाऊँ, ता ऊपर प्रभु बिठाऊँ ।।

त्रि छत्र धारें जिन स्वामी, हैं पूर्ण रूप निष्कामी ।
तुम तीन लोक जिन भूपा, हम पावें सिद्ध सुरूपा ।।

जन्मादिक ध्वस्त करावें, जिनमंगल ध्वज फहरावें ।
जिन धर्म प्रवर्तक नेता, पावे भवि मुक्ति निकेता ।।

दोहा–मोक्ष मार्ग कल्याण कर, रहे प्रणेता आप ।
चौबीसों तीर्थेश जिन, नमूँ हरें सब पाप ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 04 / 84

SarvatoPooja 05 / 84

(२५)

पूर्वधातकीखंड द्वीप ऐरावतक्षेत्र भूतकालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

रूपक सवैया छंद

पूर्वधातकी खंड क्षेत्र के, भूतकाल चौबीस जिनेश,
वज्र स्वामी आदि तीर्थंकर, प्रभो हरिचंद्र हरें कलेश ।
अति पवित्र निज हृदय बनाके, हे जिन तुम्हें बुलाता हूँ,
आह्वानन कर पूज रचाऊँ, नित्य तेरे गुण गाता हूँ ।।
दोहा—वज्रस्वामी आदीश जिन, अंतिम हरि तीर्थेश ।
तिनके युगपद सुर जजें, खगपति इंद्र नरेश ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

रोला छंद

क्षीरोदधि का नीर, जिन पूजन को लाए ।
जन्म जरा मृतु नाश, होवे चरण चढ़ाए ।।
पूरब धातकि खंड, ऐरावत जिन वंदूँ ।
भूतकाल तीर्थेश, नित जजि पाप निकंदूँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

शीतल चंदन लाय, जिन पद नित्य जजें जी ।
भव आताप नशाय, दुष्कृत शीघ्र तजें जी ।।
पूरब धातकि०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

अक्षत चन्द्र समान, अक्षयपद के काजे ।
जिनपद शीघ्र चढ़ाय, निज में जिनगुण साजे ।।
पूरब धातकि॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

पुष्पों का सब सार, जिन पद आन चढ़ाऊँ ।
दुःखदायक यह काम, ताको शीघ्र नशाऊँ ।।
पूरब धातकि॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

सरस मिष्ट स्वादिष्ट, नाना व्यंजन लाए ।
रोग क्षुधा नश जाय, श्री जिन चरण चढ़ाए ।।
पूरब धातकि॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

दीपक की क्या बात, जग का तिमिर हरे है ।
जिनपद दीप चढ़ाय, अंतर ज्ञान भरे है ।।
पूरब धातकि॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

धूप दशांगी लाय, खेवें पावक माँही ।
जिन पूजा सम पुण्य, दूजो जग में नाँही ।।
पूरब धातकि॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

SarvatoPooja 05 / 85

सब ऋतु के फल ल्याय, श्री जिन अग्र धरे जी ।
श्रीफल पूजा श्रेष्ठ, मुक्ति सदन धरे जी ।।
पूरब धातकि खंड, ऐरावत जिन वंदूँ ।
भूतकाल तीर्थेश, नित जजि पाप निकंदूँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

निज शक्ति अनुसार, उत्तम अर्घ्य बनाया ।
अनरघ पद के हेतु, श्री जिन आन चढ़ाया ।।
पूरब धातकि॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा—पूर्व धातकी खंड के, ऐरावत तीर्थेश ।
भूतकाल के भक्तिवश, पूजों तीर्थ अशेष ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा—सोलहकारण भायकर, तीर्थ प्रकृति करि बंध ।
पर बंधन तज कर लिया, निज में निज संबंध ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

मोदक छंद

'वज्रजिनेश्वर' वज्र समानत, पूज करूँ मन से अघ हानत ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वज्रस्वामीजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

श्री जिनदेव 'उदत्त' शिवेश्वर, चर्ण जजूँ नित आकर के दर ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उदत्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

'सूर्य' जिनेश्वर दिव्य दिवाकर, अंतस ताप नशूँ गुण गाकर ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सूर्यस्वामीजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

श्री 'पुरुषोत्तम' हो नर पुंगव, मुक्ति लहूँ पकरूँ तव पानव[1] ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुरुषोत्तमजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

श्री 'शरणस्वामिन्' पद वंदन, भक्ति समेत करूँ अभिनंदन ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री शरणस्वामीजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

जै 'अवबोध' सुतीर्थ प्रवर्तक, केवल बोध लहूँ सुख वर्धक ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अवबोधजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

'विक्रमनाथ' जजूँ वृषनायक, पूज करे मम दर्शन क्षायक ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विक्रमजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

'निर्घटिकेश्वर' जो नित पूजत, स्वात्मगुणामृत से नित पूरत ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्घटिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

देव 'हरीन्द्र' हरीश्वर वंदित, भक्त करें सब पाप विखण्डित ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री हरीन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

श्री 'परित्रेरित' पूज करूँ जय, पूजक ही रहता नित निर्भय ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री परित्रेरितजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

श्री 'निरवाण' सुसूरि जिनेश्वर, नंदित हूँ तव पूज रचाकर ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणसूरिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

'धर्म सुहेतु' नमूँ गुण गाकर, चित्त निवास बना तव आकर ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्महेतुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

---
१. चरण

SarvatoPooja 05 / 86

नाथ 'चतुर्मुख' दुर्गति नाशक, चाह यही कि बनूँ जिन शासक ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्मुखजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

श्री 'सुकृतेन्द्र' जिनंद हितंकर, स्वीकृत हो मम भक्ति शुभंकर ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुकृतेन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

श्री 'श्रुत अम्बु' पदाब्ज जजूँ नित, जो करते झट भव्यन का हित ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रुताम्बुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

जै 'विमलार्क' तु ही अघभंजक, भक्त रहें तव भक्ति विरंजक ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विमलार्कजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

'देव प्रभो' तुम हो सुर पूजित, नाथ रहो मम चेतन अंकित ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

श्री 'धरणेन्द्र' नमूँ अघहारक, भव्यन को भव वारिधि तारक ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री धरणेन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

देव 'सुतीर्थ' यजूँ कर कीरत, प्राप्त करूँ फिर आतम तीरथ ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुतीर्थनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

श्री 'उदया' सुजिनंद गुणाकर, पूज लहूँ उर माँहि बसाकर ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री उदयानन्दजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

पाद यजूँ जिन हे 'सरवारथ', दूर करो मम चेतन आरत ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वार्थदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

'धार्मिक' धर्म विशेष बताकर, मोक्ष लहा चित आत्म रमाकर ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री धार्मिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥22॥

हे जिन 'क्षेत्र' सुस्वामि महाशय, पूज करे सब कर्मन का क्षय ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षेत्रस्वामीजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥23॥

जै 'हरिचंद्र' जिनंद जपूँ नित, दूर करो अघ शीघ्र करो हित ।
पूरब धातकि देव इरावत, भूत जिनेश्वर के गुण गावत ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री हरिचन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥24॥

पूर्णार्घ्य

सुगीता छंद

मणिमोतियों के थाल में, वसुद्रव्य ले पूजा करूँ ।
चउबीस श्री तीर्थेश के, पद पद्म की अर्चा करूँ ॥
जिनदेव ये सब ही हमारे, चित्त को निर्मल करें ।
वसु कर्म मल धुल जाए शुभ, गुण रत्न आतम में भरें ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वज्रस्वाम्यादिहरिचन्द्रपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता - जय जय जिनदेवा, सुरनर सेवा, तव चरणों की नित करते ।
अर्चन सुखकारी, जिनअघहारी, वंदन कर यति शिव वरते ॥

विधाता छंद

आपके ज्ञान दर्पण में, पदारथ सब झलकते हैं ।
जगत की जानते लीला, निजातम गुण चमकते हैं ॥
तुम्हारे ज्ञान अमृत का, जो भविजन पान करते हैं ।
अमर बन करके इस जग में, वो केवलज्ञान वरते हैं ॥

SarvatoPooja 05 / 87

लही है आपने भगवन्, जो शक्ति नंत दर्शन की ।
वो शक्ति आप से मिलती, बात सच्ची ये मुनिजन की ॥
पड़ा मम कर्म का परदा, महातम में सिसकते हैं ।
जो करते नित्य तव दर्शन, वो मुक्ति श्री को लखते हैं ॥

निजातम सौख्य शाश्वत है, मोह अरि नाश तुम पाया ।
नंत गुण ही समाये हैं, दोष की ना पड़ी छाया ॥
वीतरागी जिनेश्वर की, अर्चना भव्य करते हैं ।
भक्ति के भाव भरकर ही, भव्य दुष्कर्म हरते हैं ॥

विघ्नमूलक विधी नाशी, लब्धियाँ पंच प्रकटाई ।
सुरासुर मुनि सभी कहते, तुम्हीं सच्चे हो जिनराई ॥
आत्म शक्ति भुला बैठा, करम की मार खाई है ।
जगा दो आज वो शक्ति, आश तुमसे लगाई है ॥

दोहा–पूर्वधातकी खंड का, ऐरावत सुखकार ।
भूतकाल के जिन जजूँ, उर में तिन गुण धार ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ॥
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

(२६)

पूर्वधातकीखंडद्वीप ऐरावतक्षेत्र वर्तमान-कालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

शार्दूलविक्रीडित छंद (तर्ज - अर्हन्तो भगवंत...)

प्राची धातकि खंड क्षेत्र सुभगा, ऐरावता पुण्यगा ।
स्वामी पश्चिम नाथ आदि भगवन्, वैरोचना अंतिमा ।।
आह्वानन करि आज पाद युगलं, वंदूँ सदा भक्ति से ।
श्री तीर्थंकर वर्तमान करता, आराधना शक्ति से ।।

दोहा—पूर्व धातकी खंड के, वर्तमान चौबीस ।
तीर्थंकर को नित नमूँ, लखूँ स्वात्म जगदीश ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

कुमुद छंद

लेय शंवर शुभा, देव नित अर्चते ।
रोग त्रय नष्ट हों, देव गुण चर्चते ।।
धातकी खंड के पूर्व माँही जजूँ ।
क्षेत्र ऐरावता संप्रती जिन भजूँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

भद्रश्री संग में अंबुसार लाइए ।
आत्मशांति के लिए, देव को चढ़ाइए ।। धातकी॰

SarvatoPooja 05 / 88

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

श्रेष्ठतम शालि ले, तीर्थ जिन अर्चना ।
धर्म तीर्थ भक्ति सु, होय कर्म बंध ना ।।
धातकी खंड के, पूर्व माँही जजूँ ।
क्षेत्र ऐरावता, संप्रती जिन भजूँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

श्रेष्ठ पुष्प लाय के, वीतरागी जजूँ ।
निर्विकारी बनूँ, दोष सारे तजूँ ।। धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

श्रेष्ठ नैवेद्य ले, पूज जिनवर करूँ ।
नाश कर मैं क्षुधा, चित्त जिनगुण धरूँ ।। धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

शुद्ध गौघृत मयी, दीप सुजलावते ।
पाप सुज्ञान अब, मोहनि भगावते ।। धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

अष्टविध गंध लाय, वसु कर्म नाश दूँ ।
सिद्ध के अष्ट गुण, पाय शिव वास लूँ ।। धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

मिष्ट फल मैं चढ़ा, मोक्ष फल चाहता ।
सिद्धि पा होउँ मैं, मुक्त आतमरता ।। धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

रत्न बहु लाय के, सिद्ध जिनवर जजें ।
पाय चैतन्य गुण, शुद्ध आतम सजें ।। धातकी॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा

द्वीप धातकी खंड में, तीर्थंकर चौबीस ।
ऐरावत संप्रति जजूँ, लखूं स्वयं का ईश ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–अंतर बहि लक्ष्मी सुभग, प्रगट भयी जिनदेव ।
पुष्पाञ्जलि अर्पण करूँ, करूँ सदा पद सेव ।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

शेर चाल

तीर्थेश 'अपश्चिम' जिनेश पूज्य हमारे ।
चित्त धारके जजूँ दुख द्वंद निवारे ।।
हैं पूर्व धातकी के ऐर क्षेत्र के जिना ।
बीते प्रवर्तमान तीर्थ भक्ति में दिना ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अपश्चिमजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

जय 'पुष्पदंत' दुखनिकंद आपको ध्याऊँ ।
तव पाद पद्म पूज निज स्वरूप को पाऊँ ।। हैं पूर्व॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

हे नंत-ज्ञान-दर्श-सौख्य-वीर्य के धारी ।
जिननाथ 'अर्ह देव' नित्य जय हो तुम्हारी ।। हैं पूर्व॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

चरित्रनाथ देव शुभ 'चरित्र' दीजिए ।
तव भक्ति से मम चित्त को पवित्र कीजिए ।। हैं पूर्व॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चरित्रनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

SarvatoPooja 05 / 89

सिद्धों के बीच सिद्ध का आनंद पा रहे ।
वंदूँ जिनेश 'सिद्धानंद' गुणनिधी कहें ।।
हैं पूर्व धातकी के ऐर क्षेत्र के जिना ।
बीते प्रवर्तमान तीर्थ भक्ति में दिना ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धानन्दजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

'नंदग' जिनेंद्र विश्ववंद्य ज्ञान दिवाकर ।
पाऊँ अनंग रूप दिव्य पूज रचाकर ।। हैं पूर्व॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नन्दगजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

भव कूप से निकार जो शिवभूप बनाते ।
उन 'पद्मकूप' पाद में हम शीश नवाते ।। हैं पूर्व॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पद्मकूपजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

तीर्थेश 'उदयनाभि' देव ज्ञान के धनी ।
पूजूँ हमेश चेतना है भक्ति में सनी ।। हैं पूर्व॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उदयनाभिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

'रुक्मेंदु' की आरति करें दिननाथ व इंदु ।
कैसे यजूँ गुणसिंधु मैं छोटा सा हूँ बिंदु ।। हैं पूर्व॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री रुक्मेन्दुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

जिनवर 'कृपालु' कृपादृष्टि कीजिए ऐसी ।
अर्चूं सदा लहूँ निधि बस आपके जैसी ।। हैं पूर्व॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कृपालुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

'प्रौष्ठिल' जिनेश आप अष्ट कर्म विजेता ।
प्रकृष्ट भक्ति कर बनूँ शिवपंथ का नेता ।। हैं पूर्व॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रौष्ठिलजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

'सिद्धेश्वरेश' आप आत्म सिद्धि प्रदाता ।
सर्वज्ञदेव तू ही सर्वलोक का ज्ञाता ।। हैं पूर्व॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धेश्वरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

वचनामृतों से 'अमृतेंदु' धन्य हो गया ।
पाकर परोक्ष दर्श पाप कर्म खो गया ।। हैं पूर्व०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमृतेन्दुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

'स्वामिनाथ' तीन लोक के प्रधान हो ।
शतइन्द्र पूज्य देव आपको प्रणाम हो ।। हैं पूर्व०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वामिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

भगवान 'भुवनलिंग' जजूँ भक्ति भाव से ।
निज आत्महित के हेतु नित्य अति उछाह से ।। हैं पूर्व०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री भुवनलिङ्गजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

'सर्वरथ' तीर्थेश की जो अर्चना करे ।
इन्द्रादि वैभवों को भोग मोक्ष को वरे ।। हैं पूर्व०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वरथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

हे 'मेघनंद' देव आप देव निराले ।
मोहादि अंधकार नाश भव से निकालें ।। हैं पूर्व०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मेघनन्दजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

सब दोष रहित 'नंदिकेश' देव जजूँ मैं ।
सम्यक्त्व ज्ञान व्रत सुभूषणों से सजूँ मैं ।। हैं पूर्व०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री नन्दिकेशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

इन्द्रादि की मुकुटावली जिन पद में झुक रही ।
'हरिनाथ' देव पूज लहूँ मोक्ष की मही ।। हैं पूर्व०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री हरिनाथजनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

पूजूँ 'अधिष्ठ' देव वीतराग महाना ।
नश्वर जगत् में आप बिना कौन ठिकाना ।। हैं पूर्व०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अधिष्ठजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

त्रैलोक्य शांति वर्धका श्री 'शांतिक' देवा ।
अर्चूं नवा के शीश करूँ आपकी सेवा ।। हैं पूर्व०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री शान्तिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

SarvatoPooja 05 / 90

हे नाथ 'नंदीस्वामी' भव्य चित्त विराजे ।
सब लोक औ अलोक आप ज्ञान में साजे ।।
हैं पूर्व धातकी के ऐर क्षेत्र के जिना ।
बीते प्रवर्तमान तीर्थ भक्ति में दिना ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री नन्दीस्वामिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

जिनराज 'कुंदपार्श्व' की मैं वंदना करूँ ।
भव जलधि नीर को क्षणार्द्ध सोख के तरूँ ।। हैं पूर्व०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कुन्दपार्श्वजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

गुण कुंज विवेचन हो कैसे नाथ 'विरोचन' ।
फिर भी जजूँ अल्पज्ञ करने कर्म विमोचन ।। हैं पूर्व०
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विरोचनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

पूर्णार्घ्य

मत्तगयंद छंद

आतम के रस में लवलीन, हुए जिनदेव महा अघहारी ।
पाप निकंद हरे भवफंद, खिले सुख कुंज भजे नर नारी ।।
पूरब धातकि क्षेत्र इरावत, के जिनदेव सुमंगलकारी ।
सौख्य रसाल जजों नत भाल, नशो भव जाल महा सुखकारी ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अपश्चिमादिविरोचनपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

जिनवर गुण सलिला, हो चित विमला, निशदिन मैं अवगाह करूँ ।
निजचित प्रक्षालन, सब अघ गालन, चित में श्रुत उत्साह भरूँ ।।

चौपाई

पूर्वभवों में तुम तप कीना, कर समाधि उसका फल लीना ।
सोलह कारण तुमने भायी, तीर्थंकर शुभ प्रकृति जु पायी ॥

तप फल से सुरपति पद पाए, उत्तम भोग महा निधि पाए ।
सुरपति हो की अर्चन पूजा, तत्त्वध्यान बिन काम न दूजा ॥

समवशरण में सुनि जिनवाणी, धर्म ध्यान रत सम्यग्ज्ञानी ।
आयु क्षय के पूर्व छह मासा, सुरगण उत्सव करते खासा ॥

जनम नगरी बहु रत्न लुटाये, शक्र सहित सब सुर हर्षाये ।
तीर्थंकर जननी की सेवा, दिक्कन्या पायें शुभ[1] मेवा ॥

धनद सहित सुरपति शचि आये, कल्याणक जिन गर्भ मनाए ।
जिन जननी व जनक की पूजा, शक्रादि लहें पुण्य अदूजा[2] ॥

नव महिना तक रत्ननि वर्षा, सुरनर तिर्यक् सब जन हर्षा ।
जनम सु कल्याणक दिन आया, तीन लोक आनंद जु छाया ॥

मेरु शिखर अभिषेक कराया, तांडव नृत्य देव मन भाया ।
इन्द्र आनंद नाटक कीना, जिन शिशु का गुण कीर्तन कीना ॥

जिन अंगुष्ठ सिंचन अमृत का, धन अर्पण करि सुर वसुधा का ।
बाल सखा तहँ देव बने थे, जिनशिशु प्रति शुभ भाव घने थे ॥

वस्त्राभूषण दिवि से आएँ, अमृतमय भोजन सुर लाएँ ।
जब तीर्थंकर भये सयाने, जनता का मन लगे लुभाने ॥

नृप अनेक दरबार पधारे, कन्या परिणय हेतु विचारें ।
मौन सम्मति पाय प्रभु की, शुभ कन्या परिणाइ नृपों की ॥

नंतर[3] राजपाट को पाया, शासक का कर्त्तव्य निभाया ।
स्वयं वर्ष वृद्धी दिन आया, पा निमित्त वैराग्य उपाया ॥

१. पुण्य २. अद्वितीय ३. अनन्तर, बाद में

SarvatoPooja 05 / 91

लौकान्तिक सुर जिन थुति कीनी, निज अनुभूति हुई नवीनी ।
सिद्धन साक्षी धारी दीक्षा, त्यागी भव वर्द्धक सब इच्छा ॥

ज्ञान मनःपर्यय तव पाया, नंतर ऋद्धि पुंज प्रगटाया ।
छद्म अवस्था तप कर भारी, चारों घाती प्रकृति निवारी ॥

समवशरण देवेन्द्र रचाया, धनद विभव भी वहाँ लुटाया ।
समवशरण में खिरती वाणी, सुन कल्याण करें भवि प्राणी ॥

बहुत देश में भ्रमण किया था, भव्यों ने शिवमार्ग लिया था ।
नंतर योग निरोध सुकीना, भये अयोगी आप प्रवीना ॥

प्रकृति पिचासी आप नशायी, जिन चउवीस सुसिद्धी पायी ।
हम सब जिन पद शीश नवावें, अपनी मुक्ति निज में पावें ॥

दोहा - कल्याणक पण विभवयुत, तीर्थंकर चउबीस ।
पूर्वधातकी खण्ड में, नमूँ संप्रती ईश ॥

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ॥
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

(२७)

पूर्वधातकीखंडद्वीप ऐरावत क्षेत्र भविष्यत्कालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

विष्णु पद

प्रवरवीर श्री आदि जिनेश्वर, अंत विरोषिक जिन ।
भावि काल के तीर्थंकर वृष, ना वर्ते इन बिन ।।
आह्वानन कर पूज रचाऊँ, अर्चन कर हर्षूं ।
शाश्वत पद पाने को जिनवर, पल पल नित निरखूँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

भुजंग प्रयात छंद

प्रभा इंदु सा नीर श्री पाद लाऊँ,
सु आराधना श्री प्रभो की रचाऊँ ।
महा धातकी खंड देवेश ध्याऊँ,
सुतीर्थेश भावी सदा शीश नाऊँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

निजात्मानुरागी सदा गीत गाऊँ ।
प्रभो पाद में चंदनादी चढ़ाऊँ ।। महा धातकी०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

SarvatoPooja 05 / 92

लिए शालि मुक्ता समा अंजली में ।
बनूँ पूजिके श्री अनंताबली मैं ।।
महा धातकी खंड देवेश ध्याऊँ ।
सुतीर्थेश भावी सदा शीश नाऊँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

जगत् के सभी श्रेष्ठ पुष्पों की माला ।
चढ़ाऊँ पदों में नशे काम ज्वाला ।। महा धातकी०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

चढ़ाऊँ प्रभो आपको मिष्ट मेवा ।
क्षुधा नाश होवे करूँ पाद सेवा ।। महा धातकी०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

सुदीपावली द्वार तेरे जलाऊँ ।
नशूँ कर्म सारे महाज्ञान पाऊँ ।। महा धातकी०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

दशांगी बना धूप अग्नि सु खेऊँ ।
महासौख्य पाऊँ प्रभो चर्ण सेऊँ ।। महा धातकी०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

सदा नारिकेलादि लेऊँ जजूँ मैं ।
करूँ प्रार्थना आप सा ही बनूँ मैं ।। महा धातकी०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

मणीयुक्त अर्घ्यावली मैं चढ़ाऊँ ।
प्रभो अर्चना से भवाली मिटाऊँ ।। महा धातकी०

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा

पूर्वधातकी खंड के, भावी तीर्थ जिनेश ।
अधिनायक वृष चक्र के, नमन करूँ सविशेष ॥

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

भवदधि से जो तारते, भावी वे ऋषिराज ।
उनका गुण वर्णन करूँ, सिद्धि वरण के काज ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

मोतीदाम छंद

जिनेश सुश्रेष्ठ सुवीर महान, करूँ निज भक्ति समेत प्रणाम ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रवरवीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

'विजैप्रभ' की वरणूँ गुणमाल, झुका निज भाल जजूँ तिहुँ काल ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विजयप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

सनाथ करो मुझ 'सत्पथनाथ', जजूँ तव नाम सु रात प्रभात ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सत्पथनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

'महान मृगेंद्र' जिनेंद्र सुपूज, जगो मम पुण्य भयी बुध सूझ ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महामृगेन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

जजूँ जिन 'चिंतामणी' सुखदाय, जिनत्व लहूँ जिन चित्त बसाय ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिन्तामणिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

SarvatoPooja 05 / 93

यजूँ गत दोष जिनेश 'अशोक', लहूँ शिवधाम न रोक न टोक ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अशोकिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

जिना 'द्विमृगेन्द्र' नशो सब काम, जपे तव नाम जु हो भगवान ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री द्विमृगेन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

यजे 'उपवासिक' देव मुनीन्द्र, करे पद सेव नरेन्द्र सुरेन्द्र ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री उपवासिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

जिनेश्वर 'पद्म सुचंद्र' महिंदु, यजें भवि चित्त खिले गुण सिंधु ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पद्मचन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

बसे चित 'बोधक इंदु' जिनाय, यही शुभ केवलबोध उपाय ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री बोधकेन्दुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥10॥

यजूँ जिन 'चिंत हमेश' सुधीर, तुही भव ताप निवार सुनीर ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिन्ताहिमजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥11॥

सिरी 'उतसाहिक' नाथ भदंत, सुपूज करूँ चित से भगवंत ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री उत्साहिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥12॥

यजूँ जिनदेव 'अपाशिव' नाथ, शिवालय में पहुँचू तज पाप ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अपाशिवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥13॥

जपूँ नित 'देवजलाख्य' सुनाम, सुभाव लहूँ व रहूँ गतकाम ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवजलजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥14॥

तजो सब राग रु द्वेष कुदेव, धरो मन बीच सु 'नारिक' देव ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री नारिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

तजे अघ सर्व हुए 'अनघेश', सुपूजत हैं धर भक्ति विशेष ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनघजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

यजूँ अब 'नाग सुइंद्र' जिनंद, नशो मम कर्मन का सब फंद ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री नागेन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

सु अर्चत 'नील सु उत्पल' देव, प्रभो निज चर्णन शर्ण सु लेव ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री नीलोत्पलजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

सुमेरु समा 'अप्रकंप' जिनेश, यजूँ तव पाद बसूँ चित देश ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अप्रकम्पजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

यजूँ सुखधाम 'पुरोहित' नाम, रहे जिनपाद निजातम धाम ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुरोहितजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

चलो अब 'भिंदकनाथ' मनाय, अकुंठित भाग्य सुशीघ्र जगाय ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री भिन्दकनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

अनादि बिगाड कु कौन बनाय, बने जब 'पारसनाथ' सहाय ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

यजें 'निरवाच' जु मोक्ष प्रधान, सुभोग लहें फिर वो निरवान ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाचजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

जिनेश 'विशेषिक नाथ' प्रबुद्ध, यजूँ तव पाद लहूँ पद सिद्ध ।
सु पूरब धातकि ऐर विशेष, सुभक्ति करूँ शुभ भावि जिनेश ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विशेषिकनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

पूर्णार्घ्य

घत्तानंद छंद

जय भावि जिनेशा, नमत सुरेशा, नागनरेशा, भगति करें ।
ऐरावत नामी, धातकि स्वामी, भक्त अकामी, मुकति वरें ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रवरवीरादिविशेषिकनाथपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

शालिनी छंद (तर्ज - हमको बुलाना हर साल..)

श्री तीर्थेशा धातकी खंड के हैं, प्राची के ऐरावता क्षेत्र के हैं ।
श्री तीर्थेशा निर्मला आत्मलीना, श्री तीर्थेशा कर्मकारा विहीना ।।

श्री तीर्थेशा काल भावी कहे हैं, श्री तीर्थेशा वीतरागी रहे हैं ।
नादी का मिथ्यात्व नाशे सुदेवा, जाने लोकालोक सर्वज्ञ देवा ।।

बाह्या लक्ष्मी अंतरंगा सु युक्ता, कर्माहीना देव दोषा विमुक्ता ।
सौ देवों से वंदिता ये प्रभो हैं, तीनों लोकों के सुस्वामी विभो है ।।

नादी रोगों के महा वैद्य स्वामी, पूजा से तेरी होते अकामी ।
ऐश्वर्या लोकोत्तरा श्रेष्ठ स्वामी, आठों कर्मों को नशा सिद्ध धामी ।।

त्रैलोक्यदर्शी प्रभो पूजिता हैं, आठों ही यामों विभो अर्चिता हैं ।
गंगा श्री अध्यात्म की हो प्रवाही, देवा कोई आपसा दूजो नाँही ।।

तेरी पूजा आपदाहारिणी है, भक्ति तेरी चित्त आह्लादिनी है ।
देही से वैदेही स्वामी हुए हैं, ना कर्मों के कीट तोहे छुए हैं ।।

ब्रह्मात्मा श्री ब्रह्म निष्ठा कहाए, पूजें तुम्हें सुप्रतिष्ठा सु पाए ।
सिद्धात्मा बुद्धा महापंडिता हो, पापों को स्वामी करे खंडिता हो ।।

धारें श्री देवा महाप्रातिहार्या, ज्ञानी दर्शी नंत श्री नंतवीर्या ।
वंदूँ तुम्हें नित्य कर्मा विजेता, वंदूँ वंदूँ नित्य ही आत्म जेता ।।

दोहा–पूर्वधातकी खंड में, क्षेत्र एरावत जान ।
भाव सहित वंदूँ सदा, तीर्थंकर भगवान ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 05 / 95

(२८)

पूर्वधातकीखंडद्वीप विहरमाण तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

चउबोला छंद

श्री सुजात रु स्वयंप्रभ जिनवर, वृषभानन शुभ तीर्थंकर ।
नंतवीर्य जिनदेव विराजे, प्राणीमात्र के क्षेमंकर ।।
पूर्व धातकी खंड विदेहा, विद्यमान जिन सुखकर हैं ।
नाम मात्र का सुमिरन भी तो, भव्य जनों को अघहर है ।।

दोहा–सहसकमलदल सम बना, अपना निर्मल चित्त ।
आह्वानन मैं नित करूँ, शिव सुख दिव्य निमित्त ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसञ्जातकस्वयम्प्रभ-ऋषभाननानन्तवीर्यतीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसञ्जातकस्वयम्प्रभ-ऋषभाननानन्तवीर्यतीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसञ्जातकस्वयम्प्रभ-ऋषभाननानन्तवीर्यतीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

चउबोला छंद

चंद्रकांति मणि भाजन लेकर तद्भव शुद्ध नीर लाया ।
मरणादिक त्रय रोग नशाने, चरण चढ़ा मन हर्षाया ।।
पूर्व धातकी खंड विदेहा, तीर्थंकर नित शुभकारी ।
भावसहित अर्चन पूजन कर, याम वसू हम बलिहारी ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसञ्जातकादि-तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

नादि काल से मोह सर्प ने, डसकर खूब तपाया है ।
उसी ताप के नाश करन को, चंदन चरण चढ़ाया है ।। पूर्व॰
ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसञ्ञातकादि-तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

ज्येष्ठ मास उद्दीप्त रवी की, किरणों सम अक्षत लाया ।
अक्षत धवल चदा जिनचरणा, नश्वर पद तजने आया ।। पूर्व॰
ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसञ्ञातकादि-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सुरतरुवर के सुमन मनोहर, श्री जिन चरण चढ़ाता हँ ।
रहूँ सदा अविकारी जिन सम, यही भावना भाता हूँ ।। पूर्व॰
ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसञ्ञातकादि-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

जठराग्नि खाद्यान्न विश्व का, शीघ्र स्वाह कर देती है ।
चरु जिन चरण चढ़ा भक्ति से, भक्ति क्षुधा हर लेती है ।। पूर्व॰
ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसञ्ञातकादि-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

लौकिक दीपक तिमिर नशाता, लौकिक ही परकाश करे ।
पाने को परकाश अलौकिक, दीप चरण जिनदेव धरें ।। पूर्व॰
ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसञ्ञातकादि-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

सर्व विश्व की गंध ग्रहण कर, नासा तृप्त न होती है ।
दशविध धूप चढ़ा जिन चरणा, धूप अशुभ विधि धोती है ।। पूर्व॰
ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसञ्ञातकादि-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

नरसुर के उत्तम पद भी मैं, परमोत्तम फल ना मानूँ ।
शिवफल पाने सुफल चढ़ाऊँ, शिवफल ही उत्तम जानूँ ।। पूर्व॰
ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसञ्ञातकादि-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

SarvatoPooja 05 / 96

पुण्योदय में पूज शक्ति युत, उत्तम द्रव्य सु लाता हूँ ।
पद अनर्घ्य की तीव्र भावना, से यह अर्घ्य चढ़ाता हूँ ।।
पूर्व धातकी खंड विदेहा, तीर्थंकर नित शुभकारी ।
भावसहित अर्चन भक्ति कर, याम वसू हम बलिहारी ।।
ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसञ्ञातकादि-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–संप्रतियुग में धर्म का, शासन है गतिमान ।
चउ तीर्थंकर नित नमूँ, पाने शुभ वरदान ।।
शान्तये शान्तिधारा । दिव्यपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–पूर्व धातकि विदेह में, चउ तीर्थेश महान ।
रहें विराजित नित्य ही, देय शुभ्र वरदान ।।
इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

विधाता छंद

सुभग अलकापुरी नगरी, जहाँ संजात प्रभु जन्मे ।
रक्त कम्बल शिला पर जा, किया अभिषेक इंद्रनि ने ।।
धातकी खण्ड पूरब में, विदेहा क्षेत्र के अंदर ।
नमन उनको त्रियोगों से, विराजित हैं जो तीर्थंकर ।।
ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रस्थाल्कापुरीमध्ये समवसरणस्थ श्री सञ्ञातकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

विजय मेरु के पूरब में, सु सीता दक्षिणा तट पर ।
स्वयंप्रभ देव राजित हैं, उन्हें वंदूँ विशुद्धि धर ।।
धातकी खण्ड॰
ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रस्थविजयानगरीमध्ये समवसरणस्थ श्री स्वयम्प्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

विजयमेरु के पश्चिम में, दक्षिणा तट सु सीतोदा ।
वहाँ राजित जु ऋषभानन, प्रभु वंदन है धर मोदा ।।
धातकी खण्ड॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रस्थसुसीमापुरीमध्ये समवसरणस्थ श्री ऋषभाननजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

किया अभिषेक प्रभुवर का, शिला पाण्डुक कम्बला पर ।
अनंतवीर्य विराजित हैं, सितोदा उत्तरा तट पर ।।

धातकी खण्ड॰

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रस्थायोध्यानगरीमध्ये समवसरणस्थ श्री अनन्तवीर्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

पूर्णार्घ्य

मदिरा छंद

पूजत है जु विदेह महान, जहाँ जिननाथ विदेह भये ।
नंत चतुष्टय धारत हैं जिन, दोष विहीन सु नित्य रहें ।
आप अनाथन नाथ हितंकर, दिव्यसभा गुण गान करे ।
राजत शाश्वत देव जिनेन्द्र, सुपूज करें भव ताप हरें ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसञ्जातकादिविहरमाण-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता—जिनवर कल्याणी, शाश्वत वाणी, सुनकर प्राणी सुख पावें ।
निज कर्म नशावें, जिनगुण गावें, मोद मनावें हर्षावें ।।

शेर चाल

जो पूर्व धातकी में विद्यमान हैं सदा ।
चउ वृष प्रवर्तकों को नित्य पूजूँ मैं मुदा ।।
संजात देव स्वामी स्वयंप्रभ महान हैं ।
ऋषभानना अनंतवीर्य गुण निधान हैं ।।

स्वेदादि दोष नाँहि नाँहि कवलाहार है ।
भव्यों के पुण्य से सदा होता विहार है ।।
चउ संध्या काल दिव्यध्वनि सर्वदा झरे ।
अज्ञानतम अनादि से घना उसे हरे ।।

SarvatoPooja 05 / 97

शाश्वत व अकृत्रिम छः द्रव्य युक्त लोक है ।
सृष्टि का कर्ता है नहीं ये ही नियोग है ।।
सिद्धांत व्यय उत्पाद ध्रौव्य का जु बताया ।
विज्ञान वीतराग को मैं शीश झुकाया ।।

द्रव्य तत्त्व व पदार्थ की प्ररूपणा ।
द्रव्य की अविनाशिता का सत्य है घना ।।
मुख्य व गौण का जो प्रभु भेद बताया ।
स्याद्वाद पद्धति से सर्व द्वंद मिटाया ।।

विद्या कला समस्त आपसे ही आई है ।
कल्याण स्व उत्थान की धारा बहायी है ।।
बाह्य विभव अनित्य है प्रभु छोड़ के सारा ।
गुण रत्न आत्म पाने फिर मुक्ति को निहारा ।।

सर्वज्ञ देव आपमें शुभ गुण अनंत हैं ।
दर्शन व अर्चना करे वो पुण्यवंत हैं ।।
जिन आपकी ये सौम्य छवि हमको भायी है ।
अतएव पुण्य से ये अर्चना रचायी है ।।

दोहा—पूर्व धातकी खंड है, विद्यमान तीर्थेश ।
भाव सहित नित वंदता, चरण युगल परमेश ।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसञ्जातकादि-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(२१)

अचलमेरु पूजन

अथ स्थापना

श्रीमत् वीर...

मेरु अचल ये महान् जगत में, भविजन के सब पातकहारी।
सुख समृद्धि करे नित जग में, लोकत्रय में मंगलकारी ।।
इनकी पूजन करते करते, सुरगण होते हैं अविकारी ।
हम भी पूजन करने आए, बनने को निज शिव अधिकारी ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्ब-समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्ब-समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्ब-समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

नरेन्द्र छंद

क्षीरोदधि के कंचन कलशा, लेकर सुरगिरि जावें ।
जिनचरणों में धार तीन दे, मन में अति हर्षावें ।।
अचलमेरु के सोलह मंदिर, सोलह सुख के दाता ।
जो भविजन नित पूज रचाए, निश्चित शिवपुर पाता ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

मलयागिरि का उत्तम चंदन, जिन पूजन को लाए ।
जिनने जिन के चरण चढ़ाया, भव संताप नशाए ।।
अचलमेरु के०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

SarvatoPooja 06 / 98

चंद्र चाँदनी से धवलोत्तम, अक्षत धोकर लाए ।
अक्षय पद हो प्राप्त मुझे भी, भक्ति सुयुक्त चढ़ाए ।।
अचलमेरु के०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सब ऋतु के सुरभित कुसुमों से, हमने पूज रचाया ।
अविकारी शिव पद पाने को, जिनवर चरण चढ़ाया ।।
अचलमेरु के सोलह मंदिर, सोलह सुख के दाता ।
जो भविजन नित पूज रचाए, निश्चित शिवपुर पाता ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

षट्रस मिश्रित अशन मनोहर, क्षुधा नाशने लाया ।
फिर भी क्षुधा नशी ना मेरी, अतः सुचरण चढ़ाया ।।
अचलमेरु के०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

ज्योतिर्देवों के विमान तो, जग का तिमिर भगाते ।
अंतस तम को दूर भगाने, जिनपद दीप चढ़ाते ।।
अचलमेरु के०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

वातावरण सुवासित करती, धूप लोक महकाए ।
वैश्वानर में अर्पण कर वसु, कर्म जलाने आए ।।
अचलमेरु के०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

जग के सर्वोत्तम फल लेकर, शिवफल पाने आया ।
मोक्ष महाफल की शुभ इच्छा, से जिनचरण चढ़ाया ।।
अचलमेरु के०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

सुधा समा नीरादिक वसुविध, द्रव्य मनोहर साजे ।
पद अनर्घ्य को पाने हेतू, हम जिन पद में राखें ।।
अचलमेरु के०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–अचल होय मम आतमा, जजूँ अचलगिरि राज ।
अचल निधि को प्राप्त करूँ, लहूँ अचल शिवराज ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

पश्चिम धातकि खण्ड के, अचल मेरु के चैत्य ।
सतरह सौ अट्ठीस हैं, उन्हें जजूँ मैं नित्य ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अडिल्ल छंद

भद्रसाल वन प्राची दिशा महान है ।
वहाँ विराजित जिनमंदिर अघहान है ।।
पश्चिम धातकि खण्ड मेरु जह अचल है ।
तिन थित जिनगृह नमन भाव करि विमल है ।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिभद्रशालवनस्थपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

दिशा दधीचि तुंग सदन जिन शोभ रहा ।
रत्नमयी जिन प्रतिमायें अद्भुत अहा ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिभद्रशालवनस्थदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

पश्चिमदिश के जिनगृह पूजें चाव से ।
प्रणमें जिनवर प्रतिमाएँ अति भाव से ।। पश्चिम०

SarvatoPooja 06 / 99

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिभद्रशालवनस्थपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

दिशा उदीचि में इक जिनमंदिर प्यारा ।
घंटा तोरण मालादि वैभव न्यारा ।।
पश्चिम धातकि खण्ड मेरु जहँ अचल है ।
तिन थित जिनगृह नमन भाव करि विमल है ।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिभद्रशालवनस्थोत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

भद्रसाल से पंचशत योजन ऊपर ।
नंदनवन पूरब दिशा जिनवर मनहर ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

दक्षिण दिश नंदन वन के जिनवर जजूँ ।
पूजन कर सब पाप ताप निश्चित तजूँ ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

पश्चिम दिश नंदन वन जिनगृह वंदना ।
तीनों संध्या करें होय विधि बंध ना ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

उत्तर दिशा विराजित जिनगृह है भला ।
दर्शन कर चिर संचित मिथ्या मल गला ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थोत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

अगला वन सौमनस ग्रंथनि में कहा ।
तिन पूरब दिश चैत्य विराजे शुभ महा ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

नंदन से पचपन सहस पणशत योजन ।
वन सौमनस दधीचि दिश जिन मनमोहन ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

वन सौमनस दिश पश्चिम जिन चैत्यालय ।
पूजक पूज बनें पाय घर सिद्धालय ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

दिशा उदीची जिनगृह अती विशाल है ।
वहाँ विराजित जिन पद में नित भाल है ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थोत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

सबसे ऊपर पांडुक वन गृह शोभते ।
प्राची दिश जिन भव्यों का मन मोहते ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिपाण्डुकवनस्थपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

पांडुक वन की दक्षिण दिश सुर जावते ।
जिनबिंबों की अतिशय पूज रचावते ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिपाण्डुकवनस्थदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

पांडुक वन की दिशा प्रतीची जिनबिंब ।
दर्शन करि भवि लखते निज का प्रतिबिंब ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिपाण्डुकवनस्थपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

उत्तर दिश उत्तुंग जिनालय दर्श से ।
छूट जाए भवि भव दुःखों के कर्ज से ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिपाण्डुकवनस्थोत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

SarvatoPooja 06 / 100

पूर्णार्घ्य

मत्ता छंद

मेरू सोहे अचल सुहाना, चैत्यालै सोलह हि बखाना ।
श्री जैनेन्द्रं गुण नित गाता, भावों से पूजन सु रचाता ।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

जय अचल जिनालय, हेतु शिवालय, तीनों संध्या करि अर्चन ।
त्रयविध अघ नाशें, ज्ञान प्रकाशें, वसु गुण भासें करि चर्चन ।।

शेर चाल

जय-जय अचल गिरीन्द्र पे सुशोभते महा ।
चार वन में चैत्य सदन, स्वर्णमय अहा ।।
इकसठ हजार योजनों पर्यन्त रत्नमय ।
पुनि उपरि उपरि मेरु सारे कांतिस्वर्णमय ।।१।।

अध्यात्म वैराग्य की, धारा जहाँ बहे ।
संसार में न सार, मानों चैत्य ये कहें ।।
प्रत्येक जिनभवन में आठ अधिक एक शत ।
जिनचैत्य विराजें सदा, पूजूँ मैं होके नत ।।२।।

सोलह जिनालय भक्तियुक्त, नित्य वंदिता ।
भरें सुपुण्य कोष चैत्य, पाप खंडिता ।।
क्षण भर की स्मृति भी, जिनकी पाप नाशती ।
अज्ञान का कर नाश, ज्ञान सुप्रकाशती ।।३।।

जिनवंदना से भक्त के न शेष रहें रोग ।
कटते सभी कलेश, ताप दुक्ख सर्व शोक ।।
शाश्वत जिनालयों को भाव शुद्ध अर्चता ।
रत्नत्रय की प्राप्ति हेतु, नाथ चर्चता ।।४।।

दोहा

अचल मेरु में शोभतीं, जिन प्रतिमा अभिराम ।
रत्नथाल अर्पण करूँ, करके नित्य प्रणाम ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थाचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 06 / 101

(३०)

पश्चिम धातकी खंड द्वीप कुलाचल जिनालय पूजन

अथ स्थापना

पादाकुलक छंद (तर्ज - तारों सा....)

शुभ द्वीप धातकी पश्चिम में, शाश्वत षट् कुलगिरी राजे हैं ।
सुरनर वंदित जिनभवन जहाँ, अद्भुत शुभ मणिमय साजे हैं ।।
श्री जिनवर जयवंतो जग में, आह्वानन करने आए हैं ।
मम हृदय कमल पर राजित हो, हम ऐसे भाव बनाए हैं ।।

दोहा

पश्चिम धातकि खंड में, कुलगिरि षट् पहचान ।
जो हित चाहो जिन जजो, पूजत हों भगवान ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

शंभु छंद

क्षीरोदधि का निर्मल जल हम, जिनपूजन करने लाए हैं ।
हो जन्म जरा मृतु नाश सदा, शाश्वत शिव पाने आए हैं ।।
इस खंड धातकी पश्चिम दिश, शुभ श्रेष्ठ कुलाचल षट् राजे ।
जिनभवन जजें ले द्रव्य अष्ट, वसु प्रातिहार्य युत जिन साजे ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

मलयागिरि का शुभ चंदन ला, जिनवर अर्चन नित करते हैं ।
आसन्न भव्य ही कुलगिरि के, जिन पूज पुण्य उर भरते हैं ।।
इस खंड धातकी०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

मुक्ता सम अक्षत रत्नथाल, भर भर कर मैं जिन पाद धरूँ ।
जग के सारे नश्वर पद तज, शाश्वत अक्षय पद सिद्धि वरूँ ।।
इस खंड धातकी॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो-ऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

षट् ऋतु के पुष्प मँगाकर के, जिनवर के चरण चढ़ाएँ हम ।
सब काम वासना नशकर के, फिर अविकारी बन जाएँ हम ।।
इस खंड धातकी॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

नैवेद्य क्षुधा का शमन मात्र, कुछ क्षणभर को ही कर पाता ।
इस क्षुधा वेदनी को नाशे, चरु के जिनपद जजने आता ।।
इस खंड धातकी॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

लौकिक दीपक जगतिमिर हरें, अरु नष्ट शलभ[१] भी करते हैं ।
निज कर्म शलभ के नाश करन, शुभ दीप चरण नित धरते हैं ।।
इस खंड धातकी॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

वर धूप दशांगी तो केवल, नभमंडल सुरभित करती है ।
श्रद्धा से जिनपद भेंट करें, सब कर्मकालिमा हरती है ।।
इस खंड धातकी॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

हम सर्वश्रेष्ठ फल सब ऋतु के, जिनवर पूजन को लाए हैं ।
फल अर्चन से हो प्राप्त सुफल, शिवपद पाने ललचाए हैं ।।
इस खंड धातकी॰

१. पतंगा

SarvatoPooja 06 / 102

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

अष्टम भूमि को पाने हेतु, भावों से अर्घ बनाया है ।
हे जिनवर तुम सा पद पाने, मेरा भी मन अकुलाया है ।।
इस खंड धातकी पश्चिम दिश, शुभ श्रेष्ठ कुलाचल षट् राजे ।
जिनभवन जजें ले द्रव्य अष्ट, वसु प्रातिहार्य युत जिन साजे ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा

पश्चिम धातकि खंड में, कुलगिरि वर जिनगेह ।
भावों से नित जिन नमूं, गुण में रखि अति नेह ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

पश्चिम धातकि के विषै, कुलाचल शुभ सुहाय ।
शाश्वत चैत्यालय जजूँ, पुष्पांजलि सु चढ़ाय ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

रूपक सवैया छन्द (तर्ज - भला किसी का...)

पहिला हिमवन् अचलगिरि जहँ कूट एकादश शोभित हैं ।
सिद्धआयतन प्रथम कूट पर, जिनमंदिर मन मोहित है ।।
पश्चिम धातकि खण्ड कुलाचल, जहाँ विराजित श्री भगवान ।
उनकी मैं नित करूँ वंदना, पाने सिद्धाचल शुभ थान ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिहिमवन्पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

महाहिमवान गिरी के ऊपर, कूट आठ सब गोलाकार ।
पूर्वदिशागत एक कूट पर, श्री जिन चैत्यालय सुखकार ।।
पश्चिम धातकि॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिमहाहिमवन्पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

निषध तुंग की छटा निराली, मूलशिखर चऊ दिश वन हैं ।
नव कूटों से सहित जहाँ पर, एक कूट श्री जिनगेह है ।।
पश्चिम धातकि०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिनिषधपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

नील कूट भी निषध समाना, नौ ही कूट को धार रहा ।
रत्नमयी श्री जिन भवनों युत, कूट एक वहाँ साज रहा ।।
पश्चिम धातकि०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिनीलपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

रुक्मि शैल पर आठ कूट हैं, रत्नमयी सब जन मन हार ।
पूर्व दिशा में सिद्ध कूट की, करते हैं सब जयजयकार ।।
पश्चिम धातकि०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिरुक्मिपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

उत्तरदिश में शिखरिन् पर्वत, कूट एकादश जहाँ कहे ।
स्वर्णशिखर पर कूट रत्नमय, रत्नमयी सु जिनबिंब रहे ।।
पश्चिम धातकि०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिशिखरिन्पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

पूर्णार्घ्य

मत्ता छंद

दूजा श्री धातकि शुभ सोहे, ता मध्ये छः कुलगिरि मोहे ।
नित्या चैत्यालय सुखकारी, पूजा से ही शिवपुर द्वारी ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

SarvatoPooja 06 / 103

जयमाला

घत्ता

कुलगिरि चैत्यालय, भवि पुण्यालय, पूर्वदिशागत मैं निरखूँ ।
जिनगुणगण गाऊँ, नित नित ध्याऊँ, दोष टाल निज गुण परखूँ ।।

स्वागता छंद

क्षेत्र पश्चिम सुधातकि खंडा, षट् गिरी हिमवनादि अखंडा ।
श्री जिनालय सुशाश्वत सोहें, भव्य देव नर चित्त सुमोहें ।
भक्ति देय भव सिंधु किनारा, नाथ नाम शुभ से भव पारा ।
नाथ लोक त्रय तारणहारे, भव्य जीव हितु आप सहारे ।
लब्धि क्षायिक सभी जन पाते, जो प्रभो सुगुण मंगल गाते ।
श्री अकृत्रिम जिनालय पूजें, कर्मनाश सब श्री सम हूँजे ।
पाद पद्म तव हे मदनेशा, मानुँ यान भव पार जिनेशा ।
ध्यान शुक्ल करि कर्म विजेता, भाव से नमन इंद्रिय जेता ।
भक्ति भाव कि सु निर्मल धारा, देय नित्य शुभ सौख्य अपारा ।
चैत्य रत्नमय शाश्वत ध्याऊँ, श्वास श्वास सु प्रभो गुण गाऊँ ।
मोक्ष नाहि जबलौं प्रभु हो है, चित्त माँहि तब लौ जिन सोहे ।
वंदना दरश आदर युक्ता, जो करे भविक होय सुमुक्ता ।
भक्ति से रतिपती विजयी को, पूजता अजित अक्ष जयी को ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(३१)

पश्चिमधातकीखंड द्वीप वक्षारगिरि जिनालय पूजन

अथ स्थापना

अडिल्ल छंद

धातकि खंड सुपश्चिम गिरि वक्षार हैं ।
तिन पर राजित जिनमंदिर सुखकार हैं ।।
आह्वानन कर हृदय कमल पर भाव से ।
नर पुंगव सुर जजें, नित्य अति चाव से ।।
दोहा–गिरि वक्षार सुचैत्य जिन, वंदनीय तिहुँकाल ।
आह्वानन कर जिन जजूँ, धरूँ चरण नित भाल ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

रूपक सवैया (तर्ज - बखत रतन के...)

यतिवर मन सा निर्मल जल ले, जिन चरणा त्रय धार कराय ।
जन्मादिक त्रय रोग नशाकर, शुद्धातम के सब गुण पाय ।।
गिरि वक्षार सु भवन मनोहर, जिनवर का अतिशय अमलान ।
घाति अघाति विनाश करन को, जिन चरणों का करि शुभ ध्यान ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

चंद्र किरण सम शीतल चंदन, जिन चरणों में दे नित धार ।
चिर संताप मिटाने हेतू, भवि अर्चें आ जिनवर द्वार ।।
गिरि वक्षार०

SarvatoPooja 06 / 104

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

निर्मल धवल सुअक्षत जग में, पुनः जनम नहीं ले सकता ।
अक्षत ले भवि जिन पद अर्चें, अक्षय पद वही पा सकता ।।
गिरि वक्षार सु भवन मनोहर, जिनवर का अतिशय अमलान ।
घाति अघाति विनाश करन को, जिन चरणों का करि शुभ ध्यान ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सुंदर सौरभ अरु अति सुरभित, पुष्पराज जिन चरण चढ़ाय ।
वेदत्रय की नशि अभिलाषा, निर्विकार उत्तम पद पाय ।।
गिरि वक्षार०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

षट्रस व्यंजन लखते ही मम, नित अहार संज्ञा जग जाय ।
ले नैवेद्य चरण जिन पूजूँ, क्षुधा वेदनी मम नश जाय ।।
गिरि वक्षार०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

गौघृत दीप जला जिन वन्दें, नीराजन करते हर्षाय ।
चिद् प्रकाश अंतर में व्यापे, निश्चित मोह तिमिर नशि जाय ।।
गिरि वक्षार०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

अष्ट कर्म के नष्ट करन हितु, दशविध धूप हुताशन खेय ।
उभय भक्ति जो करें निरंतर, निश्चित वे भवि होय अजेय ।।
गिरि वक्षार०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

नरभव सफल करन हितु भविजन, श्रीफल जिनपद नित्य चढ़ाय।
रत्नत्रय की शुद्ध भावना, जिस उर प्रगटे वो शिव पाय ॥
गिरि वक्षार०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

उत्तम वसुविधि द्रव्य मिला भवि, अनर्घ्य हेतु जिनराज जजें ।
भक्ति सु पूजन अर्चन सुमिरन, जे भवि करें ते कर्म तजें ॥
गिरि वक्षार०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा

पश्चिमखंड सु धातकी, गिरि वक्षार जिनेश ।
जे भविजन नित अर्चते, पाते पुण्य विशेष ॥

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

तरलनयन छंद

जिन दरश नित नित करिए, जिन चरन मधि चित धरिए ।
चित निरमल गुणन भरिए, सब करम मल झट जरिए ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

सुगीतिका छंद

गिरि 'चित्रकूट' जहाँ रतनमय नित्य चैत्यालय कहा ।
उदीची तट सीता नदी जहँ, भक्ति निर्झर बह रहा ॥
जजते प्रतीची धातकी वक्षार पूर्व विदेह के ।
जिन चैत्य की शुभ वंदना कर ईश हों शिवगेह के ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतानद्युत्तरतटे चित्रकूटवक्षारपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

शुभ 'पद्मकूट' जिनालया सीता उदीची तट रहे ।
विहरें महामुनिगण जहाँ अरु सिद्ध सुख सम्यक् लहें ॥ जजते०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतानद्युत्तरतटे पद्मकूटवक्षारपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

SarvatoPooja 06 / 105

नद्युत्तर ?
नद्योत्तर

सुगिरी कनकमय 'नलिनकूट' सु पूजते सुरगण सदा ।
जिस माँहि मुनि गण ध्यान करते खग सुरासुर हों मुदा ॥
जजते प्रतीची धातकी वक्षार पूर्व विदेह के ।
जिन चैत्य की शुभ वंदना कर ईश हों शिवगेह के ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतानद्युत्तरतटे नलिनकूटवक्षारपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

'एकशैल' है वक्षार सुंदर नित्य है सुखधाम है ।
जिनभक्त को देता शिवालय, जो बना जिन धाम है ॥ जजते०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतानद्युत्तरतटे एकशैलवक्षारपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

गिरिवर 'त्रिकूटाचल' जिनालय के जिनेश्वर जो जजे ।
सुरता[1] धरे नर रत्न होय रत्नत्रय गुण से सजे ॥
तट दक्षिणी सीता नदी के चउ गिरी वक्षार हैं ।
अविनाश जिनगृह पूजते जिन, सौख्य निधि भंडार हैं ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतानदीदक्षिणतटे त्रिकूटवक्षारपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

गिरि 'वैश्रवण' निर्मित जिनालय, का सदा सुमिरन करूँ ।
विचरूँ श्रमण बनकर वहाँ बैरी करम वसु विधि हरूँ ॥
तट दक्षिणी०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतानदीदक्षिणतटे वैश्रवणवक्षारपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

नग[2] 'अंजनात्मा' शीश पर राजित सुनिर्मल जिनगृहा ।
रमणीयता है दिव्य अरु सुर नर खगा अर्चित महा ॥
तट दक्षिणी०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतानदीदक्षिणतटेऽञ्जनात्मावक्षारपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

अरचें गिरी 'अंजन' जिनालय, को सुधीजन भाव से ।
भव नीर को वो पार करते, शीघ्र भक्ति सु नाव से ॥
तट दक्षिणी०

---

१. सुरत्व २. पर्वत

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतानदीदक्षिणतटेऽञ्जनवक्षारपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

जिन चैत्य 'श्रद्धावान' गिरि के भाव श्रद्धा युत जजूँ ।
जिनबिम्ब जिनगृह अकृत्रिम शुभ धार मैं वसु गुण सजूँ ।।
अपरा धातकि सीतोदा सरिता सरल तट जिनवरा ।
नित पूजते जिन जिनभवन राजे सुवक्षा[1] गिरिवरा ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतोदानदीदक्षिणटे श्रद्धावान्वक्षारपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

नख से शिखा तक कनकमय शुभ गिरी 'विजटावान' जो ।
सुर खेचरादिक हैं रिझाते भक्तिवश भगवान को ।।
अपरा धातकि०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतोदानदीदक्षिणटे विजटावान्वक्षार-पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

अब भाव युत वंदुँ जिनालय 'आशीविष' वक्षार के ।
नत माथ हैं सुरनाथ के जहँ, भक्ति उर विस्तार के ।।
अपरा धातकि०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतोदानदीदक्षिणटे आशीविषवक्षार-पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

सुख का स्रोत है बह रहा जहँ, है 'सुखावह' गिरि वही ।
हम पूजते शाश्वत जिनालय, भाव युत शुभ मणिमयी ।।
अपरा धातकि०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतोदानदीदक्षिणटे सुखावहवक्षारपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

शुभ 'चंद्रमाल' गिरी विराजित, चंद्रमणि सम जिनवरा ।
जिनकी छवी अन्तर बसे अर्चे सुरासुर नरवरा ।।
शुभ धातकी पश्चिम विदेहा उदिचि सीतोदा तटा ।
सरिता सुतट वक्षार गिरि पर चैत्य पूजूँ अघ घटा ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतोदानद्युत्तरतटे चन्द्रमालवक्षारपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

१. वक्षार

दिननाथ सम जिननाथ लगते, जिन गिरी के शीश पे ।
वह 'सूर्यमाल' गिरी सुशोभित, शब्द ना गणईश पे ।।
शुभ धातकी पश्चिम विदेहा उदिचि सीतोदा तटा ।
सरिता सुतट वक्षार गिरि पर चैत्य पूजूँ अघ घटा ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतोदानद्युत्तरतटे सूर्यमालवक्षारपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

सुरनाग इन्द्रादिक जजे शुभ, 'नागमाल' गिरी सदा ।
तिन पे विराजित चैत्य सुंदर, जजें भवि होकर मुदा ।।
शुभ धातकी०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतोदानद्युत्तरतटे नागमालवक्षारपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

गत दोष श्री जिनदेव का आलय शिवालय रूप है ।
वह 'देवमाल गिरी' सदा वक्षार गिरि में भूप है ।।
शुभ धातकी०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थसीतोदानद्युत्तरतटे देवमालवक्षारपर्वतस्थ-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

पूर्णार्घ्य

षट्पद छंद (तर्ज - मदअवलिप्त कपोल मूल...)

सफल हुई नरकाय प्रभू का अर्चन करके ।
पाया सौख्य अपार निरन्तर गगरी भरके ।।
पश्चिम धातकि द्वीप विदेह गिरी वक्षारा ।
तापै राजित दिव्य जिनों को नमन हमारा ।।

दोहा

उत्तम कुल पाया सुखद, मिले सिरी भगवान ।
भाव यही अब उर बसा, होवें आप समान ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता—शुभ क्षेत्र विदेहा, श्री जिनगेहा, वक्षारों के चैत्य जजूँ ।
नाशूँ सब दुर्गुण, पाऊँ चिद्गुण, शाश्वत गुण से नित्य सजूँ ।।

रूपक सवैया छंद (तर्ज - भक्तअमर)

पूर्व और पश्चिम विदेह में, नदी सीता सीतोदा से ।
अर्ध अर्ध जो भाग हुए उन, माँही चऊ वक्षार कहे ।।
यूँ सोलह वक्षार हुए हैं, एक एक पर कूट सु चार ।
सिद्धकूट प्रति गिरि नदि तट पर, जिन पर जिनमंदिर सुखकार ।।

कुलाचलों के निकट कूट पर, दिक्कुमारियों का हो वास ।
अन्य सुकूटों पर व्यंतर के, देव देवियाँ करें निवास ।।
स्वर्णमयी सोलह वक्षारों, सोलह जिनगृहों को ध्याऊँ ।
वीतरागि-द्वेषी जिन यजकर, शाश्वत सिद्धी सुपद पाऊँ ।।

चैत्य अकृत्रिम पूजा करके, नंत अवगुणों का विध्वंस ।
परम्परा से क्षीणमोह बन, होवे सकल कर्म का ध्वंस ।।
जिन सुभक्ति रस में अवगाहन, धोवही पाप अशुभ तन मल ।
निराकार निर्अंजन होते, तीनों लोक में नित्य अमल ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 06 / 107

३२

पश्चिमधातकी खंड द्वीप गजदंत जिनालय पूजन

अथ स्थापना

स्रग्धरा छंद

पच्छा श्री धातकी के जिनवर भजते हस्तिदंता गिरी के ।
अर्हंता बिंब सोहें, जिनवर सदना, पाप हारें सभी के ।।
नित्यं आह्वाननं से वसुविध द्रव से, पूजते सर्वदा ही ।
सारे हों नष्ट कर्मा, प्रभु अरचन से, चैत्य वे शर्मदा ही ।।

दोहा

पश्चिम धातकि द्वीप के, गिरि गजदंत महान ।
शाश्वत जिनगृह सुर जजें, पाने पद निर्वाण ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

पादाकुलक छंद (तर्ज - तारों सा चमकता...)

क्षीरोदधि का जल शीतल है, जन जन की प्यास बुझाता है ।
जो अर्चे जिनवर के चरणा, जन्मादिक रोग नशाता है ।।
शुभ द्वीप धातकी पश्चिम में, गजदंत सु अतिशय धारी है ।
तिन पर चउ चैत्यालय राजे, उन सबको धोक हमारी है ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

गोशीर कपूर मिलाकर के, शीतल मलयज ले आए हैं ।
भव आतप हो अब नष्ट प्रभो, ये भाव बनाकर लाए हैं ।।
शुभ द्वीप॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षत से अक्षय पूजन कर, जिनवर अक्षय पद दानी हैं ।
अक्षत जिनवर गुण चिंतन से, भवि बनते केवलज्ञानी हैं ।।
शुभ द्वीप॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरतरु प्रसून ले करके हम, भगवन की अर्चन करते हैं ।
पायें हम मीनकेतु[1] पे जय, ब्रह्मचर्य चित में धरते हैं ।।
शुभ द्वीप॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

षट्रस मिश्रित नैवेद्य मँगा, मणिरत्न थाल भर लाए हैं ।
चाहूँ सब दोष नशें मेरे, जिनपद में आन चढ़ाये हैं ।।
शुभ द्वीप॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपक ये स्वपर प्रकाशी है, जग का तम दूर भगाता है ।
मैं जजूँ नित्य घृत दीपक से, जिन केवलज्ञान लुभाता है ।।
शुभ द्वीप॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

वर धूप दशांगी ला करके, जिनवर पूजन को आए हैं ।
जो घाति कर्म से रहित प्रभो, उनके पद पर ललचाए हैं ।।
शुभ द्वीप॰

१. कामदेव

SarvatoPooja 06 / 108

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

जग के सारे फल खाकर भी, जीवन निष्फल ही रहता है ।
फल से जिन जजि शिवफल पाए, ऐसा जिन आगम कहता है ।।
शुभ द्वीप धातकी पश्चिम में, गजदंत सु अतिशय धारी है ।
तिन पर चउ चैत्यालय राजे, उन सबको धोक हमारी है ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

तिहुँ लोक भरी दौलत सारी, ना मेरा चित्त लुभाती है ।
मैं अर्घ्य चढ़ाता चरणों में, जिनमूरत ही नित भाती है ।।
शुभ द्वीप॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

दिशा प्रतीची धातकी, गिरि गजदंता खास ।
अति श्रद्धा से जिन जजूँ, पाऊँ शिवपुर वास ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

चउ गजदंत जिनालया, पूजूँ जिन अविकार ।
भक्ति अश्व पर मैं चढ़ूँ, पहुँचूँ मुक्ति द्वार ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

पादाकुलक छंद

श्री अचल मेरु के ईशाने, है 'माल्यवान' गजदंत महा ।
वैडूर्यमयी आभायुत जो, उस पर जिनमंदिर नित्य अहा ।।
शाश्वत जिनबिम्बों की महिमा, नित भक्ति भाव से गाता हूँ ।
वसु द्रव्य भेंट जिन चरणों में, पुनि पुनि निरखूँ न अघाता हूँ ।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिमाल्यवान्गजदन्तपर्वतस्थसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

शुभ अचल मेरु आग्नेय दिशा, गजदंत 'सौमनस' रजतमयी ।
योजन पन शत पे शोभित है, जिन चैत्यालय मणिरत्नमयी ।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिसौमनसगजदन्तपर्वतस्थसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

श्री अचल मेरु के नैऋत्ये, विद्युत्प्रभ इक गजदंत कहे ।
मेरु के निकट जिन चैत्यालय, जिसमें जग स्वामी शोभ रहे ।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविद्युत्प्रभगजदन्तपर्वतस्थसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

शुभ अचल मेरू वायव्य में, गजदंत गिरी कनकाभ लिए ।
जिन सदन 'गंधमादन' शोभित, सुशिखर मानो आकाश हुए ।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगन्धमादनगजदन्तपर्वतस्थसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

पूर्णार्घ्य

मत्ता छंद

मेरू पार्श्वे चउ गजदंता, पूजे जो निश्चित सुखवंता ।
आठों द्रव्यों सहित रचाऊँ, पूजा से ही शिवपुर पाऊँ ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिन-बिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता

गजदंत जिनालय, शिव के आलय, पाने जिनवर नित पूजूँ ।
भक्तीरथ चढ़के, मुक्ती वरके, जिनवर के सम ही हूजूँ ।।

कवित्त छंद (वीर हिमाचलतें निकसी..)

पश्चिम धातकि खंड महा, गजदंत गिरि जहाँ चार कही हैं ।
वेदि सुवर्ण अरण्य जहाँ, पर कूट अनूपम रम्य सही है ।।

SarvatoPooja 06 / 109

सिद्ध सुकूट गिरी हर पे, सु जिनालय ता पर शोभ रहे हैं ।
रत्नमयी मणियुक्त सुधा, सम बिंब जहाँ सुख धार बहे है ।।

शाश्वत चैत्य सदा प्रणमूँ, तिनकी गरिमा गणदेव कहे हैं ।
संसृति नष्ट करे जग में, भवि जन्म जरा रुज दूर करे हैं ।।

दिव्य दिवाकर तेज कहे, जिनबिंब शुभोत्तम दीप्ति धरे हैं ।
चौ शत बत्तिस चैत्य कहे, चउ मंदिर मोहक चित्त धरे हैं ।।

आज सुपुण्य प्रकाशित होय जु, चैत्य सुवंदन भाव हुए हैं ।
ज्यों जल बिंदु सुपद्मनि पे छवि, त्यों मम आत्म प्रदेश छुए हैं ।।

मेटि सबै जग जाल प्रभो, शरणागत वीनति तोसि करे हैं ।
ना जबलौं हम मोक्ष गही, तबलौं निज शीश सुपाद धरे हैं ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिन-बिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(३३)

पश्चिम धातकी खण्ड द्वीप विजयार्द्ध जिनालय पूजन

अथ स्थापना

दोहा—पश्चिम धातकि खण्ड के, रजत गिरी जिनगेह।
रुचियुत आह्वानन करूँ, जिन पूजूँ अति नेह ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

आँचलीबद्ध चौपाई छंद

क्षीरोदधि का निर्मल नीर, जिनवर पूजि लहूँ भवतीर ।
महारस कंद, जिनभक्ति दे परमानंद ॥
रजतगिरि के जिनवर गेह, वंदन करि हम बनें विदेह ।
महारस कंद, जिनभक्ति दे परमानंद ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

चंदन देह ताप नशि देय, प्रभु पूजन शाश्वत सुख देय ।
महारस कंद, जिन भक्ति दे परमानंद ॥ रजतगिरि॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय—जिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

जिनपूजन अक्षत से आज, अर्चन दे अक्षत साम्राज ।
महारस कंद, जिन भक्ति दे परमानंद ॥ रजतगिरि॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय—जिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

सेटींग बाकी

SarvatoPooja 06 / 110

सुमनों से जिन पूज रचाय, अविकारी पद निश्चित पाय ।
महारस कंद, जिन भक्ति दे परमानंद ॥
रजतगिरि के जिनवर गेह, वंदन करि हम बनें विदेह ।
महारस कंद, जिनभक्ति दे परमानंद ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय—जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

चरुवर से जिनपूज रचाय, नादि काल की क्षुधा नशाय ।
महारस कंद, जिन भक्ति दे परमानंद ॥ रजतगिरि॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय—जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

जिनपदाग्र घृत दीप जलाय, मिथ्यातम त्रय शीघ्र नशाय ।
महारस कंद, जिनभक्ति दे परमानंद ॥ रजतगिरि॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय—जिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

जिन चरणों में धूप चढ़ाय, भवाताप को शीघ्र नशाय ।
महारस कंद, जिनभक्ति दे परमानंद ॥ रजतगिरि॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय—जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

सर्वोत्तम फल पाने आज, श्री फल ले पूजूँ जिनराज ।
महारस कंद, जिनभक्ति दे परमानंद ॥ रजतगिरि॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय—जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

रत्नाकर के रत्न मँगाय, पद अनर्घ हितु अर्घ चढ़ाय ।
महारस कंद, जिनभक्ति दे परमानंद ॥ रजतगिरि॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय—जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा—रजत जिनेश्वर पूजि नित, होवे सब अघ नाश ।
भव सागर को तैरकर, पा ले मोक्ष निवास ॥

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

पश्चिम धातकि खंड में, विजयारध चौंतीस ।
उन पर शाश्वत जिनभवन, नित पूजूँ जगदीश ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

विदित छन्द (तर्ज - मेरी लगी गुरु संग...)

वन भद्रसाल के पास, 'कच्छा' देश महा ।
मधि रजताचल शुभ धाम, जिनगृह दिव्य अहा ।।
शुभ रत्न अर्घ्य का थाल, भक्ति सुभावों से ।
जजूँ रत्नमयी जिनबिंब, अतिशय चावों से ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहकच्छादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

शुभ देश 'सुकच्छा' जान रूप्यगिरी सोहे ।
है सिद्ध कूट शुभ थान, जिनगृह मन मोहे ।। शुभ रत्न०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसुकच्छादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

'महाकच्छा' अति विशाल, विजयारध प्यारा ।
सुर नर पूजित मणिमाल, चैत्यालय सारा ।। शुभ रत्न०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहमहाकच्छादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सु 'कच्छकावती' प्रधान, रूप्य महीधर है ।
प्राची दिश कूट कहाय, श्री जिनगृह वर है ।। शुभ रत्न०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहकच्छकावतीदेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

'आवर्ता' देश सुमध्य, रजताचल देखें ।
शाश्वत चैत्यालय पूज, भाग्य भवी लेखें ।। शुभ रत्न०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहावर्तादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

SarvatoPooja 06 / 111

'लांगल आवर्ता' देश, विजयारध जाऊँ ।
मणिरत्नमयी जिनगेह, जिनवर नित ध्याऊँ ।।
शुभ रत्न अर्घ्य का थाल, भक्ति सुभावों से ।
जजूँ रत्नमयी जिनबिंब अतिशय चावों से ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहलाङ्गलावर्तादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

शुभ देश 'पुष्कला' जान, मुनिवृष सर्वोत्तम ।
अकृत्रिम जिनालय पूजि, पद हो परमोत्तम ।। शुभ रत्न०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहपुष्कलादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

सु 'पुष्कलावती' महान, शैल रजत निरखूँ ।
उस पर चैत्यालय पूजि, पर[1] खो निज परखूँ ।। शुभ रत्न०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहपुष्कलावतीदेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

देवारण्य विपिन[2] पास, 'वत्सा' देश कहूँ ।
विजयारध पर जिनगेह, जजकर सौख्य लहूँ ।। शुभ रत्न०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहवत्सादेशमध्यस्थविजयार्द्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

है देश 'सुवत्सा' ख्यात, मधि विजयारध है ।
शुभ सिद्धकूट जिनगेह, महिमा धारत है ।। शुभ रत्न०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसुवत्सादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

'महावत्सा' बहु निधान, सुख का कहलाता ।
रजताचल पर जिनगेह, जिनवर गुण गाता ।। शुभ रत्न०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहमहावत्सादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

'वत्सकावती' शुभ देश, जिनशासन पाऊँ ।
विजयारध का शुभ नित्य, चैत्यालय ध्याऊँ ।। शुभ रत्न०

---

१. पर द्रव्य २. यहाँ तिलोयपण्णत्ति में वन का नाम भूतारण्य कहा है ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहवत्सकावतीदेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

शुभ 'रम्या' देश प्रधान, द्वय[1] केवलि रहते ।
विजयार्द्ध गिरी जिनगेह, जजि जिनगुण कहते ।। शुभ रत्न०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहरम्यादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

सु देश 'सुरम्यका' नित्य, मुनिगण शिव पाते ।
रूप्याचल मंदिर पूज, सुरनर हर्षाते ।। शुभ रत्न०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहसुरम्यकादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

'रमणीया' देश महान, दिव्य ध्वनि खिरती ।
जजि रूप्याचल जिनगेह, कर्म कड़ी जरती ।। शुभ रत्न०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहरमणीयादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

'मंगलावती' के मध्य, रजताचल शोभित ।
जिस पर शाश्वत जिनगेह, सुर नर मन मोहित ।। शुभ रत्न०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थपूर्वविदेहमङ्गलावतीदेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

शुभ 'पद्मा' देश सुमध्य, शाश्वत धर्म रहे ।
विजयारध जिनगृह जान, भक्ति सुधार बहे ।।
सौ आठ नित्य जिनबिंब, रत्नमयी ध्याऊँ ।
निर्मल वसु द्रव्य चढ़ाय, जिनवर गुण गाऊँ ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहपद्मादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

'सुपद्मा' देश विख्यात, जिनवृष सौख्य घना ।
रूप्याचल पर जिनगेह, पूजूँ भक्ति मना ।। सौ आठ०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहसुपद्मादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

---

१. श्रुतकेवली व केवली

SarvatoPooja 06 / 112

'महापद्मा' अति विशाल, धर्म सभा सोहे ।
विजयारध के जिनगेह, सुरनर मन मोहे ।।
सौ आठ नित्य जिनबिंब, रत्नमयी ध्याऊँ ।
निर्मल वसु द्रव्य चढ़ाय, जिनवर गुण गाऊँ ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहमहापद्मादेशमध्यस्थ-विजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

'पद्मकावती' शुभ देश, रहे समृद्ध सदा ।
शुभ रजततुंग जिनगेह, सुरगण आएँ मुदा ।। सौ आठ०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहपद्मकावतीदेशमध्यस्थ-विजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

'शंखा' का आर्याखंड, जिनमत ही राजित ।
गिरि विजयारध उत्तुंग, जिनमंदिर साजित ।। सौ आठ०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहशङ्खादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

शुभ 'नलिनी' देश सु मध्य, सुरगण नित आते ।
श्री रजतशैल के नित्य जिनमंदिर जाते ।। सौ आठ०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहनलिनीदेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

है 'कुमुद' देश अभिराम, नगरादिक सज्जित ।
रूप्याचल के जिनगेह, ज्योतिर्ग्रह लज्जित ।। सौ आठ०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहकुमुदादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

शुभ 'सरित' देश मनहार, शिवमग शाश्वत है ।
नित-नित जिनगृह गुणगान, सुरनर गावत हैं ।। सौ आठ०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहसरितादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

शुभ देवारण्य समीप, 'वप्रा' देश कहा ।
धरणीधर रूप्य महान, जिनगृह नित्य अहा ।। सौ आठ०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहवप्रादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।25।।

शुभ देश 'सुवप्रा' माँहि, समवशरण लगता ।
रजताचल मंदिर पूज, भवि का अघ भगता ।। सौ आठ०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहसुवप्रादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।26।।

'महवप्रा' देश पिछान, मोक्ष सुपावत हैं ।
विजयारध के जिनगेह, सुरपति जावत हैं ।। सौ आठ०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहमहावप्रादेशमध्यस्थ-विजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।27।।

'वप्रकावती' शुभ देश, अन्नादिक पूरित ।
गिरि गेह पूजकर होय, वांछा आपूरित ।। सौ आठ०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहवप्रकावतीदेशमध्यस्थ-विजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।28।।

शुभ 'गन्धा' देश विचार, होते अविकारी ।
मधि विजयारध जिनगेह, पूजें सुखकारी ।। सौ आठ०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहगन्धादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।29।।

शुभ देश 'सुगन्धा' भव्य, लब्धी नव पाते ।
विजयार्द्ध सिद्ध शुभ कूट, जिनगृह गुण गाते ।। सौ आठ०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहसुगन्धादेशमध्यस्थ-विजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।30।।

'गंधिला' देश मधि भव्य, आतम ज्ञानी हैं ।
गिरि जिनमंदिर जजि होय, क्षायिक दानी हैं ।। सौ आठ०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहगन्धिलादेशमध्यस्थ-विजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।31।।

है 'गंधमालिनी' देश, घन घन घंट बजे ।
रजताचल पर जिनगेह, तोरण आदि सजे ।। सौ आठ०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहगन्धमालिनीदेशमध्यस्थ-विजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।32।।

SarvatoPooja 06 / 113

प्रभव छंद (तर्ज - मैं पंछी एक प्यासा...)

पश्चिम सु धातकी में, इक भरत क्षेत्र है प्यारा ।
मधि रजताचल सोहे, शाश्वत चैत्यालय न्यारा ।।
अष्टोत्तर शत प्रतिमा, मैं रत्नमयी नित ध्याता ।
तुम सा ही बन जाऊँ, बस यही भावना भाता ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणदिशायाः भरतक्षेत्रस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।33।।

पश्चिम सु धातकी में, ऐरावत क्षेत्र विराजित ।
शाश्वत जिन चैत्यालय, है रूप्यगिरी पर साजित ।।
अष्टोत्तर शत प्रतिमा, मैं रत्नमयी नित ध्याता ।
तुम सा ही बन जाऊँ, बस यही भावना भाता ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपस्थोत्तरदिशाया ऐरावतक्षेत्रस्थविजयार्द्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।34।।

पूर्णार्घ्य

मत्ता छंद

रूप्या तुंगा शुभ चउतीसा,
ता पे चैत्यालय जगदीशा ।
रत्नों से पूजन रचता हूँ,
पापों से निश्चित बचता हूँ ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय-जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

जिनवर गतरागी, सब विधि त्यागी, हम अनुरागी भक्ति करें ।
बनके शिवपंथी, खोलें ग्रंथी, केवल बुध ले मुक्ति वरें ।।

चक्र छंद (तर्ज - दर्शन देखत भूख...)

धातकि रजत अचल सुख भरहीं ।
पश्चिम दिश जिनगृह अघ हरहीं ।।
ऊँचि सु पनशत धनु शुभ कहही ।
मूरत प्रभुवर मम मन हरही ।।

जन्म मरण जर सब जिन जरही ।
दोष अठदस रहित प्रभु रहही ।।
ताहि सु जिनवर अरचन करही ।
माथ सु जिनपद हम नित धरही ।।

श्री जिन कमल नयन अति सुह ही ।
इंद सु सहस नयन करि लख ही ।।
श्री मुख निरखत सब अघ टर ही ।
नाथ दरश कर भ्रम बुध नश ही ।।

वंदन शत शत रतिपति विजयी ।
अर्चन कर बनि तुम सम अजयी ।।
चारित धरत करम सब जरही ।
शाश्वत निवसत हम शिवपुर ही ।।

दोहा–जिनगृह शुभ विजयार्ध के, नाशे पाप अनंत ।
जिनप्रतिमा के दर्श से, लहूँ भवोदधि अंत ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालय–जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 06 / 114

(३४)

पश्चिमधातकी खण्डस्थ धातकी शाल्मली वृक्ष जिनालय पूजन

अथ स्थापना

मंदाक्रांता छंद

पच्छा श्री धातकि तरुवरा, धातकी शाल्मली हैं ।
शोभें नित्यं जिनवरगृहा, राजते केवली हैं ।।
श्री आहूता जिनवर महा, पूजने भव्य आए ।
भावों से भी अरचन करें, द्रव्य श्रेष्ठं चढ़ाएँ ।।

दोहा

पश्चिम धातकि द्वीप में, चैत्य वृक्ष दो जान ।
सुर नर अर्चन नित करें, पावें पुण्य महान ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिधातकीशाल्मलिद्वयवृक्षस्थजिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिधातकीशाल्मलिद्वयवृक्षस्थजिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिधातकीशाल्मलिद्वयवृक्षस्थजिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

मुकुलोत्तर छंद (तर्ज : मेरे यार सुदामा..)

पुष्कर प्रासुक ले हम आए, श्री जिनवर की पूज रचाएँ ।
पश्चिम धातकि द्वीप विराजे, धातकि वृक्ष शाल्मली राजे ।
नाशूँ रोगत्रय रे, श्रीजीकी पूज रचाके ।
जिनगृह जिन पूजूँ रे, रत्नों के थाल सजा के ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिधातकीशाल्मलिद्वयवृक्षस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

लेकर गंधराज शुभ आए, जिनपूजन कर मोद मनाए ।
पश्चिम धातकि द्वीप विराजे, धातकि वृक्ष शाल्मली राजे ।।
भव ताप नशाऊँ रे, श्रीजी की पूज रचा के ।
जिनगृह जिन पूजूँ रे, रत्नों के थाल सजा के ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिधातकीशाल्मलिद्वयवृक्षस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

मुक्ता सम शुभ अक्षत लाकर, पूजें जिनवर चरण चढ़ाकर ।
पश्चिम धातकि द्वीप विराजे, धातकि वृक्ष शाल्मली राजे ।।
अक्षय पद पाएँ रे, श्रीजी की पूज रचा के ।
जिनगृह जिन पूजूँ रे, रत्नों के थाल सजा के ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिधातकीशाल्मलिद्वयवृक्षस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

पुष्प रजत जिन पूजन लाए, काम वासना सब नश जाए ।
पश्चिम धातकि द्वीप विराजे, धातकि वृक्ष शाल्मली राजे ।।
अविकारी बन जाऊँ रे, श्रीजी की पूज रचाके ।
जिनगृह जिन पूजूँ रे, रत्नों के थाल सजा के ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिधातकीशाल्मलिद्वयवृक्षस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

चरुवर क्षुधा नशाने लाया, भक्तिवश जिनपाद चढ़ाया ।
पश्चिम धातकि द्वीप विराजे, धातकि वृक्ष शाल्मली राजे ।।
भव रोग नशाऊँ रे, श्रीजी की पूज रचाके ।
जिनगृह जिन पूजूँ रे, रत्नों के थाल सजा के ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिधातकीशाल्मलिद्वयवृक्षस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

आरति रतनथाल से करने, अपना मोह तिमिर सब हरने ।
पश्चिम धातकि द्वीप विराजे, धातकि वृक्ष शाल्मली राजे ।।
आतमगुण पाऊँ रे, श्रीजी की पूज रचाके ।
जिनगृह जिन पूजूँ रे, रत्नों के थाल सजा के ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिधातकीशाल्मलिद्वयवृक्षस्थजिनालय-

SarvatoPooja 06 / 115

जिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

धूप दशांगी ले जिन जजता, आठों याम जिनेश्वर भजता ।
पश्चिम धातकि द्वीप विराजे, धातकि वृक्ष शाल्मली राजे ।।
वसु कर्म नशाऊँ रे, श्रीजी की पूज रचाके ।
जिनगृह जिन पूजूँ रे, रत्नों के थाल सजा के ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिधातकीशाल्मलिद्वयवृक्षस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

श्रीफल आदि सुरस फल लाकर, जिनपद अग्र धरुँ हर्षाकर ।
पश्चिम धातकि द्वीप विराजे, धातकि वृक्ष शाल्मली राजे ।।
जीवन सफल बनाऊँ रे, श्रीजी की पूज रचाके ।
जिनगृह जिन पूजूँ रे, रत्नों के थाल सजा के ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिधातकीशाल्मलिद्वयवृक्षस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

भविजन निकट रत्न बहु लाते, प्रतिदिन जिनवर पूज रचाते ।
पश्चिम धातकि द्वीप विराजे, धातकि वृक्ष शाल्मली राजे ।।
लोकाग्र विराजूँ रे, श्रीजी की पूज रचाके ।
जिनगृह जिन पूजूँ रे, रत्नों के थाल सजा के ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिधातकीशाल्मलिद्वयवृक्षस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–पश्चिम धातकि खंड में, जिनगृह युत द्वय वृक्ष ।
शाश्वत जिनगृह जिन जजूँ, नश दूँ भव का रुक्ष ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–पश्चिम धातकि द्वीप में, राजित हैं शुभ वृक्ष ।
पुष्पांजलि से पूजहूँ, होने को जित अक्ष ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

लोलतरंग छंद

पश्चिम धातकि खंड कहा है, उत्तर भोग सु भूमि महा है ।
धातकि उत्तम वृक्ष बखाना, श्री जिनगेह सदा सरधाना ।।

बिंब मनोहर हैं सुखकारी, शाश्वत चैत्य सदा अघहारी ।
अर्घ्य युता शुभ भाव सु पूजें, श्री जिन पूज प्रभो सम हूजें ।।

ॐ ह्रीं अचलमेर्वीशानकोणे धातकीवृक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

मेरु सु नैऋत्य में नित सोहे, शाल्मलि वृक्ष सदाचित मोहे ।
दक्षिण शाख जिनालय भारी, रत्नमणीमय दिव्य निहारी ।।
बिंब मनोहर हैं सुखकारी, शाश्वत चैत्य सदा अघहारी ।
अर्घ्य युता शुभ भाव सु पूजें, श्री जिन पूज प्रभो सम हूजें ।।

ॐ ह्रीं अचलमेरोर्नैऋत्यकोणे धातकीवृक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

पूर्णार्घ्य

सवैया

पश्चिम धातकि खंड सुसोहे, उत्तर देव कुरू शुभ थान ।
मेरू के ईशान धातकी, नैऋत्ये शाल्मली महान ।।
क्रमशः उत्तर दक्षिण शाखा, चैत्य सदन शाश्वत पहचान ।
अष्ट द्रव्य ले पूज रचाऊँ, होऊँ नंत गुण युत भगवान् ।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता

जिन अर्चन साता, हरे असाता, मुक्तिप्रदाता नित्य करूँ ।
विधि मोह हटाऊँ, पाप नशाऊँ, श्रुत व्रत पा जिन चित्त धरूँ ।।

शेर चाल

पश्चिम रु धातकी महान में मनोहरा,
धातकी व शाल्मली दो तरुवरा ।
मरकत मणि स्कंध शाखा विशाल है,
उपशाख भी सुरत्नमयी हैं उराल है ।।१।।

SarvatoPooja 06 / 116

पादपीठ पर खड़े तरुवर महान हैं ।
फल फूल शोभते सुभग सुरत्नमान हैं ।।
चार मुख्य शाख जिनमें तीन पे सुरा ।
एक शाख पर रहे सु चैत्य जिनगृहा ।।२।।

आत्मज्ञता स्वदर्शकत्व युक्त हैं प्रभो!
बात अनुपचार से ये सिद्ध है विभो!
उपचार से परदर्शकत्व है परज्ञता,
चउ घाति नाशि पायी प्रभु सर्व सुज्ञता ।।३।।

जिनालय जिनों को भक्ति युक्त अर्चते ।
यहीं से शुभभाव युक्त चैत्य वंदते ।।
पवित्र चित्त चेतना परिणाम हो सदा ।
अत एव ले पवित्र द्रव्य पूजता मुदा ।।४।।

चैतन्य गुण की वाटिका में वास नित रहे ।
दूर कर्मपंक से सु शुद्ध ही रहें ।।
नंत काल के लिए सौख्य अनंता ।
पाने यही नमूँ सदा हे देव! जिनंदा ।।५।।

दोहा

पश्चिम धातकि खंड में, नादि निधन ये वृक्ष ।
मैं पूजूँ शुभ भाव से, जीतूँ पाँचों अक्ष ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिधातकीशाल्मलिद्वयवृक्षस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(३५)

पश्चिम धातकी खंडद्वीप भरतक्षेत्र भूतकालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

विष्णुपद छंद

पश्चिम धातकि खंड हुए जे, पूरब[१] भगवंता ।
पंचकल्याणक युत हम पूजें, करने भव अंता ॥
आह्वानन कर हृदय बिठाएँ, नित राजो स्वामी ।
जिनवर अर्चन शाश्वत देती, निज गुण शिवधामी ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

विद्युन्माली छंद

वारी ले स्वामी पूजा को, नाशे वो सारे कर्मों को ।
द्रव्यों को ले श्री जी पूजूँ, पूजा से श्री जी सा हूजूँ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

होए आत्मा सिद्धों जैसा, गंधा से पूजों तीर्थेशा ।
द्रव्यों को ले श्री जी पूजूँ, पूजा से श्री जी सा हूजूँ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

१.पहले

SarvatoPooja 06 / 117

[१]ब्रीही मोती जैसे लाए, तीर्थेशों की पूजा गाए ।
द्रव्यों को ले श्री जी पूजूँ, पूजा से श्री जी सा हूजूँ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

फूलों सा मेरा चित्तालै, पूजों मैं श्री जी चैत्यालै ।
द्रव्यों को ले श्री जी पूजूँ, पूजा से श्री जी सा हूजूँ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

श्री चैत्यों की पूजा कीनी, मिष्ठान्नों की थाली दीनी ।
द्रव्यों को ले श्री जी पूजूँ, पूजा से श्री जी सा हूजूँ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

दीपों की थाली ले आएँ, भावों से श्री भक्ती गाए ।
द्रव्यों को ले श्री जी पूजूँ, पूजा से श्री जी सा हूजूँ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

गंधी ले अग्नी में जारें, आठों कर्मों को संहारे ।
द्रव्यों को ले श्री जी पूजूँ, पूजा से श्री जी सा हूजूँ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

एला काजू द्राक्षा लाए, पूजा श्री जी की ही भाए ।
द्रव्यों को ले श्री जी पूजूँ, पूजा से श्री जी सा हूजूँ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

अर्घ्यों से पूजूँ मैं त्यागी, मैं तेरे चर्णों का रागी ।
द्रव्यों को ले श्री जी पूजूँ, पूजा से श्री जी सा हूजूँ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

---

१. अक्षत

दोहा

पश्चिम धातकि खंड के, भूतकाल तीर्थेश ।
पुष्पांजलि अर्पित करूँ, हरूँ सभी दुख क्लेश ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

नासा दृष्टि धार के, देखें तीनों लोक ।
निश्चय में आतम लखें, सदा नवाऊँ धोक ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांञलिं क्षिपेत् ।

लक्ष्मीधरा छंद (चाल - भौन्न ...)

श्री ऋषीशा प्रभो कर्म से मुक्त हो ।
नंत ज्ञानादि से नाथ संयुक्त हो ।।
पश्चिमी धातकी आदि के क्षेत्र में ।
भूत तीर्थेश पूजूँ बसे नेत्र में ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

पूजता श्री 'प्रियामित्र' देवेश को ।
कर्म को काट पाऊँ निजी भेष को ।। पश्चिमी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रियमित्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

पुण्य है आज जो 'शांतिनाथा' चहूँ ।
पूजता भक्ति से स्वात्म सिद्धि लहूँ ।। पश्चिमी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

मीत मेरे 'सुमीतेश' जो हैं महा ।
कष्ट हो क्या मुझे सौख्य हो सर्वदा ।। पश्चिमी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

नाग राजेन्द्र देवेन्द्र से वंदिता ।
पूजता 'आदिनाथा' मुनी नंदिता ।। पश्चिमी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

SarvatoPooja 06 / 118

व्यक्त अव्यक्त को जानते हो प्रभो ।
अर्चता श्री 'अतिव्यक्त' न्यारा विभो ।।
पश्चिमी धातकी आदि के क्षेत्र में ।
भूत तीर्थेश पूजूँ बसे नेत्र में ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अतिव्यक्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

श्री 'कलासेन' जी हो कला के धनी ।
पूजता भक्ति से कर्म धारा हनी ।। पश्चिमी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कलासेनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

कर्म को जीतते 'कर्मजीतेश' हो ।
अर्चना आपकी कर्म निःशेष हो ।। पश्चिमी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कर्मजिज्ञिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

भव्य के बोध को श्री 'प्रबुद्धेश' जी ।
भक्ति से वंदना नित्य तीर्थेश की ।। पश्चिमी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रबुद्धजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

'प्रव्रजीतेश' जी मुक्ति भर्ता गुणी ।
आप श्री पाद में भेंट मुक्तामणी ।। पश्चिमी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रव्रजितजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

धर्म के देवता श्री 'सुधर्मा' मिले ।
आपकी पूज से कर्म मेरु हिले ।। पश्चिमी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुधर्मजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

मोह अंधेर में ज्ञान दीपावली ।
श्री 'तमोदीप' से मोह माया टली ।। पश्चिमी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तमोदीपजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

आत्म के ध्यान में श्री 'वज्रेश्वरा' ।
पूजके भक्ति से ज्ञान पाऊँ खरा ।। पश्चिमी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वज्रनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

पूजके 'बुद्धनाथेश' वर्चस्व हो ।
पाप धी नष्ट हो पुण्य वर्धस्व हो ।। पश्चिमी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बुद्धनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥14॥

श्री 'प्रबंधेश' को पूजता नंद जो ।
कर्म के बंध से होय, निर्बंध वो ॥ पश्चिमी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रबन्धनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥15॥

श्री 'अतीतेश' तीर्थेश पूजूँ सदा ।
वीतरागी बनूँ भावना सर्वदा ॥ पश्चिमी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अतीतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥16॥

श्री 'प्रमुख्येश' जी सौख्य दातार हैं ।
ध्यान में आइये चित्त उद्गार है ॥ पश्चिमी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रमुखनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥17॥

श्रेयदाता प्रभो देव 'पल्योपमा' ।
आप हो आप क्या होय अन्योपमा ॥ पश्चिमी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पल्योपमजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥18॥

कोप की आग से हो अछूते सदा ।
श्री 'अकोपेश' जी पूजिये सर्वदा ॥ पश्चिमी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अकोपनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥19॥

देव श्री 'निष्ठिता' तीर्थ पूजा रचूँ ।
आज आके सुरम्यात्मा में बसूँ ॥ पश्चिमी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निष्ठितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥20॥

आश की पाश का नाश तो कीजिए ।
नाथ श्री 'मृग्गनाभी' जरा सीजिए ॥ पश्चिमी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मृगनाभिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥21॥

देव 'देवेन्द्र' देवेन्द्र से अर्चिता ।
आपकी संस्तुती ही यशोवर्धिता ॥ पश्चिमी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवेन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥22॥

श्री 'पदस्थेश' के पाद पद्म पूजिए ।
पूजके शीघ्र ही सिद्ध से हूजिए ॥ पश्चिमी॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पदस्थजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥23॥

SarvatoPooja 06 / 119

श्री 'शिवानाथ' की वंदना भाव से ।
नित्य ही मैं करूँ मोद से चाव से ॥
पश्चिमी धातकी आदि के क्षेत्र में ।
भूत तीर्थेश पूजूँ बसे नेत्र में ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शिवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥24॥

पूर्णार्घ्य

द्रुमिला / द्रुमिल छंद (तर्ज - हे गुरुवर शाश्वत...)

जिन भव्यन के हिरदै मधि में, निवसें जिन श्रीपति जी सु सही ।
उन मुक्ति अधीक्षक को वरमाल, लिये अति व्याकुल मुक्ति मही ॥
पहिली थल पश्चिम धातकि को, जहँ से प्रभु सिद्धि प्रसिद्ध गही ।
विधि वेधन की विधि जो चहते तिन आश्रय श्री पद की सु लही ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृषभनाथादिशिवनाथपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता—श्री वृष तीर्थंकर, सर्व हितंकर, भवि क्षेमंकर, अघहारी ।
सब कर्म विदारक, धर्म प्रचारक, शिवमगकारक, सुखकारी ॥

अनंगशेखर छंद (तर्ज - सराग देव देख..)

प्रतीचि धातकी शुभा रहे सुविद्यमान क्षेत्र,
ताँहि भूतकाल के जिनेश्वरा सुवंदता ।
नहीं क्षुधा पिपास जन्म मृत्यु नाँहि स्वेद खेद,
नाँहि रोग शोक मोह एव आप अर्चता ॥
नहीं जरा भया मदा न राग द्वेष मृत्यु शोक,
नींद नाँहि चिंत कोई दोष से विहीन हैं ।
भवाब्धि में कदापि डूबते नहीं भवी प्रधान,
जो अहर्निशा जिनेन्द्र भक्ति में सुलीन हैं ॥1॥

असंख्य जीव श्री जिनेंद्र शुभ्र भक्ति नाव बैठ,
आज भी परंपरा सु मुक्ति दुर्ग जा रहे ।
नरेन्द्र वा खगेन्द्र वा सुरेन्द्र आदि भक्ति गान,
गीत वाद्य आदि से करे सु पुण्य पा रहे ।।
गणेश वृंद ऋद्धिधारि नित्य पूजि हाथ जोड़,
भक्तियुक्त मोक्षमार्ग पे प्रशस्त चालते ।
अनंत गुण्यमान देव की सुप्रेरणा महान,
आत्मज्ञान ये स्वयं जिनत्व में हि ढालते ।।२।।

जिनेन्द्र दिव्य वाणि से हि जानते सु वस्तु रूप,
ज्ञान ध्यान का महत्त्व जानते व धारते ।
अनक्षरी सु सर्व अंग से खिरे जिनेन्द्र बैन,
पूज्यता सु प्राप्त तीन लोक माँहि शारदे ।।
जिनेन्द्र ! भक्ति आपकी नशे सदा हि रोग शोक,
पुण्यवान होउँ कर्म आपदा निवार दूँ ।
सुखी रहें सुजीव विश्व के सुपंथ प्राप्त होय,
जैन धर्म का प्रचार हो शिवात्म लाभ लूँ ।।३।।

दोहा—विश्वपूज्य तीर्थंकरा, भूतकाल के सिद्ध ।
जिनपद शरणा हम गहें, पाने क्षायिक रिद्ध ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 06 / 120

(३६)

पश्चिम धातकी खण्ड भरत क्षेत्र वर्तमान कालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

अडिल्ल छंद

पश्चिम धातकि खंड तहँ जिनवर राजे ।
भरत क्षेत्र जिनदेव नित मम उर साजे ।।
आह्वानन कर जजूँ सदा त्रययोग से ।
पाऊँ मुक्ति रमा मैं कर्म वियोग से ।।

दोहा—तीर्थंकर चौबीस हैं, वर्तमान जिनदेव ।
भक्तिभाव वश अर्चना, करूँ बनूँ शिवदेव ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

कुण्डलिया

जल क्षीरोदधि लाय के, पूजूँ श्री भगवान ।
जन्म जरा मृतु मम नशे, पाऊँ अक्षय थान ।।
पाऊँ अक्षय थान, अन्य भी रुज सब टारूँ ।
आठों करम नशाय, नंत गुण चित में धारूँ ।।
कहि निर्ग्रंथ गणेश, हरो खेदादि दोष मल ।
लहो मुक्ति साम्राज, बना मन ज्यों निर्मल जल ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

गंधा सुंदर लाइये, अर्चन को जिनदेव ।
भवाताप सब नाशिके, बनो सिद्ध स्वयमेव ।।
बनो सिद्ध स्वयमेव, मार्ग रत्नत्रय लीजे ।
मिथ्यात्रयी नशाय, भाव नित शुद्ध हि कीजे ।।
कहि निर्ग्रंथ गणेश, त्यागि विधि अशुभ कुबंधा ।
जिन पूजन रमि जाय, लेउ निज आतम गंधा ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

मुक्ता सम तंदुल धवल, ले पूजों जिनराज ।
भव के नश्वर पद तजूँ, लहूँ सिद्धि साम्राज ।।
लहूँ सिद्ध साम्राज, विषय अक्षनि सब त्यागूँ ।
भव तन भोग विरक्त, होय जिन वृष अनुरागूँ ।।
कहि निर्ग्रंथ गणेश, होय सद् व्रत संयुक्ता ।
शाश्वत पाओ वास, बसे जहँ जीव विमुक्ता ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सुमन समा निज मन बना, अर्चन जिन तीर्थेश ।
सब ऋतु सुमन चढ़ाय जिन, लहूँ राज्य मुक्तेश ।।
लहूँ राज्य मुक्तेश, जगत का नाटक छोड़ूँ ।
बोधि समाधी पाय, कर्म की कारा तोड़ूँ ।।
कहि निर्ग्रंथ गणेश, शुद्ध करि निज मन वच तन ।
करो नित्य शिव ध्यान, बना निज सुमनों सा मन ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

लेकर इष्ट सुस्वाद शुभ, षट्रस मिश्रित द्रव्य ।
जिन चरणों में भक्तिवश, धरे जजें जो भव्य ।।
धरें जजें जो भव्य, पुण्यवंता है सो ही ।
हरें क्षुधादिक रोग, निरामय चेतन हो ही ।।

SarvatoPooja 06 / 121

कहि निर्ग्रंथ गणेश, पुण्य ले दान सु देकर ।
भव्य बने शिव पथिक, चित्त में बोधी लेकर ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

पूजा जिनवर की करूँ, गौघृत दीप जलाय ।
नादि काल का मोह तम, क्षण में देउ भगाय ।।
क्षण में देउ भगाय, चित्त में ज्ञान प्रकाशें ।
संयम तप वैराग्य, धर्ममय चित्त विकासे ।।
कहि निर्ग्रंथ गणेश, भक्ति सम पुण्य न दूजा ।
विषय कषायनि त्यागि, भाव से करि जिन पूजा ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

निष्ठायुत हो कीजिये, जिनपद पूजन रोज ।
पुण्य घड़ा भर जायेगा, घटे पाप का बोझ ।।
घटे पाप का बोझ, जीव सन्मार्गी होवे ।
धूप दशांगी खेय, अग्नि में चित नित धोवे ।।
कहि निर्ग्रंथ गणेश, भव्य की यही प्रतिष्ठा ।
जिन श्रुत मुनि वृष जानि, रखो तुम सच्ची निष्ठा ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

अच्छे-अच्छे फल चुनो, जिन पद नित्य चढ़ाय ।
श्री फल पूजा नित्य ही, बिगड़े काम बनाय ।।
बिगड़े काम बनाय, धर्म में श्रद्धा सच्ची ।
होगा तब उद्धार, अगर निज चर्या अच्छी ।।
कहि निर्ग्रंथ गणेश, बनो निज में तुम सच्चे ।
गहो शरण जिनदेव, रखो निज भाव हु अच्छे ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

रत्ना मणि संजोय के, अर्घ बनाया आज ।
अर्घ भेंट जिनपद जजूँ, मिले मुक्ति साम्राज ।।
मिले मुक्ति साम्राज, कभी ना अंत सु जिसका ।
सम्यक ज्ञान चरित्र एक, शाश्वत पथ इसका ।।
कहि निर्ग्रंथ गणेश, मोक्ष का हो नित यत्ना ।
नाश कर्मनि पाऊँ, आत्म गुण रूप सु रत्ना ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–पश्चिम धातकि खण्ड के, संप्रति जिन चौबीस ।
भरत क्षेत्र के नित जजूँ, धरि चरणों में शीश ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

चौंतिस अतिशय युक्त हैं, तीर्थंकर भगवान ।
अतिशय पूज रचायकर, पाऊँ आतम ज्ञान ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

रोला छन्द

'विश्वचंद' तीर्थेश, आये शरण तिहारी ।
अर्चन करता आज, तव भक्ती अघहारी ।।
पश्चिम धातकि द्वीप, क्षेत्र भरत के स्वामी ।
सम्प्रति के तीर्थेश पूज बनूँ शिवगामी ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वचन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

वंदूँ 'कपिल' जिनेश, आओ हृदय हमारे ।
गाऊँ श्री गुणमाल, पाऊँ तव गुण सारे ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कपिलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

'वृषभदेव' जिनराज, तुमको सुर मुनि ध्यावें ।
अज्ञ शिशु मैं अबोध, भक्ति वश ही रिझावें ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृषभदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

SarvatoPooja 06 / 122

नमो नमो 'प्रियतेज', जिनवर मंगलकारी ।
पूजूँ तव गुण रूप, तुमसे प्रीत हमारी ।।
पश्चिम धातकि द्वीप, क्षेत्र भरत के स्वामी ।
सम्प्रति के तीर्थेश पूज बनूँ शिवगामी ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रियतेजजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

जय हो 'प्रशम' जिनेश, गतरागी सब ज्ञाता ।
कर्म नशावन हेत, अन्तसनि तोहि ध्याता ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रशमनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

सौम्य निजातम लीन, श्री 'विषमांग' जिनेशा ।
जो पूजे चित लाय, हरते सर्व किलेशा ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विषमाङ्गजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

वंदूँ 'चारितनाथ' इक मुख चारित भाषें ।
रत्नत्रय का कोष, देकर कर्म विनाशें ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चारितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

आओ सब मिल आज, जिनवर पूज रचायें ।
'प्रभादित्य' जिनदेव, के गुण मंगल गायें ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रभादित्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

'मुंजकेश' तीर्थेश पीर हरें भव-भव की ।
पुण्य बढ़े बढ़ जाय, धर्म भावना सब की ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुञ्जकेशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

'वीतवास' जिन पास, वास रहे दिन रैना ।
तुम बिन दास उदास, दर्शन प्यासे नैना ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वीतवासजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

हो देवन के देव, आप 'सुराधिप' देवा ।
करते निज हित काज, सुरगण तव पद सेवा ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुराधिपजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

तुम हो दयानिधान, 'दयानाथ' जिनराजा ।
लेकर तेरा नाम, पूरण हो सब काजा ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दयानाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

'सहस्रभुज' भगवान, सुंदर रूप तिहारा ।
इन्द्र ना तृप्ति पाय, सहस नयन कर हारा ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सहस्रभुजजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

श्री 'जिनसिंह' महान, मोह करम चकचूरे ।
पायो केवलज्ञान, भवि मनरथ सब पूरे ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनसिंहजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

'रैवतनाथ' जिनंद, घाति अघाति नशाये ।
जो रहते तुम पास, भवि भव शिव सुख पाये ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री रैवतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

नंतबली जिन 'बाहु', कर्म अरिन् सब जीते ।
तव पूजक जगमाँहि, निज आतम रस पीते ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बाहुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

समवशरण के मध्य, 'श्रीमालि' जिनसु सोहें ।
द्वादश गण भवि जीव, सौम्य छवी लख मोहें ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीमालिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

देव 'अयोग' महान, योगी ध्यान लगावें ।
तव शुभ दर्शन पाय, जिनगुण सम्पति पावें ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अयोगनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

अचल 'अयोगीनाथ', मन वच तन सब त्यागी ।
अनिमिष निरखें तोहि, तव गुण के अनुरागी ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अयोगीनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

'कामरिपु' महावीर, कामअरी तुम जीते ।
हो जाऊँ निष्काम, तव वचनामृत पीके ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कामरिपुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

यजहुँ 'आरम्भ' देव, मन वच काय त्रियोगा ।
संग व आरंभ छोड़, प्रारम्भ हो शिव योगा ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आरम्भनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

SarvatoPooja 06 / 123

धर्म धुरी तीर्थेश, 'नेमीनाथ' महाना ।
अर्चन कर शिव पाय, फिर जग में क्या आना ।।
पश्चिम धातकि द्वीप, क्षेत्र भरत के स्वामी ।
सम्प्रति के तीर्थेश, पूज बनूँ शिवगामी ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

'गर्भज्ञाति' जिनदेव, जामन मरण मिटाओ ।
जो चाहो सुख राशि, जिन गुण मंगल गाओ ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गर्भज्ञातिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

'एकार्जित' भगवंत, सम्मुख पूज रचाऊँ ।
कर्मन जीतन काज, तव पद शीश नवाऊँ ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री एकार्जितजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

पूर्णार्घ्य

किरीट छंद (तर्ज : वीर हिमाचल ते...)

श्री जिन चंद विराज रहे वह क्षेत्र सुभारत पूज्य कहावत ।
पश्चिम धातकि द्वीप महा जहँ संप्रति चौबिस के गुण गावत ।।
देवन शीश झुके जिनके पद, जो शिव की शुभ राह दिखावत ।
उनके पद पंकज भक्तिवश पूजत भाव सु शीश नवावत ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीविश्वचन्द्राद्येकार्जितस्वामिपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता–हे जिनवर अमलं, ज्ञान सु विमलं, निज उर कमलं, वास करो ।
मम दोष नशाओ, पाप मिटाओ, गुण प्रकटाओ, आश वरो ।।

शेर चाल

तव दिव्य देशना प्रभो सर्वांग से खिरी ।
जिसने कि भव्य जीव की मिथ्या मति हरी ।।

वाणी में एक मुख्य जो चारित्र बखाना ।
सब भेष तजके धार लूँ, चारित्र का बाना ।।१।।

दो भेद मुख्य रूप से चारित्र बताये ।
निश्चय व्यवहार रूप धार सिद्ध सु पायें ।।
देश सकल भेद दो चारित्र ववहारा।
श्रावक ने देशव्रत औ श्रमण सकल सँवारा ।।२।।

हे देव तीन लोक में तुम सर्वश्रेष्ठ हो ।
चारित्र के विधान आप सर्व ज्येष्ठ हो ।।
विद्या के ईश हो तुम्हीं जिनराज महाना ।
सुरनर मुनी जनों ने सिर्फ आपको माना ।।३।।

हे नाथ! आप पाद पद्म नित्य जजूँ मैं ।
संसार खार है असार उसको तजूँ मैं ।।
हे नाथ नेह दृष्टि से तुमको ही निहारूँ ।
सद्दृष्टि पाप कर्म सृष्टि को भी संहारूँ ।।४।।

शुभ द्वीप धातकी में क्षेत्र भरत कहाया ।
जिन धर्म को प्रवर्त यहाँ तुमने कराया ।।
हे वर्तमान तीर्थ हमें ज्ञान दीजिये ।
निज भक्त में मुझ अज्ञ का भी नाम लीजिये ।।५।।

दोहा–वसु वसुधा के नाथ हो, श्री चौबीस जिनेश ।
वसु द्रव्यों से पूजकर, लहूँ जिनेश्वर भेष ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 06 / 124

SarvatoPooja 07 / 124

(३७)

पश्चिम धातकीखंड द्वीप भरतक्षेत्र भविष्यत्कालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

चउबोला छंद

श्री तीर्थंकर रक्तकेश जिन, आदिम तीर्थंकर स्वामी ।
सात्विक तीर्थंकर अंतिम तक, पूजूँ जिनवर निष्कामी ।।
आह्वानन कर भक्ति भाव से, उर अंबुज पधराऊँगा ।
रत्नमयी वसुद्रव्य मिलाकर, तेरी पूज रचाऊँगा ।।
दोहा—पश्चिम धातकि खंड के, भरत क्षेत्र भगवान ।
निर्मल भावों से जजूँ, भावी देव महान ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

भुजंग प्रयात छंद (तर्ज - नरेन्द्र फणेन्द्र...)

जरा जन्म रोगासुरों को नशाऊँ ।
मणीचन्द्र वारी प्रभो को चढ़ाऊँ ।।
प्रतीची दिशा धातकी खंड भारी ।
यजूँ नाथ भावी सदा सौख्यकारी ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

भरे चंदनादी घटों से सुवर्षा ।
करी पाद में चित्त मेरा सुहर्षा ।। प्रतीचि०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

चढ़ा शालि शुभ्रा, जजूँ मैं जिनेशा ॥
वरूँ सौख्य आत्मस्थ, स्वामी महेशा ॥ प्रतीची॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

बनूँ निर्विकारी, सदा नित्य रूपा ।
चढ़ा पुष्प होऊँ, शिवात्मानुरूपा ॥ प्रतीची॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

चढ़ाऊँ सु स्वादिष्ट मिष्ठान्न जासे ।
क्षुधा आदि मेरे सभी रोग नाशें ॥ प्रतीची॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

लिया दीप प्यारा प्रभो चर्ण वारा ।
बनूँ केवली नाशि अज्ञान सारा ॥ प्रतीची॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

लिए धूप ता अग्नि माँही खिपाऊँ ।
सुध्यानाग्नि में कर्म सारे जराऊँ ॥ प्रतीची॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

चढ़ा श्रीफलादी महार्चा रचाऊँ ।
जजूँ शासता विघ्न सारे नशाऊँ ॥ प्रतीची॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

मणी रत्न मुक्ता, मिला अर्घ्य लाऊँ ।
चढ़ा नाथ को, मोक्ष विश्राम पाऊँ ॥ प्रतीची॰

SarvatoPooja 07 / 125

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा–दिशा प्रतीची धातकी, के भावी जिनराज ।
वंदन अर्चन नित करूँ, पाने को शिवराज ॥

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

चार घातिया कर्म को, किया आप चकचूर ।
ज्ञान दर्श सुख वीर्य से, लिया स्वयं को पूर ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

टप्पा छंद

मोहि राखो ऽऽ शरना, भावी चौबीस जिनेश जी ॥ मोहि राखो॰
'रक्तकेश' जिनदेव अराधो, गर आतम हित करना ।
रागद्वेष सब छोड़ जगत के, पछताओगे वरना ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री रक्तकेशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

'चक्रहस्त' जी वृष चक्रेश्वर, भवकानन क्षय करना ।
जनम मरण दुख नाशन काजे, पूजों पावन चरना ॥
मोहि राखो हो॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चक्रहस्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

कृत्यकृत्य 'कृतनाथ' जिनेश्वर, शेष नहीं कुछ करना ।
भक्ति भाव वश पूज रचावें, भक्त आपकी शरना ॥
मोहि राखो हो॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कृतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

हे 'परमेश्वर' भावि जिनेश्वर, तव अर्चन अघ हरना ।
योगीजन सब ध्याते तुमको, तुम सम देव प्रवर ना ॥
मोहि राखो हो॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमेश्वरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

श्री 'सुमूर्ति' मूरत सुखकारी, शांत सौम्य मन हरना ।
किस विध सम्यक् पूज रचाऊँ, मैं चाहूँ भव तरना ॥
मोहि राखो हो०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुमूर्तिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

'मुक्तिकांत' मुक्ती पथ दाता, मुझको तव पद शरना ।
पूजन करके पाऊँ निश्चित, जिन पथ का आचरना ॥
मोहि राखो हो०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुक्तिकान्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

देव 'निकेशि' धरो मम चित पर, अपने पावन चरना ।
तव पद वंदन करूँ भाव से, चाहूँ तव गुण भरना ॥
मोहि राखो हो०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निकेशिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

पुण्य 'प्रशस्त' जगा जो पूजूँ, श्री प्रशस्त जिनवरना ।
शरण मिली ना जिसको उसका, जनम-जनम का मरना ॥
मोहि राखो हो०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रशस्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

'निराहार' अघ हार जजों नित, भक्ति भावचित धरना ।
पिओ नित्य बहता इस दर पर, ज्ञानामृत का झरना ॥
मोहि राखो हो०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निराहारजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

देव 'अमूरत' तव शुभ मूरत, जैसा चहूँ सँवरना ।
तव पूजन कर निश्चित होगा, मोक्ष महल पग धरना ॥
मोहि राखो हो०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमूर्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥10॥

श्री 'द्विजनाथ' सुनाम जजो नित, शुद्ध भाव निज करना ।
जनम दुवारा अब ना पावें, होय भवोदधि तरना ॥
मोहि राखो हो०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री द्विजनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥11॥

SarvatoPooja 07 / 126

'श्रेयोगत' जिन श्रेयस्कारी, जजो भाव चित धरना ।
शचिपति जिनको शीश झुकाते, रहूँ उन्हीं सु शरना ॥
मोहि राखो हो शरना, भावी चौबीस जिनेश जी ।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रेयोगतजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥12॥

भवरुज वैद्य सु 'अरुज' जिनेशा, तुम सम सच्चा दर ना ।
तुम बिन घूमा भव-भव भगवन, पाई सच्ची शरणा ॥
मोहि राखो हो०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरुजनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥13॥

सुर नर खग गणपति से पूजित, 'देवनाथ' जिन चरना ।
तव शुभ संस्तुति प्रेरित करती, मुक्ति रमा अब वरना ॥
मोहि राखो हो०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥14॥

देव 'दयाधिक' अज्ञ भक्त पर, दयादृष्टि अब करना ।
दया पात्र हम याद करें नित, अब समाधि से मरना ॥
मोहि राखो हो०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दयाधिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥15॥

तन मन वचन व चेतन कोमल, 'पुष्पनाथ' जिनवर ना ।
ऐसे जिन की पूज रचाओ, भाव सुकोमल करना ॥
मोहि राखो हो०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुष्पनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥16॥

हे 'नरनाथ' जिनेश्वर तुमने, पाया शुभ आचरना ।
पूजूँ पाऊँ संयम मिलता, बार-बार भव नर ना ॥
मोहि राखो हो०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥17॥

प्रभो 'प्रतिभूत' करें अनुभूत, आतम गुण का झरना ।
भक्ति सुधा रस में रम जाऊँ, होय कर्म अरि टरना ॥
मोहि राखो हो०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रतिभूतजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥18॥

हे 'नागेंद्र' जिनेश सुखारी, घातिचतुष्टय हरना ।
मम जीवन आधार बनो तो, बनूँ मुक्ति का वरना ॥
मोहि राखो हो०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नागेन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥19॥

अहो 'तपोधिक' देव सुपूजों, मन वच तन शुभ करना ।
आठ गुणों की निधियाँ पाकर, सिद्धालय पग धरना ॥
मोहि राखो हो०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तपोधिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥20॥

प्रभो 'दशानन' अक्ष विजेता, जजूँ भाव शुभ करना ।
साधो दश विध धर्मन वरना, पड़े नरक में सड़ना ॥
मोहि राखो हो०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दशाननजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥21॥

'आरण्यक' गुण गण अनंत हैं, कैसे हो तस गणना ।
भव अरण्य से हमें बचाओ, है कर्मों से लड़ना ॥
मोहि राखो हो०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आरण्यकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥22॥

'दशानीक' जिनदेव सु पूजूँ, अब भव जल से कढ़ना ।
जगत छोड़ बस तुमको सुमरूँ, तुम ना हमें बिसरना ॥
मोहि राखो हो०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दशानीकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥23॥

'सात्विक' जिन अंतिम तीर्थंकर, है तव चरण पकड़ना ।
पूज रचा भव शिव सुख पाओ, ना दुर्गति में पड़ना ॥
मोहि राखो हो०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सात्त्विकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥24॥

पूर्णार्घ्य

किरीट छंद (तर्ज : वीर हिमाचल...)

संस्तुति देव करें जिनकी नित, श्री जिन अर्चन में रत होकर ।
पावन होवत हैं नर वे जु करें जिन भक्ति सुआरथ खोकर ॥

SarvatoPooja 07 / 127

पश्चिम धातकि आदिम क्षेत्र अनागत चौबिस देव महोधर ।
आतम के हित हेतु जजों नित प्राप्त करो शिव कर्मन धोकर ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीरक्तकेशादिसात्विकपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

तीर्थंकर भावी, आत्म स्वभावी, अर्चन देवे मोक्ष गती ।
प्रभु पूज रचाऊँ, नित प्रति ध्याऊँ, मोक्ष दिला दो परमयती ॥

चौपाई छंद

जय जय तीर्थंकर अघहारी, नमूँ सिद्ध भावी त्रिपुरारी ।
जय जय जगत पूज्य जिननाथा, नमूँ नाथ सुर गाते गाथा ॥

जय जय महातेज बल धामा, नमूँ प्रतीक्षारत श्री वामा ।
जय जय आत्मबोध शुभ पाया, नमूँ भावना सोलह भाया ॥

जय जय कृतकृत्य महादेवा, नमूँ देव तव पद कर सेवा ।
जय जय नित्य आत्म सुखदाता, नमूँ भव्य हित भाग्य विधाता ॥

जय जय विश्ववंद्य विख्याता, नमूँ जितेंद्रिय शिवसुख दाता ।
जय जय तत्त्वज्ञान परकाशी, नमूँ अचल निज चित्त विलासी ॥

जय जय मुनिचित् ध्यान अधारा, नमूँ पूज्य पद श्रद्धा द्वारा ।
जय जय स्वयंभुवा सुज्ञानी, नमूँ जिनेश भविक सुखदानी ॥

जय जय धर्मतीर्थ जिनराई, नमूँ गणेशा भव्य सहाई ।
जय जय ज्ञान दिवाकर स्वामी, नमूँ रिद्धि सिद्धी गुणधामी ॥

जय जय कर्म शत्रु के हंता, नमूँ नित्य भावी भगवंता ।
जय जय श्री तीर्थेश तिहारी, नमूँ सर्व संक्लेश निहारी ॥

दोहा—करूँ वंदना भाव से, आतम हित के काज ।
तीर्थंकर चौबीस जो, लहें मोक्ष साम्राज्य ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 07 / 128

(३८)

पश्चिमधातकीखंड द्वीप ऐरावत क्षेत्र भूतकालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

दोहा—पश्चिम धातकि द्वीप के, ऐरावत जगदीश ।
भूतकाल चौबीस जिन, नमूँ चरण धर शीश ।।
भाव सहित नित अर्चना, आह्वानन जिनदेव ।
आठ याम चिंतन करें, लहें मुक्ति स्वयमेव ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

विष्णुपद छंद (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

यतिवर चित सम मेघ पुष्प ले, अघ क्षालन आया ।
सिद्धों सा मम रूप सु शाश्वत, तिस पर ललचाया ।।
पश्चिम धातकि भूतकाल के, जिनवर धर शीशा ।
श्री सुमेरु से धर्मेशा तक, पूजूँ चउवीसा ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

भद्राशय[१] सुरभित अति सोहे, जिनवर पूज करूँ ।
शाश्वत शीतलता पा जाऊँ, भव आताप हरूँ ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

१. चंदन

अक्षत सम अक्षत की गरिमा, पाने जिन अर्चें ।
अक्षय पद धारी सिद्धों के, चिद् गुण नित चर्चें ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सुरतरुवर के देव सुफल ले, तीर्थंकर वंदन ।
रतिपति पर जय पाने भगवन्, करता अभिनंदन ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

चरुवर जिनवर चरण चढ़ा नित, भक्ती स्वर गाएँ ।
रोग क्षुधादिक सकल नाशकर, अक्षय बन जाएँ ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

गौघृत दीप जलाकर स्वामी, नीराजन करते ।
वातावरण सुगंधित होवे, आतम गुण वरते ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

धूप दशांगी लाकर के हम, पावक में खेवें ।
जिनपद अर्चन जिनपद पाने, जिनगुण नित सेवें ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

श्री फलादि उत्तम फल लाकर, अर्चन जिनदेवा ।
वसुविधि नष्ट करें हम भगवन्, पावें शिव मेवा ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

सर्वोत्तम द्रव श्रेष्ठ जगत के, अर्घ्य बना लाए ।
वसुविधि दरव मिला जिन अर्चें जिन गुण ही भाएँ ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

SarvatoPooja 07 / 129

दोहा–पश्चिम धातकि खंड में, ऐरावत शुभ थान ।
भूतकाल तीर्थेश जिन, जजूँ लहूँ निर्वाण ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–निरखत ही प्रभु आपको, मिथ्यामल धुल जाय ।
सम्यक् समकित नीर ले, हम पूजन को आय ।।

इतिमण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

मुकुलोत्तर छंद

पहले श्री 'सुमेरु' गुण गाऊँ, मेरू सम अविचल शिव पाऊँ ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
पहुँचे सिद्धालय देश, भक्ति का रंग जमा के ।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुमेरुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

'जिनकृत' कृत्यकृत्य जिन पूजो, कर्मनाश परमातम दूजो ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
कृतकृत्य हो जाओ रे, भक्ति का रंग जमा के ।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनकृतजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

'कैटभनाथ' जजूँ अघहारी, जिनने कर्मन ऐंठ निवारी ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
कर्मन बंध छुड़ाओ रे, भक्ति का रंग जमा के ।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कैटभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

हैं 'प्रशस्तदायक' गंभीरा, अर्चन कर पाऊँ भवतीरा ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
पुण्य प्रशस्त कमाओ रे, भक्ति का रंग जमा के ।।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रशस्तदायकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

श्री 'निर्दमन' दले सब कर्मा, पूजक पाये निश्चय धर्मा ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
नरभव सफल बनाओ रे, भक्ति का रंग जमा के ।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्दमनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

श्री 'कुलकर' जिनेंद्र सुन लीजे, निज कुल की अब शरणा दीजे ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
जिन वंशज कहलाओ रे, भक्ति का रंग जमा के ।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कुलकरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

वर्धमान चारित जिन धारे, 'वर्धमान' भगवान हमारे ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
अपना पुण्य बढ़ाओ रे, भक्ति का रंग जमा के ।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वर्धमानजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

अर्चूं सिरी जिन 'अमृत इंदू', ज्ञानामृत के निर्मल सिंधू ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
तुम भी अमर कहाओ रे, भक्ति का रंग जमा के ।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमृतेन्दुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

'संख्यानंद' अनंत गुणेशा, पूजें सुर मुनि नाग नरेशा ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
आतम रस चख ले रे, भक्ति का रंग जमा के ।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री संख्यानन्दजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

'कल्पकृतेश' नमूँ कर जोरें, कल्पतरू सम इच्छा पूरें ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
इच्छा पूरण कर लो रे, भक्ति का रंग जमा के ।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कल्पकृतेशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

SarvatoPooja 07 / 130

श्री 'हरिनाथ' जिनेश अतीता, दो अब आत्मज्ञान की गीता ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
इन्द्र का वैभव पा लो रे, भक्ति का रंग जमा के ।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री हरिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

'बहु स्वामी' जिन माथ झुकाऊँ, संयम धर शिवश्री परिणाऊँ ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
निज दोष मिटा ले रे, भक्ति का रंग जमा के ।।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री बहुस्वामिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

'भार्गव' देव अशुभ विधि टालें, हम भी इनसे प्रीत लगा लें ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
पुण्य का कोष भराओ रे, भक्ति का रंग जमा के ।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री भार्गवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

श्री 'सुभद्र' स्वामी की भक्ती, भद्र होय हम पालें मुक्ती ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
निज को निज में पाले रे, भक्ति का रंग जमा के ।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुभद्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

तीर्थंकर 'पविपाणि' विशाला, नाम जपूँ तव ले मणिमाला ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
मुनि बन मुक्ति पाऊँ रे, भक्ति का रंग जमा के ।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पविपाणिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

देव 'विपोषित' भव्यन पोषें, मन में भाव भरे संतों से ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
पाप विमोचन कर ले रे, भक्ति का रंग जमा के ।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विपोषितजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

'ब्रह्मचारी' जिनवर सुब्रह्मा, नित्य जजूँ नाशूँ सब कर्मा ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
शिवालय ही घर तेरा रे, भक्ति का रंग जमा के।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ब्रह्मचारिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

देव 'असांक्षिक' जो चित धरते, नरकों में फिर वो ना पड़ते ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
सारे बैर मिटाओ रे, भक्ति का रंग जमा के।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री असाङ्क्षिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

'चारित्रेश' बसो चेतन में, जिनवर मिले बड़े ही [1]खन में ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
अब तो चेत सयाने रे, भक्ति का रंग जमा के।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चारित्रेशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

श्री 'परिणामिक' जिनवर ध्याऊँ, भाव परम परिणामिक पाऊँ ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
निर्मल भाव बनाओ रे, भक्ति का रंग जमा के।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पारिणामिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

श्री 'शाश्वत' शाश्वत पद धारी, तव चरणों में धोक हमारी ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
शाश्वत पद पाओ रे, भक्ति का रंग जमा के।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शाश्वतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

श्री 'निधिनाथ' चित्त निधि दाता, यश तेरा जग में विख्याता ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।

१. देर (विलंब)

रत्नत्रय निधि पाओ रे, भक्ति का रंग जमा के।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

श्री 'कौशिक' जिन भव्य चहेते, भवि को निज समान कर लेते ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
प्रभु से प्रीत लगाओ रे, भक्ति का रंग जमा के।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कौशिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

श्री 'धर्मेश' धर्म चक्रेशा, हरते सारे कष्ट किलेशा ।
पश्चिम धातकि भूत जिनेशा, ऐरावत जिन पूज हमेशा ।।
धर्म ध्वजा फहराओ रे, भक्ति का रंग जमा के।
पूजें पूरब तीर्थेश, भक्ति का रंग जमा के ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मेशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

पूर्णार्घ्य

भुजंग छंद

प्रतीची दिशा धातकी के इरा के, जजूँ भूतकालीन चौबीस देवा,
महा ऋद्धिधारी सुरेशा, नरेशा, गणेशा, खगेशा करें पाद सेवा ।
रहे नाथ से भक्ति नाता सदा ही, सताये नहीं भूत प्रेता कुदेवा,
सदा आपके नाम की जाप फेरे, वही तो लहे श्रेष्ठ सिद्धी सुमेवा ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुमेर्वादिधर्मेशपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

तीर्थंकर स्वामी, अन्तर्यामी, त्रिभुवन नामी सुखदाता ।
मैं पूजूँ ध्याऊँ, गुणगण गाऊँ, चित्त बसाऊँ हर्षाता ।।

साखती छंद (तर्ज : जीवन है पानी की बूँद...)

भावन से हम आवत हैं, श्रीपद शीश झुकावत हैं ।
श्री जिन पूज रचावत हैं, भक्ति करें सुख पावत हैं ।।

पंच महोत्सव संजुत हैं, आत्म सुभावन से युत हैं ।
पूजत ही सब मोह घटें, सौख्य बढ़े सब पाप छटें ।।

गर्भ समै रतना बरसे, देव सभी मिलके हरषे ।
सोलहकारण भाव भरे, तीर्थ सुकर्मन बंध करे ।।

जन्म हुआ जब स्वर्ग तणी, वाद्य बजे सुर गेह घणी ।
इन्द्रन ने बहु मोद लिया, पाण्डुक पर अभिषेक किया ।।

भेष दिगम्बर धार लिया, ब्रह्मऋषी अनुमोद किया ।
है तप उत्सव मोक्ष विधी, देवगणी लहि पुण्य निधी ।।

घाति चतुष्क नशा जब ही, केवल ज्ञान लहा तब ही ।
धर्म सभा लगती जिन की, कोटि प्रभा सम ही लगती ।।

योग निरोध लही निधियाँ, कर्मन की तजके कड़ियाँ ।
मुक्ति पती कहलाय प्रभो, योग बिना निज रूप विभो ।।

पश्चिम धातकि तीर्थंकरा, भूत इरावत ईश वरा ।
वंदन श्री जिन को कर लो, चित्त बसा शिव को वर लो ।।

दोहा—काल अतीत जिनेश्वरा, ऐरावत के माँहि ।
गुणमाला वरणन करूँ, वंदूँ चित्त बसाँहि ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 07 / 132

(३९)

पश्चिमधातकीखण्ड ऐरावत क्षेत्र वर्तमान-कालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

नरेन्द्र छंद

पश्चिम धातकि खंड विराजे, जहँ चउवीस जिनेश्वर ।
वर्तमान तीर्थंकर पूजूँ, बनने को सिद्धेश्वर ।।
आह्वानन कर संस्तुति करता, करूँ अर्चना भारी ।
यही अर्चना भव सागर से, निश्चित तारणहारी ।।

दोहा—वर्तमान चौबीस जिन, पश्चिम धातकि खंड ।
हृदय बसाऊँ नित्य तिन, पाने सुगुण अखंड ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

चामर छंद

चंद्रकांति के समान नीर शुद्ध लाय के ।
जन्म मृत्यु आदि नाश हेत ही चढ़ाय के ।।
धातकी सुखंड वर्तमान के जिनेश्वरा ।
आठ द्रव्य ले जजूँ सुमंगला ऋषीवरा ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

गंधसार लेय के सु पाद में चढ़ावता ।
चित्त ताप नाशने सुभावना जु भावता ।। धातकी०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

मौक्तिका समा सुतंदुलादि ले अखंडिता ।
श्री जिनेन्द्र पूजता व पाप होय खंडिता ।। धातकी०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

मीनकेतु जीतने सु पुष्प देव अर्चता ।
सिद्ध देव सी दशा सु पावने हि वंदता ।। धातकी०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

मिष्ट अन्न पक्व लाय देव को चढ़ाइये ।
रोग नाशि पुण्य सौख्य शीघ्र पूज पाइये ।। धातकी०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

दीप ज्योति इंदु सी जिनेन्द्र आरती करूँ ।
पूर्ण ज्ञान पावने सु भारती सदा वरूँ ।। धातकी०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

धूप गंध आठ लेय कर्म आठ जारिये ।
आठ शुद्ध भाव नित्य आत्म में समारिये ।। धातकी०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

श्री फलादि रत्नथाल लेय देव अर्चता ।
मोक्ष दुर्ग प्राप्त हो सुगुण्य आप चर्चता ।। धातकी०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

SarvatoPooja 07 / 133

नील मूंग पन्न हीर पुष्पराज लाइये ।
श्री अनर्घ प्राप्ति हेतु देव को चढ़ाइये ।। धातकी०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा—वर्तमान चौबीस जिन, पश्चिम धातकि खंड ।
ऐरावत के इत जजूँ, पाऊँ मोक्ष अखंड ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा—परमौदारिक देह धर, हुए आत्मसुखलीन ।
मैं नित-नित विनती करूँ, कर दो कर्म विहीन ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

कुसुमविचित्रा छंद

जिनवर श्री 'साधित' गुण धामा, जजत वरें श्री शिवपुर वामा ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री साधितजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

सुर 'जिनस्वामी' पद नित वंदें, भगवन मुद्रा लख हम नंदें ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनस्वामीजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

'स्तमित' जिनेंद्रा परम विधाता, तव पद से जोड़त हम नाता ।।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्तमितजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

जज 'अतिआनन्द' जिन सुनाथा, मम मन तेरे गुण नित गाता ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अत्यानन्दजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

अब जजि 'पुष्पोत्फुल' जिन स्वामी, करम नशा पा शिव रजधानी ।।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुष्पोत्फुल्लजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

कहवत श्री 'मंडित' गुणमाला, भविजन पीते निज रस प्याला ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मण्डितजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

'प्रहित' सुदेवा परम दयाला, निरखत भागें करम विशाला ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रहितजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

'मदनसुसिद्धा' मदन विजेता, जजत हि होते शिवपुर नेता ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मदनसिद्धजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

जय 'हसदिंद्रा' नमत सुइंद्रा, हरसत हैं देखत जिनचन्द्रा ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री हसदिन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

जय 'शशिपार्श्वेश्वर' गत दोषा, जजत हि होता हृदय सुतोषा ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्रपार्श्वजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

तव शुभ वाणी सु 'अबजबोधा', सुनकर होता करमन रोधा ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अब्जबोधजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

नमत 'जिनावल्लभ' जिन न्यारे, भगत बने वल्लभ सब थारे ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनवल्लभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

नमन 'सुवीभूतिक' अघहारी, परम दयाला भवि सुखकारी ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुविभूतिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

यजत प्रभो श्री 'कुमुदसुभासा' शिव पद पाऊँ मम अभिलाषा ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कुमुदभासजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

SarvatoPooja 07 / 134

रहित हुए जो हर इक वर्णा, अरचत देवा परम 'सुवर्णा' ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुवर्णनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

सकल पदार्था झलकत ज्ञाना, जयतु 'हरीवासक' भगवाना ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री हरिवासकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

जय 'प्रियमित्रा' जिन छवि सोहे, सरव सुरों के मन नित मोहे ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रियमित्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

'धरम' सुदेवा अमल अतीता, जिन तव गीता परम पुनीता ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

'प्रियरत' देवा भवदधि खेवा, दरशन से ही लहि सुख मेवा ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रियरतजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

जय जिन 'नंदी' भवि गुण गाते, दिनकर जैसे अघतम नाशे ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री नन्दिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

जजि 'अशवानीक' अयश हर्ता, समकित देवा मुकति सु भर्ता ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अश्वानीकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

अरचत हैं 'पूरब' जिननाथा, लहति अपूर्णा भवि सुख साता ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

भविजन 'पार्श्वेश्वर' जिन ध्याते, त्रिभुवन के वो सब सुख पाते ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

'चितहिरदै' जी भवि मन मीता, सुमिरन चित्ता करत पुनीता ।
जजत सुरेशा त्रिभुवन नेता, जिनवर श्री संप्रति भव जेता ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चित्रहृदयजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

पूर्णार्घ्य

मत्तगयंद छंद

पश्चिमधातकी क्षेत्र इरावत, संप्रति तीर्थ महा वरदानी ।
पंचमहोत्सव वैभव उत्तम, पाय भये जिन केवलज्ञानी ।।
त्रैविध कर्मन जाल नशो भव, शृंखल की करि नष्ट कहानी ।
अर्घन थाल सजा जजते जिन, जो तिहुँ लोकन माँहि प्रधानी ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री साधितादिचित्रहृदयपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता

संप्रति तीर्थंकर, सर्व हितंकर, पाप क्षयंकर, गुणधारी ।
हम पूज रचावें, जिनगुण गावें, मन हर्षावें सुखकारी ।।

चण्डी छंद

जै जिनेश गत दोष महाना, कर्म शैल प्रति वज्र समाना ।
जै जिनेश सरवज्ञ हितैषी, वीतराग सुर वंद्य विशेषी ।।

ज्ञान आवरण नाश किया है, सर्व ज्ञान लहि बोध दिया है ।
सर्व तत्त्व शुभ ज्ञान प्रकाशा, तीन काल क्षण में प्रतिभासा ।।

दर्शनावरण कर्म निवारा, नंत दर्श लहि लोक निहारा ।
दर्श पाय तबलों तव स्वामी, होय ना हि जबलों शिवगामी ।।

मोह शत्रु बल सैन्य नशाया, सौख्य नंत जिनदेव सुपाया ।
वीतराग तुम तो बलवीरा, जै महंत जय हो गुणधीरा ।।

SarvatoPooja 07 / 135

अंतराय विधि अंत किया है, पंच लब्धि गुण कोष लिया है ।
जै अनंत बल धीरज धारी, आप भव्य जन के हितकारी ।।

वेदनीय तुम कर्म विनाशा, अव्यबाध निज में परकाशा ।
आयु बंध विधि से लहि मुक्ति, आत्मगाह प्रकटी तव शक्ति ।।

नाम कर्म तुम नाम मिटाया, शुद्ध रूप निज सूक्षम पाया ।
गोत्र कर्म जिन आप नशाया, सिद्ध रूप अगुरूलघु आया ।।

नाथ आप जिनशासन भूपा, शुद्ध हुये निज आत्म स्वरूपा ।
भक्तिभाव युत पूजन कीना, भक्त पाय तब सौख्य नवीना ।।

दोहा–पश्चिम धातकी खंड के, ऐरावत हैं क्षेत्र ।
संप्रति तीर्थंकर जजूँ, बसो हमारे नेत्र ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(४०)

पश्चिमधातकी खंड ऐरावत क्षेत्र भविष्यत्कालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

विष्णु पद छंद (तेरी छत्रच्छाया...)

पश्चिम धातकि खंड द्वीप के, तीर्थंकर भगवान ।
ऐरावत भावी श्री जिनवर, लहें पंचकल्याण ॥
नाथ रवींदू से लेकर तीर्थंकर श्री वक्षेश ।
आह्वानन कर श्रद्धायुत हो जजूँ सदा परमेश ॥
दोहा—चौबीसों घंटे जपूँ, श्री चौबीस जिनेश ।
घड़ी मात्र भी जो जजे, बन जाते सर्वेश ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

सारंगी छंद (तर्ज : चाँद सितारे.....)

क्षीरं सा नीरं ले आए, तासो पूजा कीनी है ।
मृत्यू आदी को नाशें, सिद्धों सी वृत्ति लीनी है ॥
भावी तीर्थेशों को पूजूँ, श्रद्धा भावों के द्वारा ।
तीनों रत्नों को पा जाऊँ, तोड़ूँ कर्मों की कारा ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

फूलों की गंधों को लेके, श्रीजी की पूजा होती ।
वो ही आत्मा सिद्धी पाती, आठों कर्मों को खोती ॥ भावी०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

SarvatoPooja 07 / 136

मोती जैसे ब्रीही लाए, श्रीजी की अर्चा ठाने ।
भोगों से जो हो वैरागी, सच्चा योगी सो माने ॥
भावी तीर्थेशों को पूजूँ, श्रद्धा भावों के द्वारा ।
तीनों रत्नों को पा जाऊँ, तोड़ूँ कर्मों की कारा ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

फूलों की माला से स्वामी, तेरी पूजा कीनी है ।
भोगों के रोगों को नाशा, श्री वामा ब्या लीनी है ॥ भावी०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

नाना मिष्ठान्नों की थाली, हाथों में ले आए हैं ।
स्वामी श्री चर्णों में भेंटें, देवों से हर्षाए हैं ॥ भावी०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

तारों जैसी ज्योती वाले, दीपों की पंक्ति दीनी ।
मोहादी तीनों को नाशे, निष्ठा ऐसी है कीनी ॥ भावी०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

सारी धूपों का मेला सा, खं[1] की शुद्धी का हेतू ।
श्री जी की पूजा धूपों से, मानो हो मुक्ती सेतू ॥ भावी०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

द्राक्षा नारंगी मौसंबी, एला काजू ले आए ।
मुक्ती श्री को पाने हेतू, श्रीजी की अर्चा भाए ॥ भावी०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

रत्नों जैसी द्रव्यों को, मैंनें अर्घ्यों सा माना है ।
सच्ची भक्ती जो भी गाए, वो मुक्ती दीवाना है ॥ भावी०

---

१. आकाश

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा–पश्चिम खंड सु धातकी, भावी तीर्थ जिनेश ।
पूजन अर्चन नित करूँ, क्षय हो कर्म कलेश ॥

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–समवशरण में शोभते, तीर्थंकर जिनराज ।
हम इह नित वंदन करें, पाने मुक्ति ठाठ ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

क्रीडा छंद

'रवीन्दू' देव देवों के, हरो अज्ञान भव्यों के ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री रविन्दुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

प्रभो श्री 'सौमकूमारा', निजात्मा शत्रु संहारा ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौमकुमारजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

सु 'पृथ्वीवान' को देखा, बनाते भाग्य की रेखा ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पृथ्वीवान्जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

'कुलारत्नेश' तीर्थेशा, प्रभो नाऊँ तुमें शीशा ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कुलरत्नजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

लगी 'धर्मेश' से प्रीती, रहे कैसे मुझे भीती ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

जिना 'सोमेश' अर्हंता, तु ही मुक्ति रमा कंता ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सोमजिनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

SarvatoPooja 07 / 137

'वरूणेन्द्रा' जिना म्हारी, करो निश्शेष कर्मारी ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वरूणेन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

'अभीनंदा' भवी नंदा, लखे से पाप हो मंदा ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अभिनन्दनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

यजूँ 'सर्वेश' की माया, लहूँ सिद्धों समा काया ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

अहो सूदृष्टि के दाता, 'सुदृष्टि' दृष्टि में लाता ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुदृष्टिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥10॥

यजो 'शिष्टा' जगत्दृष्टा, विधी आठों करें नष्टा ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शिष्टजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥11॥

नमूँ देवेश श्री 'धन्या', वरी मुक्ति सिरी कन्या ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धन्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥12॥

जिनेशा 'सोमचंद्रा' जी, नशाओ कर्म फंदा जी ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सोमचन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥13॥

सु 'क्षेत्राधीश' आराधो, हिये के मध्य में साजो ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षेत्राधीशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥14॥

सिरी 'सदंतीकेश' नाथा जी, सुरूपा चित्त लाता जी ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सदन्तिकनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥15॥

'जयंतादेव' जैवंता, नमूँ श्रद्धा युता नंता ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री जयन्तदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

'तमोरीपू' महाज्ञानी, करी मोहादि की हानी ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री तमोरिपुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

सु ध्याता 'निर्मिता' नाथा, नमूँ संसिद्धि निर्माता ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्मितदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

सु 'कृत पार्श्वेश' तीर्थेशा, करें सुध्यान धर्मेशा ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कृतपार्श्वजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

विधाता 'बोधिलाभेशा', सुबोधी दो मुनी ईशा ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री बोधिलाभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

'बहूनन्दा' निजानंदा, नमूँ ले भक्ति आनंदा ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री बहुनन्दजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

'सुदृष्टी' भूप धर्मों के, विजेता श्रेष्ठ कर्मों के ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुदृष्टिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

सु 'कंकुमनाभ' मुक्ति का, नशा है आज भक्ती का ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कम्कुमनाभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

मिले 'वक्षेश' सर्वज्ञा, लहूँगा सिद्ध सी विज्ञा ।
जजूँ भावी जिनेशों को, नशाऊँगा किलेशों को ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वक्षेशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

SarvatoPooja 07 / 138

पूर्णार्घ्य

मत्तगयंद छंद (तर्ज - वीर हिमाचल...)

पंच महोत्सव वैभव मंडित देव अनागत मंगलकारी ।
क्षेत्र इरावत पश्चिम धातकि के जिन पूज करूँ अघहारी ।।
स्वागत है जिनदेव भविष्यत में जब होंय वरें शिवनारी ।
चिंतन से मम चित्त खिले तब क्यों न करे अरचा फिर प्यारी ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री रविन्द्रादिवक्षेसपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता

श्री जिनवर वंदन, हरता क्रंदन, कर्म निकाचित नित्य हरे ।
जिन गुण अपनाये, आतम ध्याये, निश्चित मुक्तीकांत वरे ।।

शेरचाल

हे देव सर्व ज्ञान के तुम ईश कहाते,
निजात्म गुणों से प्रभु हैं आपके नाते ।
तारे अनेक भव्य नाथ हमको भी तारो,
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारो ।।

सर्वज्ञ हो त्रिलोक में जिनराज आप ही,
भक्ति से आपकी हरें सब दुष्ट पाप भी ।
रत्नत्रय निधि हेतु नाथ अर्चना करूँ,
तव पाद पद्म पूज वसु कर्म को हरूँ ।।

हे वीतराग देव तुम अनंतगुण धनी,
सुरेन्द्र वा गणेन्द्र पे ना संस्तुति बनी ।
मैं हूँ अबोध अल्प धी तव गुण कहूँ कैसे,
सागर सछिद्र अंजुली में मैं भरूँ कैसे ।।

तव भक्ति से अंतर में जो आनंद समाया,
अनुभव लहा पर शब्द में कह नहीं पाया ।
जब पाओगे तब पाओगे आप शिव निधी,
तव भक्त पहले प्राप्त करें मोक्ष की विधि ।।

धातकी प्रतीचि दुखमा सुखमा काल में,
होंगे अनागता जिनेश अंतराल में ।
क्षेत्र इरावत के भावि तीर्थनाथ को,
वंदन करूँ शिव हेत झुकाकर के माथ को ।।

दोहा–लहि तीर्थंकर बंध शुभ, सोलहकारण भाय ।
चिंतामणि सम हो विभो, वंदूँ श्री जिनराय ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 07 / 139

(४१)

पश्चिम धातकीखंड विद्यमान तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

गीतिका छंद

जिनदेव सूरिप्रभ विशालकीर्ति जिन तीर्थेश हैं ।
गतराग द्वेषी वज्रधर, चंद्र वदन जिनेश है ।।
पश्चिम दिशा शुभ धातकी, विदेह में भगवान् हैं ।
संप्रति जजूँ मैं भाववश, जु अद्य विद्यमान हैं ।।

दोहा–आह्वानन तीर्थेश चउ, उत्तम भाव बनाय ।
द्रव्य वसू ले नित जजूँ, मन में अति हुलसाय ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ श्रीसूरिप्रभविशाल-कीर्तिवज्रधरचन्द्राननचतुस्तीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ श्रीसूरिप्रभविशाल-कीर्तिवज्रधरचन्द्राननचतुस्तीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ श्रीसूरिप्रभविशाल-कीर्तिवज्रधरचन्द्राननचतुस्तीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्

अथ अष्टक

चउबोला छंद

शुद्ध भाव से निर्मल जल ले, मैं जिन चरणा आता हूँ ।
अष्टादश दोष नशें मेरे, अतः चरण जिन ध्याता हूँ ।।
जिनका नाम मात्र भी भवि के, अघमल सारे नित धोवे ।
खंड धातकी पश्चिम के नित, जिन पूजें वो जिन होवें ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ श्रीसूरिप्रभादि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

मैं मलयागिरि के तरुवर का, बावन चंदन लाता हूँ ।
भवाताप के नाश करन को, श्री जिन चरण चढ़ाता हूँ ।।
जिनका नाम०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ श्रीसूरिप्रभादि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

बासमती के अक्षत निर्मल, जिनचरणों में पुंज धरूँ ।
नश्वर पद जग के सब तजकर, निज शाश्वत मैं मुक्ति वरूँ ।।
जिनका नाम०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ श्रीसूरिप्रभादि-चतुस्तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

पुष्प वासना उत्पादक है, उसके शमन हेतु प्रतिदिन ।
भक्ति भाव से पुष्प चढ़ाता, वंदन करूँ नित्य श्रीजिन ।।
जिनका नाम०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ श्रीसूरिप्रभादि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

मैं अनादि से षट्रस मिश्रित, व्यंजन खाते आया हूँ ।
क्षुधा वेदनी नाश करन को, चरुवर जिनपद लाया हूँ ।।
जिनका नाम०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ श्रीसूरिप्रभादि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

लौकिक दीपक बिन भी प्राणी, भव भव ठोकर खाते हैं ।
शाश्वत केवल ज्योती पाने, गोघृत दीप चढ़ाते हैं ।।
जिनका नाम०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ श्रीसूरिप्रभादि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

धूप दशांगी जग में केवल, वातावरण विशुद्ध करे ।
जिनपद धूप चढ़ावें जे भवि, शुद्ध अष्ट गुण चित्त धरें ।।
जिनका नाम०

SarvatoPooja 07 / 140

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थ श्रीसूरिप्रभादि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

लौकिक फल की नहीं कामना, शिवफल बिन इच्छा मिलता ।
सकल श्रेष्ठ फल श्री जिनपद रख, चित्त सरल मेरा खिलता ।।
जिनका नाम मात्र भी भवि के, अघमल सारे नित धोवे ।
खंड धातकी पश्चिम के नित, जिन पूजें वो जिन होवें ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरिप्रभादि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

नीर गंध शालि पुष्पों संग, चरु अरु दीप धूप लाए ।
उत्तम फल युत अर्घ्य बना जिन, चरण चढ़ा मंगल गाए ।।
जिनका नाम०

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरिप्रभादि-चतुस्तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा—बावन कम दो शतक सब, कर्म प्रकृतियाँ जान ।
जिन पूजा से सब नशें, कर श्री जिन गुणगान ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

तरलनयन छंद

नत नित जिन मग टिरकत, द्वय नयन थकित निरखत ।
सु चरण धरुँ जिन मम उर, अब हम निवसत शिवपुर ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

विधाता छंद

अचल मेरु के पूरब में, सुसीता उत्तरा तट पर ।
ऋषभ लांछन सुशोभित जिन, 'सूरिप्रभ' देव गुण-आकर ।।
धातकी खंड पश्चिम में, विदेहा क्षेत्र के अंदर ।
नमन इनको त्रियोगों से, कर्मजित हैं जो तीर्थंकर ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सूरिप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

वीर्य पितु मात विजया हैं, सुलांछन इंद्र का सोहे ।
'विशालप्रभ' की छवि प्यारी, भविक का चित्त नित मोहे ।।
धातकी खंड॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विशालकीर्तिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

पद्मरथ के यहाँ जन्में, 'वज्रधर' देव सुखकारी ।
कृपा कर काट दो भगवन्, कर्म के वज्र अतिभारी ।।
धातकी खंड॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वज्रधरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

चंद्र सी चाँदनी मुख पर, तभी तव नाम 'चन्द्रानन' ।
जन्म पुण्डरीकणि नगरी, जहाँ बरसे धरम सावन ।।
धातकी खंड॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्राननजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

पूर्णार्घ्य

शंभु छंद

जो भवि भक्ती श्रद्धा युत हो, श्री जिनवर पूजन करते हैं ।
वे सर्व सम्पदायें जग की, पाकर मुक्ती को वरते हैं ।
हैं खण्ड धातकी पश्चिम में, शुभ क्षेत्र विदेहा मध्य महा ।
वंदूँ शाश्वत जिन समवशरण, राजित सर्वज्ञ जिनेश वहाँ ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थश्रीसूरिप्रभादिविहरमाणचतुस्तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

जो पूज रचावें, मंगल गावें, पाप नशावें, सुख पावें ।
हम पूजन करके, जिनगुण धरके, सब अघ हरके, शिव पावें ।।

SarvatoPooja 07 / 141

त्रोटक छंद

जय केवलज्ञान दिवाकर हो, सरवग्य प्रभो गुण आकर हो ।
शिव का उपदेश सदा मिलता, भवि चित्त उसे लहि के खिलता ।।

जय तीर्थ प्रवर्तक ज्ञायक हो, जय देव सदा सुख दायक हो ।
जय आसन पे नित राजित हो, चउ अंगुल ऊर्ध्व विराजित हो ।।

जय दिव्य प्रभायुत मंडल है, भवि देखत सात सदा भव है ।
जय आत्मगुणों तनि युक्त रहे, जय आत्म सुधारस नित्य बहे ।।

जय पुण्य व पाप विहीन रहे, पर पुण्य सहेतु सदा हि रहे ।
जय सर्व कषायनि घात किया, वसुकर्मनि आप विघात किया ।।

जय पश्चिम धातकि खंड विषै, सुविदेह जिनेश्वर नित्य रहे ।
जय धर्म प्रवर्तन नित्य करें, भवि के भव ताप जिनेश हरें ।।

जय सूरि प्रभो सिर नावत हूँ, सु विशाल प्रभो गुण गावत हूँ ।
जय वीतरुजा प्रभु वज्रधरा, जय चंद्र सु आनन चित्त हरा ।।

जय अष्ट सुद्रव्य लिए जजता, वसु याम प्रभो तुमको भजता ।
जय देव प्रणाम अनंत करूँ, जिन के गुण आतम नित्य धरूँ ।।

जय देव सदा तव पूजत हैं, शुभ भक्ति युता नित वंदत हैं ।
जय आप समा गुण प्राप्त करें, भव संतति का हम छेद करें ।।

दोहा—पश्चिम धातकि खंड में, विद्यमान चउ जान ।
दोष अठारह से रहित, तीर्थंकर भगवान् ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहस्थ श्रीसूरिप्रभविशालकीर्तिवज्रधरचन्द्राननचतुस्तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(४२)

धातकीखण्ड द्वीप इष्वाकार जिनालय पूजन

अथ स्थापना

अडिल्ल छंद

खंड धातकी में दो शैल महान हैं ।
इष्वाकार हैं जहँ चैत्यगृह थान हैं ॥
तिन में राजित जिन प्रतिमाएँ वंदता ।
आह्वानन कर भाव युक्त नित अर्चता ॥

दोहा–द्वीप धातकी खण्ड में, इष्वाकार प्रधान ।
आह्वानन करि नित जजूँ, जिनगृह जिनभगवान ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धिद्वयेष्वाकारनगस्थजिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धिद्वयेष्वाकारनगस्थजिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धिद्वयेष्वाकारनगस्थजिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

दोहा छंद

मेघ पुष्प शीतल सुखद, जिनपद धारा देय ।
जन्मादिक त्रय रोग नशि, अजर अमर पद लेय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धिद्वयेष्वाकारनगस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

भव आताप मिटावता, मलयज चंदन सार ।
प्रतिदिन जिनवर पद जजूँ, शाश्वत रूप निहार ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धिद्वयेष्वाकारनगस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

SarvatoPooja 07 / 142

अक्षय पद के हेतु मैं, पूजूँ अक्षत लाय ।
अक्षत सु शाश्वत स्वात्मा, पाऊँ जिन गुण गाय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धिद्वयेष्वाकारनगस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

निर्विकार होने जजूँ, इष्वाकार जिनेश ।
सब ऋतु सुमन चढ़ाय जिन, मन्मथ करूँ अशेष ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धिद्वयेष्वाकारनगस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

उत्तम से उत्तम चरू, जिन पूजन को लाय ।
क्षुधा वेदनी नाशने, जिन जजि मन हर्षाय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धिद्वयेष्वाकारनगस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

इष्वाकार जिनालया, आरति प्रतिदिन गाय ।
आत्म ज्ञान प्रकटे सदा, तीनों तिमिर नशाय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धिद्वयेष्वाकारनगस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

धूप दशांगी नित्य ही, जिनपूजन को लाय ।
वसुविधि कर्म विनाशके, शाश्वत निज पद पाय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धिद्वयेष्वाकारनगस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

श्री फल ले जिनपद जजूँ, मैं शिवफल के हेतु ।
संस्तुति जिन आगम कही, शाश्वत भवदधि सेतु ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धिद्वयेष्वाकारनगस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

बहु विधि रत्न मिलाय के, जिन पद अर्घ चढ़ाय ।
शाश्वत अनरघ पद लहि, भक्ति सुशिव सुखदाय ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धिद्वयेष्वाकारनगस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा—द्वीप धातकी खंड में, इष्वाकार महान ।
जे भविजन प्रतिदिन जजें, करें आत्म कल्याण ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

द्वीप धातकी खंड में, इष्वाकार महान ।
उत्तर दक्षिण दो कहे, जिन पर श्री भगवान ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

मनहरन छंद

धातकि सुखंड माँहि, दक्षिण दिशा है न्यारी,
इष्वाकार गिरि इक अतिशय शोभित है ।
लवण उदधि कालोदधि छूते हैं ये,
सुर नर विद्याधर चित्त विमोहित है ।
योजन सहस एक व्यास गिरिवर का है,
चार शत योजन सु ऊँचे इसे जानिए ।
चार लाख योजन ये लंबें उत्तर दक्षिण में,
जिनगृह जिनवर पूज सुख मानिए ।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणदिश-इष्वाकारनगस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

द्वीप धातकी के माँहि उत्तर दिशा है मानी,
इष्वाकार गिरि पर चार कूट जानिए ।
वही व्यास ऊँचाई लंबाई वही मानते हैं,
एक कूट पर जिनगृह शुभ मानिए ।
इक शत आठ जिनबिंब सुरतनमयी,
पाँच सौ धनुष सु ऊँचाई परमानिए ।
आठ द्रव्य लेकर सु अकृत्रिम बिंब पूजे,
पुण्य वर्द्धिता करे व सब अघ हानिए ।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थोत्तरदिश-इष्वाकारनगस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

SarvatoPooja 07 / 143

पूर्णार्घ्य

विद्युन्माला छंद

इष्वाकारे चैत्यालै दो, जो पूजे बाधा टालै वो ।
आठों द्रव्यों को ले आए, श्री जी की पूजा ही भाए ।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणोत्तरदिशो इष्वाकारनगस्थद्वयसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता—गिरि इष्वाकारा, जिनगृह प्यारा, विश्ववंद्य जिन देव अहा ।
निज नयन मूँद लूँ, दर्शन कर लूँ, होवें आठों कर्म स्वहा ।।

शंभु छंद

शुभ धातकि के दक्षिण उत्तर, हैं धरणीधर दो मनहारी ।
वे स्वर्णमयी अतिशोभित हैं, शुभ इष्वाकार नामधारी ।।
गिरि योजन एक सहस चौड़े, पूरब पश्चिम में कहलाए ।
अरु चार शतक योजन ऊँचे, अवगाहा योजन शत गाए ।।

शुभ चार लाख योजन लंबे, दक्षिण उत्तर में पहचाने ।
पर्वत के दोनों पार्श्वभाग, में इक इक तटवेदी जाने ।।
हैं पाँच शतक धनु विस्तारा, ऊँचाई दो योजन गायी ।
फरफराते यहाँ ध्वज ऊँचे, वेदी सच ये भवि मन भायी ।।

वेदी के दोनों पार्श्वभाग, पुष्करिणी वापी तोरण से ।
जिन भवनों से युत कानन शुभ, ले ज्ञानचक्षु निरखूँ मन से ।।
तट ऐसे ही विस्तार पूर्ण, वेदी वन अरु वन वेदी है ।
इन इष्वाकार गिरी ऊपर, चउ ओर रहे शुभ वेदी है ।।

विविध रत्नमणि निर्मित शुभ्रा, कूट सुभग चउ-चउ कहते ।
एक कूट पर चैत्यालय जिन, अन्यों पर व्यंतर सुर रहते ।।

दोनों गिरि के दो चैत्यालय, उनमें थित जिनवर प्रतिमाएँ ।
शुभ सिद्धारथ अरु चैत्य वृक्ष, जिन मानथंभ मन को भाए ।।

निर्मल श्रद्धा निर्मल निष्ठा, शशिमणिवत् निर्मल भाव लिए ।
शाश्वत चैत्यालय चैत्य जजूँ, करबद्ध सदा सिर नाय हुए ।।
परमौदारिक शुभ देह धरें, चउ कर्म घातिया संहारें ।
आरूढ़ क्षपक श्रेणी होवें, वर यथाख्यात संयम धारें ।।

दोहा–द्वीप धातकी दो गिरी इष्वाकार महान ।
थित चैत्यालय जिन सदा, वंदूँ बारंबार ।।

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धिद्वयेष्वाकारनगस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 07 / 144

SarvatoPooja 08 / 144

(४३)

मंदर मेरु पूजन

अथ स्थापना

चउबोला छंद

मंदर गिरि के जिनवर शुभकर, निज मन मंदिर में धारें।
पूज रचाने भक्ति बढ़ाने, श्री जिनवर पद आराधें।
निज उर के निर्मल अंबुज पर, सदा वास ही हो तेरा॥
और आपके निर्मल पद में, सदा-सदा हो चित मेरा॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक

सोरठा

कंचन कलश भराय, सुर सरिता का नीर शुभ।
निर्मल चित हर्षाय, जजूँ जिनेश्वर पाद नित॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

हरे देह संताप, सुरभित चंदन नित्य ही।
होय भक्त निष्पाप, जिनवर चरण चढ़ावते॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

अक्षत दिव्य अनूप, चंद्रकांत मणि सम धवल।
लहूँ शुद्ध निज रूप, मंदर मेरू जिन नमूँ॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

जिन पद अग्र चढ़ाय, सुरतरु के शुभ सुमन ले ।
शुद्ध ब्रह्म प्रगटाय, सर्व वासना नाशकर ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

नाना व्यंजन लाय, इष्ट मिष्ट स्वादिष्ट शुभ ।
सर्वरोग नश जाय, जिनपद अर्चें भक्ति से ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

दुख दायक अज्ञान, ज्ञानावरणादिक अशुभ ।
पाने क्षायिक ज्ञान, जजूँ दीप से भक्ति वश ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

दुख देवें दिन रैन, कर्म वसु अहिफण समान ।
पाऊँ शाश्वत चैन, धूप वसुविध ले जजूँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

फल बिन निष्फल होय, जग के तरुवर नित्य ही ।
मोक्ष लहूँ अघ खोय, निज फल पाने फल चढ़ा ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

दीप धूप फल लाय, जल चंदन अक्षत सुमन ।
पद अनर्घ मिल जाए, चढ़ा अर्घ्य फल आदि ले ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा

मन धरि मंदर जिन सदन, मम मन मंदिर होय ।
मन मंदिर कर नित जजूँ, बीज मुक्ति का बोय ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

SarvatoPooja 08 / 145

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

पूरब पुष्कर दीप में, मंदर मेरू माँहि ।
चैत्य चैत्यालय मैं जजूँ, सर्व कर्म जर जाँहि ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

शुद्ध गीता छंद

भद्र परिणाम कर चलते, प्रथम वन भद्रसालों में ।
जहाँ दिश पूर्व जिन मंदिर, यजूँ आठों हि यामों में ।।
मेरु मंदर जजूँ जिनवर, जो पुष्कर द्वीप में सोहें ।
नमन करि सर्व चैत्यालय, भविक का पाप मल धोवें ।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

भाव दक्षिण करे दक्षिण, दिशा जहँ जिन भवन देखो ।
श्रेष्ठ शुभ व्यास वाले हैं, पूज निज भाग्य शुभ लेखो ।। मेरु०

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

दिशा पश्चिम बना मंदिर, पूजते देव नित आके ।
जजें हम तीन योगों से, प्रभो शुभ भावना भाके ।। मेरु०

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

दिशा उत्तर के मध्य में, त्रिमणिमय कोट नित सोहें ।
वहीं अंदर जिनेश्वर के, जिनालय चित्त भवि मोहें ।। मेरु०

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थोत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

चलें नंदन सुवन प्यारा, सभी को नंद देता है ।
पूर्व चैत्यालया वंदन, बनाए भव विजेता है ।। मेरु०

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

आम्र मंदार अरु चंपक, सु चंदन ताम्बूलि केला ।
वृक्ष युत वन दिशा दक्षिण, लगा जिनदर्श का मेला ।। मेरु॰

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

दिशा पश्चिम सुहानी है, जहाँ चैत्यालया ऊँचा ।
वहाँ जिन चैत्यों का वंदन, हरे क्रंदन प्रभू पूजा ।। मेरु॰

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

कलश झारी ध्वजा पंखा, छत्र दर्पण चँवर ठोना ।
सुयुत जिन चैत्य दर्शन कर, मिटे भव दुःख का रोना ।। मेरु॰

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थोत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

तीसरा सौमनस वन शुभ, जहाँ मन सुमन खिलता है ।
पूर्व दिश चैत्य वंदन से, बड़ा सुख चैन मिलता है ।। मेरु॰

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

सौमनस वन सु दक्षिण जिन, भविक जो नित्य ध्याते हैं ।
परम ऐश्वर्य पाकर वे, क्रमिक पद मोक्ष पाते हैं ।। मेरु॰

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

प्रतीची चैत्य पूजन से, प्रतीति निज की होती है ।
अनादीकाल से संचित, भविक के पाप धोती है ।। मेरु॰

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

उदीची शुभ्र निर्मल दिश, जहाँ जिनगुण उजाले हैं ।
वहाँ चैत्यालया अद्भुत, सुमध्यम व्यास वाले हैं ।। मेरु॰

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थोत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

शीश पर मेरु मंदर के, सु पाण्डुक वन सुहाता है ।
दिशा प्राची बना मंदिर, सभी का मन लुभाता है ।। मेरु॰

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसम्बन्धिपाण्डुकवनस्थपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

पांडुक वन के चैत्यालय, जघन्या व्यास है माना ।
दिशा दक्षिण जिनालय में, दरश जिनदेव का पाना ।। मेरु॰

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसम्बन्धिपाण्डुकवनस्थदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

प्रतीची के जिनालय में, मनोहर चैत्य राजित हैं ।
एक सौ आठ वेदी में, सु इक सौ आठ साजित हैं ।। मेरु॰

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसम्बन्धिपाण्डुकवनस्थपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

करें उन चैत्यों का वंदन, उदीचि में जो नित सोहे ।
धनू पन शत तनू स्वर्णिम, वीतरागी छवी मोहे ।। मेरु॰

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसम्बन्धिपाण्डुकवनस्थोत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

पूर्णार्घ्य

दोहा

मंदर मेरू के सभी, अकृत्रिम जिनराय ।
सर्वजगत मंगल करें, नमूँ नित्य सिर नाय ।।

ॐ ह्रीं मन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

जिनवर के गुणगण, पूजें सुरगुण, लहें पुंज गुण सुखकारी ।
भवि पाप नशावें, पुण्य कमावें, पूज रचावें शिवकारी ।।

नरेन्द्र छंद

मंदर मेरु सहस चौरासी, मह योजन उत्तुंगा ।
चउ वन में सोलह चैत्यालय, की मैं पूज करूँगा ॥
धनि-धनि नरभव सफल बनाऊँ, कर शाश्वत जिन पूजा ।
अतिशय पुण्य कमाए भविजन, इस सम काज न दूजा ॥

नंदन में मानी चारण गंधर्व चित्र शुभ भवना ।
अरु सौमनस वज्र वज्रप्रभ, स्वर्ण स्वर्णप्रभ सदना ॥
पांडुक में लोहित अंजन, हारिद्र व पांडुर मोहे ।
देव इंद्र के सोम यम वरुण, अरु कुबेर के सोहे ॥

गोल भवन दो पार्श्व भाग में, दो-दो कूट कहाए ।
कूट शिखर पर दिक्कुमारियों, के शुभ भवन सुहाए ॥
जिन चैत्यों को वंदन करके, जीवन सफल बनाते ।
प्रातिहार्य युत जिन का अर्चन, नित-नित कर हर्षाते ॥

आग्नेयादी चार दिशा में, चार-चार शुभ वापी ।
प्रति वन में सोलह कहलाती, इंद्रों ने क्रीड़ा की ॥
मणिमय तोरण रत्न सीढ़ियाँ, हंसादी यंत्रों से ।
इनके मधि में इंद्र सदन भी, इंद्र जजें मंत्रों से ॥

आग्नेया नैऋत्य दिशा में, है सौधर्म प्रसादा ।
वायव्य रु ऐशान दिशा में, इंद्रैशान प्रसादा ॥
जब जब भी वंदन को आए, इन भवनों में ठहरे ।
जिन अर्चन पूजन शुभ करते, भाव लगाकर गहरे ॥

दोहा–**पुष्करार्द्ध के पूर्व में, मंदर मेरु महान ।**
जिनमें राजित बिंब की, महिमा करूँ बखान ॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपस्थमन्दरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

SarvatoPooja 08 / 147

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ॥
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

(४४)

पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप कुलाचल जिनालय पूजन

अथ स्थापना

नरेन्द्र छंद

पूरब पुष्कर अर्द्ध द्वीप में, षट् कुल अचल गिनाए ।
उन पर षट् शाश्वत जिनमंदिर, जिनके चैत्य लुभाए ।।
आह्वानन करता मैं जिनवर, तव पद मुझको भाया ।
अति निर्मल शुभ भाव बनाकर, जिन पूजा को आया ।।
दोहा–आह्वानन करता प्रभो, जिनगृह चैत्य सुबिंब ।
संस्तुति अर्चन वंदना, करूँ लखूँ निज बिंब ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बसमूह !अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

चौपाई छंद

क्षीरोदधि सम नीर चढ़ाऊँ, जन्मादिक त्रय रोग मिटाऊँ ।
पुष्करार्द्ध कुलगिरि भगवंता, पूजन करि करुँ निज भव अंता ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

गंधसार तन ताप मिटाए, अर्चित चित्त शांति बहु पाएँ ।
पुष्करार्द्ध कुलगिरि भगवंता, पूजन करि करुँ निज भव अंता ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

SarvatoPooja 08 / 148

अक्षत अक्षय पद का दाता, भेंटूँ चरण लहूँ सुख साता ।
पुष्करार्द्ध कुलगिरि भगवंता, पूजन करि करुँ निज भव अंता ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

पुष्प पूज जिन मन्मथ नाशूँ, अविकारी निज चित्त विकासूँ ।
पुष्करार्द्ध कुलगिरि भगवंता, पूजन करि करुँ निज भव अंता ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

चरुवर रत्नथाल भरि लाया, क्षुधा नशाने जिन पद आया ।
पुष्करार्द्ध कुलगिरि भगवंता, पूजन करि करुँ निज भव अंता ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

गोघृत दीप जला नित ध्याता, गाऊँ शाश्वत चेतन गाथा ।
पुष्करार्द्ध कुलगिरि भगवंता, पूजन करि करुँ निज भव अंता ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

धूप जला निज कर्म भगाऊँ, जिन अर्चन कर जिन बन जाऊँ ।
पुष्करार्द्ध कुलगिरि भगवंता, पूजन करि करुँ निज भव अंता ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

शिवफल पाने श्री फल लाया, मोक्ष महाफल हेतु चढ़ाया ।
पुष्करार्द्ध कुलगिरि भगवंता, पूजन करि करुँ निज भव अंता ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

श्रेष्ठ द्रव्य से अर्घ्य बनाया, पद अनर्घ्य हितु देव चढ़ाया ।
पुष्करार्द्ध कुलगिरि भगवंता, पूजन करि करुँ निज भव अंता ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–पूरब पुष्कर अर्द्ध के, पूजूँ कुलगिरि बिंब ।
निरखूँ मुद्रा आपकी, गहूँ स्वयं का बिंब ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

हिमवनादि षट् वर्षधर, पर्वत अति सुखकार ।
वहाँ विराजित चैत्य जिन, वंदन है अघहार ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

नरेन्द्र छंद

भरत क्षेत्र से आगे शुभ हिमवन् धरणीधर प्यारा ।
ग्यारह कूटों सहित प्रथम श्री, सिद्धकूट अति न्यारा ।।
पूरब पुष्करदीप मध्य छह, पर्वत अती विशाला ।
वहाँ विराजित श्री जिनवर की, फेरूँ निशदिन माला ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिहिमवन्पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

अर्जुनवर्ण महाहिमवन् नग, गोल-गोल अठ कूटा ।
पूर्व कूट पर श्री जिन का इक, मंदिर बड़ा अनूठा ।। पूरब॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिमहाहिमवन्पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

तप्त स्वर्ण सम निषध कुलाचल, नव कूटों से सज्जित ।
रत्नमयी शुभ सिद्ध कूट जिन, लख रवि चंदा लज्जित ।। पूरब॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिनिषधपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

नीलम वर्णी नील महीधर, नव कूटों को धरता ।
सिद्ध आयतन कूट जिनालय, पूजन कर शिव वरता ।। पूरब॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिनीलपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

अर्जुन वर्णी पर्वत रुक्मी, आठ कूट रतनन के ।
पूर्व दिशागत सिद्धकूट जिन, प्रीत धरूँ चरणन में ।। पूरब॰

SarvatoPooja 08 / 149

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिरुक्मिपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

ग्यारह कूटों से शोभित है, स्वर्णमयी गिरि शिखरिन् ।
प्रथम कूट के चैत्यालय की, पूज करूँ मैं निशदिन ।। पूरब॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिशिखरिन्पर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

पूर्णार्घ्य

शंभु छंद

है पुष्करार्द्ध के पूरब में, उत्तुंग कुलाचल मनहारी ।
जिन पर राजित चैत्यालय की, शोभा लख सब उपमा हारी ।।
निज चिंतन में जिनगृह लाकर, भावों से पूज रचाई है ।
साक्षात् करूँ दर्शन उनका, अब मेरे हृदय समाई है ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

जय दिव्य कुलाचल, ले भक्ति बल, निज अन्तस तल से ध्याऊँ ।
जहाँ देव विशाला, महिमा वाला, जपकर माला शिव पाऊँ ।।

चामर छंद

पूर्व पुष्करार्द्ध के जजूँ सुचैत्य शाश्वता ।
आँख मूंद भक्ति युक्त हो सदा हि ध्यावता ।।
शोभते जिनालया महा सुषट् कुलाचला ।
इन्द्र देव ऋद्धिधारि पूजते शुभाचला ।।

घंट प्रातिहार्य तोरणादि युक्त सज्जिता ।
बिंब कांति के मुखाग्र अर्क चंद लज्जिता ।।

वंदनीय पूजनीय चैत्य रत्नमान हैं ।
पाँच सौ धनू प्रमाण बिंब वे विशाल हैं ।।

मैं नमूँ जिनेश क्लेश दुःख ताप शांत हो ।
मैं नमूँ जिनेश शांति सौख्यता अपार हो ।।
मैं नमूँ जिनेश सर्व कर्म पंक मेटता ।
मैं नमूँ जिनेश ध्यान वीतराग भेंटता ।।

देव को प्रणाम माँहि दोष सर्व नाश हो ।
देव को प्रणाम माँहि ज्ञान का प्रकाश हो ।।
देव को प्रणाम प्राप्त होय लब्धि क्षायिका ।
देव को प्रणाम संग होय मुक्ति नायिका ।।

दोहा

नाना रत्नों से खचित, गिरी कुलाचल दिव्य ।
जिनके चैत्यालय जजूँ, लहूँ स्वात्म गुण नव्य ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 08 / 150

(४५)

पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीप वक्षार जिनालय पूजन

अथ स्थापना

रोला छंद (तर्ज : अहो जगत...)

पूरब पुष्कर अर्द्ध, गिरि वक्षार विराजे ।
शाश्वत जिनगृह चैत्य, जिनवर तिन पर साजे ।।
आह्वानन कर आज, भाव भगति वश अर्चूं ।
वसुविध कर्म विनाश, जिनवर के गुण चर्चूं ।।
दोहा—पूरब पुष्कर द्वीप के, षोडश गिरि वक्षार ।
जिनगृह जिनवर वंद्य नित, नमूँ करूँ जयकार ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारपर्वतस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारपर्वतस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारपर्वतस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

विदित छंद

क्षीरोदधि का शुभ नीर, चरणन धार करूँ ।
पाऊँ मैं भवदधि तीर, तीनों रोग हरूँ ।।
वक्षार गिरि जिनगेह, शाश्वत अघ हर्ता ।
सुरनर सेवें अति नेह, भविजन सुखकर्ता ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारपर्वतस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

सितहिम[१] लाकर हम आज, अर्चन जिनवर की ।
देवे सुरपति का राज, वंदन गिरिवर की ।। वक्षार०

१. चंदन

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारपर्वतस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

मुक्ता सम तंदुल लाय, जिनवर नित्य जजूँ ।
अक्षय पद हेतु चढ़ाय, नश्वर विभव तजूँ ।। वक्षार॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारपर्वतस्थषोडशजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

ले रजत पुष्प भंडार, जिनवर पद भेंटूँ ।
रतिपति विजयी को पूज, मन्मथ को मेटूँ ।। वक्षार॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारपर्वतस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

व्यंजन सु इष्ट मिष्ठान्न, जिनवर अर्चन को ।
ले वसु द्रव पूजूँ आज, निज गुण अर्जन को ।। वक्षार॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारपर्वतस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

ले रत्नदीप का थाल, नीराजन करता ।
तव पद में रखता भाल, मोह तिमिर हरता ।। वक्षार॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारपर्वतस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

अष्टांग धूप शुभ लाय, पावक में खेऊँ ।
जिनवर की पूज रचाय, गंध सुगुण लेऊँ ।। वक्षार॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारपर्वतस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

श्रीफल जिन पाद चढ़ाय, नरभव सफल करूँ ।
स्वातम वसु गुण प्रगटाय, सुमुक्ति कांत वरूँ ।। वक्षार॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारपर्वतस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

सर्वोत्तम द्रव्य मिलाय, सुंदर अर्घ्य बने ।
जिनपद भेटूँ मैं आज, चिद्गुण पाऊँ घने ।। वक्षार॰

SarvatoPooja 08 / 151

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारपर्वतस्थषोडशजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा

पूरब पुष्कर अर्द्ध में, गिरि वक्षार महान ।
ताके ऊपर गेह जिन, मैं पूजूँ धरि ध्यान ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

वक्षारों पर शोभते, जिन मंदिर सुखकार ।
पुष्पांजलि अर्पित करूँ, शाश्वत जिन अविकार ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

चाल-मराठी

पहला वक्षार गिरि 'चित्रकूटा', जिसने भव्यों के मन को है लूटा ।
पूजके छूटे कर्मों का खूंटा, कि सिद्धकूट पर जिनभवन नित जजूँ मैं ।
पूर्व पुष्कर का पूर्व विदेहा, उस ही की ओर वक्षार गेहा ।
सीता उत्तर तटी बहता नेहा, कि सिद्धकूट पर जिनभवन नित जजूँ मैं ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थचित्रकूटवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

'पद्मकूट' सु वक्षार दूजा, करें सुर नर जहाँ नित्य पूजा ।
जिन भक्ति बिना कुछ ना सूझा, कि सिद्धकूट पर जिनभवन नित जजूँ मैं ।।
पूर्व पुष्कर का॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थपद्मकूटवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

'नलिन' वक्षार तीजा कनकमय, ध्याऊँ चैत्यालय तीनों बखत में ।
पाऊँ साक्षात् इनके दरश मैं, कि सिद्धकूट पर जिनभवन नित जजूँ मैं ।।
पूर्व पुष्कर का॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थनलिनवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

चौथा वक्षार 'एकशैल' ध्याऊँ, चैत्य भक्ति करूँ चित बसाऊँ ।
कर्म शैल गिरी को गिराऊँ, कि सिद्धकूट पर जिनभवन नित जजूँ मैं ॥
पूर्व पुष्कर का०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थैकशैलवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

कहा वक्षार 'त्रिकूट' गिरिवर, कर लो भक्ति जहँ राजे जिनवर ।
लहूँ भक्ति का वरदान शिवघर, कि सिद्धकूट पर जिनभवन नित जजूँ मैं ॥
पूर्व पुष्कर का पूरब विदेहा, उस ही की ओर वक्षार गेहा ।
सीता दक्षिण तटी बहता नेहा, कि सिद्धकूट पर जिनभवन नित जजूँ मैं ॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थत्रिकूटवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

ऋद्धिधारी श्रमण का जहँ विचरण, पावन है गिरी का हर एक कण कण ।
'वैश्रवण' गिरि पे जाऊँ श्रमण बन, कि सिद्धकूट पर जिनभवन नित जजूँ मैं ॥
पूर्व पुष्कर का०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थवैश्रवणवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

'अंजनात्मा' पे जो दिव्य शक्ति, उन भगवान की कर लो भक्ति ।
मुक्ति पाने की है एक युक्ति, कि सिद्धकूट पर जिनभवन नित जजूँ मैं ॥
पूर्व पुष्कर का०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थाञ्जनात्मावक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

चौथा वक्षार 'अंजन' निराला, कर्म अञ्जन को है धोने वाला ।
पीके भक्ति के अमृत का प्याला, कि सिद्धकूट पर जिनभवन नित जजूँ मैं ॥
पूर्व पुष्कर का०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहस्थाञ्जनवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

भुजंगप्रयात छंद

सु वक्षार 'श्रद्धा' तटी भद्रशाला ।
जला भक्ति ज्योति, हिये में विशाला ॥
सुसीतोद के दक्षिणी तीर्थ पे हाँ ।
यजूँ चार वक्षार के जैन गेहा ॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थश्रद्धावानवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

नमूँ 'वीजटावान्', गिरी है विशाला ।
जहाँ नित्य सिंधू, बहे भक्ति वाला ॥ सुसीतोद०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थविजटावान्वक्षारगिरि-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥10॥

सु 'आशी विषा' के, जिनेशा महाना ।
करें भक्ति न्यारी, लहें सिद्ध थाना ॥ सुसीतोद०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थाशीर्विषवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥11॥

'सुखावाह' शैले, महा चैत्य ध्याऊँ ।
सुखों का खजाना, लहूँ शीश नाऊँ ॥ सुसीतोद०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसुखावहावक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥12॥

बसे 'चंद्रमाला', सुवक्षार न्यारा ।
तहाँ राजता है, जिनेशा हमारा ॥
सुसीतोद के उत्तरा तीर्थ पे हाँ ।
यजूँ चार वक्षार के जैन गेहा ॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थचन्द्रमालवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥13॥

लखूँ 'सूर्यमाला', महाशैल भारी ।
प्रभो दर्श से ही, खिले सौख्य क्यारी ॥ सुसीतोद०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थसूर्यमालवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥14॥

अनादी सजी है, गिरी 'नागमाला' ।
महा विघ्ननाशे जिनेशा निराला ।। सुसीतोद०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थनागमालवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

सुरों से घिरी है, गिरी 'देवमाला' ।
जिनों की सुअर्चा, नशे कर्म जाला ।। सुसीतोद०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपश्चिमविदेहस्थदेवमालवक्षारगिरिसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

पूर्णार्घ्य

उपेन्द्रवज्रा छंद (तर्ज : तुम्हीं हो माता...)

महान वक्षार गिरि विदेहा ।
नमूँ गिरि के जिनराज गेहा ।।
सु द्वीप जो पश्चिम पुष्करार्द्धा ।
जजूँ रहे ना अब कोई बाधा ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिषोडशवक्षारगिरिस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

श्री जिनवर चंदा, जजि आनंदा, तजि भव कंदा मुक्ति लहूँ ।
तजि भव जंजालं, होय निहालं, गुण त्रैकालं स्वात्म रहूँ ।।

अडिल्ल छंद

पुष्करार्द्ध प्राची में गिरि वक्षार है,
सोलह पर सोलह जिनगृह सुखकार हैं ।
वसु एक सौ प्रतिमाएँ जिनमंदिर में,
पूजे ना डूबे संसार समंदर में ।।

SarvatoPooja 08 / 153

शाश्वत चैत्यालय अद्‌भुत सुखखान हैं,
नादि निधन जिनशासन की पहचान है ।
यही दिखाए मोक्षमहल का रासता,
जिन शासन में शासित हो भवि शासता ।।

गेह घंटा तोरणद्वारों से सज्जित,
शोभे है मंदिर तारामण्डल लज्जित ।
धनु पाँच सौ ऊँची प्रतिमाएँ सारी,
अधरों पर मुस्कान खिली रहती प्यारी ।।

जिनवर कोटि वंदन बारंबार है,
जिनशासन मम प्राणों का आधार है ।
चैत्यालय जिनचैत्य अद्‌भुत परमोत्तम,
पूजक पूज रचा पद पाय सर्वोत्तम ।।

दोहा—पुष्करार्ध पूरब दिशा, विदेह में वक्षार ।
जिन चैत्यालय जिन जजूँ, निश्चित है दुखहार ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारपर्वतस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(४६)

पूर्वपुष्करार्द्ध द्वीप गजदंत जिनालय पूजन

अथ स्थापना

नरेन्द्र छंद

पूरब पुष्कर अर्द्ध द्वीप में, गिरि गजदंत कहाए ।
मंदर मेरु विदिशाओं में, चार शैल मन भाए ॥
मेरु निकट में पन शत योजन, पर जिनसदन विराजें ।
इक शत वसु श्री जिन प्रतिमाएँ, रत्नमयी शुभ साजें ॥
दोहा–निर्मल भक्ति भाव से, आह्वानन करूँ आज ।
हृदय कमल पर तिष्ठिये, लोक गुरु जिनराज ॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

चउबोला छंद

अयोगि केवलि के चित सम शुभ, निर्मल जल हम लाये हैं ।
नादि काल से ज्वलित मोह की, अग्नि बुझाने आये हैं ॥
जन्म आदि सब दोष नशूँ मैं, ऐसा वर दे दो स्वामी ।
तव चरणों को निज उर में धरि, बनूँ आपका अनुगामी ॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

शुभ्र ध्यान में लीन योगि सम, शीतलता पाने आये ।
असंख्य चन्द्र की शीतांशु सम, शीतल मलयज ले आये ॥
मैं अनादि के भवाताप से, आकुल हो घबराता हूँ ।
सर्व निराकुल शाश्वत चिन्मय, परम शांति अपनाता हूँ ॥

SarvatoPooja 08 / 154

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

शुद्ध बसेरे के मुक्ता सम, हीरक तंदुल मैं लाया ।
शाश्वत परम शुद्ध चेतन की, परिणति पाने को आया ॥
अक्षत[1] अक्षत जिनपद में धरि, अक्षय वैभव प्राप्त करूँ ।
घाति चतुष्टय नष्ट करूँ अरु, स्वकीय आप्त को नित्य वरूँ ॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

शाश्वत चिन्मय सुरभित निज की, चिद् सुगंध हम पाने को ।
सब ऋतु के शुभ पुष्प सजाकर, लाये नाथ चढ़ाने को ॥
वत्सलरत जिन जननी उर सम, पुष्प चढ़ा मैं अभिलाषूँ ।
परम ब्रह्म में लीन रहूँ नित, अक्ष विषय मन्मथ नाशूँ ॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

षट्रस मिश्रित व्यंजन चित् को, नहीं तृप्ति दे पाते हैं ।
इसीलिए हम जिनवर चरणों, व्यंजन नित्य चढ़ाते हैं ।
चरुवर से पूजा जिनवर की, परम शांति सुख दात्री है ।
पूजन कीर्तन संस्तव अर्पण, शिव सी शील प्रदात्री है ॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

केवलज्ञान रश्मियुत वैभव, शाश्वत शील हमारा है ।
रत्नदीप से आरति करके, करूँ दूर अँधियारा है ॥
मम उर शाश्वत केवल ज्योति, नित्य प्रवर्तित हो स्वामी ।
तव चरणों का अनुरागी प्रभु, बन जाऊँ मैं शिवगामी ॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

दसविध धूप अग्नि में खेकर, क्षमा भाव नित चित्त धरूँ ।
क्रोधानल को शमित करूँ मैं, परम शांति का वरण करूँ ॥

१. अखंड

मोहादी वसु कर्म नशाकर, नंत ज्ञान गुण अष्ट महा ।
तव पद में नित वास करूँ मैं, शाश्वत सिद्धी लहूँ अहा ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

जिस फल बिन नर जन्म विफल है, वही सुफल पाने आया ।
सर्व पुष्प फल जिनपद में धरि, करूँ सफल मैं नर काया ।।
शिवफल मेरा शुद्ध शील है, उसे हस्तगत कर लूँगा ।
है अनादि से कुँवारी मुक्ति, शिव दूल्हा बन वर लूँगा ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

नीलम मुक्ता पन्ना मूँगा, नील वज्र लाऊँ पुखराज ।
सर्व रत्न का अर्घ चढ़ा जिन, पा जाऊँ मुक्ति साम्राज ।।
दर्शन ज्ञान नंत बल सम्यक, अगुरुलघू अव्याबाधा ।
शाश्वत अवगाहन सूक्ष्मत्व रु, करूँ पूर्ण नित तप साधा ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा—शाश्वत चिन्मय शील निज, पाऊँ शिव अविकार ।
सिद्धालय में नित बसूँ, लहूँ शुद्ध आकार ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

पूरब पुष्कर अर्द्ध में, मेरु विदिशा जान ।
गजदंता जिनगृह प्रभो, जजि करता अघहान ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

मत्तगइंद छंद

मंदर मेरु सु पूरब उत्तर, में गजदंत गिरीवर सोहे ।
नीलमकांतिम 'मालयवान' सु, इंद्र खगेंद्र सभी मन मोहे ।।
सिद्ध सु कूटनि श्री जिनमंदिर, में इक सौ वसु बिंब विराजे ।
रत्नन अर्घ्य बनाऊँ प्रभो तव, पाद धरूँ सब संकट भाजे ।।

SarvatoPooja 08 / 155

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपस्थमाल्यवान्गजदन्तसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

मंदर मेरु सु पूरब दक्षिण, में गजदंत विशाल कहा है ।
श्री 'महासौमनसा' छवि रूप्यमयी जिनगेह सुभाल महा है ।।
सिद्ध सु कूटनि श्री जिनमंदिर, में इक सौ वसु बिंब विराजे ।
रत्नन अर्घ्य बनाऊँ प्रभो तव, पाद धरूँ सब संकट भाजे ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपस्थमहासौमनसगजदन्तसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

मंदर मेरु सु दक्षिण पश्चिम, शैल महा गजदंत निहारें ।
'विद्युत श्री प्रभ' आकृति दंतनि, तप्त सुवर्णमयी छवि धारे ।।
सिद्ध सु कूटनि॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपस्थविद्युत्प्रभगजदन्तसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

मंदर मेरु सु पश्चिम उत्तर, [१]तुंगगिरि गजदंत कहाए ।
'गंध सुमादन' शैल मनोहर, स्वर्ण छवी युत चित्त लुभाए ।।
सिद्ध सु कूटनि॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपस्थगन्धमादनगजदन्तसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

पूर्णार्घ्य

द्रुमिल छंद

शुभ मंदर मेरु कही विदिशा, गजदंत सुचार विराजित हैं ।
पन सौ महयोजन ऊपर ही, जिनमंदिर शाश्वत साजित हैं ।।
इक सौ वसु श्री प्रतिमा सुहदा, प्रति मंदिर माँहि सुचित्त रमे ।
शुभ अर्घ्य प्रभो पद भेंट करें, जिनपूजक ये भव नाहिं भ्रमें ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

१.उत्तुंग

जयमाला

घत्ता छंद

पूजन जिनवर की, वसुगुणधर की, व्रतयमधर की नित्य करूँ।
पाऊँ शाश्वत गुण, त्यागूँ दुर्गुण, बनूँ महागुण मुक्ति वरूँ॥

त्रोटक छंद

शुभ पुष्कर अर्द्ध सु पूर्व सही, गजदंत गिरी की चार कही।
तिन पे बहु कूट विराजित हैं, इक सिद्ध सुकूटनि राजित है॥

जिस पे जिनमंदिर शोभित है, नरदेव सदा मन मोहित है।
इक सौ वसु बिंब सुमंदिर में, प्रभु वास करो मम अंदर में॥

मणिरत्नमयी सु लुभावत हैं, चित ये जिन नाम हि ध्यावत है।
शुभ नित्य सुमंगल देव करें, प्रभु नाम सदा सब विघ्न हरें॥

सुर पूजन को नित जावत हैं, प्रभु गीत सुमंगल गावत हैं।
बहु दुंदुभि वाद्य बजावत हैं, हम श्री जजि के हरषावत हैं॥

गजदंत जिनालय को जजि के, अविनश्वर चैत्य सदा भजि के।
चित पावन निर्मल खास हुआ, निज जीवन धन्य सु आज हुआ॥

पितु मात सखा मम भ्रात प्रभो! तव चर्ण जजूँ दिन रात विभो।
सब शाश्वत चैत्य प्रणाम करूँ, निज शीश सदा जिन पाद धरूँ॥

दोहा–चउ गजदंत विराजते, चउ जिनगृह अमलान।
चउशत बत्तिस जिन जजूँ, पाऊँ पद निर्वाण।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें॥
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

SarvatoPooja 08 / 156

(४७)

पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीप विजयार्द्ध जिनालय पूजन

अथ स्थापना

चउबोला छंद

सुरनर मुनि गण जिन भगवन् का, ध्यान रात दिन करते हैं।
जिनके दर्शन वंदन से भवि, दुःख दुरित सब हरते हैं॥
उन पावन परमेश्वर का हम, आह्वानन करने आये।
भक्ति पूजा अर्चन हेतु, जिन पद निज उर पधराये॥
दोहा–पूरब पुष्कर अर्द्ध में, रूप्याचल चौंतीस।
तिनके जिनगृह जिन जजूँ, आह्वानन कर ईश॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिन-बिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिन-बिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिन-बिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक

पायत्ता छंद

कलधौत कलश जय लाये, जिनपद में शीघ्र चढ़ाये।
जन्मादि रोग त्रय नाशैं, निज शाश्वत चित्त विकासैं॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिन-बिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

शुभ हिम सित मलयज लाके, जिनवर की पूज रचाके।
निज भव आताप नशाऊँ, चिर सुख वैभव मैं पाऊँ॥

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिन-बिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

मुक्ता सम अक्षत प्यारे, जिन जजूँ बोल जयकारे ।
हम शाश्वत पद को पायें, चरणों में शीश झुकायें ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सब ऋतु के सुमन मंगाऊँ, परमातम चरण चढ़ाऊँ ।
नशि काम होउँ अविकारी, जिनपद नित धोक हमारी ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

षट्रस मिश्रित मिष्ठाना, जिन पाद जजैं गुणवाना ।
करि के क्षुधादि का अंता, नित बसूँ पाद भगवंता ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

गौघृत के दीप सजाके, जिन आरति करि हर्षा के ।
त्रय मिथ्या तिमिर मिटाऊँ, केवल सुबोधि निज पाऊँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

दशविधि शुभ धूप बनाऊँ, जिन सम्मुख अग्नि जलाऊँ ।
मोहादि कर्म करि नष्टा, पायें शिव गुण निज अष्टा ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

श्रीफल आदिक ले आऊँ, श्री जिनवर अग्र चढ़ाऊँ ।
निज जीवन सफल बनाऊँ, अब मुक्ति महल को जाऊँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

रत्नाकर रत्न मँगा के, जिन पूजैं अर्घ बनाके ।
हम पद अनर्घ्य अभिलाषी, बनि जायें शिवपुर वासी ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

SarvatoPooja 08 / 157

दोहा–चउ आराधन नित करें, चउ अघ नाशन हेत ।
नंत चतुष्टय पा सकें, नश विधि मूल समेत ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–प्राची पुष्कर अर्द्ध में, रजताचल चउतीस ।
जिन सदना छत्तीस सौ, बाहत्तर जिन ईश ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

प्रभव छंद (तर्ज : मैं पंछी एक प्यासा...)

'कच्छा' सुदेश जिसमें, गणधर ऋद्धिधारी हैं ।
रूप्याचल जिनगृह को, पूजें गुण अधिकारी हैं ।।
शाश्वत सु बिंब सोहे, गतरागता जु बरसाती ।
पूजें सुर नर किन्नर, भवि आतम मोद मनाती ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहकच्छादेशस्थविजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

'सुकच्छा' देश जिसमें, अविरल बहती जिनधारा ।
श्री रजत शैल पर है, जिनमंदिर बहुत हि प्यारा ।। शाश्वत॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहसुकच्छादेशस्थविजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

शुभ देश 'महाकच्छा', सुर किन्नर बीन बजाए ।
विजयारध के जिनगृह, अरु जिन वंदन को आए ।। शाश्वत॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहमहाकच्छादेशस्थविजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

'कच्छकावति' ये देश, गाए जिन गौरव गाथा ।
रुप्याचल पर जिनगृह, जिसमें राजित जिननाथा ।। शाश्वत॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहकच्छकावतीदेशस्थविजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

'आवर्ता' देश प्यारा, मुनि क्षपक श्रेणि चढ़ते हैं ।
विजयार्द्ध गिरी राजित, जिनगृह वंदन करते हैं ।। शाश्वत॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहावर्तादेशस्थविजयार्द्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

'लांगल आवर्ता' देश, तीर्थंकर कृपा निराली ।
धरणीधर विजयारध, पर जिनगृह महिमाशाली ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहलाङ्गलावर्तादेशस्थविजयार्द्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

'पुष्कला' देश उत्तम, धन धान्य आदि संपूरित ।
विजयार्द्ध महीधर पे, जिनगृह मणिरत्नापूरित ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहपुष्कलादेशस्थविजयार्द्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

'पुष्कलावति' ये देश, श्रुतकेवली जहाँ रहते ।
रूप्याचल के जिनगृह, जिनवृष अनादि ये कहते ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहपुष्कलावतीदेशस्थविजयार्द्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

'वत्सा' सु देश जिनवर, शुभ समवशरण है प्यारा ।
रजताचल जिनमंदिर, का अतिशय अजब नजारा ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहवत्सादेशस्थविजयार्द्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

'सुवत्सा' देश मुनिगण, शाश्वत विचरण करते हैं ।
रूप्याचल चैत्यालय, पूजें अघ सब हरते हैं ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहसुवत्सादेशस्थविजयार्द्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

है देश 'महावत्सा', प्रभु श्रुत गुरु चित्त लुभाएँ ।
धरणीधर विजयारध, के चैत्यालय मन भाएँ ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहमहावत्सादेशस्थविजयार्द्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

सु देश 'वत्सकावती', जिन वृष प्रभावना भारी ।
उत्तुंग रजत तुंगा, जिस पर जिनगृह अघहारी ।। शाश्वत०

SarvatoPooja 08 / 158

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहवत्सकावतीदेशस्थविजयार्द्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

'रम्या' देश स्याद्वाद, शुभ रीति नित्य उच्चारे ।
रजताचल चैत्यालय, पूरब में इष्ट हमारे ।।
शाश्वत सु बिंब सोहे, गतरागता जु बरसाती ।
पूजें सुर नर किन्नर, भवि आतम मोद मनाती ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहरम्यादेशस्थविजयार्द्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

देश 'सुरम्यका' धन्य, जहँ मिथ्यामत पे ताले ।
विजयारध जिन भवना, शाश्वत जिनवर गुण गा ले ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहसुरम्यकादेशस्थविजयार्द्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

'रमणीया' देश नित्य, साधक सुभेद विज्ञानी ।
रूप्याचल पर शाश्वत, जिनसदन जजें निजध्यानी ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहरमणीयादेशस्थविजयार्द्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

'मंगलावति' शुभ देश, शाश्वत जिनधर्म हमारा ।
विजयारध के जिन गृह, देते हैं सौख्य अपारा ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहमङ्गलावतीदेशस्थविजयार्द्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

'पद्मा' सुदेश शाश्वत, ये मोक्षधरा कहलाती ।
रूप्याचल चैत्यालय, पूजन अर्चन मन भाती ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहपद्मादेशस्थविजयार्द्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

'सुपद्मा' देश उत्तम, पाखंड नहीं आडंबर ।
रजताचल के जिनगृह, मानो छूते हो अंबर ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहसुपद्मादेशस्थविजयार्द्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

शुभ देश 'महापद्मा', जिनवर नभ गमन निराला ।
रूप्याचल जिनगृह है, मानो भवि को सुखशाला ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहमहापद्मादेशस्थविजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

'पद्मकावती' रहती, जिन द्वादशांगमय वाणी ।
रजताचल जिनमंदिर, पूजूँ जु मोक्ष वरदानी ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहपद्मकावतीदेशस्थविजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

'शंखा' सुदेश प्राणी, पाएँ क्षायिक नव लब्धि ।
रजताचल चैत्यालय, जजि पाएँ आत्म उपलब्धि ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहशङ्खादेशस्थविजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

'नलिनी' सुदेश प्राणी, उत्तम संहनन सु पाएँ ।
विजयारध चैत्यालय, जजि अतिशय पुण्य कमाएँ ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहनलिनीदेशस्थविजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

देश 'कुमुद' नर पुंगव, कुत्सित मद को हरते हैं ।
रूप्याचल जिनगृह जजि, सुकृत से उर भरते हैं ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहकुमुददेशस्थविजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

है 'सरित' देश उत्तम, नर उत्तम ही गुण पावें ।
नित रजततुंग जिनगृह, जजि वैभव शिव का पावें ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहसरितदेशस्थविजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

'वप्रा' सु सौख्यकारी, यति नंत सौख्य जहँ पावें ।
रजताचल जिनगृह जजि, संपूर्ण मोह नश जावे ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहवप्रादेशस्थविजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।25।।

SarvatoPooja 08 / 159

'सुवप्रा' देश प्यारा, शिव पाने होय समर्था ।
विजयारध जिनगृह जजि, करते निज देह सु अर्था ।।
शाश्वत सु बिंब सोहे, गतरागता जु बरसाती ।
पूजें सुर नर किन्नर, भवि आतम मोद मनाती ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहसुवप्रादेशस्थविजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।26।।

है 'महावप्रा' माँहि, नित महाव्रती अलबेले ।
गिरी रूप्य जिनगृह जजि, निज वैभव लहें अकेले ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहमहावप्रादेशस्थविजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।27।।

'वप्रकावति' शुभ देश, लोकातिशायि जिन राजें ।
रूप्यगिरि जिनगृह में, इक शत वसु प्रतिमा साजें ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहवप्रकावतीदेशस्थविजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।28।।

'गंधा' सुदेश जिसमें, प्रत्यक्षज्ञानि मुनि ध्यानी ।
रजताचल चैत्यालय, शाश्वत निश्चित वरदानी ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहगन्धादेशस्थविजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।29।।

'सुगंधा' देश उत्तम, चक्री आदिक वैभव युत ।
विजयारध जिनमंदिर, जजता पाए निधि अद्भुत ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहसुगन्धादेशस्थविजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।30।।

'गंधिला' देश जिसमें, क्षायिक सम्यग्दृष्टि हों ।
रजताचल जिनगृह पे, जिन भक्ति सुधा वृष्टि हो ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहगन्धिलादेशस्थविजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।31।।

शुभ 'गंधमालिनी' में, भवि कर्मों का क्षय करते ।
रूप्याचल चैत्यालय, जजि मुक्ति अंगना वरते ।। शाश्वत०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहगन्धमालिनीदेशस्थविजयार्द्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।32।।

द्रुमिला छंद

शुभ पूरब पुष्कर अर्द्ध महा, महि कर्मनि क्षेत्र सदा भरते ।
विजयारध एक सुमध्य रहे, नव कूट तहाँ सुभगा वरते ।।
तिस पूर्व दिशा गत कूट कहे, जिनमंदिर ता पर शोभित है ।
मणिरत्नमयी प्रतिमा उसकी, जजते जिस पे सुर मोहित हैं ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।33।।

शुभ पूरब पुष्कर अर्द्ध महा, महि कर्मनि क्षेत्र एरावत है ।
रजताचल ता मधि शोभ रहा, सुर व्यंतर कूट जहाँ नव हैं ।।
तिस पूर्व दिशा गत कूट कहे, जिनमंदिर ता पर शोभित है ।
मणिरत्नमयी प्रतिमा उसकी, जजते जिस पे सुर मोहित हैं ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थविजयार्द्धपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।34।।

पूर्णार्घ्य

हाकलिका छंद

पुष्कर अरध सु पूरब में,
इक इक भरत एरावत में ।
रजत अचल जिन गेह कहे,
जिनवर अरचन मम नेह रहे ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिन-बिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता

जिनवर का वंदन, पाप निकंदन, हरि भव क्रंदन सौख्य वरें ।
रत्नत्रय पायें, कर्म नशायें, आतम ध्यायें मुक्ति वरें ।।

SarvatoPooja 08 / 160

तामरस छंद

जय जय पुष्कर अर्द्ध सु प्राची, रजतगिरी चउतीस सुराँची ।
जिनगृह पूर्व मुखी नित सोहे, इक गिरि पे इक मंदिर सोहे ।।

जिनसदना इक कोस सु लंबे, पुनि गृह आठ सु कोस हैं चौड़े ।
मुनि कही पौन सु कोस हु ऊँचे, जिनगृह शाश्वत नित्य समूचे ।।

जिनगृह सिद्धनि कूट विराजे, बहु विध तोरण घंट सुसाजे ।
रत्नमयी प्रतिमा अति प्यारी, करहुँ सके नहि वर्णन न्यारी ।।

जिनवर बिंब मनोहर सारे, दरशन से सब रोग निवारे ।
खम मृदुता समता रस धारा, नित नित नाश करे विधि कारा ।।

निरखत नयन न तृप्त हमारे, जिन गतरागि सदा अनियारे ।
सुर नर वंदन को नित जाके, अरचन पूज करे हरिषाके ।।

जिनवर भक्ति जहाँ नहिं होती, वृष अनुभूति कदा नहिं होती ।
चरित धरो निज आतम जानो, जिन लखि के निज को पहचानो ।।

करम निधत्ति निकाचित भागे, टिक न सके जिनदेवनि आगे ।
अतिशुभ भाव बना हम आए, जिनवर भक्ति करें शिव पाए ।।

वसुद्रव लेकर पूज रचाऊँ, अवगुण दोष रु कर्म नशाऊँ ।
प्रभु पद पंकज वास सु पाऊँ, शिव नहिं हो तबलौं रम जाऊँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिन-बिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(४८)

पूर्व पुष्करार्द्धद्वीपस्थ पुष्करवृक्ष शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजन

अथ स्थापना

हरिणी छंद (तर्ज : जयति भगवान..)

जिनवर गृहा पूर्वा श्री पुष्करार्द्ध सुनंदिता ।
नमन करते स्वामी आह्वाननं अति नंदिता ।।
विमल अरचा को आया मैं लिए शुभ भावना ।
नितप्रति जजता चैत्या चैत्यालया मन पावना ।।
दोहा–**प्राची पुष्कर द्वीप के, शाश्वत जिन तरु जान ।**
पुष्कर अरु शाल्मलि सुभग, पूजि बनो गुणवान ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थद्वयसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थद्वयसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थद्वयसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

आचलीबद्ध चौपाई छंद

प्रासुक मेघ पुष्प भर लाय, मृत्यु नशाने चरण चढ़ाय ।
महागुणवान, जिनपूजन दे केवलज्ञान ।।
पूरब पुष्कर के शुभ भाय, चैत्यवृक्ष जिन शीश झुकाय ।
महागुणवान, जिनपूजन दे केवलज्ञान ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थद्वयसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

मलयज ले जिन पूज रचाय, भवि का भव आताप नशाय ।
महागुणवान, जिनपूजन दे केवलज्ञान ।। पूरब०

SarvatoPooja 08 / 161

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थद्वयसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

धवल सुखद शुभ अक्षत सार, जिनपद धारि करुँ जयकार ।
महागुणवान, जिनपूजन दे केवलज्ञान ।।
पूरब पुष्कर के शुभ भाय, चैत्यवृक्ष जिन शीश झुकाय ।
महागुणवान, जिनपूजन दे केवलज्ञान ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थद्वयसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सर्वश्रेष्ठ शुभ सुमन मँगाय, रतिपति विजित जजि जिनराय ।
महागुणवान, जिनपूजन दे केवलज्ञान ।। पूरब०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थद्वयसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

चरुवर जिनपद अम्बुज लाय, क्षुधा दर्प को शीघ्र भगाय ।
महागुणवान, जिनपूजन दे केवलज्ञान ।। पूरब०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थद्वयसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

गौघृत दीप नयन सुख देय, जिन आरति करि सब बुध लेय ।
महागुणवान, जिनपूजन दे केवलज्ञान ।। पूरब०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थद्वयसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

जिनपद आगे धूप सुखेय, तिलअंजलि कर्मन को देय ।
महागुणवान, जिनपूजन दे केवलज्ञान ।। पूरब०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थद्वयसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

उत्तम फल भेंटूँ जिनपाद, नश्वर पद के तज उत्पात ।
महागुणवान, जिनपूजन दे केवलज्ञान ।। पूरब०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थद्वयसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

वसुविधि अर्घ जजें जिनराज, निश्चित पावें मुक्ति राज ।
महागुणवान, जिनपूजन दे केवलज्ञान ।। पूरब०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थद्वयसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा

प्राची पुष्कर द्वीप के, जजूँ उभय जिन वृक्ष ।
धारूँ संयम सकल शुभ, जीतूँ पाँचों अक्ष ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

तरलनयन छंद

जिनभगति मन हरसत, द्वयनयनन जल छलकत ।
उर गृह अब बस जिनवर, गुण नित नित प्रभु अघहर ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

लक्ष्मीधरा छंद

द्वीप है पूर्व श्री पुष्करार्द्ध महा,
पुष्करा वृक्ष सोहे जिनालै अहा ।
पूजता मेरु ईशान में राजता,
भाव ले निर्मला पाप संहारता ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपुष्करवृक्षस्थसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

उत्तमा भोग भूमि विषैं शोभिता,
मेरु नैऋत्य में शाल्मली मोहिता ।
दक्षिणा शाख पे चैत्य गेहा सदा,
पूजता भक्ति भावों युता हो मुदा ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिशाल्मलिवृक्षस्थसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

पूर्णार्घ्य

दोहा–उत्तर कुरु व देव कुरू, पुष्कर शाल्मलि वृक्ष ।
चैत्यालय जिन पूजकर, बनूँ स्वयं जित अक्ष ।।

SarvatoPooja 08 / 162

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थद्वयसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

अघ है दुखदायक, दुर्गतिनायक, पा लूँ क्षायिक भाव सगे ।
शाश्वत शिवदायक, शिवमगनायक, मुक्तीलायक शर्म जगे ।।

चामर छंद

पूर्व पुष्करार्द्ध के तरू कहे विशालते,
शाल्मली व पुष्करा सु दोउ पाप क्षालते ।
वृक्ष शाख रत्नयुक्त शोभिता जिनालया,
नित्य चारु शाश्वता सुभव्य को गुणालया ।।

रम्य चैत्य मंदिरं सुवर्ण रत्न मंडिता,
पुण्य अर्जिता शुभा व नित्य पाप खंडिता ।
अन्य तीन शाख पे सु व्यंतरानि आलया,
भक्ति से जजें सदा जिनेंद्र पुण्य शालया ।।

आज मैं सुभक्ति युक्त नित्य चैत्य अर्चिता,
कोटि कोटि सुप्रणाम देव चर्ण चर्चता ।
पाँच सौ धनू उतुंग चैत्य बिंब रम्यवान्,
अर्घ्य लेय पूजते, जिनेश गुण्य शक्तिमान् ।।

श्री जिनेंद्र पाद में सु चित्त नित्य रंजिता,
अंत्य श्वास लौं सदा हि नाम कर्ण गुंजिता ।
वासना विकार भाव हीन चित् अकाम हो,
भक्ति से चढ़ूँ प्रभो विशुद्ध सिद्ध धाम हो ।।

दोहा

पुष्कर शाल्मलि वृक्ष की, उत्तर दक्षिण शाख ।
क्रमशः थित चैत्यालया, चैत्य जजूँ रत्नाभ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थद्वयसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 08 / 163

(४९)

पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप भरतक्षेत्र भूतकालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

गीतिका छंद

पूर्व पुष्कर द्वीप माँहि, भरत क्षेत्र सुपावना ।
ध्यावता तीर्थेश अघहर, नित लिये शुभ भावना ।।
भाव शुद्ध बनाय चित् में, नित्य आह्वानन करें ।
भक्ति युत पूजन रचें अरु, मुक्ति वामा को वरें ।।

दोहा–पूरब पुष्कर द्वीप में, भरत क्षेत्र शुभ जान ।
मैं अतीत जिन पूजकर, पाऊँ क्षायिक ज्ञान ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकर-समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकर-समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकर-समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

विदित छंद (तर्ज - मेरी लगी गुरु संग...)

क्षीरोदधि का शुभ नीर, जिन पद धार करूँ ।
जन्मादिक रोग नशाय, शाश्वत सौख्य वरूँ ।।
जिनभक्ति है सुखकार, निशदिन चित्त धरूँ ।
होने भवदधि से पार, भक्ती नाव चढूँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

मलयागिरि चंदन लाय, सुचिर शांति पाऊँ ।
जिनपद में भक्ति बढ़ाय, आतम रमि जाऊँ ।। जिनभक्ति०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

तंदुल सित इन्दु समान, जिनपद की पूजा ।
पाऊँ अक्षत शुभ धाम, नहिं जिन सा दूजा ।। जिनभक्ति॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

शुभ पुष्प मधुप गुंजार, जिनपद नित अर्चूं ।
मिट जाये काम विकार, शिववामा चर्चूं ।। जिनभक्ति॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

स्वादिष्ट सु व्यंजन लाय, क्षुधा रोग नाशूँ ।
जिनवर पद पूज रचाय, मुक्ति अभिलाषूँ ।। जिनभक्ति॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

रत्नों के थाल सजाय, नीराजन होवे ।
जिनवर की आरति कर्म, कालिख को धोवे ।। जिनभक्ति॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

वसु विधि शुभ धूप जलाय, जिन सम्मुख खेऊँ ।
मम अष्ट कर्म जरि जाय, सिद्धन को सेऊँ ।। जिनभक्ति॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

श्रीफल आदिक जिनदेव, पद में नित्य धरूँ ।
भौतिक फल निष्फल एव, शिवफल नाथ वरूँ ।। जिनभक्ति॰

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

लिए उत्तम द्रव्य नाथ, तव पद आया हूँ ।
अविनाशी पद के हेतु, पूज रचाया हूँ ।। जिनभक्ति॰

SarvatoPooja 08 / 164

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–जिनवर पूजन अर्चना, भव दुख सब हर लेत ।
कर्म कलंक नशाय के, शिवपुर सुख भर देत ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–पुष्करार्ध पूरब दिशा, भूतकाल चौबीस ।
नमन करूँ शुभ भाव से, धरकर पद में शीश ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

रोला छंद

श्री 'दमनेन्द्र' जिनेश, प्रथम तीर्थंकर स्वामी ।
चरण शरण में ठौर, दीजे अन्तर्यामी ।।
पूरब पुष्कर द्वीप, भरत सुक्षेत्रन माँहि ।
भूतकाल चौबीस, पूजें भाव लगाई ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दमनेन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

तव पूजन से नाथ, दुष्ट करम झट भागे ।
'स्वामी मूर्त' हमार, भेद यथारथ जागे ।। पूरब॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मूर्तस्वामिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

भर उर समता भाव, राग रहित कर दीजे ।
हे 'विराग' भगवान, मेरे सब दुख छीजे ।। पूरब॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विरागजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

हे 'प्रलंब' जिनदेव, चरणन में रख लीजे ।
भवसागर से तार, नाथ विलंब न कीजे ।। पूरब॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रलम्बजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

'पृथ्वीपति' जिनदेव, आए शरण तिहारी ।
हम बालक निर्दोष, रखियो लाज हमारी ।। पूरब॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पृथ्वीपतिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

'चारित्रनिधि' जिनेश, हमको चारित देना ।
भँवर पड़ी मम नाव, हे प्रभु उसको खेना ।। पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री चारित्रनिधिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

'अपराजित' जिनदेव, जो जन तुमको ध्यावे ।
जोड़े चरणन प्रीत, हार कभी नहिं पावे ।। पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अपराजितजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

बोध प्रदाता देव, नाम 'सुबोधक' प्यारा ।
देय सुबोधी दान, जग से हो निस्तारा ।। पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुबोधकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

हे 'बुद्धीश' जिनेश, बोधि समाधी वर दो ।
मन जड़मति को देव, ज्ञानमती तुम कर दो ।। पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री बुद्धीशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दशवें तुम तीर्थेश, 'वैतालिक' भगवंता ।
तुम चरणनि को नित्य, ध्याते सब मुनि संता ।। पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वैतालिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

'त्रिमुष्टी' महाराज, तीन रतन हम चाहें ।
करके तप अति घोर, आठों कर्म नशाएँ ।। पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिमुष्टिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

तुमरा गुण व्याख्यान, हे 'मुनिबोध' मुनीशा ।
करते प्रतिदिन नित्य, नर सुर इंद्र गणेशा ।। पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिबोधजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

'तीर्थस्वामि' तीर्थेश, तेरा एक सहारा ।
जीवन तीरथ रूप, निर्मल होए हमारा ।। पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री तीर्थस्वामिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

'धर्मधीश' जिनदेव, धर्म के ईश कहाए ।
नेक सुसच्ची राह, तुम जग को बतलाए ।। पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्माधीशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

हे 'धरणेश' जिनेश, बात कहूँ मैं सच्ची ।
इस जग की गति चार, मोहे लगे न अच्छी ।।
पूरब पुष्कर द्वीप, भरत सुक्षेत्रन माँहि ।
भूतकाल चौबीस, पूजें भाव लगाई ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री धरणेशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

'प्रभवदेव' जिन आप, भव का अंत किया है ।
शिव सुख पाने आज, प्रण हमने सु किया है ।। पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रभवदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

'देवअनादी' काल, भ्रमण भ्रमत दुख पाया ।
पाकर नाथ सु आप, अन्य नहिं कोई भाया ।। पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनादिदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

पाएँ सदा हम देव, तव चरणों की छाया ।
हे 'अनादिप्रभु' मेट, पाप दुखों का साया ।। पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनादिप्रभुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

'सर्वतीर्थ' तुम नाम, सर्व दुखों का हारक ।
भवदधी में डूबे, भवि का है उद्धारक ।। पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वतीर्थजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

भगवन् आप अनूप, 'निरुपम' नाम तिहारा ।
आप बिठावन काज, मम मन आज बुहारा ।। पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निरुपमजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

'कौमारिक' तीर्थेश, यह जग है सब सपना ।
नहिं सगा कोई एक, गतरागि जिन अपना ।। पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कौमारिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

दीनों के तुम नाथ, हे 'विहारगृह' स्वामि ।
त्याग विकार कुभाव, होऊँ पूर्ण अकामी ।। पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विहारगृहजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

'धरणीश्वर' जिनदेव, करुणा के तुम सागर ।
करुणा के हम पात्र, भर दो मम लघु गागर ।। पूरब॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धरणीश्वरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

हे 'विकास' जिनदेव, तुमसे इतना कहना ।
तुम भक्ति में देव, बीते दिन अरु रैना ।। पूरब०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विकासदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

पूर्णार्घ्य

किरीट छंद

आज जगा मम पुण्य महा जिनदेव जजूँ वसु द्रव्य सजाकर ।
सर्व सुसिद्धि रु रिद्धि मिले जग, की अरु मुक्ति मिले गुण गाकर ।।
पूर्व दिशा शुभ पुष्कर आदि सु, क्षेत्र अतीत जिनेश सुधाकर ।
श्री जिनदेव विराज रहे जहँ, वो हि लहूँ पद पूज रचाकर ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दमनेन्द्रादिविकासदेवपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता

जय जिनवर ज्ञानी, परम प्रमाणी, हो वरदानी गुण गाऊँ ।
निर्मल चित करके, निज गुण परखें, संयम धरके शिव पाऊँ ।।

चौपाई

जय तीर्थंकर गुणधर स्वामी, तीन लोक में नित अविरामी ।
गर्भ जन्म तप ज्ञान उपाया, मोक्ष कल्याणक शक्र मनाया ।।

चार घाति नशि केवल ज्ञानी, अर्हत् दशा भव्य वरदानी ।
नभ मंडल तव होत विहारा, नहीं आपके कवलाहारा ।।

समवशरण वसु मंगल सोहे, प्रातिहार्य जन जन मन मोहे ।
तीन पीठ पर राजित ऐसे, तीन लोक का शिखर हु जैसे ।।

SarvatoPooja 08 / 166

आप अनंत चित्त गुणधारी, निर्मल अनुपम नित अविकारी ।
दर्शन कर भवि पुण्य कमाए, तीव्र पाप भी शीघ्र नशाए ।।

कर्म निधत्ति निकाचित धोवे, नाथ भक्ति ऐसा फल होवे ।
समवशरण में जन्म न होवे, नाँहि मृत्यु किसी की होवे ।।

रोग शोक किंचित नहि व्यापे, भव्य सु जीव रहें निज आपे ।
कोई उपशम सम्यक् पाये, कोई क्षायिक उसे बनाये ।।

क्षायोपशमक सम्यक् धारी, कोई अणुव्रति होय अगारी ।
अनगारी मुनि श्रमण जु कोई, ऋषि यति गुरु निर्ग्रन्थ सु होई ।।

कोइ केवली बने सयोगी, कोई श्रेणी चढ़े नियोगी ।
भाव सहित तीर्थंकर वंदें, नित्य शुद्ध आतम आनंदें ।।

जिनवर भक्ति मुक्ति की दाता, जो नित करे मोक्ष पद पाता ।
हे अतीत के भरत जिनेशा, तिन पद जजूँ बनूँ सिद्धेशा ।।

दोहा–भाव सहित चौबीस जिन, निज उर में पधराय ।
स्वर्गों में संशय नहीं, नंतर शिवपद पाय ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(५०)

पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप भरतक्षेत्र वर्तमान-कालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

रोला छंद (तर्ज - अहो जगत गुरुदेव...)

पूरब पुष्कर द्वीप, भरत हि संप्रति राजे ।
तीर्थंकर चउबीस, सुर नर पूजित साजे ।।
पंच कल्याण सहित, जिन का आह्वानन ।
श्रद्धा भक्ति समेत, करुँ नित पूजा वंदन ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

दोहा

क्षीरोदधि का नीर ले, नित पूजूँ जिनराज
जन्म जरा मृतु नाश हों, सफल होंय सब काज ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

शीतल हिम सित ले जजूँ, आत्मशांति के हेत ।
भवाताप चंदन हरे, देवे मुक्ति निकेत ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

क्षीर फेन सम धवल अति, तंदुल पुंज महान ।
अक्षत पद पाने सदा, जजूँ नित्य भगवान ।।

SarvatoPooja 09 / 167

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सब ऋतु पुष्प चिनायके, पूजूँ नित्य जिनंद ।
अविकारी पद पा सकूँ, लहूँ सदा स्वानंद ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

षट्रस मिश्रित वर चरू, ले पूजूँ तीर्थेश ।
क्षुधा आदि सब रोग नशि, पाऊँ स्वात्म जिनेश ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

दिव्य रत्न के दीप शुभ, नीराजन सुखकार ।
तीन तिमिर निर्मूल हों, लहूँ ज्ञान अविकार ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

धूप दशांगी तीर्थपद, पावक माँहि जराय ।
शुद्धातम गुण लहूँ वसु, वसु मोहादि नशाय ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

सर्वोत्तम फल लाय नित, पूजें नित्य जिनेन्द्र ।
नर भव सफल बनाय हम, बनें नरेन्द्र शिवेन्द्र ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

बहुविधि रत्न सँजोय के, अनरघ पद के काज ।
नित्य जजूँ तीर्थेश पद, लहूँ सिद्धि साम्राज ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

पूरब पुष्कर अर्द्ध में, वर्तमान तीर्थेश ।
भाव भक्ति युत पूजता, नमस्कार प्राणेश ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–वर्तमान जिनदेव जी, देवै शांति अपार
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, उतरूँ भव से पार ॥
इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

मुकुलोत्तर छन्द

'जगन्नाथ' जिनवर तव सेवा, देती मोक्ष महा पद मेवा ।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
तव पूज रचाऊँ रे ऽऽऽ भक्ति से मोद मनाके ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री जगन्नाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

हे जिननाम 'प्रभास' तिहारा, भविजन को बस एक सहारा ।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
भक्ति रस बरसे रेऽऽ, जिनवर चरणों में आके ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रभासनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

'स्वर स्वामी' हमको शुभ वर दो, मम जीवन संयम से भर दो ।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
तव ध्यान लगाऊँ रेऽऽ, आतम को शुद्ध बनाके ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वरस्वामीजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

भरतक्षेत्र के 'प्रभु भरतेशा', तुमको पूजें देव गणेशा ।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
समकित पा जाऊँ रे ऽऽ, प्रभुवर के दर पर आके ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री भरतेशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

'दीर्घानन' प्रभु आतम जेता, हो तुम मोक्ष पुरी के नेता ।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
मैं शिवपुर जाऊँ रे ऽऽ, तुम चरणन प्रीत बढ़ाके ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥

SarvatoPooja 09 / 168

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दीर्घाननजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

श्री 'विख्यातकीर्ति' कीर्तन कर, चहुँदिश कीर्ति बढ़े सुमिरन कर ।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
प्रभुवर गुण गा ले रे ऽऽ, पुण्यज नर तन को पाकर ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विख्यातकीर्तिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

'सिरीअवसानि' प्रभो हितंकर, पूजूँ मैं सप्तम तीर्थंकर ।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
मम भाग्य जगाऊँ रे ऽऽऽ, जिनवर पद पूज रचाके ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अवसानिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

बोधातम अब हमें दिला दो, 'प्रबोधनाथ' मन कलि खिला दो ।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
अघ तिमिर नशाऊँ रे ऽऽऽ, उर ज्ञान दीप प्रकटाके ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रबोधजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

तप बिन मिलता नहीं किनारा, 'तपोनाथ' अघ मेटो सारा ।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
पद शाश्वत पाऊँ रे ऽऽऽ, तप करिके कर्म खपाके ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री तपोनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

'पावकनाथ' आप पावक सम, कर दो मम मन शुभ कुंदन सम ।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
मन शुद्ध बनाऊँ रे ऽऽऽ, जिनवर की महिमा गाकर ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पावकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥10॥

त्रिविध कर्ममल मेरा मेटो, 'त्रिपुरेश्वर' मैं तुम सुत छोटो ।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥

पंचम गति पाऊँ रेऽऽऽ, सब जामन मरण मिटाके।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिपुरेश्वरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥11॥

'सौगतनाथ' आपकी संगत, भरती जीवन मे सुख रंगत।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
गत राग हो जाऊँ रेऽऽऽ, भई वीतरागी को ध्याके ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौगतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥12॥

वासव पूजित 'वासवनाथा', हम भी धरें चरण में माथा।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
बहु द्रव्य चढ़ाऊँ रेऽऽऽ, जिनवर के मंदिर जाके ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वासवनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥13॥

नाथ 'मनोहर' कितने प्यारे, लख नहि अघते नयन हमारे।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
रत्नत्रय पाऊँ रेऽऽऽ, भई जिनवर शरणा आके ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मनोहरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥14॥

'शुभ कर्मेश' शुभंकर स्वामी, तव पद पूज बनूँ निष्कामी।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
मैं मुनि बन जाऊँ रेऽऽऽ, गुरुदेव चरण में आके ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री शुभकर्मेशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥15॥

'इष्टसेवित' जिनेंद्र नियारे, मेटो सर्व अनिष्ट हमारे ।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
इच्छित फल पाऊँ रेऽऽऽ, भई जिनवर जाप लगाके ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री इष्टसेवितजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥16॥

SarvatoPooja 09 / 169

प्रभु 'विमलेंद्र' विमलगुण धारी, मम मन होय विमल अविकारी।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
मन विमल बनाऊँ रेऽऽऽ, भई जिनवर के गुण गाके ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विमलेन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥17॥

प्रभुवर 'धर्मवास' तुम आसा, मन में होय धर्म का वासा।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
निज में रम जाऊँ रेऽऽऽ, भई आतम ध्यान लगाके ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मवासजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥18॥

वंदूँ 'प्रसादनाथ' सुदाता, भवि को मिले चरण में साता।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
जग प्रीत घटाऊँ रेऽऽऽ, जिनवर से प्रीत बढ़ाके ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रसादनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥19॥

जिनवर 'प्रभमृगांक' की आभा, पाकर भाग्य सदा मम जागा।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
जिनध्वज फहराऊँ रेऽऽऽ, भई गगनचुंबी शिखरों पे ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रभामृगाङ्कजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥20॥

प्रभु 'उज्झित कलंक' पद मन हो, मेरा निष्कलंक जीवन हो।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
समता रस पाऊँ रेऽऽऽ, मैं सबसे मोह हटाके ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री उज्झितकलङ्कजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥21॥

परमौदारिक देह धराएँ, प्रभु 'स्फटिकप्रभ' देव कहाएँ ।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥

सब दोष मिटाऊँ रेऽऽऽ, निर्दोषी जिन को ध्याके ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्फटिकप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥22॥

सुनाथ 'गजेन्द्र' आपकी भक्ति, दे भवदधि तिरने की युक्ति।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
जयकार लगाऊँ रे ऽऽऽ जिनवर चरणों में आके ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री गजेन्द्रनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥23॥

करके ध्यान हुए तुम जेता, हे प्रभु 'ध्यानजयी' शिव नेता।
पूरब पुष्करार्द्ध के माँहि, क्षेत्र भरत संप्रति जिनराई ॥
मैं भी तर जाऊँ रे ऽऽऽ, तारणहारे को पाके ।
पूजूँ संप्रति जिनदेव, भई पुष्करार्द्ध में जाके ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री ध्यानजयजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥24॥

पूर्णार्घ्य

प्रहरनकलिका छंद (तर्ज - चालीसा)

अरघ तृतिय दीपज पल शुभ जो,
विनय सहित वंदन करि तुम को ।
भरत हि जिन संप्रति चउविस जो,
अरचत लहि निश्चय शिव सुख वो ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जगन्नाथादिध्यानजयपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

तीर्थंकर वंदन, पाप निकंदन, हो चितकुंदन अविकारी ।
जिनवर गुण गाके, संयम पाके, शिवपति ध्याऊँ सुखकारी ॥

SarvatoPooja 09 / 170

नरेन्द्र छंद

संप्रति भरतक्षेत्र जिन स्वामी, पुष्कर अर्द्ध निराला ।
वर्तमान तीर्थंकर पूजूँ, पाऊँ पुण्य विशाला ॥
क्षायिक सम्यग्दर्शन युत वे, मति श्रुत अवधी ज्ञानी ।
कश्चिद् क्षयउपशम वाले भी, पन मंगल अभिधानी ॥

दीक्षा लेते ही जिन मुनि ने, मौन साधना साधी ।
निर्मल चारित वृद्धिंगत कर, निज आतम आराधी ॥
मनपर्यय बुध नेक ऋद्धि युत, अती शुद्ध परिणामी ।
तिनके चरणों वंदन करते, सुर नरपति अविरामी ॥

वर्धमान संयम युत होते, होय न उपशम रूढ़ा ।
क्षायिक सम्यक् प्राप्त करें जिन, क्षपक श्रेणि आरूढ़ा ॥
अधःप्रवृत्त करण को करके, हों अष्टम गुण थानी ।
अनुभाग-स्थिति कांडक का वे, घात करें निज ध्यानी ॥

यहाँ निर्जरा किंतू क्षय ना, पुनि नवमें में आते ।
स्त्यानगृद्धित्रिक नरकगतिद्विक[१], तिरियगतिद्विक[२] घाते ॥
चार जाति आतप द्विक साधारणत्रिक सोलह नाशी ।
प्रत्याख्यान अप्रत्याख्यान क्षय करते अविनाशी ॥

वेद नपुंसक स्त्री विनाशे, नो कषाय छः नाशे ।
पुरुषवेद का क्षय करके फिर, क्रोध संज्वलन नाशे ॥
घात मान माया का करके, दसम थान में ज्ञानी ।
लोभ संज्वलन का क्षय करते, मुनी भेद विज्ञानी ॥

सूक्ष्म संपराय के अनंतर, क्षीण मोह कहलाते ।
निद्रा प्रचला मूल नाशकर, आगे बढ़ते जाते ॥
मतिश्रुत अवधि मनपर्यय अरु, केवलज्ञानावरणा ।
द्वितिय शुक्लध्यान के बल से, नशा ज्ञान आवरणा ॥

१. नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी २. तिर्यंचगति, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी

चक्षु अचक्षु अवधी रु केवल, दर्शनावरण नाशे ।
अरि रज हीन जिनेश्वर ने फिर, अंतराय पन नाशे ।।
दान लाभ भोगोपभोग अरु, तीर्थ विघ्न कर अंता ।
तेरहवें गुण थान पहुँचते, होते श्री अरिहंता ।।

त्रेसठ प्रकृति रहित जिनवर हैं, शेष बचीं पिच्चासी ।
चौदहवें गुण थान पहुँच जिन, तुरिय शुक्ल से नाशी ।।
अयोग केवलि ने उपांत में, प्रकृति बहत्तर नाशी ।
अंतिम समये प्रकृती तेरह, नाशि भए अविनाशी ।।

ऐसे सकल सिद्ध भगवन को, नमन अनंत हमारा ।
उनका चिंतन ध्यान हमारी, नशे नादि भव कारा ।।
भक्ति भावना सहित सदा हम, जिन पद शीश झुकाएँ ।
अतिशय पुण्य कमाकर हम भी, सिद्धिश्वर हो जाएँ ।।

दोहा—पूरब पुष्कर द्वीप में, भरतक्षेत्र शुभ थान ।
संप्रति तीर्थंकर जजूँ, पाने क्षायिक ज्ञान ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 09 / 171

(५१)

पूर्व पुष्करार्द्धद्वीप भरतक्षेत्र भविष्यत्कालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

नरेन्द्र छंद

पूरब पुष्कर अर्द्ध द्वीप में, भरत क्षेत्र अति प्यारा ।
तुरिय काल में दिखता है जहँ, वृष का अजब नजारा ।।
भावी तीर्थंकर चौबीसों, आह्वानन कर वंदें ।
भक्ती संस्तुति से अघ नाशें, निज गुण पा आनंदें ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

वसंततिलका छंद

क्षीरोधि निर्मल सुनीर जिनेश पूजूँ,
जन्मादि रोग नशि के चिद पंक धो लूँ ।
भावी जिनेन्द्र अरचूँ शुभ भक्ति युक्ता,
स्वात्मा लहें शिव स्वभाव शरीर मुक्ता ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

गोशीर चंदन कपूर मिलाय लाऊँ ।
आताप कर्म जनिता सब ही नशाऊँ ।। भावी जिनेन्द्र०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

मुक्ता समान शुभ अक्षत पुंज लाया ।
पूजूँ जिनेन्द्र पद अक्षय भाव भाया ।। भावी जिनेन्द्र०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

पुष्पांजली नशत काम विकार नित्यं ।
शुद्धात्म लीन रहके बनते सुसत्यं ।। भावी जिनेन्द्र०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

नैवेद्य थाल भरि के नित देव पूजूँ ।
नाशूँ क्षुधादि सब रोग जिनेश हूजूँ ।। भावी जिनेन्द्र०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

दीपावली करत दिव्य प्रकाश स्वामी ।
पूजें जिनेन्द्र पद निश्चय हो अकामी ।। भावी जिनेन्द्र०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

शुद्धाष्ट धूप कर ले, अनले सु खेऊँ ।
कर्माष्ट नष्ट करि के, गुण नंत सेऊँ ।। भावी जिनेन्द्र०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

सर्वोत्तमा सुफल ले जिनराज वंदूँ ।
स्वर्गादि मोक्ष फल पा नित आत्म नंदूँ ।। भावी जिनेन्द्र०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

लाऊँ सुरत्न बहुमूल्य जिनेश पूजूँ ।
सिद्धों समाँ निज विभूति लहूँ सु हूजूँ ।। भावी जिनेन्द्र०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

SarvatoPooja 09 / 172

दोहा–पूरब पुष्कर अर्द्ध में, भरत क्षेत्र शुभ थान ।
भावी तीर्थंकर जजूँ, करूँ आत्मकल्याण ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–पूजूँ भावि जिनेश को, वंदन कर शत बार ।
पार हमें प्रभु कीजिये, हम भटके मँझधार ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

चौपाई

श्री 'वसंतध्वज' देव सुवंदूँ, आप पूजि सब पाप निकंदूँ ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वसन्तध्वजजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

प्रभो 'त्रिजयंत' जो जय देते, त्रिविध[1] कर्म भवि के हर लेते ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिजयन्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

'त्रिस्तंभ' थिर मेरू समाना, तव लोहा सब जग ने माना ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिस्तम्भजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

जिन 'परब्रह्म' आत्म गुण लीना, निज अनुभव शुभ कोष नवीना ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परब्रह्मजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

देव 'अबालिश' पंचमेश जिन, मिले नहीं पंचम गति तुम बिन ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अबालिशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

नाथ 'प्रवादिक' नमते सुरगण, तव सुभक्ति में बीते हर क्षण ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रवादिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

---

१. द्रव्यकर्म, भावकर्म, नोकर्म

'भूमानंद' हरे भ्रम सारा, भ्रमण मेंटकर देय किनारा ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री भूमानन्दजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

सिरी 'त्रिनयन' नाथ जग ईशा, तव छवि निरखत नयन हमेशा ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिनयनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

आप श्रेष्ठ 'विद्वान' महेशा, तव पूजक बनते परमेशा ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विद्वाननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

श्री 'परमात्मप्रसंग' विरागी, आप प्रसंग करे मन त्यागी ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमात्मप्रसङ्गजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

जय 'भूमीन्द्र' देव गुणधारी, हरी निशा त्रयतम[1] की कारी ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री भूमीन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

'गोस्वामी' गोजनक जिनेशा, अक्षजयी तव नमन महेशा ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री गोस्वामिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

श्री 'कल्याण प्रकाशित' नमते, नमस्कार कर तुम सम बनते ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कल्याणप्रकाशित जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

अंतरंग बहि लक्ष्मी धारी, जय 'मंडल' जिनदेव सुखारी ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मण्डलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

'महावसू' वसुकर्म नशाए, वसु गुण आतम के प्रगटाए ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महावसूजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

१. मिथ्यात्वत्रय

'उदयवान' तीर्थंकर दाता, उदित भाग्य हो मिटे असाता ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री उदयवानजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

'दिव्यज्योति' जिन दिव्य सु वर दो, केवलज्ञान ज्योति उर भर दो ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिव्यज्योतिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

पावन 'प्रबोधेश' तुम अर्चा, मन विशुद्ध करती तव चर्चा ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रबोधेशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

जय हो श्री 'अभयांक' जिनंदा, भक्त आपका होय निशंका ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अभयाङ्कजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

नाथ 'प्रमित' मति सन्मति करना, दुर्गुण मेट गुणों से भरना ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रमितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

'दिव्यस्फारक' गौरवशाली, मेटी तुमने कर्मन जाली ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिव्यस्फारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

श्री 'व्रतस्वामि' सम्यक्व्रत दो, क्षपकश्रेणी का उत्तम रथ दो ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री व्रतस्वामिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

हे 'निधान' जिनवर तव शासन, मुक्ती का देता आश्वासन ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निधाननाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

नाथ 'त्रिकर्मा' कर्म नशाते, नमन करें कर रखकर माथे ।
पुष्करार्द्ध पूरब आनंदा, नमन भावि चौबीस जिनंदा ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिकर्मानाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

पूर्णार्घ्य

शुभगीत छंद

शुभ द्वीप पुष्कर भरत क्षेत्र, जिनेश भावि काल के ।
मैं पूजहुँ शुभ भक्ति संयुत, वसु दरव का थाल ले ।।
सुपूजकर भावी जिनों को, शुद्ध संयम पाऊँगा ।
सम्यक् सुबोधि प्राप्त करके, खुद प्रभु कहलाऊँगा ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वसन्तध्वजादित्रिकर्मनाथपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता—हम पूजें जिनवर, पाएँ गुण वर, कर्म नाशि कर, सिद्ध बनें ।
अघ सर्व नशायें, जिन गुण गायें, निज गुण पायें, नित्य घने ।।

पद्धरी छंद

जय श्री 'वसंतध्वज' तीर्थनाथ, जय 'त्रिजयंत' वसु कर्म घात ।
जय 'त्रिस्तंभ' गुणगण प्रवीन, जय 'परंब्रह्म' सुब्रह्म लीन ।।

जय 'अबालीश' शिव सौख्य दाय, जय तीर्थ 'प्रवादिक' मन बसाय ।
जय 'भूमानंद' वसुभूमि कंत, जय श्री 'त्रिनयन' शुभ नेत्रवंत ।।

जय श्री 'विद्वान्' विद्या अपार, जयश्री 'परमात्म प्रसंग' सार ।
जय श्री 'भुमीन्द्र' यजें सुरेश, जय श्री 'गोस्वामी' वृष युगेश ।।

जय श्री 'कल्याण' प्रकाशितेश, जय 'मंडल' जिन पूजूँ हमेश ।
जय 'महावसू' वसूकर्म जीत, जय 'उदयवान' भव्यन सुमीत ।।

जय 'दिव्य ज्योति' तिहुँ जग उद्योत, जय 'प्रबोधेश' यजि बोध होत ।
जय श्री 'अभयांक' अभय करेय, जय 'प्रमितदेव' सुज्ञान देय ।।

जय 'दिव्य स्फारक' गुण निधान, जय 'व्रत स्वामी' लहि व्रत महान ।
जय श्री 'निधान' वसु गुण संयुक्त, जय श्री 'त्रिकर्मा' सु शीघ्र मुक्त ।।

जय अघहारी जय गुणकरण्ड, जय मोह विनाशक मारतण्ड ।
जय वीतराग सर्वज्ञ देव, जय सुर नर मुनि तव करत सेव ।।

जय पूरब पुष्कर अर्द्ध माँहि, जय भरत क्षेत्र भावी जिनाय ।
चौबीस 'जिनेश्वर' मुक्ति दाय, तिन पद पूजें मन वचन काय ।।

दोहा—श्री जिनपद की अर्चना, भवोदधी का कूल ।
सर्व कुपथ तज के चलूँ, शिव पथ के अनुकूल ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(५२)

पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीप ऐरावत क्षेत्र भूतकालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

नरेन्द्र छंद

पूर्व सुपुष्कर अर्द्ध द्वीप में, ऐरावत है प्यारा ।
षट्कालों का परिवर्तन देखा जाता यहँ न्यारा ।।
दुखमा सुखमा काल के शिवदा, तीर्थंकर मन भाए ।
भूतकाल के धर्म प्रवर्तक, पुनि पुनि शीश नवाएँ ।।
दोहा—**भूतकाल के जानते, तीर्थंकर चौबीस ।**
आह्वानन कर पूजता, आ जाओ जगदीश ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ स्थापना

चामर छंद

पाद पद्म के समीप, नीर धार दीजिए ।
जन्म मृत्यु रोग को, तुरंत शांत कीजिए ।।
पूर्व पुष्करार्द्ध के, अतीत काल के सदा ।
श्री जिनेन्द्र पूजते, सुभक्ति भाव से मुदा ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

शुद्ध गंध लेय के, जजूँ जिनेंद्र पावने ।
हो भवोपशांत शीघ्र, सौख्य हो सुहावने ।।
पूर्व पुष्करार्द्ध के०

SarvatoPooja 09 / 175

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

अक्षतों के पुंज शुद्ध, नित्य पाद में धरूँ ।
भक्ति नाव में चढ़ूँ, गुणाक्षयम्बुधी वरूँ ।।
पूर्व पुष्करार्द्ध के, अतीत काल के सदा ।
श्री जिनेन्द्र पूजते, सुभक्ति भाव से मुदा ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

केतकी गुलाब पद्म, आदि पुष्प ले जजूँ ।
ब्रह्मचर्य की सुगंध, के प्रभाव से सजूँ ।।
पूर्व पुष्करार्द्ध के०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

इष्ट मिष्ट पक्व शुद्ध, ले पदार्थ अर्चता ।
नादि भूख नाशने, जिनेन्द्र पाद चर्चता ।।
पूर्व पुष्करार्द्ध के०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

रत्नदीप थाल ले, करूँ सुनित्य आरती ।
मोह नाश का उपाय, ये हि शीघ्र तारती ।।
पूर्व पुष्करार्द्ध के०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

श्री जिनेश अग्र शुद्ध, धूप आज खेवता ।
अष्ट कर्म नाश हेत, सेवता सु देवता ।।
पूर्व पुष्करार्द्ध के०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

श्री फलादि भाव युक्त आप चर्ण लायके ।
मोक्ष सौख्य के लिए, सुनाथ को चढ़ाय के ।।
पूर्व पुष्करार्द्ध के०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

अष्ट द्रव्य थाल ले, करूँ जिनेश वंदना ।
बोधिरत्न धार के, वरूँ सुमुक्ति अंगना ।।
पूर्व पुष्करार्द्ध के०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–**भूतकाल चौबीस जिन, ऐरावत के माँहि ।**
वंदन बारंबार जो, करे जगत भव नाँहि ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–**पूजूँ भूत जिनेश को, भाव सहित मन लाय ।**
भूत भूत सम छोड़ सब, गुण विभूति मिल जाय ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

मोतीदाम छंद (तर्ज : रची नगरी छह मास....)

जजूँ 'कृतिनाथ' जिनेंद्र महान, करें तप दर्श सुबोध प्रदान ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत[१] ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कृतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

प्रभो 'उपविष्ट' करो उर वास, सुपूरहि भक्तनि की सब आस ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री उपविष्टजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

सु 'देव अदित्य' करो सुप्रभात, करो भवि जीवन ज्ञान प्रकाश ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवादित्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

१. अत्यन्त पवित्र

SarvatoPooja 09 / 176

नमें तुमको जु 'अस्थानिक' देव, लहें उर सम्यकज्ञान सुमेव ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री आस्थानिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

'प्रचन्द्र' प्रभो तुम चंद्र समान, हरें भव पाप सुभक्ति प्रमाण ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रचन्द्रनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

धरा तुम वेष दिगम्बर रूप, जुँ पाए सु 'वेषिक' नाम अनूप ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वेषिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

जबै जग का तम दूर भगाएँ, तबै तुम नाम 'त्रिभानु' कहाय ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिभानुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

सु 'ब्रह्म' निजातम में लवलीन, हुए प्रभु पाय सुमोद प्रवीण ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री ब्रह्मजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

सु 'वज्रनिअंग' धरे प्रभु आप, किया तुम कर्मनि तेज प्रघात ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वज्राङ्गजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

जजें 'अविरोधि' जिनेंद्र सु ऐर, मिटाय सबे जु विरोधनि वैर ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अविरोधिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

'अपाप' प्रभो सब पाप नशाय, हमें दृढ़ कर्मनि धूल उड़ाए ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अपापजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

किया तुम लोकनि अंत निवास, जु 'लोक सु उत्तर' देय सुवास ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री लोकोत्तरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

प्रभो 'जलधी' भव नीर सुखाय, गहो मम हाथ रु होय सहाय ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री जलधिशेषजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

'विद्योत' प्रभो नमते तव पाद, किया निज आतम ज्ञान उजास ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विद्योतजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

'सुमेरु' प्रभो तुम मेरु समान, रहे हम पूज लहें सुख खान ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुमेरुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

प्रभो तुमने कु विभाव नशाय, तबे सु 'विभावित' नाथ कहाय ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विभावितजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

सु 'वत्सल' नाथ सु संगति पाय, सुभव्य अनादिन बैर भुलाय ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वत्सलजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

'जिनालय नाथ' महा सुख देत, सबे दुख पीर क्षणे हर लेत ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनालयनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

'तुषार' प्रभो तुम नाम सुजाप, हरे भवि जीवनि के सब पाप ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री तुषारनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

प्रभो 'भुवनेश' करूँ गुणमाल, बिठाय दियो मुझ लोकनि भाल ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री भुवनस्वामिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

गए शिवधाम तजे सब काम, विकार तजूँ जजुँ नाथ 'सुकाम' ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुकामजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

SarvatoPooja 09 / 177

नमूँ तुमको सिरि देवनि देव, करूँ शिव लौं तव पादनि सेव ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवाधिदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

'अकारिम' नाथ हरें विधि आठ, करो मम जीवन में सुख ठाठ ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अकारिमजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

रहे जिनके उर 'बिंबित' नाथ, लहें वर मुक्ति वधू चिर साथ ।
सुपुष्कर पूर्व इरावत भूत, नमूँ चउबीस जिनिंद सुपूत ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री बिम्बितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

पूर्णार्घ्य

शुभगीत छंद

जिनवरों की सुअर्चना शुभ, सद्गुणों का मूल है ।
जिन दर्श से निज दर्श होय, भक्ति भवदधि कूल है ।।
प्राची अधि पुष्कर इरावत, के अतीती जिनवरा ।
चौबीस श्री तीर्थेश जजत, लहुँ सुसिद्धों की धरा ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कृतिनाथादिबिम्बितपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता–जय जय जिनदेवा, तव पद सेवा, दे शिव मेवा, अविनाशी ।
श्री भूतकाल के, लोक भाल पे, राजित हैं जिन, अघनाशी ।।

शंभु छंद

श्री तीर्थ प्रभो त्रिभुवन स्वामी, तेरे चरणों में वंदन है ।
आतम स्वभाव को प्रकटाते, हरते भव्यों का क्रंदन है ।।
तेरे समान इस भव वन में, कोई ना भव्यसहायी है ।
अपने समान ही कर लेते, ऐसे मेरे जिनराई है ।।

ना शब्द अर्थ का संयोजन, ना कोई विधा कला अनुपम ।
फिर भी श्रद्धा वश करता हूँ, तव नंत गुणों से कुछ वर्णन ।।
हे नाथ आपने तप बलसे, कर्मों का बंधन तोड़ दिया ।
शाश्वत स्वभाव को अपनाया, निज को निज में ही लीन किया ।।

तुम राग द्वेष मोहादिक से, अत्यन्त विमुक्त हुए स्वामी ।
इसलिए आपका पद पाने, झुक गये जगत के अभिमानी ।।
संसार महावन में भगवन, कर्मों का चउदिश पहरा है ।
तुमको जाने विन भवभव में, अनगिन दुःखों ने घेरा है ।।

तेरी महिमा जग में फैली, तुम सबके दुःख मिटाते हो ।
तव दर पर आया हूँ भगवन, तुम अब क्यों देर लगाते हो ।।
है पुष्करार्द्ध के पूरब में, ऐरावत क्षेत्र सु बड़भागी ।
जहँ से अतीत तीर्थंकर ने, पाई सुमुक्ति बन शिवरागी ।।

मेरा भी पुण्य उदय आया, जो तुमसे प्रीत लगाई है ।
निश्चय वसु वसुधा पाऊँगा, विश्वास की ज्योति जलाई है ।।
जिनपूजा सम्यक् फलदायी, चाहे कैसा भी काल कोई ।
द्वय सुख वैभव अनुपम पावे, श्रद्धायुत पूजे जो सोई ।।

दोहा–सर्व गुणों के स्रोत हैं, तीर्थंकर भगवान ।
अर्घ चढ़ा पूजन करूँ, होवे अघ की हान ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 09 / 178

(५३)

पूर्वपुष्करार्द्धद्वीप ऐरावत क्षेत्र वर्तमान-कालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

हरिगीतिका छंद

सर्वज्ञ जिनवर वीतरागी, सर्व दोष विहीन हैं ।
सब लोक मंगल परम हितकर, शुद्ध आतम लीन हैं ।।
शुभ भाव निज चिन्मय बनाकर, कर रहे आह्वाननं ।
शाश्वत विराजो चित्त मेरे, नित करूँ मैं वंदनं ।।

दोहा–अंतिम मानुष द्वीप में, ऐरावत सुखकार ।
वर्तमान तीर्थेश जिन, पूजूँ ये अघहार ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

शंभु छंद

केवलरवि किरणों सम निर्मल, मैं अंबुसार लेकर आया ।
मम जन्म जरा मृतु रोग नशे, जिनदेव चरण धरि हर्षाया ।।
हे तीर्थंकर तव पद रज का, जो भी संस्पर्शन करते हैं ।
होकर वे अरि रज रहस हीन, शुद्धात्म दशा को वरते हैं ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

मम चेतन भवन अनादी से, अघ पावक में जलता आया ।
शुभ चंद्रकांत मणि जल सा शीतल, गंधसार जिन पद लाया ।।
श्रीमज्जिनेन्द्र के पद्मों की, जो भविजन पूजन करते हैं ।
शाश्वत शीतलता पा चिन्मय, अरु भवाताप को हरते हैं ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

शुभ स्वाति बूँद मुक्ता सम अक्षत अक्षत लेकर आये हैं ।
हैं हम अनादि से खण्ड खण्ड, अब अक्षय बनने आये हैं ।।
हे अक्षत जिन ! तव तप वैभव, अक्षय अनंत कहलाता है ।
निज शुद्ध आत्मवैभव पाने को, मम चित भी अब ललचाया है ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

शुद्धातम गंध लहूँ भगवन, श्री जिन चरणों में आए हैं ।
मन्मथ हरने को भगवन हम, अविकारि विमल मन लाए हैं ।।
सब ऋतु के पुष्प सु लाकर के, जिनपद में पुंज चढ़ाता हूँ ।
सब काम कामिनी को तजकर, निज शुद्धातम को ध्याता हूँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

ये क्षुधा आदि सब रोग शोक, सब देह धर्म कहलाते हैं ।
मिथ्यातम सम्मिश्रित चेतन, भव भोगों में रम जाते हैं ।।
श्री जिन पद में नैवेद्य चढ़ा, चिन्मयी अमृत नित पा जाऊँ ।
षट् रस मिश्रित मिष्ठानों में, मैं नहीं कभी भी रम पाऊँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

अर्केन्दु भानि ग्रह तारागण, जग का ही तिमिर भगाते हैं ।
चिन्मय प्रकाश शाश्वत पाने, गौ घृत मय दीप चढ़ाते हैं ।।
तुम केवलज्ञान सु दीपक से, तिहुँ लोक प्रकाशित करते हो ।
भव्यों के स्वात्म प्रदेशों में, चिन्मय प्रकाश नित भरते हो ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

दसविध शुभ धूप जलाकर भवि, जिनवर का अर्चन करते हैं ।
जिनवर के दर्शन वंदन से, भविजन नित निज अघ हरते हैं ।।
निज शाश्वत वैभव पाने को, भव त्यागि विभो शरणा आया ।
अष्टम वसुधा राजित प्रभु का, शाश्वत वैभव हमको भाया ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

भव तरु के फल सब भव वर्द्धक, रत्नत्रय फल पाने आया ।
सम्यक् श्रद्धा शिवमूल कहा, जिनवर पद में आ हर्षाया ।।
श्री जिनपद फल अर्पण करके, शाश्वत फल का विश्वास मिले ।
कर्मों की चिर कारा तोड़ूँ, चिन्मय अनंत आकाश मिले ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

शुभ नीर चढ़ा नीरज होकर, चंदन जजि क्रंदन नाश करूँ ।
अक्षत पुष्पों से नित्य ब्रह्म, नैवेद्य चढ़ा सब क्षुधा हरूँ ।।
शुभ दीप चढ़ा केवल बोधी, अरु धूप चढ़ा वसु गुण स्वामी ।
श्रीफल से शिवफल पाने को, हेतू अनर्घ्य वसु द्रव नामी ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा—जन्म आदि सब रोग नशि, पाऊँ अक्षय शांति ।
केवल बुध से शिव लहूँ, तजूँ सकल भवभ्रांति ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा—नाथ आपके दर्श तैं, मन अम्बुज खिल जाय ।
अर्घ चढ़ा तव पाद में, जन्म जरा नश जाय ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

मोटन छंद /मृदुल छंद (तर्ज-जीवन है पानी की बूँद)

'शंकर' नाथ जिनेन्द्र सदा, अर्चन से चित होय मुदा।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री शङ्करनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

'अक्ष सुवास' जिनेश महा, पूजक पूज्य बने सु अहा।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अक्षवासजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

'नग्न अधीप' जिनेश वरा, नष्ट करो मम काम धुरा।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री नग्नाधिपजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

'नग्न अधीपति' ईश सदा, भक्त वरे वर सौख्य मुदा।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री नग्नाधिपतीशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

पाप अपापनि नष्ट किया, चूर सदा विधिखंड किया।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री नष्टपाखण्डजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

'स्वप्न सुवेद' जिनेश मिले, देखत ही मन कुंज खिले।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वप्नवेदजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

नाथ 'तपोधन' धी धन दो, धर्ममयी मम जीवन हो।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री तपोधनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

'पुष्प सुकेतु' रहे मन में, केतु सुधर्म फिरे नभ में।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुष्पकेतुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

'धार्मिक' नाथ सनाथ करो, देय सुधर्म प्रभात करो।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री धार्मिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

SarvatoPooja 09 / 180

'चन्द्र सुकेतु' समा अपना, कोई नहीं जग है सपना।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्रकेतुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥10॥

हे 'अनुरक्तसुज्योति' प्रभो, मिटें सभी मम क्लेश विभो।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनुरक्तज्योतिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥11॥

श्री 'गतराग' जिनेश नमूँ, पाऊँ निवास सुलोक तनू।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वीतरागजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥12॥

नाथ 'उजोद' सुपूजन को, आए सभी मिल वंदन को।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री उद्योतजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥13॥

हे 'तम पेक्ष' जिनेंद्र प्रभो, मोह महातम मेट विभो।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री तमोपेक्षजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥14॥

श्री 'मधुनाद' सुअर्चन से, छूट जाए भवि बंधन से।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मधुनादजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥15॥

श्री 'मरुदेव' कृपा कर दो, संयम जीवन में भर दो।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मरूदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥16॥

श्री 'दमनाथ' सु नाम भला, ले कर पूज रचूँ सुफला।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री दमनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥17॥

जो 'वृषभेश' सु जाप जपें, पुण्य बढ़े सब पाप खपें।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृषभस्वामिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥18॥

नाथ 'शिलातन' भक्ति मुझे, नित्य सु आठहि याम रुचे।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री शिलातनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥19॥

'विश्वसुनाथ' मनावन को, भक्ति करें शुभ भावनि सो।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥20॥

नाथ 'महेंद्र' सु ध्यावत जो, केवलबोधि सु पावत वो।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महेन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥21॥

'नंद' जिनेश सुचित्त गहे, नंद सदा वसुनंदि लहें।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री नन्दजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥22॥

देव 'तमोहर' पावन सा, रूप सदा मन भावन सा।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री तमोहरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥23॥

'ब्रह्मज' नाथ सहायक हो, ब्रह्म बली तुम ज्ञायक हो।
पूरब पुष्करक्षेत्र इरा, संप्रति तीर्थ जजें सुखदा ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री ब्रह्मजजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥24॥

पूर्णार्घ्य

शुभगीत छंद

प्रवर्तमान सुशासना जिनका इरावत में महा।
प्राची पुष्कर अर्ध द्वीपज, जिन अरचकर सुख लहा।
कल्याण के आलय प्रभु दो, शुभ शरण अपनी मुझे।
केवल निधी की दो विधि अब, जानते हम बस तुझे ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शङ्करनाथादिब्रह्मजपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शान्तिधारा। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः। (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

शुभ शिवगुण पाने, पाप नशाने, शिवपुर पाने, धर्म धरें।
रत्नत्रय धरिके, चिद्गुण वरिके, दुर्गुण हरिके, कर्म हरें ॥

उभयलाघव छंद

वर्तमान तीर्थेश जिनेश्वर, वंदन करते नित्य सुरेश्वर।
रूप आपका अतिशय पावन, है सुगंध जिसमें मनभावन ॥

श्रम जल रहित सुदेह सुहावन, सूर्य लजावत लख निर्मल तन।
क्षीर गौर सम रुधिर बहे तन, तव सुनेह से सिंचित त्रिभुवन ॥

समचतुस्र संस्थान सुहावत, भव्यन के चित माँही समावत।
वज्रवृषभ नाराच सु संहनन, करते सुरगण तव अभिनंदन ॥

सहस अठोत्तर तन शुभ लक्षण, है तव तन में अनुपम कण कण।
देह समाया है अतुलित बल, अपराजित सब चक्री सुर दल ॥

प्रिय वाणी तव करती भवि हित, मानो अमृत बरस रहा नित।
तजने निज आतम का दूषण, लाते सुर नित वस्त्राभूषण ॥

हरने क्षुधा स्वर्ग से अनुपम, भोजन देव लायें अमृत सम।
तुम संग क्रीड़ा करें सुरासुर, तव संगति करने को आतुर ॥

उस क्षण के उत्सव को लखकर, अतिशय पुण्य कमाते सुरनर।
अतिशय पुण्य रूप जन्मातिशय, सब मिल बोलें तीर्थंकर जय ॥

केवल के अतिशय दस पावन, जिनवर सभा करे मोहित मन।
सुरकृत अतिशय चौदह अनुपम, गाते महिमा जिनकी सुर जन ॥

पूरब पुष्कर क्षेत्र इरावत, पुण्य भूमि को शीश नवावत।
वर्तमान वृषशासन नायक, तिन पद वंदों शिव सुख दायक ॥

दोहा–करूँ वंदना भाव से, वर्तमान तीर्थेश ।
तव गुण वर्णन करन से, होय कष्ट निःशेष ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 09 / 182

(५४)

पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीप ऐरावत क्षेत्र भविष्यत्कालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

अडिल्ल छंद

पुष्करार्द्ध के ऐरावत के जिनवरा ।
भावी काल के मैं पूजूँ भक्तिवरा ।।
शत इन्द्रों से देव अहर्निश वंदिता ।
करूँ आज आह्वानन हो अति नंदिता ।।

दोहा–भक्ति भाव वश अर्चता, भावी जिन तीर्थेश ।
तीन काल होने स्वयं, भावी जिन सिद्धेश ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धयैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

सोरठा

पूजन नित्य जिनेश, चंद्रकांति मणि नीर से ।
बनूँ स्वयं सिद्धेश, जन्म जरा मृतु नाशिके ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

उत्तम लेय सुवास, श्री जिनपद मैं नित जजूँ ।
भव आतप हो नाश, परम शांति मैं भी लहूँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

अक्षय पद के हेतु, तंदुल ले नित मैं जजूँ ।
मानो भवदधि सेतु, जिनवर का अर्चन सदा ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

दुःख देवे दिन रात, मन्मथ भव का मूल है ।
करने रतिपति घात, पुष्प चढ़ाकर जिन जजूँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

सरस सु व्यंजन लाय, जिनवर को नित मैं जजूँ ।
क्षुधा रोग नशि जाय, नित प्रति पूजा करन से ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

रत्नदीप नित लाय, अर्हद् आरति नित करूँ ।
संयम तप सुखदाय, केवलज्ञान प्रकट करें ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

दशविध धूप बनाय, सर्व केवली अर्चना ।
मोहनि कर्म जलाय, मैं भी अर्हत् बन सकूँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

सर्वश्रेष्ठ फल लाय, त्रैलोक्याधिपती भजूँ ।
शाश्वत सुख मिल जाय, अर्हत् पद में रमण करूँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

सुंदर अर्घ्य बनाय, रत्नाकर से रत्न ले ।
पद अनर्घ्य मिल जाय, तीनों संध्या नित जजूँ ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

SarvatoPooja 09 / 183

दोहा—पूरब पुष्कर अर्द्ध में, ऐरावत शुभ जान ।
भावी तीर्थंकर प्रभो, करुँ सदा गुणगान ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

जजें त्रिलोकीनाथ जिन, प्रणमें बारंबार ।
पूजन अर्चन वंदना, भक्ति का आधार ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

रोला छंद

नाथ 'यशोधर' आप, यश चहुँ जग में फैला ।
मैं आया तव पास, निर्मल हो मन मैला ।।
पूरब पुष्कर द्वीप, क्षेत्र सु ऐरावत के ।
पूजूँ भावि जिनेश, जास नशे दुख भव के ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री यशोधरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

'सुकृतनाथ' जिनेश, कृतकृत आप हो स्वामि ।
मैं कर पुण्य सुकाज, होऊँ पूर्ण अकामी ।। पूरब॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुकृतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

'अभयघोष' जिनदेव, दान अभय का करते ।
तव सन्निधि पा जीव, बैर जन्म का हरते ।। पूरब॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अभयघोषजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

श्री 'निर्वाण' महान, आप महा पद पाया ।
करके सब विधिचूर, मुक्ति वधू परिणाया ।। पूरब॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

श्री 'व्रतवास' जिनेश, व्रत धर कर्म खिपाए ।
शुभ व्रत पाने आज, आप शरण हम आए ।। पूरब॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री व्रतवासजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

श्री 'अतिराज' जिनेंद्र, राज पाठ जग त्यागा ।
होकर के निःसंग, शिवमग में मन लगा ।। पूरब॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अतिराजजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

'अश्वदेव' जिनदेव, पण इंद्रनि रथ तजके ।
हो गए आप सवार, रथ पंचमगति सजके ॥ पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अश्वदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

'अर्जुन' नाम महान, लक्ष्य सुपथ का साधा ।
शुक्लध्यान का बाण, कर्मनि उर में गाधा ॥ पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्जुनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

'तपश्चंद्र' जिनचंद्र, शीतल चंद्र समाना ।
भव से तपित जु जीव, उनका भव दुख हाना ॥ पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री तपश्चन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

'शारीरिक' जिनदेव, आप विगत देही हो ।
मैं नित देहनि सेव, करत निपट मोही हो ॥ पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री शारीरिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥10॥

श्री 'महेश' भगवान, अंतर बहि श्रीधारी ।
तारणहार जिनेश, हर लो पीर हमारी ॥ पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महेशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥11॥

श्री 'सुग्रीव' सुनाथ, श्रेष्ठ सुभग तुम ग्रीवा ।
लखकर रूपनि आप, होय सुखी सब जीवा ॥ पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुग्रीवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥12॥

'दृढप्रहार' जिनदेव, तुम दृढ़ कर्मनि बंधन ।
तोड़े कर दृढ़ वार, हो गए मुक्ति नंदन ॥ पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री दृढप्रहारजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥13॥

'अम्बरीक' जिनराज, आप सुबल के धारी ।
मैं निर्बल लाचार, रखियो लाज हमारी ॥ पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अम्बरीकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥14॥

'दयातीर्थ' तीर्थेश, करुणा के तुम सागर ।
हे करुणेश जिनेश, भर दो मेरी गागर ॥ पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री दयातीर्थजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥15॥

SarvatoPooja 09 / 184

'तुंबर' नाम तिहारि, देवे सौख्य अपारा ।
भवदधि का जिनदेव, दे दो शीघ्र किनारा ॥
पूरब पुष्कर द्वीप, क्षेत्र सु ऐरावत के ।
पूजूँ भावि जिनेश, जास नशे दुख भव के ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री तुम्बरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥16॥

'सर्वशील' जिनराज, शील महा तुम धारा ।
करते ब्रह्म विलास, मेटो मम दुख कारा ॥ पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वशीलजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥17॥

श्री 'प्रतिराज' जिनेश, भेदभाव तुम छाँटा ।
पुण्य रु पापनि दोय, बेड़ि समझ तुम काटा ॥ पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रतिराजजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥18॥

नाथ 'जितेन्द्रिय' आप, राग रु द्वेष विजेता ।
नावें पद में माथ, दो शिव शिवपुर नेता ॥ पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री जितेन्द्रियजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥19॥

'तपादित्य' जिनदेव, तप करि करम खिपाये ।
पाने शिव साम्राज्य, हम तव शरणा आये ॥ पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री तपादित्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥20॥

'रत्नाकर' जिनराज, त्रय रत्नों को धारा ।
रत्नत्रय वर देय, होय जगत निस्तारा ॥ पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री रत्नाकरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥21॥

जिनवर श्री 'देवेश', देवनि के तुम देवा ।
करके तुम पद सेव, लहूँ परम पद मेवा ॥ पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवेशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥22॥

श्री 'लांछन' जिनराज, आप सु आत्मविहारी ।
एक हजार जु आठ, शुभ लक्षण के धारी ॥ पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री लाञ्छनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥23॥

'सुप्रदेश' जिनदेव, आप परम पद पाया ।
अपने आत्म प्रदेश, मैं जिननाथ बिठाया ॥ पूरब॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुप्रदेशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥24॥

पूर्णार्घ्य

कुण्डलिया छंद

जजिए पुष्कर पूर्व के, भावी जिन उर माँहि ।
भव शिव सुख निश्चय मिले, इसमें संशय नाँहि ।।
इसमें संशय नाँहि, भवि जन भक्ति से सजिए ।
भव सुख वांछा छोड़, निराकुल जिनवर भजिए ।।
नर भव मिला अमोल, मोह माया सब तजिए ।
आतम हित के हेत, जिनेश्वर भावी जजिए ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री यशोधरादिसुप्रदेशपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

भावी तीर्थंकर, सर्व हितंकर, पूजूँ छवि अति मनहारी ।
उन सबको ध्याऊँ, शीश नवाऊँ, गुणगणगाऊँ अविकारी ।।

चौपाई

भावी तीर्थंकर चउबीसा, पूरब पुष्करार्द्ध जगदीशा ।
इंद्र नगेंद्र खगेंद्र सुपूजें, भव्य अर्च तुम सम ही हूजें ।।

तीर्थंकर नित अतिशयशाली, जिनका चिंतन नशे भवाली ।
अतिशय जन्मनि मुख्य बताए, केवल बुध के दस ही गाए ।।

चौदह अतिशय देव प्रधाना, तीर्थंकर प्रसिद्ध गुणमाना ।
अतिशय रूप सुगंधित देहा, स्वेद निहार न किंचित् एवा ।।

प्रिय हित वचन अतुलबलधारी, रुधिर श्वेत निर्मल अविकारी ।
लक्षण सहस रु आठ सुजानो, समचतुस्र संस्थान बखानो ।।

संहनन वज्र वृषभ नाराचा, सर्वोत्तम जग में अति साँचा ।
जिस बिन क्षायिक सम्यक् नाहीं, तीर्थंकर संहनन वो पाँही ।।

24

SarvatoPooja 09 / 185

गर्भ जन्म तव शुभ कल्याणा, इंद्रादिक कर मंगल नाना ।
दुर्द्धर तप कर केवलज्ञानी, तृतीय शुक्ल ध्यान युत ध्यानी ।।

दस अतिशय केवल के गाए, केवलि बिन ये अवर न पाए ।
योजन इक शत सुभिख बखाना, चउदिश चार शतक यूँ माना ।।

गगन गमन नित करें जिनेशा, चतुरानन केवलि तीर्थेशा ।
भविजन चतु आनन नित देखें, निश्चित आनन इक ही लेखें ।।

अदया भाव तहाँ ना होई, अरु उपसर्ग न केवलि कोई ।
कवलाहार रहित जिन स्वामी, अनिमिष दृष्टि सहित निष्कामी ।।

सब विद्या के ईश्वर नामी, नख अरु केश बढ़े नहिं स्वामी ।
छाया रहित दिव्य तव देहा, परमौदारिक भव्य सनेहा ।।

देव रचित चौदह भी जानो, अतिशय चौंतिस शास्त्र प्रमानो ।
नंत चतुष्टय धारक स्वामी, निश्चय वे होंगे शिवधामी ।।

अष्ट प्रातिहार्य जहाँ सोहें, वसु मंगल द्रव भवि मन मोहें ।
समवशरण का वैभव प्यारा, मानो स्वर्ग हि धरणि उतारा ।।

ऐसे जिनवर की थुति गाएँ, वीतरागता हम पा जाएँ ।
नशें घाति विधि केवलि होएँ, पूजन से सब अघमल धोएँ ।।

दोहा—पूरब पुष्कर अर्द्ध में, ऐरावत तीर्थेश ।
भावी जिनवर नित नमूँ, करूँ कर्म निःशेष ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(५५)

पूर्वपुष्करार्ध विदेह क्षेत्र तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

चउबोला छंद

पूरब पुष्करवर विदेह के, सम्प्रति के चउ श्री भगवान् ।
भद्रबाहू जिन सिरि भुजंगम, ईश्वर नेमि जिनवर जान ।।
अति निर्मल परिणाम बनाकर, पूजा करूँ लहूँ सुखधाम ।
आह्वानन संस्तुति अर्चन हितु, तीन योग से करूँ प्रणाम ।।
दोहा—पूरब पुष्कर द्वीप में, क्षेत्र विदेह सु थान ।
चउ तीर्थंकर भक्ति से, मिटे सकल अघखान ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणभद्रबाहुभुजंगमेश्वरनेमिप्रभचतुस्तीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणभद्रबाहुभुजंगमेश्वरनेमिप्रभचतुस्तीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणभद्रबाहुभुजंगमेश्वरनेमिप्रभचतुस्तीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

नरेन्द्र छंद

निर्मल जल की तीन धार दे, जिनवर पूज रचाऊँ ।
निज का शाश्वत वैभव पाने, तीनों रोग नशाऊँ ।।
पुष्कर द्वीप विदेह पूर्व में, चउ तीर्थंकर राजे ।
तिनकी अर्चन पूजन करके, सर्व अशुभ विधि भाजे ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणभद्रबाह्वादि चतुस्तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

चेतन की शीतलता पाने, जिनपद भेंटूँ चंदन ।
अतिशय पुण्य प्रदायक जग में, हरे भक्ति सब क्रंदन ।। पुष्कर ०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणभद्रबाह्वादि चतुस्तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

अक्षत सम मैं भी जीवन में, अक्षत गरिमा पाऊँ ।
तीर्थंकर के चरण कमल द्वय, निज उर नित्य बसाऊँ ।।
पुष्कर द्वीप विदेह पूर्व में, चउ तीर्थंकर राजे ।
तिनकी अर्चन पूजन करके, सर्व अशुभ विधि भाजे ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणभद्रबाह्वादिचतुस्तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

गंध हीन भी पुष्प विश्व में, चित को दूषित करता ।
जिनपद भेंटूँ श्रेष्ठ सुमन तो, सकल वासना हरता ।। पुष्कर०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणभद्रबाह्वादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

षट्रस मिश्रित नाना व्यंजन, खाकर क्षुधा न नशती ।
जिनपद पूजा अर्चन से ही, निश्चित क्षुधा विनशती ।। पुष्कर०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणभद्रबाह्वादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

दीपक तम हारक कहलाता, मम चित क्यों न प्रकाशे ।
भक्तिभाव से जिनपद पूजूँ, शाश्वत चित्त प्रकाशे ।। पुष्कर०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणभद्रबाह्वादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

अलिसम मन मकरंद लोलुपी, धूप हुताशन खेता ।
धूप खेय निज कर्म जलाये, तभी बनें विधि जेता ।। पुष्कर०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणभद्रबाह्वादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

लौकिक फल की नहीं कामना, इनको तजने आया ।
शिवफल परम अलौकिक स्वामी, पाने श्री फल लाया ।। पुष्कर०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणभद्रबाह्वादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

जग की नश्वर सर्व वस्तुएँ, मूल्यहीन सी पाता ।
शाश्वत सिद्ध अनर्घ बनूँ मैं, जासो अर्घ चढ़ाता ।। पुष्कर०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणभद्रबाह्वादि-चतुस्तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा—नीरादिक वसु द्रव्य ले, पूजूँ परम जिनेश ।
शाश्वत तव गुण पा सकूँ, यह वर दो सिद्धेश ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

प्राची पुष्कर अर्द्ध में, विद्यमान तीर्थेश ।
भाव सहित कर वंदना, बनूँ नित्य ब्रह्मेश ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

विधाता छंद (तर्ज - तुम्हारे दर्श बिन स्वामी...)

मेरु मंदर दिशा पूरब, नदी सीता सु उत्तर में ।
'भद्रबाहू' प्रभो शासन, सदा जयवंत हो जग में ।।
सु पुष्कर द्वीप पूरब में, विदेहा क्षेत्र के अंदर ।
नमन उनको त्रियोगों से, विराजित हैं जु तीर्थंकर ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीभद्रबाहु-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

मेरु मंदर दिशा पूरब, नदी सीता सु दक्षिण में ।
'भुजंगम' देव का शासन, सदा जयवंत हो जग में ।। सु पुष्कर०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीभुजङ्गम-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

मेरु मंदर दिशा पश्चिम, सितोदा के सु दक्षिण में ।
नाथ 'ईश्वर' प्रभो शासन, सदा जयवंत हो जग में ।। सु पुष्कर०

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीईश्वरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

मेरु मंदिर दिशा पश्चिम, सितोदा के सु उत्तर में ।
'नेमिप्रभ' देव शुभ शासन, सदा जयवंत हो जग में ।। सु पुष्कर०

SarvatoPooja 10 / 187

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीनेमिप्रभ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

पूर्णार्घ्य

दोहा

चार जिनेश्वर नित रहें, विद्यमान श्रीमान ।
सदा अर्घ्य अर्पण करूँ, चित्त धरूँ तव ध्यान ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीभद्रबाह्वादि-चतुस्तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

जय जय श्रीचंदा, अमित अनंदा, नशि भवफंदा, कर्म नशूँ ।
नित मंगल गाके, पूज रचाके, चित हर्षा के, मुक्ति बसूँ ।।

शेर चाल

पूर्व पुष्करार्द्ध में विदेह क्षेत्र है ।
तीर्थेश विद्यमान सु रहते सदैव हैं ।।
बत्तीस एक काल में होना सुशक्य है ।
न्यून चार से तहाँ होना अशक्य है ।।१।।

धर्म की प्रभावना सु नित्य करे हैं ।
सम्यक्त्व ज्ञान व्रत तहाँ भव्य धरे हैं ।।
गत राग द्वेष हीन सर्वज्ञ देव हैं ।
हितकर सु जीव मात्र के जिन विश्वदेव हैं ।।२।।

कल्याण पाँच तीन वहाँ दो भी संभवा ।
पूजन करूँ जिनेन्द्र कि नित आत्मगुण भवा ।।
तीर्थेश भद्रबाहु निश्चित सुभद्र हैं ।
दर्शन करें जे भव्य वे भी होत भद्र हैं ।।३।।

नाथ भुजंगम विधि भुजंग हरे हैं ।
निर्मल सुचित्त भव्य को सुख शांति करे है ।।
द्रव्य भाव कर्म नो नाश कर सही ।
प्राप्त करें लोक अग्र आठवीं मही ।।४।।

सर्वात्म गुणों के ही आप ईश कहाए ।
आसन्न भव्य पूजते निधीश को पाए ।।
ईश्वर जिनेश पूजके निज ईश जान लूँ ।
मम शक्ति सिद्ध सम कही ये बात मान लूँ ।।५।।

'नेमिप्रभ' नेमधरि चउ कर्म विनाशे ।
तव भक्ति थुति वंदना मम चित्त विकासे ।।
संयम नियम को धार तप सु साधना करें ।
रत्नत्रय की तरणि पा भव सिंधु को तरें ।।६।।

दोहा

पूरब पुष्कर द्वीप के, विद्यमान तीर्थेश ।
चउ आराधना जिन चउ, जजूँ बनूँ मुक्तेश ।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थभद्रबाहुभुजङ्गमेश्वर-नेमिप्रभविहरमाणचतुस्तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 10 / 188

(५६)

विद्युन्माली मेरु पूजन

अथ स्थापना

मधुमालती छंद

मेरु सुविद्युन्मालि ये शुभ पाँचवा अभिराम है ।
जो पूजता शुभ भक्ति से होता स्वयं निष्काम है ।।
चैत्य युत जिनभवन सोलह पूजने वसु याम में ।
पूजता आह्वान करके भक्ति करहुँ प्रणाम मैं ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिन-बिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिन-बिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिन-बिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

पदाकुलक छंद (तर्ज - तारों सा चमकता...)

हम नित्य जजें जिन चैत्य भवन, क्षीरोदधि से जल लाकर के ।
त्रयरोग निवारक नित्य भजन, भवि भक्ति करें मन हरषा के ।।
विद्युन्माली के चैत्य सदन, नित पुण्य खजाने भरते हैं ।
इस कारण ही इन चैत्यों की, हम सदा वंदना करते हैं ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिन-बिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

जगतीतल के शुभ चंदन ला, हम जिनवर चरण चढ़ाते हैं ।
आतम के ताप त्रयी नशने, हम पूजत नहीं अघाते हैं ।।
विद्युन्मालि के०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

अक्षयपद पाने अक्षत को, जिन चरण चढ़ाने आए हैं ।
क्षत विक्षत हों सब पद भव के, शिव अक्षय पद ललचाए हैं ।।
विद्युन्मालि के०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सुमनों सा अपना चित्त बना, सुरतरु के सुमन चढ़ाता हूँ ।
मैं निर्विकार निष्काम बनूँ, श्री जिनवर पूज रचाता हूँ ।।
विद्युन्मालि के०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

जग के सब खाद्य पदारथ को, खाकर न तृप्त हो पाया हूँ ।
जिनवर के चरण चढ़ाने को, उत्तम चरुवर मैं लाया हूँ ।।
विद्युन्मालि के०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

दिनकर इन्दू भानी जग में, अपना प्रकाश फैलाते हैं ।
शुभ केवल ज्योती को पाने, गौ घृत के दीप चढ़ाते हैं ।।
विद्युन्मालि के०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

हम धूप दशांगी लेकर के, वैश्वानर में खेने आए ।
हों नष्ट अष्टविध विधि मेरे, अतएव चैत्यगुण नित गाएँ ।।
विद्युन्मालि के०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

श्रीफल से श्रीपद मिलता है, अतएव चढ़ाते श्री फल को ।
हर एक घड़ी अनमोल कही, मत व्यर्थ गँवाना इक पल को ।।
विद्युन्मालि के०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

जल चंदन आदिक द्रव्य वसू, जिनभवन चैत्य को अर्पित हैं ।
अब शुद्ध निजातम गुण पाने, मम चित्त सदा सुसमर्पित है ।।
विद्युन्मालि के चैत्य सदन, नित पुण्य खजाने भरते हैं ।
इस कारण ही इन चैत्यों की, हम सदा वंदना करते हैं ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–विद्युन्माली मेरु के, सोलह भवन पवित्र ।
भक्ति करें पूजक लहें, यथाख्यात चारित्र ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

विद्युन्माली मेरु के, सोलह जिनवर गेह ।
उनमें राजित बिंब को, नमन सदा धर नेह ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

नरेन्द्र छंद

भद्रसाल वन प्रथम मनोहर, मेरू तल में जानो ।
पूर्व दिशागत चैत्यालय शुभ, चैत्य मनोहर मानो ।
पश्चिम पुष्कर द्वीप संबंधि, मेरू विद्युन्माली ।
अर्घ्य चढ़ाए सब जिनवर को, भर-भर रतनन थाली ।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

चउ-चउ गोपुर द्वारों युत शुभ, मणिमय त्रय परकोटा ।
ता मधि जिनवर सदन बना है, सुंदर बहुत अनूठा ।।
पश्चिम पुष्कर०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

पश्चिम दिश जिन सदन मनोहर, ताकी महिमा न्यारी ।
नील केश युत उन भवनों में, जिनवर प्रतिमा प्यारी ।।
पश्चिम पुष्कर०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

उत्तर में जिन भवन मध्य जिन, प्रतिमाओं की महिमा ।
चँवर ढुरें चौंसठ जिनवर पर, ताकी अद्भुत गरिमा ।।
पश्चिम पुष्कर०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थोत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

नंदन वन की पूरब दिश में, देव भक्ति से जाते ।
शुभ्र चैत्य चैत्यालय की नित, पूजा पाठ रचाते ।।
पश्चिम पुष्कर०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

दक्षिण दिश जिनबिंब पार्श्व में, श्री युत देवी प्रतिमा ।
अरु सानत सर्वाह्न यक्ष भी, बतलाते जिन महिमा ।।
पश्चिम पुष्कर०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

पश्चिम दिश में जाय जजूँ मैं, अर्हत् बिंब निराले ।
जिनकी अर्चा से काटें भवि, भव-भव कर्मनि ताले ।।
पश्चिम पुष्कर०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

उत्तर दिश जिन चैत्यालय की, महिमा बड़ी निराली ।
एक बार वंदन करने से, मिटती शीघ्र भवाली ।।
पश्चिम पुष्कर०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिनन्दनवनस्थोत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

विद्युन्माली कटनी पर सौमनस अख्य[१] अति सुंदर ।
ताकी पूर्व दिशा में अद्भुत, साज रहा इक मंदिर ।।
पश्चिम पुष्कर द्वीप संबंधि, मेरू विद्युन्माली ।
अर्घ्य चढ़ाए सब जिनवर को, भर-भर रतनन थाली ।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दक्षिण दिश जिन मंदिर वैभव, सुरगण का मन मोहे ।
अष्ट सुमंगल द्रव्य सभी शत, आठ वेदि से सोहे ।।
पश्चिम पुष्कर०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

नमन करूँ पश्चिम दिश चैत्यालय जो अतिशयकारी ।
तिनके दर्शन से कटता है, शैल कर्म का भारी ।।
पश्चिम पुष्कर०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

उत्तर दिश जिन चैत्य वंदना, भव का ताप नशाती ।
उनकी अर्चा से भवि बनते, सिद्ध प्रभो के साथी ।।
पश्चिम पुष्कर०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिसौमनसवनस्थोत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

पांडुकवन की पूर्व दिशागत, चैत्यालय अघहारी ।
वहाँ विराजे सब जिनबिंबों, को नित धोक हमारी ।।
पश्चिम पुष्कर०

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिपाण्डुकवनस्थपूर्वदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

---

१. वन

पांडुकवन की दक्षिण दिश में, जिनगृह जिनप्रतिमाएँ ।
इन्द्र मुनींद्र रु विद्याधर नित, पूजें मंगल गाएँ ॥
पश्चिम पुष्कर॰

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिपाण्डुकवनस्थदक्षिणदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥14॥

दिशा प्रतीचि में जिनगृह पर, ध्वजा फहरती मनहर ।
देख उसे मन आनंदित हो, जिनवर अर्चा अघहर ॥
पश्चिम पुष्कर॰

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिपाण्डुकवनस्थपश्चिमदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥15॥

दिशा उदीची पांडुक वन का, चैत्यालय शुभ पावन ।
उसकी हर वीथी में सोहे, मानथंभ मन भावन ॥
पश्चिम पुष्कर॰

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिपाण्डुकवनस्थोत्तरदिग्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥16॥

पूर्णार्घ्य

सवैया छंद (तर्ज - भला किसी का...)

पुष्करार्द्ध पश्चिम दिश मधि में, विद्युन्माली मेरू महान ।
जहाँ विराजे शाश्वत जिनवर, पंच शतक धनु तुंग प्रमान ॥
इनका अर्चन वंदन पूजन, अरु करते जो जिन गुण गान ।
श्रेष्ठ संपदा जग की पाकर, प्राप्त करें फिर पद निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता–गिरि विद्युन्माली, सिद्ध गुणाली, भविजन पूजें गुण हेतू ।
शुभ भक्ती वंदन, पाप निकंदन, पूजा अर्चन शिव सेतू ॥

शंभु छन्द

विद्युन्माली के चैत्यालय, सोलह सुखकारी मनभावन ।
शाश्वत जिन बिंब विराजित हैं, बरसे जिनभक्ति का सावन ॥
श्री भद्रशाल वन प्रभु वंदूँ, नंदन वन के जिन अभिनंदूँ ।
सौमनस विपिन के चैत्य जजूँ, पांडुक वन के जिनबिंब भजूँ ॥१॥

पांडुक वन में चउ शिल राजित, पांडुक अरु पांडुकंबला हैं ।
रक्ता अरु रक्तकंबला हैं, आकृति ज्यों अर्द्ध चंद्रमा है ॥
ऐशानादी विदिशाओं में, क्रम से सोहें शुभ त्रय आसन ।
शुभ वृत्त आकृती मणि निर्मित, एक सिंहासन दो भद्रासन ॥२॥

सिंहासन पर जिन बालक का, जन्माभिषेक होता सुनेह ।
शुभ क्षेत्र भरत पश्चिम विदेह, अरु ऐरावत प्राची विदेह ॥
दो भद्रासन दो पार्श्वभाग, सौधर्म इंद्र ईशान साज ।
जिन बालक मध्य दोऊ ओर, दो इंद्र विराजे न्हवन काज ॥३॥

प्रत्येक विपिन वापी पर्वत, कल्पद्रुम कूटों से शोभित ।
चैत्यालय बिम्ब सदा करते, आसन्न भव्य का मन मोहित ॥
श्रद्धावश निज उर भाव लिए, मेरू पूजन को अनुरंजित ।
हर आत्म प्रदेश प्रभो मेरा, जिनगुण चिंतन से हो रंजित ॥४॥

दोहा–विद्युन्माली शोभते, मणिमय जिन अभिराम ।
उन सबको शुभ भाव से, करता नित्य प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ॥
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

(५७)

पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीप कुलाचल जिनालय पूजन

अथ स्थापना

मद्‌अवलिप्त कपोल छंद

ढाई द्वीप के मधि अर्द्ध पुष्करवर राजे ।
हिमवन आदि विशेष कुलाचल छह तहँ साजे ।।
तिन ऊपर जिनदेव जिनालय शाश्वत सोहें ।
आह्वानन करि जजें नित्य सुरनर मन मोहें ।।
दोहा–पश्चिम पुष्कर द्वीप के, दिव्य कुलाचल श्रेष्ठ ।
जो जिनमंदिर जिन जजें, बनें लोक में ज्येष्ठ ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलास्थषड्‌जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलास्थषड्‌जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलास्थषड्‌जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

विष्णु पद (तर्ज : कहाँ गए चक्री...)

चंद्रकांतमणि से निःसृत जल, जिन पद में लाया ।
जन्मादिक त्रय रोग नशाने, जिन शरणा आया ।।
पश्चिम पुष्कर अर्द्ध द्वीप के, षट् कुलगिरि जानो ।
जिन मंदिर जिन पूजें भवि जन, पुण्यवंत मानो ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलास्थषड्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

भवाताप से तपकर क्रंदन, करते जगप्राणी ।
चंदन जजि जिन पद शिव होते, ये जिनवर वाणी ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलास्थषड्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

क्षत क्षत देह हुआ नरकों में, पल पल दुख पाया ।
शालि जिनपद जिनने चढ़ाया, अक्षय पद पाया ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलास्थषड्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो ऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

इन्द्रिय सुखकर सुमन मनोहर, जिनचरणा लाया ।
निर्विकार मदनेश विजेता, होने अब आया ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलास्थषड्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

स्वातम रस को चखूँ निरंतर, स्वातम में निवसूँ ।
चरुवर जिनवर चर्ण चढ़ाकर, रोग क्षुधा विनशूँ ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलास्थषड्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

निज आतम को दीप बनाने, घृत दीपक वारा ।
अंतर ज्ञान ज्योति हितु नाशूँ, चेतन तम सारा ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलास्थषड्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

निज स्वभाव की गंध सु पाने, वसुविध गंध धरूँ ।
शुद्धातम के वसुगुण पाने, वामा मुक्ति वरूँ ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलास्थषड्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

सर्वोत्तम फल पाने जिनवर, श्रीफल हम लाये ।
रत्नत्रय को पाकर भगवन्, भवदधि तर जायें ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलास्थषड्‌जिनालयजिनबिम्बेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

वसुविध द्रव्य बनाकर सुंदर, अर्घ्य बना लाए ।
अनर्घ्य पद के प्राप्त करन को, जिन मंदिर आए ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलास्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो ऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा–जिनवर के गुण पुंज पर, लीन हुआ मम चित्त ।
वसुगुण शिव के पा सकूँ, अर्चन उसी निमित्त ॥

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

करांजली में पुष्प ले, पूजूँ श्री भगवान ।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, होय कर्म की हान ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

भुजंगप्रयात छंद (तर्ज - नरेन्द्रं फणेन्द्रं...)

सु हिम्वन् गिरी हेमवर्णी समानी ।
नहीं तास चैत्यों कि है कोई सानी ।
प्रतीची सुपुष्कर् जहाँ पर्वता है ।
नमूँ चैत्य चैत्यालया शुभ्रता दें ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिहिमवन्पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

महाहिमवना तुंग दूजा कहाता ।
वहाँ के सभी चैत्य को शीश नाता ॥ प्रतीची॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिमहाहिमवन्पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

धरे कूट नौ पर्वता ये विशाला ।
विराजे जिनों की जपूँ नित्य माला ॥ प्रतीची॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिनिषधपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

गिरी नील नौ कूट गोलाकृती है ।
नमूँ मैं जहाँ राजते श्री धनी हैं ॥ प्रतीची॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिनीलपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

SarvatoPooja 10 / 193

सुरुक्मी गिरी चैत्य को नित्य ध्याता ।
नमूँ मैं सदा ही प्रभो आत्म ज्ञाता ॥
प्रतीची सुपुष्कर् जहाँ पर्वता है ।
नमूँ चैत्य चैत्यालया शुभ्रता दें ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिरुक्मिपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

सु शिख्रिन् गिरी कूट सिद्धा सुनामी ।
वहाँ चैत्य वंदूँ बनूँ मोक्षगामी ॥ प्रतीची॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिशिखरिन्पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

पूर्णार्घ्य

वसंततिलका छंद

देवेन्द्र अर्चित जिनालय दिव्य साजे ।
उत्तुंग तिष्ठित कुलाचल नित्य राजे ॥
जो भव्य चिंतन करें उनका हिदै में ।
वो पाय नव्य निधियाँ शिव के निलै में ॥१॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

जिनवर सम मित्रा, परम पवित्रा, धर चारित्रा कर्म नशें ।
निज शुभ आतम ध्या, शुद्ध शील पा, सिद्ध क्षेत्र जा मुक्ति बसें ॥

नील छंद

पश्चिम पुष्कर अर्द्ध विराजित पर्वत हैं ।
श्री हिमवन् गिरि आदि सु चैत्य रु अर्चित हैं ॥

देव महातप धारि सभी अभिनंदित हों ।
श्री जिन पूजन से खुद भी सुरवंदित हों ॥१॥

शक्ति नहीं प्रभु दर्शन मैं कहँ पा सकता ।
भाव विमान चढूँ तब दर्शन पा सकता ॥
सम्यक् दर्शन ज्ञान सु दिव्य प्रकाश करे ।
भक्त अहर्निश श्री पद में यदि वास करे ॥२॥

चिद् गुण युक्त सदा जिन पाप विभंजक हैं ।
सिद्ध विदेही आतम नित् अनुरंजक हैं ॥
चैत्य मनोहर नित्य अनंत गुणालय हैं ।
भव्य जनों हितु निश्चित शुभ्र शिवालय हैं ॥३॥

हूँ निज निर्मल भाव लिए तव चर्णन में ।
नाथ भवों तक वास रहे तव चर्णन में ॥
अर्चन पूजन वंदन पाप विनाशक है ।
भक्त के भगवान् सु आतम शासक है ॥४॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिकुलाचलस्थषड्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ॥
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

(५८)

पश्चिम पुष्करार्ध वक्षारगिरि जिनालय पूजन

अथ स्थापना

विष्णुपद (तेरी छत्रच्छाया...)

पुष्करार्द्ध पश्चिम में सोलह, गिरि वक्षार महान् ।
जिनगृह शाश्वत बिंब विराजे, अद्भुत अतिशयवान् ॥
रत्नमणिमयी दिव्य मनोहर, शाश्वत चैत्यालय ।
आह्वानन कर हम नित पूजें, होने पुण्यालय ॥
दोहा–शाश्वत जिनमंदिर जजूँ, गिरि वक्षार विराज ।
वसुविध कर्म विलीन हों, लहूँ आत्म साम्राज्य ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्ब-समूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्ब-समूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्ब-समूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

पद्धरी छंद

मेघपुष्प से प्रभु पूजा कर, रोग नशाने जजूँ जिनेश्वर ।
पश्चिम पुष्कर अर्द्ध विराजित, पूजूँ जिन वक्षार विराजित ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

शीत गंध से पूज रचाकर, चित आताप हरें हर्षाकर ।
पश्चिम पुष्कर अर्द्ध विराजित, पूजूँ जिन वक्षार विराजित ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

तंदुल धवल लेय जिन अर्चन, करता सब पापों का वर्जन ।
पश्चिम पुष्कर अर्द्ध विराजित, पूजूँ जिन वक्षार विराजित ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो ऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

श्रेष्ठ मंजरी ले जिनवंदन, पंचशरों का कर दूँ भंजन ।
पश्चिम पुष्कर अर्द्ध विराजित, पूजूँ जिन वक्षार विराजित ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

छप्पन विध चरु भेंटूँ जिनवर, क्षुधा रोग तब नाशे सत्वर ।
पश्चिम पुष्कर अर्द्ध विराजित, पूजूँ जिन वक्षार विराजित ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

दीपक ज्योति तिमिर विध्वंसक, पाऊँ आतम ज्ञान प्रबोधक ।
पश्चिम पुष्कर अर्द्ध विराजित, पूजूँ जिन वक्षार विराजित ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

सुरभित दशविध धूप जलाकर, सिद्ध बनूँ मैं कर्म खपाकर ।
पश्चिम पुष्कर अर्द्ध विराजित, पूजूँ जिन वक्षार विराजित ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

शिवफल पाने श्रीफल अर्पण, नित्य जजूँ जिन केवलदर्पण ।
पश्चिम पुष्कर अर्द्ध विराजित, पूजूँ जिन वक्षार विराजित ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

मूल्यवान शुभ अर्घ्य चढ़ाकर, पद अनर्घ्य पाऊँ गुण आकर ।
पश्चिम पुष्कर अर्द्ध विराजित, पूजूँ जिन वक्षार विराजित ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो ऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

SarvatoPooja 10 / 195

दोहा–पश्चिम पुष्कर अर्द्ध में, गिरिवक्षार प्रधान ।
सोलह जिनगृह जिन जजूँ, पाऊँ केवल ज्ञान ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–सर्व जगत मंगल करें, त्रिभुवन के सरताज ।
नाना विधि के सुमन लें, अर्चूं श्री जिनराज ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

नंदीश्वर चाल

है भद्रसाल के पास, 'चित्रकूट' वक्षा ।
पूजें विद्याधर देव, भक्ती में दक्षा ।।
सीता उत्तर तट माँहि, चउ वक्षार सजें ।
थित सिद्धकूट जिनगेह, जिनवर नित्य जजें ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिचित्रकूटवक्षारगिरिस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

है 'पद्मकूट' वक्षार, उत्तम कनकमयी ।
जिन पूज करी उर धार, भवि हो कर्मजयी ।। सीता उत्तर०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपद्मकूटवक्षारगिरिस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

गिरी 'नलिन कूट' के चैत्य, मणिमय राज रहे ।
जिन चैत्यालय सु विशेष, महिमा कौन कहे ।। सीता उत्तर०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिनलिनकूटवक्षारगिरिस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

है 'एक शैल' सुप्रसिद्ध, मुनिनर सुर नगरी ।
अर्चन कर लहि सब रिद्धि, भरती सुख गगरी ।। सीता उत्तर०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैकशैलवक्षारगिरिस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

वक्षार 'त्रिकूट' मंझार, चैत्यालय सोहें ।
रत्नत्रय के भंडार, मुनि का मन मोहें ।।

सीता दक्षिण तट माँहि, चउ वक्षार सजें ।
थित सिद्धकूट जिनगेह, जिनवर नित्य जजें ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धित्रिकूटवक्षारगिरिस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

'वैश्रवण' गिरी वक्षार, शिख जिनवर राजे ।
सुर अर्चा करें त्रिकाल, शंखादी बाजे ।। सीता दक्षिण॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिवैश्रवणवक्षारगिरिस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

गिरी 'अंजनात्मा' चैत्य, चित रंजन करते ।
होकर कर्मांजन मुक्त, भवि मुक्ती वरते ।। सीता दक्षिण॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यञ्जनात्मावक्षारगिरिस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

उत्तुंग कनकमय शैल, 'अंजन' वक्षारा ।
करुँ आरति लेकर दीप, दूटे विधिकारा ।। सीता दक्षिण॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यञ्जनवक्षारगिरिस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

चौपाई

'श्रद्धावान्' वक्षार महाना, यजूँ जिनालय ऋद्धि निधाना ।
पश्चिम पुष्कर अपर विदेहा, सीतोदा दक्षिण तट गेहा ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिश्रद्धावान्वक्षारगिरिस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

'विजटावान' गिरी वक्षारा, यजूँ जिनालय श्रद्धा द्वारा ।
पश्चिम पुष्कर अपर विदेहा, सीतोदा दक्षिण तट गेहा ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजटावान्वक्षारगिरिस्थसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

'आशीविष' वक्षार सु शैला, पूजक का यश चहुँ दिश फैला ।
पश्चिम पुष्कर अपर विदेहा, सीतोदा दक्षिण तट गेहा ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्याशीविषवक्षारगिरिस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

SarvatoPooja 10 / 196

'सुखावह' वक्षार निराला, चैत्यालय यजि लहुँ शिवशाला ।
पश्चिम पुष्कर अपर विदेहा, सीतोदा दक्षिण तट गेहा ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिसुखावहवक्षारगिरिस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

'चंद्रमाल' गिरि शोभा न्यारी, पूजें नित सुर नर अरु नारी ।
पश्चिम पुष्कर अपर विदेहा, सीतोदा उत्तर तट गेहा ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिचन्द्रमालवक्षारगिरिस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

'सूर्यमाल' वक्षार सुवर्णा, जजूँ जिनालय भवदधि तर्णा ।
पश्चिम पुष्कर अपर विदेहा, सीतोदा उत्तर तट गेहा ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिसूर्यमालवक्षारगिरिस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

'नागमाल' की पर्वत माला, गाऊँ जिनवर की गुणमाला ।
पश्चिम पुष्कर अपर विदेहा, सीतोदा उत्तर तट गेहा ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिनागमालवक्षारगिरिस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

'देवमाल' पर सुरगण आके, करें अर्चना जिन गुण गाके ।
पश्चिम पुष्कर अपर विदेहा, सीतोदा उत्तर तट गेहा ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिदेवमालवक्षारगिरिस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

पूर्णार्घ्य

उपेन्द्रवज्रा छंद

सुगीत भक्ती वश देव गायें,
विदेह वक्षार जिनेश ध्यायें ।
सुदीप जो पश्चिम पुष्करार्द्धा,
जजूँ रहे ना अब कोय बाधा ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धसम्बन्धिषोडशवक्षारगिरिस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

जय कर्म रहित जिन, जजूँ रात्रिदिन, उर में नित तव ध्यान करूँ ।
जिन वंदन करके, निजगुण वरके, जिनवर का गुणगान करूँ ॥

गीतिका छंद

द्वीप पुष्कर अर्द्ध पश्चिम, शैल शुभ वक्षार हैं ।
सोलह गिरी पर जिनसदन, आठ दुगुन विशाल हैं ॥
प्रत्येक में जिनबिंब शुभ, सु मुनि कहें अष्टोत्तरा ।
वास हो निश्चित शिवालय, भक्त का सच है खरा ॥१॥

कूट पर शाश्वत जिनालय, रत्नमणिमय राजते ।
भक्तिवश नित नित नमें तो, हो कृपा माँ शारदे ॥
केवली श्रुतकेवली जिन, पूज से भवि होवता ।
मोह आदिक कर्म सारे, भक्ति से वह खोवता ॥२॥

चैत्य शुभ जीवंत हो यूँ, जिनगृहों में भासते ।
मौन मुद्रा भी दिखाती, मुक्तिपुर के रासते ॥
नीलमणिमय शुभ सु छवियुत, केश अनुपम सोहते ।
लाल मूंगा सम अधर पर, देव मुनि नर मोहते ॥३॥

तत्त्वचिंतन ज्ञान आतम, भक्ति से बढ़ता रहे ।
भक्ति निर्झर मम निरंतर, चित्त में बहता रहे ॥
नाम जिनमुख चैत्य जिन उर, में रहे मेरे सदा ।
भक्ति जिन बिन एक भी भव, हो नहीं मेरा कदा ॥४॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धसम्बन्धिवक्षारगिरिस्थषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ॥
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

(५९)

पश्चिम पुष्करार्द्ध गजदंत जिनालय पूजन

अथ स्थापना

चउबोला छंद

द्वीप अर्द्धपुष्कर पश्चिम में, अचल मेरु गजदंत महा ।
सोलह शाश्वत जिनमंदिर हैं, रत्नमयी शुभ चैत्य अहा ॥
आह्वानन करता उन सबका, पाप कर्म के नाशक हैं ।
जो जिनवर नित पूज रचावे, बन जाते जिन शासक हैं ॥
दोहा—गजदंतों के जिन जजूँ, पाने शाश्वत धाम ।
भव सागर को तैरकर, करूँ स्वात्म विश्राम ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

विधाता छंद (तर्ज - पुनः दर्शन पुनः दर्शन...)

नीर क्षीरोदधी का ले, जिनेश्वर अर्चना करते ।
नशे सब रोग चेतन के, भाव ये चित्त नित धरते ॥
सुपुष्कर अर्द्ध पश्चिम के, चैत्य गजदंत जिन अर्चन ।
संपदा चेतना पाने, करे जिनदेव गुण चर्चन ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

जगोत्तम भद्र श्री लेकर, ताप चित का हरें हम सब ।
रचा लो पूज जिनवर की, नशें दुष्कृत्य अरु अघ अब ॥
सुपुष्कर अर्द्ध०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

धवल तंदुल समा मोती, चढ़ा जिनदेव के चरणा ।
लहूँ शुद्धात्म वैभव को, गहूँ नित आपकी शरणा ॥
सुपुष्कर अर्द्ध०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो ऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

देव हम जीतने मन्मथ, सुगंधित पुष्प ले आये ।
बनें अविकारि हम निश्चित, भावना शुद्ध ये लाये ॥
सुपुष्कर अर्द्ध०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

सरस स्वादिष्ट व्यंजन ले, भक्ति जिन पद रचाएँगे ।
करें चिद्भोग हम शाश्वत, नंत गुण निज लहाएँगे ॥
सुपुष्कर अर्द्ध०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

जलाकर दीप गौघृत के, जिनेश्वर आरती गाएँ ।
नशें रज रूप कर्मों को, बोध जिनसम सुखद पाएँ ॥
सुपुष्कर अर्द्ध०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

अगनि में धूप वसुविधि खे, जिनेश्वर अर्चना होती ।
प्रभो पूजा सुनिश्चित ही, पाप मल नित्य ही खोती ॥
सुपुष्कर अर्द्ध०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

सफल नरभव करें हम भी, अतः श्री फल चढ़ाते हैं ।
योग त्रय शुद्धि जो करते, सुयोगी मोक्ष पाते हैं ॥
सुपुष्कर अर्द्ध०

SarvatoPooja 10 / 198

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

अरघ वसु द्रव्य का लेकर, स्वयं के नंत गुण गाएँ ।
जलाकर कर्म की होली, क्षेत्र शाश्वत सुखद पाएँ ॥
सुपुष्कर अर्द्ध पश्चिम के, चैत्य गजदंत जिन अर्चन ।
संपदा चेतना पाने, करे जिनदेव गुण चर्चन ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो ऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा–सिद्धकूट गजदंत के, चउ चैत्यालय जान ।
चार शतक बत्तीस जिन, जजूँ चित्त अमलान ॥
शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–पश्चिम पुष्कर द्वीप में, विद्युन्माली जान ।
गजदंत चउ जिनवर नमुँ, लहूँ सर्वकल्याण ॥
इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

शंभु छंद

विद्युन्माली मेरु के ठीक, ईशान कोण में पहचानो ।
वैडूर्यमयी गिरि 'माल्यवान', गजदंत निराला ये जानो ॥
मेरु के निकट जो सिद्धकूट, उस पर जिनमंदिर को वंदूँ ।
इक शत वसु शाश्वत जिनप्रतिमा, जजकर नित नित ही आनंदूँ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिमाल्यवान्गजदन्तस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

विद्युन्माली मेरु के ठीक, आग्नेय कोण गजदंता है ।
है नाम 'महासौमनस' शुभा, वह रजतमयी गुणवंता है ॥
मेरु के निकट०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिमहासौमनसगजदन्तस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

विद्युन्माली मेरु के ठीक, नैऋत्य दिशा में विख्याता ।
'विद्युत्प्रभ' गिरि गजदंत महा, है तप्तकनकमय शुभ ख्याता ।।
मेरु के निकट०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविद्युत्प्रभगजदन्तस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

विद्युन्माली मेरू के ठीक, वायव्य दिशा में शैल महा ।
गजदंत 'गंधमादन' शोभित, कलधौतमयी उत्तुंग अहा ।।
मेरु के निकट०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगन्धमादनगजदन्तस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

पूर्णार्घ्य

शिखरिणी छंद

सु विद्युन्माली पुष्कर दिश प्रतीची वर कहा ।
चऊ कोणों में हैं चउ सु गजदंता अति महा ।।
उन्हीं पै चैत्यालै चउ शत व बत्तीस प्रतिमा ।
जजूँ भावों से ही अनुपम कहूँ देव महिमा ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिचतुर्गजदन्तस्थसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

शाश्वत गजदंता, जहँ भगवन्ता, राजित तिनकी पूज करें ।
हम तरें भवोदधि, ज्ञान महोदधि, शुद्धातम हिम नमन करें ।।

विधाता छंद

अर्द्ध पुष्कर प्रतीची में, शैल गजदंत मनमोहक ।
नाम सम आकृती इनकी, सदा जिन पाप अवरोधक ।।

SarvatoPooja 10 / 199

माल्यवान सुप्रथम जानो, कोण ईशान में साजे ।
महासौमनस गिरि दूजा, कोण आग्नेय में राजे ।।१।।

तथा नैऋत्य में विद्युत्प्रभ गिरी शुभ लगे प्यारा ।
गंधमादन महापर्वत, कोण वायव्य में न्यारा ।।
पन शत धनु ऊँचाई पर, मेरु के पार्श्व भागों में ।
सिद्ध शुभ कूट है इक इक, चार गिरि पे सुभागों में ।।२।।

जिनभवन शोभते उन पर, जहँ प्रतिमाएँ मनहारी ।
बहे अध्यात्म की धारा, वहाँ गतरागता भारी ।।
वीतरागी हि होने मैं, वीतरागि के दर आया ।
लगायी जब लगन तुमसे, प्रभु मन कोई ना भाया ।।३।।

चार गिरि चार जिनमंदिर, अशुभ बहु कर्म के बाधक ।
स्वयं आराध्य जिनपद जज, अनंतर होय आराधक ।।
पूजता जिन सदन जिन जो, यथा आख्यात चारित पा ।
विभाविक भाव सब तजकर, बने वह मीत सिद्धों का ।।४।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिगजदन्तपर्वतस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(६०)

पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपस्थ विजयार्द्ध जिनालय पूजन

अथ स्थापना

दोहा

पश्चिम पुष्कर द्वीप में, रजतगिरी शुभ जान ।
आह्वानन करि नित जजूँ, जिनगृह श्री भगवान ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिन-बिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिन-बिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिन-बिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

दोहा

निर्मल सुरसरि नीर शुभ, जिनवर चरण चढ़ाय ।
जन्मादिक त्रय रोग नशि, शाश्वत शिव पद पाय ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिन-बिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

गंधसार मलयज महा, आत्मशांति के हेतु ।
जिनपद मैं नित पूजता, लहूँ भवोदधि सेतु ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिन-बिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

मुक्तासम तंदुल सुभग, आत्म मुक्ति के काज ।
जिनवर श्री पद पूजिके, पाऊँ श्रेयस राज ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

SarvatoPooja 10 / 200

शुभतर सुमन सुलायिके, जिनपद जजि सुखकार ।
जीतूँ काम खवीश[1] को, हो जाऊँ अविकार ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिन-बिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

क्षुधा मेटने जिन भजूँ, नाना व्यंजन लेय ।
जिनाराधना लोक में, शाश्वत सुख को देय ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिन-बिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

गौ घृत दीप जलाय शुभ, जिन पूजन अभिलाष ।
नीराजन प्रतिदिन करें, होय विघ्न सब नाश ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिन-बिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

धूप दशांगी लाय शुभ, पावक में नित खेय ।
जिनवर अर्चा नित करें, चउगति पानी देय ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिन-बिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

श्रीजी पूजन हेतु हम, ले श्री फल बादाम ।
शत अड़दाल कर्म नशूँ, पाऊँ मुक्ति सुधाम ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिन-बिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

वसुविधि अर्घ बनाय शुभ, स्वातम वसुगुण हेत ।
याम वसु जिनदेव जजूँ, पाऊँ सिद्धि निकेत ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थचतुस्त्रिंशज्जिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–जिनवर जिनगृह मैं जजूँ, पश्चिम पुष्कर द्वीप ।
विजयारध गिरिराज चढ़ि, देखूँ मुक्ति समीप ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

---

१. दुष्ट

अघ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–रजताचल चौंतीस हैं, जिनगृह भी अमलान ।
छत्तीस सौ बहत्तरी, जिनप्रतिमा परमान ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

रोला छंद (तर्ज - अहो जगत गुरुदेव...)

'कच्छा' देश महान, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिनभवन अचल है ॥
आर्यखंड के मध्य, 'क्षेमानगरी' प्यारी ।
चक्री की रजधानि, जिन पूजें अविकारी ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहकच्छादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

देश 'सुकच्छा' जान, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिनभवन अचल है ।
आर्यखंड के मध्य, 'क्षेमपुरी' मुनि युक्ता ।
तीर्थंकर भगवान, करत विहार विमुक्ता ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहसुकच्छादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

सु 'महाकच्छा' देश, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिनभवन अचल है ।
आर्यखंड के मध्य, नगरि 'अरिष्टा' जानी ।
जिनवृष अमृत धार, नित बहती वरदानी ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहमहाकच्छादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

'कच्छकावती' देश, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ।
आर्यखंड के मध्य, नगरि 'अरिष्टापुरि' है ।
तीर्थंकर भगवान, दिव्य ध्वनी सुखिरी है ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहकच्छकावतीदेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

SarvatoPooja 10 / 201

'आवर्ता' शुभ देश, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ॥
आर्यखंड के मध्य, 'खड्गा' नगरी सोहे ।
श्रुत केवलि उपदेश, सुर नर सब मन मोहे ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहावर्तादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

'लांगलावर्ता' शुभ, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ॥
आर्यखंड के मध्य, नगरि 'मंजुषा' भाषी ।
मुनिगण ध्यान लगाए, शिवपद के अभिलाषी ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहलाङ्गलावर्तादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

'पुष्कला' देश महा, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ॥
आर्यखंड के मध्य, 'औषधी पुरि' सुहानी ।
शाश्वत जिनवृष घोष, रहता जो शिवदानी ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहपुष्कलादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

'पुष्कलावति' सुदेश, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ॥
आर्यखंड के मध्य, 'पुण्डरीकिणि' नगर है ।
जिन अर्चक ही भाइ, चलता स्वस्थ डगर है ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहपुष्कलावतीदेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

'वत्स' सु सौख्य निधान, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ।
आर्यखंड के मध्य, 'सुसीमा' नगरी भाए ।
ता के नर नारि मन, जिनवृष में सु लुभाए ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहवत्सादेशमध्यस्थविजयार्द्धगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

देश 'सुवत्सा' जान, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ।
आर्यखंड के मध्य, 'कुंडला' नगरि भारी ।
विचरण करते नाथ, पूजें हम अघहारी ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहसुवत्सादेशमध्यस्थविजयार्द्धगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥10॥

'महावत्सा' सु देश, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ॥
आर्यखंड के मध्य, नगरि 'अपराजिता' है ।
नभचुंबी जिनगेह, नर खग सुरार्चिता है ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहमहावत्सादेशमध्यस्थविजयार्द्धगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥11॥

'वत्सकावति' सुदेश, ता मधि रजताचल है ।
पूर्वदिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ॥
आर्यखंड के मध्य, नगरि 'प्रभाअंका' है ।
केवलज्ञानी होय, रहती ना शंका है ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहवत्सकावतीदेशमध्यस्थविजयार्द्धगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥12॥

'रम्या' देश महान, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ।
आर्यखंड के मध्य, रजधानी है 'अंका' ।
क्षायिक लब्धी पाय, लहते शर्म अनंता ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहरम्यादेशमध्यस्थविजयार्द्धगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥13॥

देश 'सुरम्या' जान, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ॥

SarvatoPooja 10 / 202

आर्यखंड के मध्य, 'पद्मावति' नगरी है ।
पद्मा की वो खान, सुपुण्य की गगरी है ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहसुरम्यादेशमध्यस्थविजयार्द्धगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥14॥

'रमणीया' शुभ देश, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ॥
आर्यखंड के मध्य, 'शुभ्रा' शुभ रजधानी ।
सज्जन चित्त सुरम्य, है शुभ व्रत वरदानी ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहरमणीयादेशमध्यस्थविजयार्द्धगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥15॥

'मंगलावती' देश, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ॥
आर्यखंड के मध्य, 'रत्नसञ्चया' नगरी ।
पाकर श्री भगवान, हर्षी जनता सारी ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहमङ्गलावतीदेशमध्यस्थविजयार्द्धगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥16॥

'पद्मा' नाम सुदेश, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ।
आर्यखंड के मध्य, 'अश्वपुरी' रजधानी ।
पाकर केवल बोध, मुनिगण बनते ज्ञानी ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहपद्मादेशमध्यस्थविजयार्द्धगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥17॥

देश 'सुपद्मा' नाम, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ।
आर्यखंड के मध्य, 'सिंहपुरी' अति नामी ।
जहाँ विचरते नित्य, वीतरागि जिन स्वामी ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहसुपद्मादेशमध्यस्थविजयार्द्धगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥18॥

'महापद्मा' सु देश, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ।
आर्य खंड के मध्य, 'महापुरी' अति पावन ।
जिन वचनामृत रूप, बरसे नित नित सावन ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहमहापद्मादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

'पद्मकावती' देश, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ।।
आर्यखंड के मध्य, 'विजयपुरी' मन भाई ।
तजकर भवि दुठ कर्म, मुक्ति वधू परिणाई ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहपद्मकावतीदेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

'शंखा' नाम सुदेश, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ।
आर्यखंड के मध्य, रजधानी शुभ 'अरजा' ।
वंदनीय जिन पद्म, भव्य करें नित अर्चा ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहशङ्खादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

'नलिनी' नाम सुदेश, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ।।
आर्यखंड के मध्य, 'विरजा' विजय दिलाती ।
दुखकर महामारी, नहि वहाँ पे सताती ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहनलिनीदेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

देश 'कुमुद' मनहार, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ।।
आर्यखंड के मध्य, नगरी शुभ्र 'अशोका' ।
तिर जाते भवि जीव, पाके सुभक्ति नौका ।।

SarvatoPooja 10 / 203

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहकुमुदादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

'सरित' सुदेश महान, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ।।
आर्यखंड के मध्य, नगर 'वीतशोका' है ।
चारित्र धरने का, ये अच्छा मौका है ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहसरितादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

'वप्रा' देश महान, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ।।
आर्यखंड के मध्य, शुभ नगरी 'विजया' है ।
जिनशासन जयवंत, रहता सदा अहा है ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहवप्रादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।25।।

देश 'सुवप्रा' धाम, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ।।
आर्यखंड के मध्य, 'वैजयन्ती' सु नगरी ।
तुम प्रभो गुण सागर, भर दो मम लघु गगरी ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहसुवप्रादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।26।।

'महावप्रा' सु देश, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ।।
आर्यखंड के मध्य, नगरी शुभ्र 'जयंता' ।
धरकर जिन का भेष, होते मुनि भगवंता ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहमहावप्रादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।27।।

'वप्रकावती' देश, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ।।

आर्यखंड के मध्य, 'अपराजित' सु नगर है ।
चलता जो शिव राह, बनता मुक्ती वर है ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहवप्रकावतीदेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।28।।

'गन्धा' देश महान, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ।।
आर्यखंड के मध्य, 'चक्रपुरी' नगरी शुभ ।
लखकर जिनवर रूप, निज की सुध आई अब ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहगन्धादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।29।।

देश 'सुगन्धा' नाम, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ।।
आर्यखंड के मध्य, 'खड्गपुरी' इक सोहे ।
समवशरण के मध्य, जिनवर भवि चित मोहे ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहसुगन्धादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।30।।

'गन्धिला' देश महा, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ।।
आर्यखंड के मध्य, नगरि 'अयोध्या' नामी ।
भविजन होत सदैव, होते शिवपुर गामी ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहगन्धिलादेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।31।।

'गन्धमालिनी' देश, ता मधि रजताचल है ।
पूर्व दिशागत कूट, श्री जिन भवन अचल है ।
आर्यखंड के मध्य, नगर अवध्या भाए ।
दिवि से सुरगण आए, तीर्थंकर गुण गाएँ ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहगन्धमालिनीदेशमध्यस्थविजयार्द्ध-गिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।32।।

SarvatoPooja 10 / 204

अडिल्ल छंद

पश्चिम पुष्कर अर्द्ध भरत शुभ क्षेत्र है ।
उसके सुमध्य रजताचल अति श्रेष्ठ है ।।
नव कूटों में पूर्व दिशा के कूट पर ।
जिनगृह जिनवर पूजूँ अघ से रूठ कर ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रमध्यस्थविजयार्द्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।33।।

पश्चिम पुष्कर अर्द्ध इरावत सोहता ।
विजयारध उत्तुंग देव मन मोहता ।।
नवकूटों में पूर्व दिशा के कूट पर ।
जिनगृह जिनवर पूजूँ अघ से रूठ कर ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिऐरावतक्षेत्रमध्यस्थविजयार्द्धपर्वतसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।34।।

पूर्णार्घ्य

शुद्ध गीता छंद (तर्ज : हमारे कष्ट मिट जायें...)

अर्ध पुष्कर प्रतीची में, भरत ऐरावता सोहे ।
मध्य विजयार्द्ध गिरि प्यारा, देव खग नित्य मन मोहे ।।
सिद्ध शुभ कूट प्राची में, जहाँ पर जिनभवन प्यारा ।
बिंब जिन रत्नमय पूजूँ, नशाऊँ कर्म की कारा ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिचतुस्त्रिंशद्विजयार्द्धपर्वतस्थजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

अर्चूं शाश्वत जिन, अर्चूं प्रतिदिन, घाति सर्व इन[१] सुख पाऊँ ।
सब पाप मिटाके, पुण्य बढ़ाके, आतम ध्याके रमि जाऊँ ।।

१. पाप

प्रियंवदा छंद

सुभग पश्चिम सुपुष्करार्द्ध में, अचल है करमभूमि भाग में ।
रजत शैल चउतीस राजते, द्वय सुभाग प्रति क्षेत्र भाजते ॥

नवक कूट तिनपे विराजते, इक सुकूट पर चैत्य साजते ।
मणिमयी सुजिनबिम्ब सौख्यदा, परम भक्ति जिन नित्य मोक्षदा ॥

रजत[1] मंदिर प्रभो उपासना, परम भक्ति युत शुभ्र भावना ।
हम जजें वसु सुद्रव्य लें सदा, भवि वरें सुखद सिद्धि संपदा ॥

जिन जजें दुखित हो नहीं कदा, धरम भाव युत ही रहें सदा ।
नमन भाव शिवद्वार ले चले, शमित पाप विधि नित्य ही गले ॥

नमन मन्मथजयी जिनेश्वरा, नमन अक्ष विधि जेतु ईश्वरा ।
नमन अष्टविधि नाशका सदा, नमन कर्म रिपु घातका मुदा ॥

नमन अक्षर सुगुण्य आतमा, नमन देववर पुण्य आतमा ।
नमन विश्व जित विश्व नायका, नमन देव युत लब्धि क्षायिका ॥

नमन श्री जिन प्रशांत आतमा, नमन निष्कल प्रसन्न आतमा ।
नमन लोक पति लोक वत्सला, नमन प्राज्ञ वृषनेमि निश्चला ॥

नमन सुश्रुत अगण्य श्री दमी, नमन शांतिद प्रतिष्ठिता क्षमी ।
नमन भाव विधि नित्य नाशता, नमन भाव करि होय शासता ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिविजयार्द्धपर्वतस्थ चतुस्त्रिंशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ॥
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

१. रजताचल वा विजयार्द्ध

(६१)

पश्चिमपुष्करार्द्ध द्वीपस्थ पुष्कर वृक्ष शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजन

अथ स्थापना

शिखरिणी छंद

जिनेन्द्रा चैत्यों के अमल शिव से सुंदर लसें ।
जिनालै पच्छा के, प्रवर शुभ भक्ती करि सके ।
करूँ श्रेष्ठाह्वानं सुजिनपद पूजूँ विनय से ।
उपासूँ देवेन्द्रा भवन जिन चैत्यालय सदा ॥

दोहा

पश्चिम पुष्कर द्वीप में, पुष्करादि दो वृक्ष ।
ता ऊपर जिन भवन जिन, पूजि तजूँ सब इच्छ ॥

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्मालिमेरोरीशाननैऋत्यकोणसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थ-जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्मालिमेरोरीशाननैऋत्यकोणसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थ-जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्मालिमेरोरीशाननैऋत्यकोणसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थ-जिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

त्रिभंगी छंद

शुभ निर्मल सलिलं, चित् करि विमलं, जिनपद अमलं, धार भरूँ ।
जन्मादि हरन को, मोक्ष वरन को, पुण्य भरन को, पुण्य करूँ ॥
पुष्कर वर द्वीपं, चैत्य महीपं, अर्घ सु दीपं, ले जजते ।
शुभ शालमली तरु, तरु पुष्कर वरु, जिनमंदिर अरु, नित भजते ॥

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

गोशीर सुगंधं, चंदन गंधं, सुकृतवंद्यं, हम करते ।
श्री जिन पद वंदन, पापनिकंदन, तजि आक्रंदन, जिन भजते ।।
पुष्कर वर द्वीपं॰

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

शुभ तंदुल प्यारे, जिनपद धारे, चित उजियारे, नित भायें ।
जिन पूजन मंगल, हरे अमंगल, शाश्वत मंगल, हम गायें ।।
पुष्कर वर द्वीपं॰

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्यो ऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

ले सुमन थाल भरि, शुद्ध हृदय करि, जिनचरणा धरि, हरिषावैं ।
निज मन्मथ नाशैं, ब्रह्म विकासै, ज्ञान प्रकाशै, सुख पावैं ।।
पुष्कर वर द्वीपं॰

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

उत्तम चरुवर ले, जिनपद धरि ले, निज हित कर ले , भवि ज्ञानी ।
सब क्षुधा नशाके, सुखको पाके, मोद मनाके, बन ध्यानी ।।
पुष्कर वर द्वीपं॰

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

दीपक तम हारक, ज्ञान सुकारक, भवदधि तारक, देव कहा ।
जिनपाद चढ़ाऊँ, आरति गाऊँ, मंगल गाऊँ, नित्य महा ।।
पुष्कर वर द्वीपं॰

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

शुभ धूप दशांगी, पावक अंगी, हो जिन संगी, भक्ति करूँ ।
मैं नाचूँ गाऊँ, अति सुख पाऊँ, मोद मनाऊँ, कर्म हरूँ ।।
पुष्कर वर द्वीपं॰

SarvatoPooja 10 / 206

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

उत्तम फल लाया, जिनपद आया, चरण चढ़ाया, शिव पाने ।
मम जन्म सफल हो, कर्म विफल हो, मुझ शिवफल हो, निज जाने ।।
पुष्कर वर द्वीपं, चैत्य महीपं, अर्घ सु दीपं, ले जजते ।
शुभ शालमली तरु, तरु पुष्कर वरु, जिनमंदिर अरु नित भजते ।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

शुभ रत्नथाल भरि, जिनसम्मुख धरि, मोक्षमार्ग वरि, अर्घ चढ़ा ।
पाऊँ अनर्घ पद, तजूँ मोह मद, लखि आतम हद, कदम बढ़ा ।।
पुष्कर वर द्वीपं॰

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–पुष्करार्ध पश्चिम महा, चैत्यतरू द्वय जान ।
ता उपरि भगवान हैं, पूजि बनो भगवान ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

नाना सुमनों को लिये, सु भक्ति चित्त बसाय ।
करूँ समर्पित चरण में, लहूँ शांति सुखदाय ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

भुजंगप्रयात

प्रतीची शुभा पुष्करार्द्ध अनूपा ।
मणीरत्न युक्ता जिनालै तरू का ।।
तरू पुष्करा चैत्य गेहा रहा है ।
यजूँ चैत्य नित्या सुसौख्या महा है ।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिपुष्करवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

कुरूदेव में मेरू नैऋत्य जानो ।
तरू शाल्मली दक्षिणा शाख मानो ।।
सुचैत्यालया चैत्य अत्यंत सोहे ।
करूँ वंदना सर्वदा चित्त मोहे ।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिशाल्मलिवृक्षस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

पूर्णार्घ्य

धरा छंद

जाने प्रतीची पुष्करा, चैत्या तरू सोहें वरा ।
दो पुष्करा औ शाल्मली, पूजें सदा देवावली ।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्मालिमेरुसम्बन्धिसपरिवारपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

शुभ द्वीप सु पुष्कर, सुंदर तरुवर, जिनवर पूजन, अब कर ले ।
अति पुण्य कमा के, पाप नशाके, मुक्ति अंगना, तू वर ले ।।

प्रतिमाक्षरा छंद

शुभ पुष्करार्द्ध अब पश्चिम में, द्वय वृक्ष राजित महा जिनमें ।
तरु शाल्मली अवर पुष्कर है, जिन पे जिनालय जिनेश्वर है ।।१।।

जिनबिम्ब चैत्य शुभ शाश्वत हैं, तिनकी सु भक्ति हम गावत हैं ।
परिवार युक्त द्वय वृक्ष कहे, जिनभक्ति धार निरबाध बहे ।।२।।

गुणगान गाय गुण लें हम भी, तुम से बने नमन हो जिन जी ।
जिन कांति अग्र रवि लाजत है, उर में जिनेन्द्र शुभ साजत है ।।३।।

भरिए जिनेश समता धन से, करुँ शुद्ध भाव गुण चिंतन से ।
नशिए विकार सब चेतन के, हरिए किलेश सब जीवन के ।।४।।

SarvatoPooja 10 / 207

जिनभक्ति पूज भव नाशक है, दुख पीर विघ्न नित हारक है ।
विधि मोह आदिक निवारक है, सब रोग शोक भय वारक है ।।५।।

जिनभक्ति सौख्य बरसावत है, नरदेव नित्य हरषावत हैं ।
प्रतिहार्य युक्त जिनबिंब जजें, निज शुद्ध बुद्ध प्रतिबिम्ब भजें ।।६।।

बहु घंट तोरण सुसाजत हैं, सब देव दुंदुभि बजावत हैं ।
मणिरत्नयुक्त प्रतिमा सुहदा, शिवधाम सौख्य सदना वरदा ।।७।।

जिन भक्ति भावन अखंडित हो, भव नाश होय जिन पंडित हो ।
परिणाम निर्मल किए भजते, निज दोष भक्ति सुँ सदा तजते ।।८।।

दोहा–पच्छा पुष्कर अर्द्ध के, चैत्य सुवृक्ष महान ।
जो पूजें सद्भक्ति से, पावे शिव वरदान ।।

ॐ ह्रीं श्री विद्युन्मालिमेरोरीशाननैऋत्यकोणसम्बन्धिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(६२)

पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप भरत क्षेत्र भूतकालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

शुद्ध गीता छंद (तर्ज - पुनः दर्शन...)

प्रतीची द्वीप पुष्कर में, क्षेत्र शुभ इक भरत प्यारा।
भूत कालीन तीर्थंकर, लोक उत्तम सु पद धारा॥
करूँ आह्वान भावों से, उर में आओ जिनस्वामी।
पूजकर रत्नमणियों से, होऊँ मैं भी शिवधामी॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकर-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकर-समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकर-समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथ अष्टक

विदित छंद (तर्ज - जल फल वसु सजि...)

क्षीरोदधि नीर चढ़ाय, जिन चरणा आगे।
मम जन्म जरा नश जाय, भाव यही जागे॥
पुष्कर पश्चिम में एक, क्षेत्र भरत ख्याता।
जजूँ भूतकाल चौबीस, जिनवर विख्याता॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

मलयागिरि चंदन शुद्ध, घिसकर ले आए।
भवताप नशे अविरुद्ध, जो जिन गुण गाए॥ पुष्कर०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

SarvatoPooja 10 / 208

मुक्ता सम तंदुल श्वेत, पुंज धरूँ न्यारे।
पूजूँ अक्षय पद हेत, चित जिन पद धारे॥
पुष्कर पश्चिम में एक, क्षेत्र भरत ख्याता।
जजूँ भूतकाल चौबीस, जिनवर विख्याता॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

चंपा केवड़ा गुलाब, नाना पुष्पन से।
अर्चूं धर भक्ती भाव, काम व्यथा विनशे॥ पुष्कर०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

शुचि पक्व सरस पकवान, लीने थार भरे।
जजूँ आत्मरसिक भगवान, निश्चित क्षुधा हरें॥ पुष्कर०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

केवल सु ज्योति के काज, दीपावली जली।
ध्याऊँ त्रिभुवन सरताज, मोहज व्यथा टली॥ पुष्कर०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

शुभ धूप हुताशन माँहि, खेवत धूम उड़े।
वसु विध विधि बंध नशाहि, जिन पद डोर जुड़े॥ पुष्कर०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

षट् ऋतु के फल अति स्वच्छ, भर-भर थाल जजूँ।
वसु वसुधा पर शिव कक्ष, वसु गुण युक्त सजूँ॥ पुष्कर०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

नीरादिक द्रव्य सु अष्ट, सुंदर अर्घ किये।
पूजूँ जिनेन्द्र प्रकृष्ट, भाव अनर्घ लिए॥ पुष्कर०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा–लोक अतिशयी महापुरुष, तीर्थंकर अति धीर ।
पुष्पांजलि तव पद धरूँ, बनूँ स्वयं गंभीर ॥

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

पश्चिम पुष्कर द्वीप जिन, भूतकाल चौबीस ।
भरत क्षेत्र में जो हुये, उन्हें नमाउँ शीश ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

मनोरमा छंद (चाल - जीवन है पानी की बूंद)

'पदमचंद्र' जी नमूँ सदा, करम शत्रु को करूँ विदा ।
भरतक्षेत्र पुष्करार्द्ध में, सब अतीत केवली नमें ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पद्मभद्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

'रतनअंग' जी महान हैं, जजत सर्व ही जहान है ।
भरतक्षेत्र पुष्करार्द्ध में, सब अतीत केवली नमें ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री रत्नाङ्गजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

जय 'अयोगिकेश' नायका, भविक पूजते प्रणायका ।
भरतक्षेत्र पुष्करार्द्ध में, सब अतीत केवली नमें ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अयोगिकेशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

'सरवअर्थ' जी प्रसिद्ध हो, करत सर्व अर्थ सिद्ध हो ।
भरतक्षेत्र पुष्करार्द्ध में, सब अतीत केवली नमें ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वार्थजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

जय 'ऋषि' जिनेंद्र इष्ट हो, अरच कर्म सर्व नष्ट हो ।
भरतक्षेत्र पुष्करार्द्ध में, सब अतीत केवली नमें ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋषिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

नत हरीगणा सु भक्ति हो, जय 'हरीसुभद्र' मुक्ति दो ।
भरतक्षेत्र पुष्करार्द्ध में, सब अतीत केवली नमें ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री हरिभद्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

SarvatoPooja 10 / 209

धरत देव श्री 'गुणाधिपा', परम सौख्य पा विधी खिपा ।
भरतक्षेत्र पुष्करार्द्ध में, सब अतीत केवली नमें ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री गुणाधिपजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

सिरि 'परित्रिकेश' ज्ञान दो, तुमहि लोक में प्रधान हो ।
भरतक्षेत्र पुष्करार्द्ध में, सब अतीत केवली नमें ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पारत्रिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

जब जजें 'बिरह्मनाथ' जी, तुरत लहें सिद्ध साथ जी ।
भरतक्षेत्र पुष्करार्द्ध में, सब अतीत केवली नमें ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री ब्रह्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

सिरि 'मुनींद्र' के पदाम्बुजा, नमन होय चित्त हो मुदा ।
भरतक्षेत्र पुष्करार्द्ध में, सब अतीत केवली नमें ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनीन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥10॥

जयति देव 'दीपका' महा, तुम समान सूर्य ना लहा ।
भरतक्षेत्र पुष्करार्द्ध में, सब अतीत केवली नमें ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री दीपकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥11॥

मुदित होय देख 'राज्ऋषी', करहि दर्श मोय हो खुशी ।
भरतक्षेत्र पुष्करार्द्ध में, सब अतीत केवली नमें ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री राजर्षिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥12॥

भुजंगी छंद

प्रभू श्री 'विशाखेश' पूजों सही, करो शुद्ध चित्ता लहो श्री मही ।
यजूँ भूत के तीर्थ देवा गुणी, लगा निर्धनों को मिली है मणी ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विशाखदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥13॥

'अनिंदीत' आनंद के दायका, नमूँ नित्य दृष्टि लहूँ क्षायिका ।
यजूँ भूत के तीर्थ देवा गुणी, लगा निर्धनों को मिली है मणी ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनिन्दितजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥14॥

'रविस्वामि' के पाद अर्चा करूँ, महामोह अंधेर को मैं हरूँ ।
यजूँ भूत के तीर्थ देवा गुणी, लगा निर्धनों को मिली है मणी ॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री रविस्वामिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥15॥

लहो 'सोमदत्तेश' को ध्यान में, पड़े क्यों महा घोर अज्ञान में ।
यजूँ भूत के तीर्थ देवा गुणी, लगा निर्धनों को मिली है मणी ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सोमदत्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

'जयस्वामि' दाता सुकल्याण के, लहूँ आज सिद्धि यहाँ आन के ।
यजूँ भूत के तीर्थ देवा गुणी, लगा निर्धनों को मिली है मणी ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री जयस्वामिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

प्रभो 'मोक्षनाथा' जरा ध्यान दो, करो ज्ञानवर्षा हमें ज्ञान दो ।
यजूँ भूत के तीर्थ देवा गुणी, लगा निर्धनों को मिली है मणी ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मोक्षनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

नमूँ 'अग्रभासा' सुगुण की निधी, यही है विधी नाशने की विधी ।
यजूँ भूत के तीर्थ देवा गुणी, लगा निर्धनों को मिली है मणी ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अग्रभासजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

'धनुस्संग' तीर्थेश से हो बनी, महा दुःख शैवाल क्यों हो धनी ।
यजूँ भूत के तीर्थ देवा गुणी, लगा निर्धनों को मिली है मणी ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री धनुःसङ्गजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

जजूँ श्रीश 'रोमांचकेशा' महा, बिना आपके सौख्य होगा कहाँ ।
यजूँ भूत के तीर्थ देवा गुणी, लगा निर्धनों को मिली है मणी ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री रोमाञ्चकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

प्रभो 'मुक्तिनाथा' की अर्चा भली, निधत्ती निकाचित्त बाधा टली ।
यजूँ भूत के तीर्थ देवा गुणी, लगा निर्धनों को मिली है मणी ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुक्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

'प्रसिद्धेश' पूजो प्रसिद्धी मिले, सुविधा लहें औ अविद्या गले ।
यजूँ भूत के तीर्थ देवा गुणी, लगा निर्धनों को मिली है मणी ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रसिद्धनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

'जितेशा' जिनेशा महाईश की, जपें नाम माला सु वागीश की ।
यजूँ भूत के तीर्थ देवा गुणी, लगा निर्धनों को मिली है मणी ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री जितेशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

SarvatoPooja 10 / 210

पूर्णार्घ्य

छंद - नाराच

करूँ सु वंदना प्रभो, सुभाव के प्रभाव से ।
बनें जिनेश भी कभी, सुभक्ति के उपाव से ।।
सुद्रव्य लेय शासिता, अतीत काल अर्चता ।
प्रतीची पुष्करार्द्ध का, सुक्षेत्र आदि चर्चिता ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पद्मभद्रादिजितेशस्वामिपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

श्री जिनवर वंदन, हरता क्रंदन, नशि भवबंधन, चित्तखिले ।
जिनवर गुण गाऊँ, रूप सुध्याऊँ, अति हर्षाऊँ, मुक्ति मिले ।।

चौपाई

'पद्मचंद्र' प्रथमेश नमस्ते, जय 'रत्नांग' जिनेश नमस्ते ।
'अयोगिकेश' सुयोग नमस्ते, सर्व अर्थ 'सर्वार्थ' नमस्ते ।।

जय 'ऋषिनाथ' ऋषीश नमस्ते, जय 'हरिभद्र' सुभद्र नमस्ते ।
जय श्री 'गुणाधिप' प्रभु नमस्ते, जय 'पारत्रिक' देव नमस्ते ।।

'ब्रह्मनाथ' चिद् ब्रह्म नमस्ते, जय 'मुनीन्द्र' मुनिनाथ नमस्ते ।
जय 'दीपक' सु प्रकाश नमस्ते, श्री 'राजर्षि' जिनेन्द्र नमस्ते ।।

'विशाखदेव' महंत नमस्ते, सिरी 'अनिन्दित' नंत नमस्ते ।
'रवि स्वामी' जिनसूर्य नमस्ते, 'सोमदत्त' गुणपूर नमस्ते ।।

'जयस्वामी' विजयेश नमस्ते, 'मोक्षनाथ' वृषभेश नमस्ते ।
'अग्रभास' अष्टांग नमस्ते, 'धनुःसंग' निःसंग नमस्ते ।।

'रोमांचक' अनअंग नमस्ते, 'मुक्तिकांत' शिवकंत नमस्ते ।
जय 'प्रसिद्ध' संसिद्ध नमस्ते, जय 'जितेश' वसु रिद्ध नमस्ते ।।

जय अनंत विज्ञान नमस्ते, दर्शन नंत महान नमस्ते ।
जय अनंत सुख कुंज नमस्ते, जय अनंत बल पुंज नमस्ते ।।

जय प्रतिचि पुष्करार्द्ध नमस्ते, भरतक्षेत्र परमार्थ नमस्ते ।
जय अतीत जिनदेव नमस्ते, जय जिनेश सुरदेव नमस्ते ।।

दोहा–श्री अतीत तीर्थंकरा, चौबीसों भगवान ।
तव श्री पद्म नमन करूँ, जय शिव ऋद्धिनिधान ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(६३)

पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप भरतक्षेत्र वर्तमान-कालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

नरेन्द्र छंद

पश्चिम पुष्कर द्वीप विराजे, चौबीसों जिनचंदा ।
भरत क्षेत्र संप्रति नित पूजूँ, लहूँ नित्य आनंदा ।।
आह्वानन कर भाव सहित मैं, पूजन करने आया ।
उत्तम वसुविध अर्घ्य सजाकर, भाव अर्चना लाया ।।

दोहा–तीर्थंकर चौबीस जिन, धरूँ चित्त अमलान ।
वंदन थुति अर्चन करी, मम चित हो गुणखान ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

हरिगीतिका छंद

सित इन्दु सम शुभ नीर निर्मल, जिन चरण अर्पण करें ।
रुज जन्म आदिक रोग नशकर, विभव शाश्वत निज वरें ।।
तीर्थंकरों की अर्चना से, सर्व पाप विनाश हों ।
मिल चेतना के शुद्ध गुण सब, मोक्ष पद अविनाश हो ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

यति चित्त सम शीतल सुगंधित, गंध ले जिन पूजता ।
शाश्वत सुखद शांति लहूँ मैं, अतः जिनपद सेवता ।।
तीर्थंकरों की०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

पुखराज सम धवलिम सु अक्षत, लेय जिनवर को जजूँ ।
बस पा सकूँ मैं शुद्ध निज पद, अथिर जग पद सब तजूँ ।।
तीर्थंकरों की॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

जिनवर चरण में भाव युत हो, नित धरूँ पुष्पांजली ।
मैं मेंट दूँ अघ वासना सब, खिले ब्रह्मचर्य कली ।।
तीर्थंकरों की॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

स्वादिष्ट मिष्ट सरस सुचरुवर, लेय जिन वंदन करूँ ।
क्षुध आदि रुज सब नाश कर निज, नंत क्रंदन मैं हरूँ ।।
तीर्थंकरों की॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

मंगल करण दुखहरण दीपक, दिव्य तेज प्रकाशते ।
जिनदेव नीराजन करें चिद्, नित्य गुण अवभासते ।।
तीर्थंकरों की॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

शुभ धूप दशविध लाय हम सब, नाथ पद अर्चन करें ।
अरु नाश के वसु कर्म निर्मल, गुण अनंतों हम वरें ।।
तीर्थंकरों की॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

उत्तम फलादिक लाय जिनकी, अर्चना शुभ भाव से ।
शुभ प्राप्त करने मोक्ष फल को, पूजते अति चाव से ।।
तीर्थंकरों की॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

अत्यंत उत्तम रतन बहुविध, अर्घ्य हो आराधना ।
जिनदेव पद जजि शिव लहें, इस हेतु ही मम साधना ।।
तीर्थंकरों की अर्चना से, सर्व पाप विनाश हों ।
मिल चेतना के शुद्ध गुण सब, मोक्ष पद अविनाश हो ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–भरत क्षेत्र पश्चिम दिशा पुष्करार्द्ध कहलाय ।
वर्तमान तीर्थेश को, सदा नमूँ सिर नाय ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

श्री जिनदेव सुपाद में, करे सदा जो वास ।
पूजे निशदिन भक्ति से, भक्त वही वो खास ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

छंद - द्रुतमध्यक

सिरि 'सर्वांग' स्वामि तीर्थंकर, अतिशय रूपा भव्य हितंकर ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वाङ्गस्वामिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

'पद्माकर' भवि चित्त विकासें, आतम अरि विधि पूर्ण विनाशे ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पद्माकरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

देवों के भी देव 'प्रभाकर', करम खपाओ दर्शन पाकर ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रभाकरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

श्री 'बलनाथ' नंतबलधारी, मन-वच-तन से धोक हमारी ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

योगी जन जिनको नित ध्यावें, वह 'योगीश्वर' मम मन भावें ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री योगीश्वरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

जय 'सूक्ष्मांग' अनंग जिनेशा, पन शरीर तज भये शिवेशा ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सूक्ष्माङ्गजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

श्री 'व्रतचलातीत' मन भाया, व्रत चारित्र अचल जिन पाया ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री व्रतचलातीतजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

देव 'कलंबक' जी गत दोषा, वीतराग पर रहे भरोसा ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कलम्बकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

जै 'परित्याग' कर्म मल त्यागा, मम मन श्रीजिन से अनुरागा ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री परित्यागजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

सिरी 'निषेधिक' पाप निषेधक, दो मोहि युक्ति अघ मल वेधक ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निषेधिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

जय 'पापापहारि' भगवंता, सरव पाप परिहारक संता ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पापापहारिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

सिरि 'सुस्वामि' जिनेश्वर ध्याओ, त्रिभुवनके तुम शीश कहाओ ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुस्वामिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

'मुक्तिचंद्र' जिन मुकति सुपाया, मैं तव पद में अलि बन आया ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुक्तिचन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

SarvatoPooja 10 / 213

नमन होय 'अप्राशिक' देवा, पुण्य लहें सुर कर पद सेवा ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अप्राशिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

जय 'जयचंद्र' जिनेन्द्र महाना, तुम बिन भवि का कहाँ ठिकाना ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री जयभद्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

'मलाधारि' चित निर्मल करता, पद वंदक बनते शिवभर्ता ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मलधारिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

देव 'सुसंयत' यम संहारक, संयम धार बनूँ भव तारक ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुसंयतजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

'मलयसिंधु' जी गुणरत्नेशा, पार नहीं तव विरद विशेषा ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मलयसिन्धुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

नमूँ 'अक्षधर' श्री भगवाना, अक्ष विजित पद पूज रचाना ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अक्षधरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

अर्चन करूँ 'देवधर' धीरा, बहती तव दर ज्ञान समीरा ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवधरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

द्वादश गण के मध्य विराजे, सिरी 'देवगण' छविमन साजे ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवगणजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

श्री 'आगमिक' जिनवर पूजो, विगतराग सम देव न दूजो ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री आगमिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

श्री 'विनीत' जिन की जय बोलो, करिके विजय मोक्ष पट खोलो ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विनीतजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

'रतानंद' चित अमृतनंदा, जिनशासन के निरमल चंदा ।
पश्चिम पुष्करार्द्ध जिन ध्याऊँ, संप्रति भरत क्षेत्र गुण गाऊँ ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री रतानन्दजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

पूर्णार्घ्य

छंद प्रहरनकलिका

जज चउबिस संप्रति जिनवर जी ।
प्रथम भरत क्षेत्रज सरवन जी ।।
अरध तृतीय दीपज भगवन को ।
जजत भगति से मम शिव घर हो ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वाङ्गस्वाम्यादिरतानन्दपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

जिनवर की अर्चा, सद्गुणचर्चा, संस्तुति विरचा, कर्म हरें ।
पद पद्म पुजारी, बन अविकारी, भक्त तुम्हारी, पूज करें ।।

शंभु छंद

आतम गुण का नित भोग करें, तुम क्षुधा दोष निर्मुक्त प्रभो ।
निश्चय सुख का अमरित पीते, तुम तृषा दोष से मुक्त विभो ।।
रहते निर्भय तुम नाथ सदा, वरदान अभय तुमसे पाते ।
तन रोग रहित परमौदारिक, तव नाम लेत रुज नश जाते ।।१।।

क्रोधाग्नी की ज्वाला विनशी, निज क्षमा नीर की वर्षा से ।
तुम राग द्वेष से दूर हुए, निज वीतराग निधि दर्शा के ।।

जो साथ रहा शत्रू बनके, उस मोह अरी का अंत किया ।
सब चिंता तज चिंतन कीना, सु मुक्ति हेतु शिव पंथ लिया ।।२।।

तुम जरा रोग से हो विमुक्त, निज को निज में ही ध्याते हो ।
तुमसे मृत्यु भयभीत हुई, तुम मृत्युंजय कहलाते हो ।।
हो स्वेद रहित अतिशयकारी, अरु खेद न तुमको छू पाया ।
मद का मर्दन करके भगवन, होकर महान शिव दर्शाया ।।३।।

रति भाव दीन, निज आत्म लीन, विस्मय तज गुण से युक्त हुए ।
निद्रा तज निज में जाग रहे, पुनि पुनि जन्मों से मुक्त हुए ।।
गत दोष आप सर्वज्ञ प्रभो, तुम जैसा जग में कोय नहीं ।
तव संस्तुतियाँ सो इन्द्र करें, तव युगल चरण में नित्य नई ।।४।।

है पुष्करार्द्ध के पश्चिम में, शुभ भरत क्षेत्र भूमी पावन ।
जहँ अवतारे चौबीस प्रभो, संप्रति वृष नायक मन भावन ।।
है सर्व लोक के अधिकारी, प्रभु मेरे सारे दोष हरो ।
निज नंत गुणों का वैभव दे, अपने समान ही मुझे करो ।।५।।

दोहा–दोष रहित जिनदेव जी, नंत गुणों के कोष ।
कर्म नाश जिन बन सकूँ, करो मोहि निर्दोष ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(६४)

पश्चिमपुष्करार्द्ध द्वीप भरतक्षेत्र भविष्यत्कालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

चउबोला छंद

पुष्करार्द्ध के पश्चिम दिश में, भरत क्षेत्र अति पावन है ।
भावि काल में तीर्थंकर जिन, होंगे तहँ मन भावन हैं ।।
भरत क्षेत्र भावी तीर्थंकर, चौबीसों जिनराज जजूँ ।
अतिशय पुण्य सम्पदा पाऊँ, नादिकाल सब पाप तजूँ ।।
दोहा–आह्वानन करता प्रभो, हो उर अम्बुज वास ।
प्रतिक्षण गुण चिंतन करूँ, करूँ अष्ट विधि नाश ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

शंभु छंद

शुभ चंद्रकांतमणि निःसृत जल, जिनदेव चरण में लाया हूँ ।
मम जन्म जरा मृतु सर्व नशे, ऐसी अभिलाषा लाया हूँ ।।
श्री पुष्करार्द्ध पश्चिम दिश के, शुभ क्षेत्र भरत के भावी जिन ।
वसु द्रव्य मिला त्रय संध्या में, पूजन हम करते हैं प्रतिदिन ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

गोशीर कपूर मिला करके, मलयज शीतल ले आया हूँ ।
चेतन का ताप विनाश करूँ, शाश्वत सुख पाने आया हूँ ।।
श्री पुष्करार्द्ध॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

हीरक द्युति सम उज्ज्वल कांती, धारक तंदुल ले आया हूँ ।
अक्षय पद प्राप्त करूँ जिनवर, अक्षत जिन पाद चढ़ाया हूँ ।।
श्री पुष्करार्द्ध पश्चिम दिश के, शुभ क्षेत्र भरत के भावी जिन ।
वसु द्रव्य मिला त्रय संध्या में, पूजन हम करते हैं प्रतिदिन ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

मैं विविध वर्ण युत रत्न सुमन, सम जिनपद अर्चन नित्य करूँ ।
मम काम बाण विध्वंस करूँ, अरु शुद्ध ब्रह्म में चित्त धरूँ ।।
श्री पुष्करार्द्ध॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

षट्रस मिश्रित पकवानों से, ना क्षुधा शांत हो पाती है ।
चरुवर ले जिनवर पूजन से, आत्मा अक्षय सुख पाती है ।।
श्री पुष्करार्द्ध॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

नश्वर भौतिक दीपक तो बस, जग तम को दूर भगाता है ।
त्रैकाल जजूँ नीराजन कर, उर अंधकार मिट जाता है ।।
श्री पुष्करार्द्ध॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

शुभ दश विध धूप मिलाकर के, जिन सम्मुख पावक में खेऊँ ।
मोहादि कर्म सब नष्ट करूँ, अरु शाश्वत श्री जिनपद सेऊँ ।।
श्री पुष्करार्द्ध॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

जग के सारे फल खाकर के, निज काया सफल न कर पाया ।
उत्तम फल श्री जिनपद धरकर, शिवफल पर मन अब ललचाया ।।
श्री पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

निज शक्ति समा शुभ रतनन ला, जिनवर पद अर्घ्य चढ़ाता हूँ ।
पा जाऊँ शाश्वत शिव पद में, यह शुद्ध भावना भाता हूँ ।।
श्री पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–पश्चिम पुष्कर द्वीप में, भरत क्षेत्र शुभ थान ।
द्रव्यनि वसु विधि ले जजूँ, भावी जिन भगवान ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–नाथ आपकी अर्चना, भरे सौख्य भंडार ।
भव जल से भवि तारती, डूबे जो मँझधार ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अडिल्ल– देव 'प्रभावक' पूजों श्रद्धा भाव से ।
धर्म प्रभावन भव्य करें अति चाव से ।।
पुष्करार्द्ध पश्चिम में क्षेत्र भरत महा ।
काल अनागत के जिनवर अर्चूं अहा ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रभावकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

है 'विनतेन्द्र' विनय युत मेरी प्रार्थना ।
विनय भाव धर करूँ कर्म की भर्त्सना ।। पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विनतेन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

देव 'सुभावक' शुद्ध भाव धर करि जजूँ ।
सम्यक्त्वादी वसु गुण निधियों से सजूँ ।। पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुभावकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

SarvatoPooja 10 / 216

श्री 'दिनकर' जिन दिनकर सम विख्यात हो ।
प्रभु सुमिरन से जीवन में सुप्रभात हो ।।
पुष्करार्द्ध पश्चिम में क्षेत्र भरत महा ।
काल अनागत के जिनवर अर्चूं अहा ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिनकरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

'अगस्त्येज' का तेज लोक में है फैला ।
जिनकी भक्ति धवल करे चित् जो मैला ।। पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अगस्त्येजजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

पूजों श्री 'धनदत्त' वीतरागी कहे ।
दें संतोष निधी संतोषी धी लहें ।। पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धनदत्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

जिन अर्चन से बढ़ता भव्यों का गौरव ।
'पौरव' जिन अर्चन ही चेतन का सौरभ ।। पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पौरवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

अक्ष जयी 'जिनदत्त' सुदेव महान हैं ।
वीतराग सच्चे प्रभु की पहचान है ।। पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनदत्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

पारसमणि सम 'पार्श्वनाथ' सब अघ हरे ।
आत्म लोह परमातम सम कुंदन करे ।। पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

'मुनीसिंधु' के पद पंकज अर्चन करूँ ।
जिनका आश्रय लेकर भव वारिधि तिरूँ ।। पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनीसिन्धुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

'आस्तिक' जिनवर वंदूँ श्रद्धा सुदृढ़ हो ।
निर्मल चारित धार समाधि का प्रण हो ।। पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आस्तिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

'भवानीक' जिन कीनी नष्ट भवावली ।
संयम युत जिन पद छूटे श्वांसावली ।। पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भवानीकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥12॥

हो नृपेन्द्र पूजित जिनवर 'नृपनाथ' जी ।
पाने शिव साम्राज्य करूँ तव साथ जी ॥ पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नृपनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥13॥

'नारायण' जिन केवलज्ञान परायण हो ।
तव भक्ति भव नीर तारने कारण हो ॥ पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नारायणजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥14॥

नव क्षायिक लब्धी युत जिन 'प्रशमौक' हैं ।
तव अर्चा कर भवि पाते शिवलोक हैं ॥ पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रशमौकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥15॥

'भूपति' जिन वसु भू पर वसुगुण से सजे ।
सिद्धों सम वसुगुण पाने जिनवर भजें ॥ पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भूपतिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥16॥

दर्शन नंत लहा जिनदेव 'सुदृष्टि' हो ।
लोकालोक लखूँ वो ही संदृष्टि दो ॥ पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुदृष्टिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥17॥

'भवभीरू' जिनपद में हो निश्छल भक्ति ।
तव दर्शन कर सात भयों से हो मुक्ति ॥ पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भवभीरुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥18॥

'नंदन' जिन की भक्ति पूज रचाऊँगा ।
नंदन पद का चंदन बन शिव पाऊँगा ॥ पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नन्दनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥19॥

'भार्गव' जिनको बांधो भक्ति डोर से ।
बच जाओगे निश्चित भव दुख घोर से ॥ पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भार्गवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥20॥

तीर्थंकर 'सुवसू' वसु द्रव्यों से जजूँ ।
वसु गुण मंडित हो वसु वसुधा पर सजूँ ॥ पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुवसूजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥21॥

SarvatoPooja 10 / 217

देव 'परावश' अवश हुए परभाव से ।
तव वश होकर छूटूँ सर्व विभाव से ॥
पुष्करार्द्ध पश्चिम में क्षेत्र भरत महा ।
काल अनागत के जिनवर अर्चूं अहा ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परावशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥22॥

'वनवासिक' जिन बने किया वनवास जो ।
दो शक्ति बन जायें सिद्ध विधि नाश हो ॥ पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वनवासिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥23॥

श्री 'भरतेश' जिनेश चेतन गुण भर्ता ।
करो विदेही हमको हे शिवसुख कर्ता ॥ पुष्करार्द्ध०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भरतेशजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥24॥

पूर्णार्घ्य

कुंडलिया छंद

पावें भावी तीर्थ का, शुभ दर्शन वसु याम ।
भव शिव सुख के कारणे, सुरनर करें प्रणाम ॥
सुरनर करें प्रणाम, भाव युत पाप नशावैं ।
गुण चिंतन करि मुनी, चित्त में मोद मनावैं ॥
पुष्करार्द्ध पश्चिमी, सुक्षेत्रा भरत कहावै ।
तहँ के भावि जिनेश, पूज हम शिव पद पावैं ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रभावकादिभरतेशपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

चौबीस जिनंदा, सुरपति वृंदा, नित आनंदा, अघहारी ।
श्री जिन गुण चिंतन, करता निशदिन, प्रभु चरणों, हम बलहारी ॥

चौपाई

नमूँ 'प्रभावक' देव महाना, नमूँ श्री 'विनतेन्द्र' प्रमाना ।
नमूँ 'सुभावक' देव सहाई, नमूँ नमूँ 'दिनकर' सुखदाई ।।

नमूँ 'अगस्त्येजो' विज्ञानी, नमूँ नमूँ 'धनदत्त' सुदानी ।
नमूँ तीर्थ 'पौरव' जगदीशा, नमूँ श्री 'जिनदत्त' सुधीशा ।।

नमूँ 'पार्श्वनाथा' अघहारी, नमूँ 'मुनीसिंधू' गुणकारी ।
नमूँ सिरी 'आस्तिक' भगवंता, 'भवानीक' वंदो शिवकंता ।।

नमूँ सिरी 'नृपनाथ' जिनेशा, नमूँ देव 'नारायण' शीशा ।
नमूँ श्री 'प्रशमौक' विधाता, नमहूं 'भूपति' वसु भू दाता ।।

नमूँ 'सुदृष्टि' तव गुणगाता, नमूँ सिरी 'भवभीरू' नाथा ।
नमूँ सिरी 'नंदन' आनंदा, नमूँ श्री 'भार्गव' जिन चंदा ।।

नमूँ सिरी 'सुवसू' गुणधारी, नमूँ 'परावश' शिव अधिकारी ।
नमूँ सिरी 'वनवासिक' स्वामी, नमूँ सिरी 'भरतेश' अकामी ।।

जिन चरणों से लगन लगाऊँ, भक्ति रस में चित्त पगाऊँ ।
तव गुण का बनकर अनुरागी, बनूँ सिद्ध अब तुम सम भावी ।।

पुष्करार्द्ध पश्चिम दिश सोहे, भरतक्षेत्र भू पावन मोहे ।
पंचकल्याणक युक्त गणेशा, नमूँ अनागत तीर्थ जिनेशा ।।

दोहा—श्रद्धा के बहु पुष्प से, भरी अंजुली आज ।
तव चरणों अर्पित करूँ, आत्म सिद्धि के काज ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिभरतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 10 / 218

(६५)

पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीप ऐरावत क्षेत्र भूतकालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

चउबोला छंद

पश्चिम पुष्कर वर ऐरावत, भूतकाल तीर्थंकर ।
वीतराग सर्वज्ञ केवली, प्राणी मात्र हितंकर ।।
आह्वानन कर हृदय बसाऊँ, निशदिन ध्यान लगाने ।
द्रव्य सजा नित पूज रचाऊँ, निज शिवपद को पाने ।।

दोहा—पश्चिम पुष्कर द्वीप में, क्षेत्र इरावत जान ।
भूत काल के जिन जजूँ, करूँ कर्म अवसान ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

नाराच छंद

मृगांक रश्मि कांतिमान शुभ्र नीर लाय के ।
जरा व जन्म मृत्यु नाश होवता चढ़ाय के ।।
प्रतीचि पुष्करार्द्ध के इरावता सु वंदिता ।
अतीत काल के जिनेश पूज नित्य नंदिता ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

सुगंधसार शीतलेप, ताप नाशने धरूँ ।
जिनेन्द्र पाद पद्म पूज, सौख्य सिद्धि को वरूँ ।। प्रतीची०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

सुरेन्द्र मौलि रत्न शुभ्र, अक्षतान् लाय के ।
जिनेन्द्र सौख्य पा सकूँ, जिनेन्द्र कीर्ति गाय के ।। प्रतीची०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

नरेन्द्र नौ निधी समा, प्रसून भद्र लावता ।
सुब्रह्म भाव में रमूँ, कुवासना नशावता ।। प्रतीची०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

सुइष्ट मिष्ट स्वादयुक्त, व्यंजनादि लीजिए ।
जिनेन्द्र पाद पूजके, निजात्म गंध लीजिए ।। प्रतीची०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

सुरत्न दीप लाय देव, आरती उतारता ।
यजूँ सुदीप लेय कर्म, अष्ट मैं निवारता ।। प्रतीची०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

दशांग धूप लेय शुद्ध वह्नि में प्रजारता ।
अघाति घाति नाशने सुसंयमादि पालता ।। प्रतीची०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

सुश्रीफलादि थाल में, सजे जिनेन्द्र अर्चता ।
शिवात्म लाभ हेतु गुण्य, आपको हि वंदता ।। प्रतीची०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

सुपुष्पराज नीलमादि, रत्न को मिलायके ।
सु पुण्य वर्द्धता जिनेन्द्र, देव को चढ़ाय के ।। प्रतीची०

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

SarvatoPooja 10 / 219

दोहा—पश्चिम पुष्कर अर्द्ध के, भूतकाल चौबीस ।
तीर्थंकर नित पूजता, सदा नवाऊँ शीश ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा—पश्चिम पुष्कर द्वीप में, ऐरावत शुभ क्षेत्र ।
ताके तीर्थंकर लखूँ, धरूँ सहस्रों नेत्र ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

विदित छंद (तर्ज : मेरी लगी गुरु संग..)

'उपशांत' देव सुखरूप, प्रशम भाव भरते ।
हम पूजें भाव लगाय, शम सुख को वरते ।।
है पश्चिम पुष्कर द्वीप, ऐरावत सु वरा ।
जिन भूतकाल चौबीस, पूजूँ अर्घ्य चढ़ा ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उपशान्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

'फाल्गुन' शुभ नाम विशेष, हैं गुण रत्नाकर ।
हम पूजें भाव लगाय, पाने गुण आकर ।। है पश्चिम०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री फाल्गुनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

'पूर्वास' नाथ जिनदेव, शिवपुर वास करें ।
हम पूजें भाव लगाय, शिवपद सौख्य वरें ।। है पश्चिम०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वासजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

'सौधर्म' नाथ जिनदेव, शुभ धर्मनि कर्ता ।
हम पूजें भाव लगाय, मुक्ति वधू भर्ता ।। है पश्चिम०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौधर्मजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

'गौरिक' जिनदेव महान, तुम गौरवशाली ।
हम पूजें भाव लगाय, मेटें भव जाली ।। है पश्चिम०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गौरिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

'त्रिविक्रम' नाथ तीर्थेश, त्रिविध चक्र नाशा ।
हम पूजें भाव लगाय, भर उर शुभ आशा ।। है पश्चिम०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिविक्रमजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

'नरसिंह' नाथ जिनदेव, नरों में सर्वोत्तम ।
हम पूजें भाव लगाय, पद पाने उत्तम ।। है पश्चिम॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री नरसिंहजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

श्री 'मृगवसु' नाथ जिनेश, वसु कर्मनि हाने ।
हम पूजें भाव लगाय, वसु गुण प्रगटाने ।। है पश्चिम॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुगवसुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

'सोमेश्वर' नाथ जिनेश, शीतल तव वाणी ।
हम पूजें भाव लगाय, पाने जिनवाणी ।। है पश्चिम॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सोमेश्वरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

हैं देव 'सुधासुर' आप, विधि मल के हंता ।
हम पूजें भाव लगाय, बनने शिवकंता ।। है पश्चिम॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुधासुरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

श्री 'अपापमल्ल' जिनेश, विधि के संहारक ।
हम पूजें भाव लगाय, तजने अघ मारक ।। है पश्चिम॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अपापमल्लजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

श्री 'विबाध' नाथ जिनेश, अव्याबाध हुए ।
हम पूजें भाव लगाय, प्रासुक द्रव्य लिए ।। है पश्चिम॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विबाधजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

'संधिक' जिनदेव महान, भव संतति हारक ।
हम पूजें भाव लगाय, भव भय संहारक ।। है पश्चिम॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सन्धिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

श्री 'मानधात्र' जिनदेव, शैल मान चूरा ।
हम पूजें भाव लगाय, अघ मल हो दूरा ।। है पश्चिम॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मान्धात्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

श्री 'अश्वतेज' जिनदेव, चिद् गुण भंडारी ।
हम पूजें भाव लगाय, बनने अविकारी ।। है पश्चिम॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अश्वतेजोजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

SarvatoPooja 10 / 220

श्री 'विद्याधर' जिनराज, विद्या के स्वामी ।
हम पूजें भाव लगाय, बनने निष्कामी ।।
है पश्चिम पुष्कर द्वीप, ऐरावत सु वरा ।
जिन भूतकाल चौबीस, पूजूँ अर्घ्य चढ़ा ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विद्याधरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

हे देव 'सुलोचन' नाथ, सम्यक् लोचन दो ।
हम पूजें भाव लगाय, सद्गुण से भर दो ।। है पश्चिम॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुलोचनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

श्री 'मौननिधी' जिनदेव, मौन त्रियोग धरा ।
हम पूजें भाव लगाय, नशे त्रिरोग जरा ।। है पश्चिम॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मौननिधिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

श्री 'पुण्डरीक' जिनराज, पुण्यनिधी वंता ।
हम पूजें भाव लगाय, बनने मुनि संता ।। है पश्चिम॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुण्डरिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

'चित्रगण' जिनदेव महान, गणधर से वंदित ।
हम पूजें भाव लगाय, होवे आनंदित ।। है पश्चिम॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री चित्रगणजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

'मणिरिन्द्र' नाथ परमेश, गुणमणि के आकर ।
हम पूजें भाव लगाय, चिंतामणि पाकर ।। है पश्चिम॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मणिरिन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

श्री 'सर्वकाल' जिनराज, असुरकाल जीता ।
हम पूजें भाव लगाय, गाएँ गुण गीता ।। है पश्चिम॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वकालजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

श्री 'भूरिश्रवण' जिनदेव, भ्रमण मिटावन को ।
हम पूजें भाव लगाय, तव गुण पावन को ।। है पश्चिम॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री भूरिश्रवणजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

'पुण्यांग' नाथ जिनदेव, चिद् गुण में निष्ठे ।
हम पूजें भाव लगाय, हृदय कमल तिष्ठे ।। है पश्चिम॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुण्याङ्गजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

पूर्णार्घ्य

किरीट छंद

कर्म विनाश किया शिव वास हुए शिवनाथ जजूँ गुण गाकर ।
क्षेत्र इरावत पश्चिम पुष्कर द्वीप अतीत जिनेश प्रभाकर ।।
भक्ति सुभाव सुगंध मनोहर संयम से निज चित्त सजाकर ।
पावन जिन के पाद सुपद्म नशावत शीश सुप्रीत लगाकर ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उपशान्तादिपुण्याङ्गपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

श्री जिनवर वंदन, हरता क्रंदन, नशि भव बंधन, मुक्ति मिले ।
जिनवर गुण गाऊँ, रूप सुध्याऊँ, अति हर्षाऊँ, चित्त खिले ।।

शंभु छंद

जिनवर की वाणी में खिरता, है सर्वज्ञान का सार विभो ।
जिनवचनामृत उर धरते जो, वे पाते भवदधि पार प्रभो ।।
नव अर्थ द्रव्य छः सप्त तत्त्व, पंचास्तिकाय जिनवर भाषें ।
गणधर सुनकर प्रभो दिव्यध्वनि, पुनि द्वादशांग बुध परकाशें ।।१।।

आतम हित हेतु विराग ज्ञान, संयम युत योगी पाल रहे ।
निज आतम को तप पावक में, पिघलाकर जिन में ढाल रहे ।।
वैराग्य तत्त्व बुध पाने को, बारह अनुप्रेक्षा गायीं हैं ।
अरु सिद्ध लोक के सिद्धों ने, निज चित में पूर्व समायी है ।।२।।

जिनवर पद का यह कारण है, शुभ चेतन निधि का आलय है ।
बारह भावन जो सार गहे, वह पाता नित्य शिवालय है ।।
सु अनित्य अनुप्रेक्षा भासे, पर्याय विनशती क्षण क्षण में ।
शाश्वत ध्रौव्यमयी द्रव्य रहे, वह द्रव्य अस्ति है कण कण में ।।३।।

अशरण अनुप्रेक्षा सार यही, जग में वर शरण न कोइ यहाँ ।
श्री पंच गुरु जिन धर्म वचन, जिन जिनमंदिर व्यवहार कहा ।।
निश्चय से शरण शुद्ध आतम, योगीजन जिसको पाते हैं ।
वह नित्य शरण हम पाने को, सिद्धों का ध्यान लगाते हैं ।।४।।

संसार भ्रमण में सार नहीं, यह जीव नित्य दुख भोगे है ।
है सर्व शांति सुख चेतन में, शुद्धातम नित्य नियोगे है ।।
हर जीव अकेला जनम मरण, इस जग में आकर करता है ।
अपनी शुभ अशुभ सुकरनी का, फल नित्य अकेला भरता है ।।५।।

निज चेतन बिन सब द्रव्य जीव, अरु इतर स्वयं से न्यारे हैं ।
शुद्धातम लीन रहें भगवन, वे भवि के नित्य सहारे हैं ।।
मिथ्यात्व अविरति अरू कषाय, परमाद योग आस्रव करता ।
आस्रव के साथ सदा चउविध, कर्मों का बंध हुआ करता ।।६।।

आस्रव रोके से संवर हो, व्रत समिति गुप्ति वृष कहलाए ।
अनुप्रेक्षा परिषहजय करके, चारित्र पंचविध अपनाए ।।
संवर युत कर्म निर्जरा ही, भविजन को मोक्ष दिलाती है ।
सविपाक निर्जरा सबके यूँ, शिवमग में काम न आती है ।।७।।

व्रत तप संयम से योगीजन, अविपाक निर्जरा करते हैं ।
वे योगी ही बनकर अयोगि, फिर मुक्तिरमा को वरते हैं ।।
तिहुँ लोक भ्रमण हर जीव करे, है कर्म मूल उसका कारण ।
अज्ञानी भवदुख भोग रहा, ज्ञानी कर कर्मों का वारण ।।८।।

दुर्लभ है मानुष जन्म यहाँ, सत्संगति उत्तम कुल आयु ।
नीरोग सकल सर्वांग मिले, धी प्रखर प्रवीन अरु वृष वायु ।।

जिन श्रुत मुनि का सान्निध्य कठिन, है कठिन बहुत बोधी पाना।
अणुव्रति वा महाव्रती बनकर, अत्यंत कठिन श्रेणी जाना ॥९॥

है क्षीणमोह जिन केवलि पद, अरु सिद्ध महा दुर्लभ मानो ।
मानुष होकर मत व्यर्थ गँवा, पर्याय रत्न सम पहचानो ॥
नर देह सारथक तब होगी, जिनवृष को नित निज उर धारो ।
संसार हेतु तज करके सब, चैतन्य धर्म से श्रृंगारो ॥१०॥

शुभ दया धर्म अरु क्षमा भाव, आदिक वृष जग में अनुपम है ।
त्रय रत्न महाव्रत धर्म रूप, शुद्धात्मलीन वृष निरुपम है ॥
द्वादश भावन का सार गाय, जिनवर त्रिलोक मंगलकारी ।
हम निज जिनत्व के पाने को, वंदन करते नित अघहारी ॥११॥

दोहा–पूजन श्री जिनराज की, करे ताप अघ शांत ।
पूजक जिन बन शिव लहें, जिनगी[1] ये निर्भ्रांत ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभूतकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ॥
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

१. जिनवाणी

SarvatoPooja 10 / 222

SarvatoPooja 11 / 222

(६६)

पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीप ऐरावत क्षेत्र वर्तमानकालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

शार्दूलविक्रीडित छंद

द्वीपे पश्चिम पुष्करार्द्धे सुहदा, ऐरावता क्षेत्र है ।
ता में संप्रति वंद्यमान नित ही, तीर्थंकरा श्रेष्ठ हैं ॥
जैनेन्द्रा चउबीस पूजन करूँ, आह्वाननं देवता ।
संहारे विधि अष्ट भक्ति जिनकी, तासै प्रभो सेवता ॥

दोहा–**तीर्थंकर वंदन करूँ, नमन हजारों बार ।**
जिन भक्ती तरणी मिले, हो जाए भव पार ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

नरेन्द्र छंद

केवलज्ञान दिवाकर रश्मि, सम जिनपद जल धारा ।
जन्मादिक त्रय रोग नशाऊँ, पा जिन वैभव प्यारा ॥
पश्चिम पुष्कर ऐरावत के, संप्रति जिनवर ध्याऊँ ।
हे तीर्थेश्वर ! तव पूजन कर, तुम सा ही हो जाऊँ ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

बावन विध चंदन से इक सौ, अड़तालिस विधि नाशूँ।
जिन पूजूँ शांती ध्रुव पाऊँ, अपना चित्त विकासूँ ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

रजत खड्ग के दिव्य तेज सम, उत्तम अक्षत लाया ।
मोह अरि के नाश करन को, अक्षत खड्ग बताया ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

श्री जिन चरण चढ़ाऊँ पद्मा, अविकारी बन जाऊँ ।
ब्रह्मचर्य का धनुष बाण ले, मन्मथ प्राण नशाऊँ ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

तीर्थंकर के दिव्य भोग सम, उत्तम चरुवर लाया ।
क्षुधा वेदनी नाश करन को, जिनपद आज चढ़ाया ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

मैं असंख्य अर्केन्दु कल्पना, के शुभ दीप बनाऊँ ।
शाश्वत श्री जिनवर नित पूजूँ, केवलज्ञान सु पाऊँ ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

समवशरण के धूप घटों सम, निशदिन धूप जलाऊँ ।
जिनवर पूजन करके अपने, आठों कर्म नशाऊँ ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

तीन लोक में श्रेष्ठ सुरस फल, अक्ष अतिन्द्रिय प्यारे ।
जिनपद पूज रचाकर पाएँ, सिद्धि सदन नजारे ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

हीरा पन्ना मूंगा माणिक, नीलम ले पुखराजा ।
नवरत्नों का अर्घ्य बनाकर, मैं पूजूँ जिनराजा ।।
पश्चिम पुष्कर ऐरावत के, संप्रति जिनवर ध्याऊँ ।
हे तीर्थेश्वर ! तव पूजन कर, तुम सा ही हो जाऊँ ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा—पुष्करार्द्ध पश्चिम दिशा, ऐरावत शुभ क्षेत्र ।
वर्तमान चौबीस जिन, पूजूँ भक्ति समेत ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा—वर्तमान तीर्थेश जिन, जिनशासन की शान ।
हम पूजें उनकों यहाँ, रचके महाविधान ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

टप्पा छंद

मोहि राखो ऽऽऽ शरणा, श्री तीर्थंकर जिन राज जी, मोहि राखो ऽऽऽ॰ ।
श्री 'गांगेयक' प्रथम जिनेश्वर, तिनके पद सिर धरना ।
जिस भव में जिन शरण मिली ना, उस भव का क्या करना ।। मोहि॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गाङ्गेयकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

सिरी 'नल्लवासव' जिनवर जी, सुरवंदित तव चरणा ।
अविनाशी आतम गुण प्यारे, शाश्वत भौतिक [1]जर ना ।। मोहि॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नल्लवासवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

'भीम' नाथ जिन नंत बली तुम, नंत वीर्य हम वरना ।
मेरा तो बस काम एक है, श्री जिन नाम सुमरना ।। मोहि॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भीमजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

नाथ 'दयाधिक' दया सिंधु तुम, दया भक्त पर करना ।
मोक्ष महल के बिना भव्य का, दूजा कोई घर ना ।। मोहि॰

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दयाधिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

१. संपत्ति

श्री 'सुभद्र' जिनदेव भद्रता, नित मम उर में भरना ।
पुण्य उदय से भव सुख पाया, पुण्य रहे ये चिर ना ।। मोहि॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुभद्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

श्री 'स्वामी' जिन आप हि सच्चे, स्वामी और अवर ना ।
शाश्वत आतम का वैभव है, ये जग वैभव थिर ना ।। मोहि॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वामिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

'हनिक' नाथ जिनदेव हमारा, मन संयम मय करना ।
शाश्वत सुख चाहो जो चेतन, तो भोगों से डरना ।। मोहि॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री हनिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

'नन्दिघोष' जिननाथ जजो नित, ज्यों भवदधि से तरना ।
रत्नत्रय धर मुक्ति पाले, क्यों संयम से डरना ।। मोहि॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री नन्दिघोषजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

'रूपबीज' जिनदेव जजूँ नित, बीज धर्म का देना ।
मुक्ति रमा कैसे परिणाऊँ, चित में संयम गर ना ।। मोहि॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री रूपबीजजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

'वज्रनाभ' जिनवर को ध्याकर, जड़ मति शुभ मति करना ।
भव तन भोग विरक्त होय भवि, शिवमग में पग धरना ।। मोहि॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वज्रनाभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

श्री 'संतोष' जिनेश शरण में, त्याग लोभ का करना ।
बाहिर विचरैं कर्म बंध हो, तासों चित्त विचरना ।। मोहि॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सन्तोषजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

श्री 'सुधर्म' जिनदेव नमन नित, धर्ममयी मम करना ।
शुक्लध्यान ही उत्तम वृष है, ऐसा धरम अपर ना ।। मोहि॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुधर्मजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

नाथ 'फणीश्वर' आप चरण में, त्याग पाप का करना ।
मेरा मुझमें सब कुछ भगवन्, मुझमें कुछ भी पर ना ।। मोहि॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री फणीश्वरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

SarvatoPooja 11 / 224

'वीरचन्द्र' भगवान हमारे, तिन पद वंदन करना ।
पुण्यवान जिनभक्त कहाता, ऐसा दूजा नर ना ।।
मोहि राखो शरणा, श्री तीर्थंकर जिन राज जी, मोहि राखो शरणा ।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वीरचन्द्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

श्री 'मेधानिक' नाथ जजूँ तुम, प्रखर बुद्धि मम करना ।
अक्षर केवलज्ञान जु पाऊँ, जिसका होवे क्षर ना ।। मोहि॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मेधानिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

'स्वच्छनाथ' जिनदेव शरण पा, कर्म मलों को हरना ।
विषयभोग की फिसलन भारी, निज में नित्य संवरना ।। मोहि॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वच्छनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

देव 'कोपक्षय' के चरणों में, त्याग कोप का करना ।
निज स्वभाव से खाली चेतन, उसमें सद्गुण भरना ।। मोहि॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कोपक्षयजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

काम भाव तज श्री 'अकाम' जिन, लहूँ सदा मैं शरणा ।
नंत बार दूल्हा बन आया, बना मुक्ति का वर ना ।। मोहि॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अकामजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

'धर्मधाम' जिनदेव नमन करि, धर्मध्यान नित करना ।
कर्म बोझ क्यों ढोते रहते, मानव हो तुम खर ना ।। मोहि॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मधामजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

'सुक्तिसेन' जिनवर वंदन कर, सूक्ति एक चित् धरना ।
निज सुधार बिन मोक्ष नहीं है, तासों स्वयं सुधरना ।। मोहि॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुक्तिसेनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

'क्षेमंकर' पद पूजन करके, क्षेम आत्म का करना ।
अर्हत् मरण मुक्ति का दाता, बन केवलि अब मरना ।। मोहि॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षेमङ्करजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

'दयानाथ' जिनदेव जजूँ मैं, दया दृष्टि तुम करना ।
सकृत क्षपकश्रेणी मैं चढ़ लूँ, पड़ना नहीं उतरना ।। मोहि॰
ॐ ह्रीं अर्हं श्री दयानाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

श्री 'कीर्तिप' जिनदेव आपसे, चाहूँ कोई वर ना ।
बस सिद्धालय जाय विराजूँ, जहाँ करम के सर ना ।। मोहि०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कीर्तिपजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

नाथ 'शुभंकर' भक्तों के सब, अशुभ मेट शुभ करना ।
नाम लेत जिन पाप नशत हैं, जिनवर नाम उचरना ।। मोहि०

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शुभङ्करजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

पूर्णार्घ्य

किरीट छंद

मध्य सुदीप समा जिन संप्रति, भव्यन भूत भविष्य सुधारत ।
भक्ति दिवाकर मोह नशे अरु, मारग के सब रोड़क टारत ।।
पश्चिम पुष्कर दीप इरावत, चौबिस श्री जिन कर्म निवारत ।
पाप हरे बहु पुण्य बढ़े भवि, आप तरे अरु औरन तारत ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गाङ्गेयकादिशुभङ्करपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

जय जय तीर्थंकर, जय क्षेमंकर, सर्व कर्महर त्रिपुरारी ।
गुण नंत सुगाऊँ, अति हर्षाऊँ, नहीं अघाऊँ गुणधारी ।।

अशोक पुष्प मञ्जरी छंद

पुष्करार्द्ध में प्रतीचि क्षेत्र है एरावता सु,
संप्रती जिनेश्वरा अनंतशः प्रणाम हो ।
वीतरागता हितोपदेशता सुयुक्त होय,
तीन लोक ज्ञायका त्रिविश्व में प्रधान हो ।।
स्याद-वाद रीति पूरे विश्व को सुभेंट रूप,
दे कला सुजीवनोत्तमा सुसौख्य धाम हो ।

SarvatoPooja 11 / 225

अंतरंग बाह्य श्री सदा ही आप युक्त होय,
आप ही सुध्यातृ देव ध्येय आप ध्यान हो ।।१।।

आपके प्रताप से न होय कोई कष्टवान,
सर्व आपदा निवार आप चर्ण अर्चता ।
जन्म मृत्यु रोग नाश हेतु नित्य वैद्य देव,
भक्तिभाव युक्त एव नाथ आप चर्चता ।।
आपके समान देव गुण्य नाँहि और कोई,
आठ याम देव एव आपको हि वंदिता ।
आपके जिनत्व से निजत्व का हि भान होय,
सिद्ध बुद्ध शुद्ध रूप देव नित्य पूजता ।।२।।

सर्व कर्म से विहीन विश्वनाथ आत्मलीन,
ब्रह्मनिष्ठ नाथ श्री प्रणाम हो प्रणाम हो ।
ज्ञान का प्रकाश तीन लोक में किया महान,
ज्ञान गर्भ शाश्वता प्रणाम हो प्रणाम हो ।।
क्षायिका सु लब्धि युक्त श्रीश ध्यान ज्ञानवान,
धर्म सुप्रवर्तका प्रणाम हो प्रणाम हो ।
नंत वैभवा व ऋद्धि सिद्धियाँ सुयुक्त होय,
किन्तु हो विरक्त श्री प्रणाम हो प्रणाम हो ।।३।।

मेघ देख जो मयूर नृत्य गान युक्त होय,
भव्य देख आपको अनंत नंदवान हो ।
आपके समक्ष कोटि अर्क चंद्र तेज हीन,
होय दिव्य तेजपुंज युक्त कांतिमान हो ।।
आप नाम मात्र भी सुपुण्य वर्द्धता महान,
भक्त में जिनेन्द्रदेव भक्ति वर्धमान हो ।
नेत्र में छवी व कर्ण में ध्वनि जिनेन्द्र देव,
बुद्धि में विचार आपका ही विद्यमान हो ।।४।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थवर्तमानकालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 11 / 226

६७

पश्चिम पुष्करार्द्धद्वीप ऐरावत क्षेत्र भविष्यत्कालीन तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

अडिल्ल छंद

पश्चिम पुष्कर अर्द्ध सुऐरावत महा ।
भावी तीर्थंकर को पूजूँ मैं अहा ।।
आह्वानन करता हूँ स्वामी साजिए ।
निर्मल हृदयासन पर नाथ विराजिए ।

दोहा–ऐरावत में होएंगे, श्री चौबीस जिनेश ।
आह्वानन कर पूजहूँ, होने को सिद्धेश ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

सोरठा

जजूँ जिनेश्वर देव, निर्मल नीर चढ़ाय के ।
बनूँ सिद्ध स्वयमेव, जन्म जरा मृतु नाशि के ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

चंदन शीतल लाय, भवाताप को नाशिने ।
जिनवर चरण चढ़ाय, शाश्वत शांति मैं लहूँ ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

अक्षत शालि पुनीत, लेकर जिनवर नित जजूँ ।
कर्म महारिपु जीत, अविनाशी पद मैं लहूँ ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सुरतरु सुमन मँगाय, जिन चरणों में नित चढ़ा ।
भव दुःख काम नशाय, शुद्ध बुद्ध निज में लखूँ ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

वर व्यंजन स्वादिष्ट, लेकर हम जिन पूजते ।
लहे सुखद पद इष्ट, रोग क्षुधादि सब हरें ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

रत्नों के शुभ दीप, लेकर नीराजन करें ।
जिनके रहूँ समीप, निज जिनत्व पाने सदा ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

कर्मन ठाठ जलाय, दशविध धूप जलाय के ।
अष्टम वसुधा पाय, कर्म निर्जरा होत ही ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

सुरस श्रेष्ठ फल लाय, जिनवर अर्चन नित करें ।
सुफल मोक्ष सुखदाय, जिन गुण चिंतन से मिलें ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

जिनपद अर्घ चढ़ाय, रत्नाकर से रत्न ले ।
संयम ले तप करूँ, शिव पद मिलता यत्न से ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

SarvatoPooja 11 / 227

दोहा—चौबीसों तीर्थेश्वरा, तिन पद शीश नवाय ।
शांतीधारा संग में, पुष्पांजलि कराए ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा—पश्चिम पुष्कर द्वीप के, भावी जिन तीर्थेश ।
वंदन कर नित आपका, लहूँ आप सा भेष ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

प्रमानिका छंद

'अदोषिकेश' पूजिये, जिनेन्द्र रूप हूजिए ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अदोषिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

सु धर्म नाथ आप हो, नशाय सर्व पाप को ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृषभदेवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

सिरी 'विनै' सुनंद की, करो विनै सुचंद की ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विनयानन्दजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

'मुनी सु भारतं' नमूँ, सभी कषाय को हनूँ ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिभारतजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

जिनेश 'इन्द्रकेश' जी, हरो घटा किलेश की ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री इन्द्रकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

नमूँ सु 'चंद्रकेतु' मैं, विधी विलंघ हेतु मैं ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्रकेतुजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

'वृषध्वजा' प्रवर्धिका, सुज्ञान सूर्य शासिता ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री ध्वजादित्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

'वसू सुबोध' अर्चिता, बनूँ सुसिद्ध चर्चिता ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वसुबोधजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

जिनेन्द्र 'मुक्तिगत' जिना, सुध्याय रात औ दिना ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुक्तिगतजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

सु 'धर्मबोध' ध्याय के, लहूँ सुसिद्धि नायके ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मबोधजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

प्रभो 'दिवांग' देव जी, करें सुरेश सेव जी ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवाङ्गजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

'मरीचिकेश' बोध दो, अबोध बंध रोध दो ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मारीचिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

महामुनी 'सुजीवना', सुभक्त भक्ति में सना ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुजीवनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

'यशोधरेश' देवता, भवाब्धि नीर खेवता ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री यशोधरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

जिनेश 'गौतमेश' को, नमें बनें ऋषीश वो ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री गौतमजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

SarvatoPooja 11 / 228

'मुनीसुशुद्धि' सिद्ध है, महान है प्रसिद्ध है ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिशुद्धिजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

'प्रबोधिकेश' बोधिका, विभाव भाव रोधिका ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रबोधिकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

सु 'सद्अनीक' वीर हो, महान धर्म धीर हो ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सदानीकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

'चरित्रनाथ' नाम लो, सुसिद्ध हो विराम लो ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री चारित्रनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

'शतासुनंद' नंदिता, मुनी सुरेश वंदिता ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री शतानन्दजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

'सुवेद्अर्थ' बुद्धि दो, सुमोक्ष पंथ रिद्धि दो ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वेदार्थजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

'सुधा अनीक' ज्ञान में, दिखे सभी प्रमाण में ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुधानीकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

'सुज्योति आनना' महा, जजूँ सु सौख्य है लहा ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्योतिर्मुखजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

'सुरार्ध' भक्ति कीजिए, निधत्ति कर्म छीजिए ।
जिनेन्द्र भावि ऐर के, जजूँ सुभक्ति हेर के ।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुरार्धजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

पूर्णार्घ्य

छंद हुल्लास

पश्चिम पुष्करार्द्ध शुभ द्वीपा, ऐरावत जहँ क्षेत्र महीपा ।
काल अनागत के जगदीशा, भाव सहित नमहूँ नत शीशा ।।
नमहूँ नत शीशा, श्री जगदीशा, सुरग अधीशा, भगति करें ।
जो जिनपद ध्यावें, हृदय बसावें, चित हुलसावें, कुमति हरें ।।
जिन मुद्रा प्यारी, जग से न्यारी, जजि नर नारी, सुमति धरें ।
प्रभु भक्त तिहारे, आ तव द्वारे, संयम धारें, मुकति वरें ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अदोषिकादिसुरार्धनाथपर्यन्तचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

जय भावि जिनंदा, नहि भव फंदा, कर्मजाल चकचूर करो ।
शुभ भाव बनाऊँ, जिनवर ध्याऊँ, इष्टभावना पूर करो ।।

शंभु छंद

पश्चिम पुष्कर शुभ अर्द्ध द्वीप, ऐरावत कर्म भूमि मानो ।
दुखमा सुखमा इस श्रेष्ठ काल, में तीर्थंकर होते जानो ।।
उत्सर्पिणि आगामी सुकाल, जिन धर्म प्रवर्तक होएँगे ।
उन सबको वंदन बार-बार, शिव फल के बीज जो बोएँगे ।।१।।

केवलज्ञानी जिनवर जग के, सर्वदा परम हितकारी हैं ।
शुभ पन कल्याण विभव संयुत, जिन लोक क्षेम गुणकारी हैं ।।
श्री वर्तमान तीर्थंकर की, सब भविजन पूज रचाते हैं ।
पूजन अर्चन करके भविजन, फिर अपने पाप नशाते हैं ।।२।।

SarvatoPooja 11 / 229

चौंतीसों अतिशय के धारी, जिन धर्म चक्र वर्तन करते ।
दर्शक अर्चक पूजक वंदक, जिनवर निमित्त पा अघ हरते ।।
दस अतिशय जन्म समय होते, ना अन्य पुरुष में संभव है ।
दस अतिशय केवलि बन होते, यह तीन लोक में अद्‌भुत है ।।३।।

चौदह अतिशय सुरगण रचते, जो जन जन मंगल कारक हैं ।
चौदह अतिशय भी भव्य सत्व, को निश्चित पाप निवारक हैं ।।
तीर्थंकर जिनकी दिव्य ध्वनि, ओंकार रूप नित खिरती है ।
अथवा अनक्षरी सर्व अंग से, निःसृत हो हित करती है ।।४।।

सुर अर्द्ध मागधी भाषा में, उस ध्वनि का नित परिणमन करें ।
अष्टादश मह भाषामय अरु, लघु सप्त शतक भाषा सु धरें ।।
जहँ श्री जिनवर का हो विचरण, वहाँ जीव मित्रवत् ही रहते ।
निर्मल हो दसों दिशा निश्चित, नभ भी हो निर्मल यूँ कहते ।।५।।

सब ऋतु के पुष्प सहित फल भी, सब तरुवर पर आ जाते हैं ।
पृथ्वी हो काँच समा निर्मल, ऐसा श्री गणधर गाते हैं ।।
जब जिनवर का शुभ हो विहार, तव चरण कमल तल कमल रचें ।
दो सौ पच्चिस संख्या में हैं, वे तप्त स्वर्णमय नित्य खचें ।।६।।

नभ में सुर जय जयकार करें, सुरभित बयार शुभ कहती है ।
गंधोदक की पावन वृष्टि, भूमि निष्कंटक रहती है ।।
शुभ हर्षमयी सृष्टि सारी, जिन धर्म चक्र आगे चलता ।
पुनि वसुमंगल अरु सारभूत, उनको लख सारा अघ गलता ।।७।।

अतिशयकारी तीर्थंकर की, थुति अर्चन पूजन गा करके ।
चरणों में द्रव्य चढ़ाते हैं, अंतर में मोद मना करके ।।
जिनवर की शुभ पूजन अर्चन, वसु कर्म कालिमा धोती है ।
जे निकट भव्य नर पुंगव हैं, उनमें श्रद्धा दृढ़ होती है ।।८।।

दोहा

तीर्थंकर जिनदेव के, गुण हैं अपरम्पार ।
गणधर इंद्र न कह सकें, वंदूँ कर जयकार ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्ध्यैरावतक्षेत्रस्थभविष्यत्कालीनचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 11 / 230

(६८)

पश्चिमपुष्करार्ध विदेह क्षेत्र तीर्थंकर पूजन

अथ स्थापना

अडिल्ल छंद

पश्चिम पुष्कर द्वीप सुक्षेत्र विदेह के ।
जजूँ भक्तिवश तीर्थंकर चितगेह के ।।
वीरसेन महाभद्र जिनवर नाम हैं ।
देवयश अजितवीर्य सदा सुखधाम हैं ।।

दोहा

आह्वानन करता प्रभो, भक्तिभाव वश आज ।
पूजूँ निर्मल द्रव्य ले, लहूँ सिद्ध साम्राज्य ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीवीरसेन-महाभद्रदेवयशोऽजितवीर्यचतुस्तीर्थंकरसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीवीरसेन-महाभद्रदेवयशोऽजितवीर्यचतुस्तीर्थंकरसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीवीरसेन-महाभद्रदेवयशोऽजितवीर्यचतुस्तीर्थंकरसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

आँचली बद्ध चौपाई छंद

मणिमय कलश सु निर्मल नीर, जिनपद जजि पाऊँ भवतीर ।
सकल सुख देय, भवि बाधा सत्वर हर लेय ।।
तीर्थंकर शाश्वत मम ध्येय, पुष्कर पश्चिम पूजि विदेह ।
सकल सुख देय, भवि बाधा सत्वर हर लेय ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाण-श्रीवीरसेनादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

जिनपद चंदन नित्य चढ़ाय, भवाताप निश्चित मिट जाय ।
सकल सुख देय, भवि बाधा सत्वर हर लेय ।।
तीर्थंकर शाश्वत मम ध्येय, पुष्कर पश्चिम पूजि विदेह ।
सकल सुख देय, भवि बाधा सत्वर हर लेय ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाण-श्रीवीरसेनादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

अक्षत तंदुल जिनपद भेंटि, अक्षत निज गुण तुरत समेटि ।
सकल सुख देय, भवि बाधा सत्वर हर लेय ।।
तीर्थंकर शाश्वत मम ध्येय, पुष्कर पश्चिम पूजि विदेह ।
सकल सुख देय, भवि बाधा सत्वर हर लेय ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाण-श्रीवीरसेनादिचतुस्तीर्थंकरेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

जिन पद सुमन सु भव्य चढ़ाय, अविनाशी पद निश्चित पाय ।
सकल सुख देय, भवि बाधा सत्वर हर लेय ।।
तीर्थंकर शाश्वत मम ध्येय, पुष्कर पश्चिम पूजि विदेह ।
सकल सुख देय, भवि बाधा सत्वर हर लेय ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाण-श्रीवीरसेनादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

चरु जिनपद में नित्य चढ़ाय, क्षुधा वेदनी मूल नशाय ।
सकल सुख देय, भवि बाधा सत्वर हर लेय ।।
तीर्थंकर शाश्वत मम ध्येय, पुष्कर पश्चिम पूजि विदेह ।
सकल सुख देय, भवि बाधा सत्वर हर लेय ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाण-श्रीवीरसेनादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

दीप चढ़ा जिन पद जय होय, सो पूजक श्रुतकेवलि होय ।
सकल सुख देय, भवि बाधा सत्वर हर लेय ।।
तीर्थंकर शाश्वत मम ध्येय, पुष्कर पश्चिम पूजि विदेह ।
सकल सुख देय, भवि बाधा सत्वर हर लेय ।।

SarvatoPooja 11 / 231

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाण-श्रीवीरसेनादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

धूप चढ़ा भव धूप नशाय, निज शाश्वत गुण निश्चित पाय ।
सकल सुख देय, भवि बाधा सत्वर हर लेय ।।
तीर्थंकर शाश्वत मम ध्येय, पुष्कर पश्चिम पूजि विदेह ।
सकल सुख देय, भवि बाधा सत्वर हर लेय ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाण-श्रीवीरसेनादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

श्रीफल आदि सकल फल सार, जिनपद भेंटि लहूँ भव पार ।
सकल सुख देय, भवि बाधा सत्वर हर लेय ।।
तीर्थंकर शाश्वत मम ध्येय, पुष्कर पश्चिम पूजि विदेह ।
सकल सुख देय, भवि बाधा सत्वर हर लेय ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाण-श्रीवीरसेनादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

अर्घ भेंटि पद अनरघ पाय, जिनभक्ति शाश्वत सुखदाय ।
सकल सुख देय, भवि बाधा सत्वर हर लेय ।।
तीर्थंकर शाश्वत मम ध्येय, पुष्कर पश्चिम पूजि विदेह ।
सकल सुख देय, भवि बाधा सत्वर हर लेय ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाण-श्रीवीरसेनादिचतुस्तीर्थंकरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा—**गुणमाला जिनदेव की, हरे सकल अघ खान ।**
तीर्थंकर पूजन प्रदा, शाश्वत पद निर्वाण ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

पश्चिम पुष्कर अर्द्ध में, क्षेत्र विदेह सु थान ।
विद्यमान तीर्थेश चउ, पूज लहूँ शिवधाम ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

विधाता छंद

वीरसेना अती पावन, त्रिलोकीनाथ को जाया ।
जनक भूपाल बडभागी, प्रभु 'वीरसेन' को पाया ॥
सु पुष्कर द्वीप पश्चिम में, विदेहा क्षेत्र के अंदर ।
नमन उनको त्रियोगों से, विराजित हैं जो तीर्थंकर ॥

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीवीरसेनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

भद्रता के हिमालय हो, प्रभु 'महाभद्र' जग नायक ।
भद्रता मम हृदय भर दो, प्रभो सर्वज्ञ शिव दायक ॥
सु पुष्कर द्वीप॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीमहाभद्रजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

'देवयश' देव वरदानी, सुयश तिहुँ लोक में फैला ।
आप अर्चा करे निर्मल, हृदय जो नादि का मैला ॥
सु पुष्कर द्वीप॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीदेवयशोजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

कमल लांछन सुशोभित है, कनक पितु के दुलारे जो ।
'अजितवीर्य' का पद वंदन, पाप सारे नशाएँ वो ॥
सु पुष्कर द्वीप॰

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीअजितवीर्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

पूर्णार्घ्य

शंभु छंद

पश्चिम पुष्कर सुविदेह क्षेत्र, शाश्वत वह कर्म मही ख्याता ।
हर क्षण जहँ रहते विद्यमान, श्री तीर्थंकर जिन विख्याता ॥
श्री वीरसेन महाभद्र प्रभु, जिन देवयशो प्रभु वंदन है ।
जिन अजितवीर्य पद अर्घ्य धरूँ, जिनवर शत शत अभिनंदन है ॥

SarvatoPooja 11 / 232

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीवीरसेनादिचतुस्तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

पूजक उत्तम गति, सम्यक शुभमति, नशें दुःखमति सुख पावे ।
आसन्न भव्य जो, पुरुष दिव्य वो, नित्य सुधामृत बरसावे ॥

शंभु छन्द

श्री वीतराग सर्वज्ञ प्रभो, तुम नंत चतुष्टय धारी हो ।
हो जीव मात्र हितकर जग में, नित जय-जयकार तुम्हारी हो ॥
अघहर्ता सुखकर्ता जिनवर, तुम तीन लोक से वंदित हो ।
पूजक अर्चक तव गुण गाकर, चित में नित अति आनंदित हो ॥

कल्याणक वैभव तुम पाया, करते कल्याण स्वपर स्वामी ।
त्रयसंध्या में तव ध्यान लगा, हो जाते निश्चित शिवगामी ॥
चउ आराधन से तुमने प्रभु, विधि चार घातिया नाश किए ।
चउ घाती कर्म विनाशे हम, अतएव चरण जजि स्वात्म हिये ॥

युग वर्तमान में भी स्वामी, जिन देश अनेकों में विचरें ।
श्री विद्यमान तीर्थंकर जिन, परमौदारिक शुभ देह धरें ॥
श्रद्धा के निर्मल भाव बना, निज उर में तुम्हे बिठाऊँगा ।
जब तक इस तन में श्वास रहे, तब तक गुण गौरव गाऊँगा ॥

श्री वीरसेन जिन पूजन से, मैं परम वीरता पा जाऊँ ।
भव वैभव सारा तज करके, तव चरण शरण में आ जाऊँ ॥
श्री महाभद्र तीर्थंकर को, जजकर मैं भद्र बनूँ स्वामी ।
सब काम वासना नश करके, हो जाऊँ तुम सा निष्कामी ॥

जिनदेव तुम्हारा यश भारी, अतएव देवयश कहलाते ।
निर्मल यश लख भविजन तेरा, शुभ समवशरण में आ जाते ॥

कल्याण मार्ग भवि को तुमने, संप्रति युग में बतलाया है ।
वह मार्ग मोक्ष का पाने को, अंतर मन मम ललचाया है ।।

श्री अजितवीर्य जिन स्वामी ने, चउघाति कर्म को जीता है ।
मुक्ति का मारग भविजन को, अब लगता नित्य सुभीता[१] है ।।
भवदधि तारण में तव गीता[२], तरणी सम भवि को भासे है ।
जो हृदय वरें सद्ज्ञान पाय, निश्चित मिथ्यात्व विनाशे है ।।

अति शुद्ध बना निज भावों को, हे जिन तव पूज रचायी है ।
श्री जिनवर की आध्यात्म निधि, पर आतम आज लुभायी है ।।
शुभ भाव सहित जिनवर पूजन, त्रैकाल वंदना करते हैं ।
निज दुर्गुण को भवि नश करके, निज चित्त कोष गुण भरते हैं ।।

दोहा–पश्चिम पुष्कर अर्द्ध में, विद्यमान जिन चार ।
वीरसेन आदिक नमूँ, करने आत्म सुधार ।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्द्धद्वीपसम्बन्धिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थविहरमाणश्रीवीरसेन-महाभद्रदेवयशोऽजितवीर्यचतुस्तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

१. सरल २. जिनवाणी

SarvatoPooja 11 / 233

(६९)

पुष्करार्द्ध द्वीप इष्वाकार जिनालय पूजन

अथ स्थापना

नरेंद्र छंद

द्वीप सुपुष्करार्द्ध के करते, दोय भाग दो पर्वत ।
इष्वाकार नाम कहलाता, जिन पर सदन नमूँ शत ।।
शाश्वत जिनवर बिम्ब मनोहर, अरु अनुपम जिन भवना ।
आह्वानन करि नित्य जजें हम, जिनवर अरु जिन सदना ।।

दोहा

आह्वानन करता प्रभो, हो उर अम्बुज वास ।
निष्ठायुत अर्चन करूँ, पाऊँ जिनपद वास ।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धीष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धीष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धीष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

रोला छंद

विमलोत्तम जल लाय, जिनवर नित्य जजें जी ।
रोगत्रय नशि जाय, आस्रव बंध तजें जी ।।
पश्चिम पुष्कर अर्द्ध, इष्वाकार महीधर ।
थित जिनगृह जिनदेव, पूजूँ वसु द्रव लेकर ।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धीष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

सर्पवास शुभ शुद्ध, गंधसार शुभ लाऊँ ।
ताप मिटावन आज, श्री जिन चरण चढ़ाऊँ ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धीष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

धवल सु तंदुल लाय, धारूँ जिनपद आगे ।
पाऊँ अक्षय राज्य, सर्व अशुभ विधि भागे ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धीष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

कुसुमांजलि शुभ लाय, जिन पदाग्र में धारे ।
अति दुखदायक काम, ताको मूल संहारे ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धीष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

सर्वश्रेष्ठ पकवान, जिन पूजन को लाये ।
शुद्धातम में भाव, क्षुधा रोग नशि जाये ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धीष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

गोघृत दीप जलाय, जिनवर आरति कीजे ।
दुखद मोहतम आज, स्वामी मम हर लीजे ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धीष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

वसुविध धूप बनाय, जिनपद में नित खेऊँ ।
पावे शिवपद नित्य, रत्नत्रय नित सेऊँ ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धीष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

सर्व फलोत्तम सार, जिनवर सम्मुख धारूँ ।
शाश्वत सिद्धि हेतू, जिनगुण नित्य निहारूँ ।। पश्चिम०

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धीष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

नीरादिक वसु द्रव्य, ले जिन अर्चन करता ।
यथाख्यात चारित्र, पा निज मुक्ति वरता ।। पश्चिम०

SarvatoPooja 11 / 234

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसम्बन्धीष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा—पश्चिम पुष्कर अर्द्ध के, इष्वाकर महान् ।
जिनगृह जिन पूजूँ सदा, ये निश्चित अघहान ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

शाश्वत जिनगृह हैं सदा, नंत सुखों की खान ।
जिनबिंबों को पूजकर, बनूँ स्वयं गुणवान् ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

नरेन्द्र छंद

पुष्करार्द्ध के दक्षिण में है, इष्वाकार महीधर ।
कालोदधि पुष्कर को छूते, जाते सुर विद्याधर ।।
आठ लाख योजन लंबे ये, चउशत योजन ऊँचे ।
उस पर चार कूट इक पर जिनगृह श्री जिनवर पूजें ।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपस्थदक्षिणदिशीष्वाकारपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

पुष्करार्द्ध के उत्तर में है, इष्वाकार नियोजन ।
दो भागों में करे विभाजित, व्यास इक सहस योजन ।।
आठ लाख योजन लंबे ये, चउशत योजन ऊँचे ।
उस पर चार कूट इक पर जिनगृह श्री जिनवर पूजें ।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपस्थोत्तरदिशीष्वाकारपर्वतस्थसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

पूर्णार्घ्य

मत्ता छंद

इष्वाकारा गिरि द्वय सोहे, दो चैत्यालै नित मन मोहे ।
आठों द्रव्यों युत जिन पूजें, कर्मों को खो जिन सम हूजें ।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरदिशि सिद्धकूटस्थजिनालयस्थजिन-बिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

सब कर्मनि अष्टा, दें नित कष्टा, नष्ट करि शिवपुर जाऊँ ।
लहुँ गुण भंडारा, भवदधि पारा, बनूँ अयोगी गुण पाऊँ ।।

रथोद्धता छंद

पुष्करार्द्ध शुभ द्वीप माँहि है, दो गिरी इषु अकार वाँहि है ।
स्वर्णमान गिरि पे सुशोभिता, देव मंदिर सु नित्य मोहिता ।।

सौ सु योजन कि नींव है कही, ऊँचि चार शत योजना सही ।
दिव्य वेदि वन वेदि साजती, ऊँचि कोस द्वय वेदि राजती ।।

चार कूट इक शैल पे महा, दिव्यरत्न परिपूरिता अहा ।
एक पे जिनगृहा विराजता, तीन व्यंतर सुरा निवासता ।।

एक शैल इक गेह सोहता, भव्य चित्त वह नित्य मोहता ।
होय मंदिरनि से जु वासता, पाय सिद्ध महि का सु रासता ।।

ऋद्धिधारि यति भाव भक्ति से, पूजते सुखद नित्य शक्ति से ।
पूजनार्थ शुभ द्रव्य लाय के, हो खगेंद्र जजि भक्ति गाय के ।।

ज्ञान क्षायिक लहे सु पूजका, भक्ति से भगत श्रीश हूजता ।
लब्धि क्षायिक सु प्राप्त हो प्रभो, विज्ञ आत्म अब मैं बनूँ विभो ।।

शील शाश्वत लहूँ विशारदा, हो प्रसन्न जिन गी सुशारदा ।
तीन कोट मणि वेष्टिता गृहा, चैत्य केतु वन भूमि है अहा ।।

मान थंभ नव स्तूप वीथि में, वंदता नमन भक्ति रीति मैं ।
चैत्य चैत्यगृह नित्य अर्चना, भाव युक्त जिनदेव वंदना ।।

SarvatoPooja 11 / 235

दोहा—पुष्करार्द्ध में दो गिरी, इष्वाकार सुनाम ।
तिन थित जिनगृह जिन जजूँ, पहुँचूँ मैं शिवधाम ।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपस्थीष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(७०)

सर्व साधु पूजन

अथ स्थापना

चउबोला छंद

सूरी पाठक श्रमण संघ ये, यथाजात मुनिराज भले ।
स्वपर हितैषी वैरागी मुनि, मोक्षमार्ग पर नित्य चलें ।।
आह्वानन कर सर्व साधु की, मैं नित पूज रचाता हूँ ।
रत्नत्रय को पाने हेतू, मंगल भाव बनाता हूँ ।।

दोहा–निर्ग्रन्थों को भक्ति वश, आह्वानन कर आज ।
योगत्रय से पूजकर, लहूँ उभय साम्राज ।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वाचार्योपाध्यायसाधुसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्री सर्वाचार्योपाध्यायसाधुसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री सर्वाचार्योपाध्यायसाधुसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

सोरठा छंद

क्षीरोदधि शुचि नीर, जन्म जरा मृतु नित हरे ।
गुरू हरें भव पीर, उभय लोक भवि सुख करें ।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वाचार्योपाध्यायसाधुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

ले चंदन गोशीर, भवाताप को नाशने ।
गुरू हरें भव पीर, उभय लोक भवि सुख करें ।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वाचार्योपाध्यायसाधुभ्यः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

पाऊँ भवदधि तीर, अक्षत ले निशदिन जजूँ ।
गुरू हरें भव पीर, उभय लोक भवि सुख करें ।।

SarvatoPooja 11 / 236

ॐ ह्रीं श्री सर्वाचार्योपाध्यायसाधुभ्योऽक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

लहूँ ब्रह्म गंभीर, पुष्पों से गुरु पूजता ।
गुरू हरें भव पीर, उभय लोक भवि सुख करें ।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वाचार्योपाध्यायसाधुभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

लाऊँ मोदक खीर, क्षुधा रोग को नाशने ।
गुरू हरें भव पीर, उभय लोक भवि सुख करें ।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वाचार्योपाध्यायसाधुभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

नीलम पन्ना हीर, रत्न दीप से अर्चता ।
गुरू हरें भव पीर, उभय लोक भवि सुख करें ।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वाचार्योपाध्यायसाधुभ्यो महामोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

धारूँ वसु गुण धीर, धूप वह्नि में खेय जजि ।
गुरू हरें भव पीर, उभय लोक भवि सुख करें ।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वाचार्योपाध्यायसाधुभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

बन संयम से वीर, ले श्रीफल गुरु पूजता ।
गुरू हरें भव पीर, उभय लोक भवि सुख करें ।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वाचार्योपाध्यायसाधुभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

पाऊँ सिद्ध समीर, अर्घ्य चढ़ा गुरुदेव को ।
गुरू हरें भव पीर, उभय लोक भवि सुख करें ।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वाचार्योपाध्यायसाधुभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–आचारज पाठक गुरू, यथाजात मुनिराज ।
पदरज निज मस्तक धरूँ, संयम सुख के काज ।।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

निर्ग्रन्थों की शरण में, पाऊँ चिर आनंद ।
षट्पद सम बन पद्म में, लहूँ सदा निजनंद ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

नरेन्द्र छंद

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित तप, वीर्याचार सु पालें ।
स्वपर अनुग्रह में रत रहते, भवि को वृष में ढालें ॥
छत्तिस मूलगुणों के धारी, इस युग के तीर्थंकर ।
हृदय बसाऊँ भाव सहित गुरु, तुम हो नित्य हितंकर ॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्यपरमेष्ठिभ्यो नमोऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, जो नित पाठी होते ।
शिष्यों को है ज्ञान प्रदाता, धर्म बीज वे बोते ।
धर्म देशना में प्रवीण वे, श्रुत केवलि सम मानो ।
अनुपम प्रज्ञा के धारी मुनि, पाठक मम उर आनो ॥

ॐ ह्रीं श्री उपाध्यायपरमेष्ठिभ्यो नमोऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित से, निज तन शुद्ध बनाया ।
भव तन भोगों से विरक्त हो, धर्म ध्यान नित भाया ॥
गुप्ति समिति संयम युत रहते, बाइस परिषह जीतें ।
अनुप्रेक्षा वृष चिंतन मय नित, शुद्धातम रस पीते ॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वसाधुपरमेष्ठिभ्यो नमोऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

पूर्णार्घ्य

सार छन्द

सदा पूज्य आचार्य सु पाठक, सर्व साधु निर्ग्रन्था ।
चैत्य जिनालय वृष जिनवाणी, निश्चित शिवपुर पंथा ॥
श्री गुरुओं को हृदय बसाकर, वसु गुण पाने आया ।
अपने पूर्वज सिद्ध प्रभो का, कुल ही मुझको भाया ॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वाचार्योपाध्यायसाधुभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

SarvatoPooja 11 / 237

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

जय जय निर्ग्रन्था, तजि सब ग्रंथा, परमेष्ठी जिन आप कहे ।
शुभ सत्य प्रकाशक, चित्त विकासक, मेरे चित में नित्य रहे ॥

चउबोला छंद

दर्शन ज्ञान चरित तप वीरज, पंचाचार सदा पालें ।
भव्य जनों को संबल देकर, अशुभ कर्म उनके टालें ॥
गुण छत्तीस मूलगुणधारी, सूरि देव जग वंदित हैं ।
कलियुग में हे धर्म प्रणेता, क्षिति तुमसे आनंदित है ॥

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, पाठक गण सद् सूर्य प्रभो ।
करते सु अध्ययन - अध्यापन, हरें तिमिर अज्ञान विभो ॥
ज्ञान मूर्ति मुनि उपाध्याय को, योगत्रय से वंदन है ।
धर्म प्रभावक आत्मलीन गुरु, तीर्थंकर लघु नंदन हैं ॥

विषय कषायारंभ परिग्रह, सर्व पाप परित्यागी हो ।
भव तन भोग व अर्थों से भी, आप पूर्ण वैरागी हो ॥
ज्ञान ध्यान तप लीन निरंतर, रत्नत्रय के स्वामी हो ।
चरण वंदना करूँ आपकी, मुक्तिपंथ अनुगामी हो ॥

परम धर्म स्वीकार अहिंसा, तीन काल तिहुँ लोकों ने ।
यही विश्व की जननी निश्चित, लिक्खा सब ही श्लोकों में ॥
दया अहिंसा करुणा पालन, संत दिगम्बर नित करते ।
उनके युगल चरण अम्बुज में, भविजन नित मस्तक धरते ॥

सर्व पाप का मूल मृषा है, सत्य वृष का है आधार ।
उसी सत्य को संत दिगम्बर, करें पूर्ण रीति स्वीकार ॥
सत्य धर्म का प्राण नादि से, ऋषि मुनि सब कहते आये ।
इसीलिये तो संत दिगम्बर, भगवन् सम हमको भाये ॥

बहुत कठिन है पर वस्तू या, परभावों का त्याग प्रभो ।
निज सु चतुष्टय में रहना ही, सर्वश्रेष्ठ तप कहा विभो ।।
किन्तु दिगम्बर संत निरंतर, शाश्वत निज गुण अभिलाषी ।
चौर्य पाप का पूर्ण त्याग कर, रहें सदा निज घटवासी ।।

मैथुन भाव राग मूलक है, राग द्वेष भव के कारण ।
माता-बहिन सुता सम जाने, सर्व अंगना गुरु तारण ।।
पर परणति का पूर्ण त्याग कर, निज आतम में लीन रहें ।
यथाजात निर्ग्रन्थ दिगम्बर ब्रह्मचर्य परवीण कहें ।।

पर का ग्रहण परिग्रह माना, मूर्च्छित निश्चित करता है ।
पर भावों का संग्राहक ही, आत्मबोधि से डरता है ।।
चिन्मय शाश्वत निज निधि पाने, सकल वस्तु परित्यागी हैं ।
उन्हीं दिगम्बर संत चरण की, रज पाने अनुरागी हैं ।।

जिनवर की वच सिंधु सुधा से, जो चुनते आगम मोती ।
जिनवचनामृत की शुभ धारा, रागद्वेष मल को धोती ।।
होती निर्मल आतम निश्चित, यथाजात गुरु ज्ञानी की ।
को महिमा गा सकता जगमें, शुद्धातम निज ध्यानी की ।।

दोहा–दर्शन करके देव के, तत्क्षण शांति पाएँ ।
चंद्र रश्मि पाकर यथा, नलिनी सुखद खिलाएँ ।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वाचार्योपाध्यायसाधुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 11 / 238

(७१)

श्री जिनागम पूजन

अथ स्थापना

सार छंद

प्रथमादिक अनुयोग चार युत, द्वादशांग की धारी ।
भविजन नित निज चित्त बसाते, बन जाते अविकारी ।।
हे माँ! तव पद मैं भी आया, कृपा करो सुखकारी ।
आह्वानन कर पूज रचाऊँ, नित प्रति धोक हमारी ।।

दोहा–श्री सर्वज्ञ मुख उद्भव, आगम अव्याबाध ।
श्रुत देवी मम उर बसे, समता धरूँ अगाध ।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेवि! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेवि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेवि ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

चामर छंद

केवली सुलेश्य रूप नीर शुभ्र लाय के ।
जन्म मृत्यु नाश हेतु पूजहुँ चढ़ाय के ।।
श्री जिनेन्द्र दिव्य वाणि नंत सौख्य धाम हो ।
द्वादशांग रूप माँ सरस्वती प्रणाम हो ।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेव्यै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

गंध सार लाय भाव भक्ति युक्त अर्चता ।
क्रोध पाप दैत्य नाशने सुग्रंथ चर्चता ।। श्री जिनेन्द्र०

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेव्यै संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

शालि ले अखंडिता सु अर्चना रचावता ।
ज्ञान के अखंडिता प्रवाह हेतु ध्यावता ।। श्री जिनेन्द्र०

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेव्यै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

ले प्रसून मैं जजूँ कि कामदेव वश्य हो ।
काम जीतने सदा जिनेन्द्र वाणि शस्त्र हो ।। श्री जिनेन्द्र०

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेव्यै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

ले चरू सुपूजता क्षुधाजयी सशक्त हो ।
पूर्ण ज्ञान भोग पाय चेतना सुतृप्त हो ।। श्री जिनेन्द्र०

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेव्यै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

रत्नदीप लेय ज्ञान रत्न हेतु पूजता ।
आपकी कृपा से लोक वा अलोक सूझता ।। श्री जिनेन्द्र०

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेव्यै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

धूप वह्नि में प्रजार चेतना सुदिव्य हो ।
भारती कृपा मिले तो अज्ञ पूर्ण विज्ञ हो ।। श्री जिनेन्द्र०

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेव्यै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

श्री फलादि ले जजूँ, सु ज्ञान रूप वेश हो ।
कर्म नष्ट हों व मोक्ष दुर्ग में प्रवेश हो ।। श्री जिनेन्द्र०

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेव्यै महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

श्रेष्ठ रत्न अर्घ्य लेय ब्राह्मिणी चढ़ावता ।
शुक्ल भाव युक्त श्री जिनेन्द्र वाणि गावता ।। श्री जिनेन्द्र०

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

SarvatoPooja 11 / 239

दोहा

आतम का भोजन यही, ज्ञानामृत कहलाय ।
चेतन को संतृप्त कर, निज गुण शुभ प्रगटाय ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

जिनवाणी की अर्चना, निश्चित ही सुखदाय ।
नश अज्ञान तिमिर वही, ज्ञान भानु प्रगटाय ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ द्वादशांग अर्घ्य

नरेन्द्र छंद

आचारांग प्रथम शुभ अंगा, सदाचार को कहता ।
सहस अठारह पद है जिसमें, धर्म नित्य शुभ बहता ।।
बारह अंगों से शोभित है, द्वादशांग ये प्यारा ।
भव्य जनों को इस भवदधि से, द्वादशांग ने तारा ।।

ॐ ह्रीं श्री आचाराङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

व्यवहार धर्म क्रिया आदिक व, स्व-पर समय बतलावे ।
सहस छत्तिस सूत्र पद जिसमें, भवि के पाप नशावे ।। बारह०

ॐ ह्रीं श्री सूत्रकृताङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

एक एक पद भेद बताते, नित-नित वृद्धि करके ।
ठाण अंग तीजो सहस्त्र बे, दाल सुमति पद वरके ।। बारह०

ॐ ह्रीं श्री स्थानाङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

पूर्ण द्रव्य पद का समवायक, समवायांग सु जानो ।
लक्ष एक चौसठ सहस्त्र पद, चेतन गुण पहचानो ।। बारह०

ॐ ह्रीं श्री समवायाङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

साठ हजार प्रश्न के उत्तर, व्याख्या पण्णति कहती ।
सहस अठाइस उत्तर दो लख, पद जिनवाणी गहती ।। बारह०

ॐ ह्रीं श्री व्याख्याप्रज्ञप्त्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

तीर्थंकर गणधर केवलि की, ज्ञातृकथा सुखकारी ।
पाँच लाख छप्पन हजार पद, निश्चित भव दुख हारी ।। बारह०
ॐ ह्रीं श्री ज्ञातृकथाङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

उपासकाध्ययन अध्ययन में, श्रावक का वृष सारा ।
ग्यारह लाख हजार सुसत्तर, पद मेटे दुख भारा ।। बारह०
ॐ ह्रीं श्री उपासकाध्ययनाङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

अंतःकृत केवलि दस होते, हर तीर्थंकर शासन ।
लाख तेइस रु सहस अठाइस, पद शोभे मन भावन ।। बारह०
ॐ ह्रीं श्री अन्तःकृतदशाङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

सह उपसर्ग कठिन मुनिवर दस, पंच अनुत्तर साजे ।
लाख बानवें सहस चवालिस, पद सु अंग में साजे ।। बारह०
ॐ ह्रीं श्री अनुत्तरौपपादिकदशाङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

आक्षेपिणी आदि सुकथायें, प्रश्नव्याकरण कहता ।
सोलह सहस्र तिनवति लक्षा, पद में जिनवृष बहता ।। बारह०
ॐ ह्रीं श्री प्रश्नव्याकरणाङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

पुण्य पाप कर्मों के फल को, सूत्र विपाक बतावे ।
एक कोटि लख चौरासी पद, भवि के पाप नशावे ।। बारह०
ॐ ह्रीं श्री विपाकसूत्राङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

दृष्टिवाद शुभ अंग बारवाँ, एक अरब वसु कोटी ।
अड़सठ लख छप्पन हजार, पद को नमन है कोटी ।। बारह०
ॐ ह्रीं श्री दृष्टिवादाङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

अथ चतुर्दश पूर्व अर्घ्य

सार छंद (तर्ज : पीछी रे पीछी...)

प्रथम पूर्व में है दस वस्तू, प्राभृत दो सौ जानो ।
व्यय-उत्पाद-ध्रौव्य का वर्णन, करता है शुभ मानो ।।
एक करोड़ पदों से युत, उत्पाद पूर्व को ध्याऊँ ।
भाव भक्ति युत जिनवाणी माँ, को नित शीश झुकाऊँ ।।
ॐ ह्रीं श्री उत्पादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

SarvatoPooja 11 / 240

चौदह वस्तू प्राभृत दो सौ, अस्सी ऊपर जानो ।
अंग अग्र परिमाण बतावे, स्वपर भेद पहचानो ।।
लाख छ्यानवे पद से युत अग्रायणीय ध्याऊँ ।
भाव भक्ति युत जिनवाणी माँ, को नित शीश झुकाऊँ ।।
ॐ ह्रीं श्री अग्रायणीयपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

आठ वस्तु शत षष्टी प्राभृत, सबके शुभ बल भाषे ।
भविजन निज बल प्रगटाने को, श्रुत अंतस परकाशे ।।
सत्तर लाख पदों के द्वारा, वीर्यवाद को ध्याऊँ ।
भाव भक्ति युत जिनवाणी माँ, को नित शीश झुकाऊँ ।।
ॐ ह्रीं श्री वीर्यानुप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

वस्तु अठारह-त्रिशत षष्टि शुभ, प्राभृत मनहर साजे ।
जीव अजीव सभी द्रव्यों के, अस्ति नास्ति गुण साजे ।।
साठ लाख पद अस्तिनास्ति परवाद पूर्व को ध्याऊँ ।
भाव भक्ति युत जिनवाणी माँ, को नित शीश झुकाऊँ ।।
ॐ ह्रीं श्री अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

बारह वस्तु चालिस दोसौ, प्राभृत मंगलकारी ।
पंच ज्ञान अज्ञान तीन को, कहता श्रुत अघहारी ।।
एक हु न्यून कोटि इक पद से, ज्ञान प्रवाद सु ध्याऊँ ।।
भाव भक्तियुत जिनवाणी माँ, को नित शीश झुकाऊँ ।।
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

बारह वस्तु शतक दो चालिस, प्राभृत सत्य सुभाषे ।
सत्यासत्य वचन को कहकर, नित शिव पंथ प्रकाशे ।।
षट् उत्तर इक कोटि पदों में, सत्य प्रवाद सु ध्याऊँ ।
भाव भक्ति युत जिनवाणी माँ, को नित शीश झुकाऊँ ।।
ॐ ह्रीं श्री सत्यप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

सोलह वस्तू बीस तीन सौ, प्राभृत आत्म प्रणीता ।
असंख रूप से जीव तत्त्व का, वर्णन करे सुगीता ।।

कोटि छबीस पदों के द्वारा, आत्म प्रवाद सु ध्याऊँ ।
भाव भक्ति युत जिनवाणी माँ, को नित शीश झुकाऊँ ।।
ॐ ह्रीं श्री आत्मप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

बीस वस्तु प्राभृत चतुशत है, कर्म प्रकाशक न्यारा ।
वसुविध भाव द्रव्य कर्मों का, इसमें कथन अपारा ।।
लाख अशीती कोटि एक पद, कर्म प्रवाद सु ध्याऊँ ।
भाव भक्ति युत जिनवाणी माँ, को नित शीश झुकाऊँ ।।
ॐ ह्रीं श्री कर्मप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

तीस वस्तु छः सौ प्राभृत युत, व्रत उपवास बताए ।
गुप्ति समिति अरु व्रत पालन विधि, भव्यों को समझाए ।।
लख चौरासी पद के द्वारा, प्रत्याख्यान सु ध्याऊँ ।
भाव भक्ति युत जिनवाणी माँ, को नित शीश झुकाऊँ ।।
ॐ ह्रीं श्री प्रत्याख्यानप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

पंद्रह वस्तु तीन सौ प्राभृत, बहुविध विद्या भाषे ।
मिथ्यात्रय अज्ञान नशावे, सम्यक् ज्ञान प्रकाशे ।।
एक कोटि दस लाख पदों से, विद्या पूर्व सु ध्याऊँ ।
भाव भक्ति युत जिनवाणी माँ, को नित शीश झुकाऊँ ।।
ॐ ह्रीं श्री विद्यानुवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

दस वस्तू दो सौ प्राभृत में, कल्याणक शुभ गाते ।
ज्योतिष ग्रह के चर क्षेत्रों को, विस्तृत जिन बतलाते ।।
कोटि छबीस पदों से युत कल्याणवाद को ध्याऊँ ।
भाव भक्ति युत जिनवाणी माँ, को नित शीश झुकाऊँ ।।
ॐ ह्रीं श्री कल्याणानुवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

दस वस्तू दो सौ प्राभृत में, देह चिकित्सा वरणी ।
प्राणायाम भेद विधि कहकर, नित्य देह सुख करनी ।।
तेरह कोटि पदों के द्वारा, प्राणावाय सु ध्याऊँ ।
भाव भक्ति युत जिनवाणी माँ, को नित शीश झुकाऊँ ।।
ॐ ह्रीं श्री प्राणानुवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

SarvatoPooja 11 / 241

दस वस्तू दो सौ प्राभृत में, कला बहुत विस्तारी ।
नरनारी की कला बहुत गुण, काव्य कला गुणधारी ।।
शुभ्र कोटि नव पद के द्वारा, क्रियाविशाला ध्याऊँ ।
भाव भक्ति युत जिनवाणी माँ, को नित शीश झुकाऊँ ।।
ॐ ह्रीं श्री क्रियाविशालपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।25।।

दस वस्तू दो सौ प्राभृत में, क्रिया मोक्ष की भाषे ।
वसु व्यवहार बीज चदु शिव को, शिवसुखमय परकाशे ।।
लाख पचास कोटि बारह पद, लोक बिंदु को ध्याऊँ ।
भावभक्ति युत जिनवाणी माँ, को नित शीश झुकाऊँ ।।
ॐ ह्रीं श्री लोकबिन्दुसारपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।26।।

पूर्णार्घ्य

घत्ता छंद

हे जिनवर ईशा, वृष बत्तीसा, गहें मुनीशा सुखकारी ।
हम पूज रचावें, गीत सु गावें, अर्घ चढ़ावें हितकारी ।।
ॐ ह्रीं श्री द्वादशाङ्गश्रुतदेव्यै नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री द्वादशाङ्गश्रुतज्ञानाय नमः ।
(9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

जय जय जिनवाणी, पूर्ण प्रमाणी, द्वादशांगमय नित ध्याऊँ ।
माँ पूजा करके, निजगुण वरके, ज्ञान शरीरी हो जाऊँ ।।

भुजंगप्रयात छंद

प्रभोरूप उत्तुंग श्री शैल मानो,
नदी निर्गता अर्हता वाणि जानो ।
तभी से प्रवाहे अविच्छिन्न रूपा,
सुमंदाकिनी जैन वाणि अनूपा ।।१।।

सभी भ्रान्ति नाशे सु स्याद्वाद वाणी,
अनेकांत रूपा सदा ही प्रमाणी ।

कहे वीतरागी प्रभो बैन प्यारे,
गहे जो वही मुक्तिशाला पधारे ।।२।।

गहे श्रेष्ठ चारित्र श्री शास्त्र पेखे,
बने देह वैदेहि ज्ञानास्त्र ले के ।
कहे विश्व पूरा सदा माँ निराली,
मिले छत्र छाया जु मेटे भवाली ।।३।।

नमूँ शारदा जैन वाणी सुनाऊँ,
नमूँ द्वादशांगी प्रभो गीत गाऊँ ।
नमूँ गी कुमारी हितैषी सु माता,
नमूँ नित्य वागीश्वरी देय साता ।।४।।

रखो अंक में माँ सदा आप ध्याऊँ,
अहो घोर संसार में ना भ्रमाऊँ ।
नहीं माँ समा कोई वात्सल्य दाता,
सुरक्षा करो माँ बनूँ मैं विधाता ।।५।।

दोहा—सरस्वती माँ को नमन, माँ रखना निज अंक ।
ज्ञानावरणी नष्ट हो, बनूँ सदा निःशंक ।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतिदेव्यै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 11 / 242

(७२)

मानुषोत्तर जिनालय पूजन

अथ स्थापना

चउबोला छंद

मध्यलोक में मर्त्य लोक का, नित्य विभाजन करता है ।
जिसके दिव्य जिनालय का शुभ, दर्शन अघ को हरता है ।।
भव्य सुरासुर नित्य अर्चना, दिव्य द्रव्य से करते हैं ।
मनुजोत्तर नग के जिनबिंबों, का अर्चन हम करते हैं ।।

दोहा—मनुजोत्तर गिरि जिनसदन, अरु शाश्वत जिन बिम्ब ।
शक्ति हीन हम इत जजें, लखें स्वात्म निज बिम्ब ।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थचतुर्दिक्चतुस्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थचतुर्दिक्चतुस्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थचतुर्दिक्चतुस्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

शुद्ध गीता छंद

अर्करश्मि सा निर्मल जल, आत्म के पाप मल धोता ।
प्रभो पूजन से निश्चित हि, आप पर भेद है होता ।।
जिनालय मानुषोत्तर के, भव्य को नित्य सुखकारी ।
कला आध्यात्म के आलय, पूजते होय अघहारी ।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थचतुर्दिक्चतुस्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

सुगंधित चंदनादि ला, जिनेश्वर पाद नित अर्चूं ।
भवातप नाशकर अपना, जिनेश्वर गुण महा चर्चूं ।। जिनालय०

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थचतुर्दिक्चतुस्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

धवल चंद्रांशु सम तंदुल, चढा नित भावना भाएँ ।
नित्य वैभव सु आतम का, पूज जिनदेव हम पाएँ ।। जिनालय॰

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थचतुर्दिक्चतुस्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सुगंधित पुष्प जगभर के, प्रभु पूजन को ले आया ।
जीत मदनेश मैं पाऊँ, ब्रह्मचर्य ही मन भाया ।। जिनालय॰

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थचतुर्दिक्चतुस्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

सरस नैवेद्य भर थाली, जिनेश्वर पाद रख आगे ।
शुद्ध चैतन्य गुण पाऊँ, क्षुधादिक रोग सब भागे ।। जिनालय॰

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थचतुर्दिक्चतुस्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

रत्नशुभ दीप लाकर के, जिनेश्वर वंदना कीजे ।
मिटाकर तिमिर आतम का, ज्ञान द्युति चित्त भर लीजे ।। जिनालय॰

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थचतुर्दिक्चतुस्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

दशांगी धूप ला करके, प्रभो पूजन रचाते हैं ।
कर्म का काठ सब वारें, सिद्ध गुण नित्य भाते हैं ।। जिनालय॰

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थचतुर्दिक्चतुस्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

सुफल नर जन्म करने को, सरस फल दिव्य लाए हैं ।
सिद्ध के अष्ट गुण पाऊँ, वही गुण आज भाए हैं ।। जिनालय॰

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थचतुर्दिक्चतुस्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

श्रेष्ठतम रत्न भर थाली, महा अर्चन कराते हैं ।
सिद्ध सा वास हो नित ही, भाव शुभ हम बनाते हैं ।। जिनालय॰

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थचतुर्दिक्चतुस्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

SarvatoPooja 11 / 243

दोहा–मानुष उत्तर नग सुभग, जिनगृह जिन भगवान ।
अष्ट द्रव्य ले पूज भवि, पाएँ शुभ वरदान ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

मानुषोत्तरा वर्षधर, के चहुँदिश जिनराज ।
पुष्पांजलि कर पूजता, देय शिवालय वास ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

विधाता छंद

सुपुष्कर द्वीप मध्य में, गिरी उत्तुंग प्यारा है ।
पूर्व राजित जिनेंद्रों को, सदा वंदन हमारा है ।।
मानुषोत्तर सुनग प्यारा, यहीं तक नर गमन करते ।
वहाँ चउ दिश सु चैत्यालय, यहीं से हम नमन करते ।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतपूर्वदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

स्वर्ण सम काय है जिसकी, बड़ा रमणीय लगता है ।
वहाँ दक्षिण के चैत्यालय, जहाँ अमृत बरसता है ।।
मानुषोत्तर॰

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतदक्षिणदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

विद्याधर और ऋद्धिधर, मुनी का नित बसेरा है ।
प्रतीचि चैत्य वंदन से, कटे कर्मों का फेरा है ।।
मानुषोत्तर॰

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतपश्चिमदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सु पुष्कर दीप को मधि से, गिरी करता विभाजित है ।
उदीची में महीधर के, शुभ्र जिनराज राजित हैं ।।
मानुषोत्तर॰

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतोत्तरदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

पूर्णार्घ्य

सोरठा

मानुषोत्तर महान, चैत्यालय सोहे जहाँ ।
पूजूँ जिन भगवान, भव शिव सुख के कारणे ।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थचतुर्दिक्चतुस्सिद्धकूटजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

गिरिवर मनुजोत्तर, लहूँ गुणोत्तर, पाप संग की हानि करूँ ।
जिनवर की अर्चा, जिनगुण चर्चा, चिन्मय गुण नित चित्त धरूँ ।।

नरेन्द्र छंद

लख पैंतालिस योजन का ये, मानुष लोक बखाना,
उसको वेष्टित किए गिरी ये, मानुषोत्तर जाना ।
पुष्कर द्वीप सु ठीक मध्य में, वलयाकार विराजित,
पुष्कर को मध्ये से आधा, यह नग करे विभाजित ।।

मानुष लोक में ऊपर से नीचे तक सम कहलाता,
बाह्य भाग में क्रमिक हानि, वृद्धि से युक्त सुहाता ।
स्वर्णवर्णमय इस पर्वत में, चौदह गुफा बतायी,
महानदियों के निर्गम हेतु ये सब द्वार कहायी ।।

सतरह सौ इक्किस योजन गिरि, ऊँचाई पहचानो,
चौथाई उत्सेध की इसकी, नींव सर्वदा जानो ।
भूमि इकहजार बाईस, योजन चौड़ाई कहते,
ऊपर योजन चार शतक अरु, चौबिस गणधर कहते ।।

गिरी शिखर पर वेदी जिसकी, सवा कोस चौड़ाई,
वलयाकार सुशोभित है चउ, सहस धनुष ऊँचाई ।

SarvatoPooja 11 / 244

नैऋत्ये वायव्य छोड़कर, छः दिशि में अति शोभित,
तीन तीन पंक्ति स्वरूप है, कूट जहाँ सुर मोहित ।।

आग्नेय ईशान कूट में, देव ये गरुड़ कुमारा,
बाकी बारह कूटों में हैं, देव सु स्वर्णकुमारा ।
दिक्कुमारी देवांगनाएँ, यहीं कूट में रहके,
अपना जीवन सफल बनाए, भक्ति संस्तुती करके ।।

मनुज लोक की ओर कूट से, रत्नमणीमय प्यारे,
चार दिशा में चार जिनसदन, नादि निधन अति न्यारे ।
तिन में श्री जिनवर प्रतिमाएँ, बरसातीं सुखधारा,
वीतरागता में अवगाहे, पूज हरे विधि कारा ।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थचतुर्दिक्चतुस्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(७३)

नंदीश्वरद्वीप जिनालय पूजन

अथ स्थापना

चउबोला छंद

नंदीश्वर शुभ दीप आठवाँ, बिंब अकृत्रिम अति शोभित ।
चतुनिकाय के देव जजें अष्टाह्न पर्व में हो मोहित ।।
रत्नमयी जिनबिम्ब सुपावन, भव्यों के मन को हरते ।
पूजक पूज्य बनें पूजा से, क्रमशः मुक्ति रमा वरते ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

चउबोला छंद

निर्मल नीर चढाकर तुमको, अघप्रक्षालन भव्य करें ।
जन्म जरा मृतु नाश करन को, तव पद धारा तीन धरें ।।
नंदीश्वर शुभ द्वीप आठवाँ, अष्टम गुण का दाता है ।
सहज शुद्ध चैतन्य दशा को, पूजक निश्चित पाता है ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

पाप ताप को शांत करे वो, शीतल चंदन सुखकारी ।
नंदीश्वर की पूज रचाकर, बनूँ चित्त निर्मलधारी ।। नंदीश्वर०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

मुक्ता सम अक्षत अति सुंदर, कनक थाल भर लाया हूँ ।
अक्षय पद के प्राप्त करन को, श्रद्धा सहित चढ़ाया हूँ ।। नंदीश्वर०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सुरतरुओं के सुमन मनोहर, काम नाश हित लाए हैं ।
नंदीश्वर की पूज रचा उत्तम सुख पाने आए हैं ।। नंदीश्वर०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

इष्ट मिष्ट स्वादिष्ट मनोहर, षट् पंचाशत व्यंजन हैं ।
क्षुधा वेदनी नाश करे अरु, होता चित अनुरंजन है ।। नंदीश्वर०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

गौघृत दीप जलाकर हम प्रभु, जिनपद अर्चन करते हैं ।
मोह तिमिर के नाश करन को, तव पद दीपक धरते हैं ।। नंदीश्वर०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

निज चैतन्य गंध हम पाने, गंध दशांगी लाए हैं ।
जिनबिम्बों की पूज रचा निज, कर्म जलाने आए हैं ।। नंदीश्वर०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

अक्ष मनोहर फल सुरभित सब, ऋतु के भरकर लाया हूँ ।
मोक्ष महाफल पाने को मैं, श्री जिनचरण चढ़ाया हूँ ।। नंदीश्वर०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

जल फलादि वसु द्रव्य मिलाकर, वसु गुण पाने आए हैं ।
वसु वसुधा को पाने नंदी, भव सुख को बिसराए हैं ।। नंदीश्वर०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा—नंदीश्वर की अर्चना, नित्य सदा सुखदाय ।
जो पूजे शुभ भाव से, मोक्ष महासुख पाय ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

नंदीश्वर शुभ द्वीप, बावन जिनमंदिर महा ।
ले के श्रद्धा दीप, मन वच तन से पूजिये ।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ अंजनगिरि चैत्य-चैत्यालय अर्घ्य

चउबोला छंद

अंजनगिरि का मुख्य जिनालय, अष्टोत्तर शत गर्भालय ।
तिनमें इक इक बिंब विराजे, भव्यों को वे गुण आलय ।।
अंजनगिरि चउदिश जिनगृह की, पूजन मंगलकारी है ।
चउ शत बत्तिस सर्व जिनों को, नित नित धोक हमारी है ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदिगञ्जनगिरिस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

मुख्य जिनालय दक्षिण दिश में, अष्टोत्तर शत गृह जानो ।
मन मोहक प्रतिमा है इक इक, जिन आगम में परिमानो ।।
अंजनगिरि०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणदिगञ्जनगिरिस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

मुख्य जिनालय पश्चिम दिश में, गर्भालय अति सुन्दर है ।
अष्टोत्तर शत बिम्ब हैं जिनमें, निश्चित सुर को अघहर है ।।
अंजनगिरि०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमदिगञ्जनगिरिस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

मुख्य जिनालय उत्तर दिश में, अष्टोत्तर शत गर्भ गृहा ।
अष्टोत्तर शत प्रतिमा उनमें, करें भव्य के कर्म दहा ।।
अंजनगिरि०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तरदिगञ्जनगिरिस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

SarvatoPooja 12 / 246

अथ दधिमुख चैत्य-चैत्यालय अर्घ्य

नरेन्द्र छंद

पूर्वांजन की प्राची दिश में, जिन मंदिर सुखकारी ।
दधिमुख पूजन की महिमा है, सर्व पाप मल हारी ।।
नंदीश्वर की पूरब दिश में, दधिमुख चउ आराधें ।
सुरसमूह जिन अर्चन करके, अपने चित को साधें ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरिस्थपूर्वदिशि नन्दाद्रहमध्यस्थे दधिमुखसम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

दधिमुख मुख्य जिनालय में जिन, प्रतिमाओं को वंदूँ ।
रत्नमयी जिन प्रतिमाओं का, पूजन कर आनंदूँ ।। नंदीश्वर०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरिस्थदक्षिणदिशि नन्दवतीद्रहमध्यस्थे दधिमुखसम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

पूर्वांजन के पश्चिम दिश में, नंदोत्तरा सु वापी ।
मधि में दधिमुख पूजन करते, दुख न पायें कदापि ।। नंदीश्वर०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरिस्थपश्चिमदिशि नन्दोत्तराद्रहमध्यस्थे दधिमुखसम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

नंदीघोषा वापी मधि में, दधिमुख नित्य अनोखा ।
अष्टोत्तर शत गर्भ गृहा जिन, जजूँ लहूँ सुख चोखा ।। नंदीश्वर०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरिस्थोत्तरदिशि नन्दीघोषाद्रहमध्यस्थे दधिमुखसम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

चउबोला छंद

दक्षिण अंजनगिरि प्राची दिक्, मुख्य जिनालय शाश्वत है ।
अष्टोत्तर शत गर्भ गृहों में, श्री जिनदेव विराजित हैं ।।
नंदीश्वर के दक्षिण दिश में, दधिमुख पूज रचाता हूँ ।
प्रकृत जिनालय जिनबिंबों की, अर्चन कर हर्षाता हूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणाञ्जनगिरिस्थपूर्वदिशि अरजाद्रहमध्यस्थे दधिमुखसम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

प्रमुख जिनालय दक्षिण दधिमुख, सर्वलोक मंगलकारी ।
पाप ताप अभिशाप विनाशक, तीनलोक भवि हितकारी ।।
नंदीश्वर॰

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणाञ्जनगिरिस्थदक्षिणदिशि विरजाद्रहमध्यस्थे दधिमुखसम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

दक्षिण अंजनगिरि के पश्चिम, दधिमुख जिनगृह की शोभा ।
वहाँ विराजित जिनबिंबों की, पूजाकर अघमल धोया ।।
नंदीश्वर॰

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणाञ्जनगिरिस्थपश्चिमदिशि अशोकाद्रहमध्यस्थे दधिमुखसम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

दक्षिण अंजन के उत्तर का, दधिमुख मुख्य जिनालय है ।
श्रद्धा सहित करें जो वंदन, पाते इंद्र शिवालय हैं ।।
नंदीश्वर॰

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणाञ्जनगिरिस्थोत्तरदिशि वीतशोकाद्रहमध्यस्थे दधिमुखसम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

नरेन्द्र छंद

मुख्य जिनालय की महिमा नहि, ऋषिवर भी कह पाते ।
निज चेतन को सिद्ध बनाने, हम नित पूज रचाते ।।
पश्चिम अंजन के चउ दधिमुख, भाव सहित गुण गाऊँ ।
चैत्य अकृत्रिम जजने मैं नित, उनको हृदय बसाऊँ ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमाञ्जनगिरिस्थपूर्वदिशि विजयद्रहमध्यस्थे दधिमुखसम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

नंदीश्वर के शाश्वत बिंबों, वा जिनमंदिर पूजा ।
पूजा सम श्रावक जीवन में, नहीं पुण्य शुभ दूजा ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमाञ्जनगिरिस्थदक्षिणदिशि वैजयन्तीद्रहमध्यस्थे दधिमुखसम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

ज्यों शरीर में मन है शोभित, त्यों यह मुख्य जिनालय ।
निर्मल वंदन अर्चन करके, पाते शुद्ध शिवालय ।। पश्चिम॰

SarvatoPooja 12 / 247

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमाञ्जनगिरिस्थपश्चिमदिशि जयन्तिद्रहमध्यस्थे दधिमुखसम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

अपराजित द्रह मधि में दधिमुख, नग पर शुभ गर्भालय ।
अष्टोत्तर शत पूज पाय भवि, सिद्धस्थान शिवालय ।। पश्चिम॰

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमाञ्जनगिरिस्थोत्तरदिशि अपराजितद्रहमध्यस्थे दधिमुखसम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

हरिगीतिका छंद

जिन अष्ट उत्तर शतक जानो, गर्भगृह अघमल हरें ।
साक्षात ब्रह्म विराजते जहाँ, मुक्तिकांता को वरें ।।
उत्तर दिशा दधिमुख जिनालय, वंदता शिव आसते ।
जो पूजते हैं भव्य निशदिन, पाप तिनके नाशते ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तराञ्जनगिरिस्थपूर्वदिशि रम्यद्रहमध्यस्थे दधिमुखसम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

शत आठ रतनन के बने हैं, गेह जिनवर के सुभग ।
जिनबिंब पूजें भाव युत हम, पा सकें ज्यों मोक्ष मग ।।
उत्तर दिशा॰

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तराञ्जनगिरिस्थदक्षिणदिशि रमणीयद्रहमध्यस्थे दधिमुखसम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

जिन सदन वा जिनबिंब दोनों, निज जिनत्व सुकारणं ।
पूजूँ सदा अति भक्ति से करने विकट भव वारणं ।।
उत्तर दिशा॰

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तराञ्जनगिरिस्थपश्चिमदिशि सुप्रभाद्रहमध्यस्थे दधिमुखसम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

शुभ प्राकृतिक है भाव मेरा, प्राकृतिक ही रूप है ।
जिन सदन प्राकृत में जजूँ नित, हेतु जो शिवभूप हैं ।।
उत्तर दिशा॰

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तराञ्जनगिरिस्थोत्तरदिशि भद्रद्रहमध्यस्थे दधिमुखसम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

अथ रतिकर चैत्यचैत्यालय अर्घ्य

दोहा छंद

नंदा वापी निकट में, मुख्य जिनालय जान ।
भाव सहित पूजें सदा, लहें परम विज्ञान ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरिस्थनन्दावापीशानकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

आग्नेया मंदिर सुभग, वीतराग अघहान ।
द्रव्य अष्ट लेकर जजें, पावें वसुगुण खान ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरिस्थनन्दावाप्याग्नेयकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

अति सुरम्य जिनवर सदन, शाश्वत नंदन हेत ।
भविक जजें नित भाव सों, पाएँ मुक्ति निकेत ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरिस्थनन्दावतीवाप्याग्नेयकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

नंदवती नैऋत्य में, रतिकर गिरि जिनगेह ।
पूजें भविजन भाव सों, बनते स्वयं विदेह ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरिस्थनन्दवतीवापिनैऋत्यकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

नंदोत्तर नैऋत्य में, अष्टोत्तर शतबिंब ।
भक्तिभाव से पूजकर, लहूँ स्वत्व प्रतिबिंब ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरिस्थनन्दोत्तरवापिनैऋत्यकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।25।।

नंदोत्तर वायव्य में, अनुपम जिन प्रासाद ।
जिनबिंबों की अर्चना, हरे सकल अवसाद ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरिस्थनन्दोत्तरवापिवायव्यकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।26।।

नंदीघोषा वापिका, वायु दिशा जिनगेह ।
भक्ति भाव से हम जजें, करके शाश्वत नेह ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरिस्थनन्दीघोषावापिवायव्यकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।27।।

नंदिघोष ईशान में, जिनमंदिर अमलान ।
निकट भव्य ही पूजते, पाने पन कल्याण ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वाञ्जनगिरिस्थनन्दीघोषावापीशानकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।28।।

चउबोला छंद

धर्म सदन जिन मुख्य जिनालय, जिनवर की पूजा कर ले ।
नंत सौख्य के दाता प्रभु की, अर्चाकर शिव सुख वर ले ।।
नंदीश्वर के दक्षिण दिशि में, वसु रतिकर शुभ कारक हैं ।
जो शाश्वत जिन मंदिर पूजें, बनें भवोदधि तारक हैं ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणाञ्जनगिरिस्थारजाद्रहीशानकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।29।।

अरजा के आग्नेय दिशा में, शाश्वत सिद्धि कारक गेह ।
शाश्वत जिनबिंबों के पूजक, सुख अमृत का पाते नेह ।।
नंदीश्वर के दक्षिण॰

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणाञ्जनगिरिस्थारजाद्रहाग्नेयकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।30।।

विरजा अग्नि दिशा पर रतिकर, शाश्वत चैत्य जिनालय है ।
वसु उत्तर शत प्रतिमा जिनमें, मानो आत्म गुणालय हैं ।।
नंदीश्वर के दक्षिण॰

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणाञ्जनगिरिस्थविरजाद्रहाग्नेयकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।31।।

विरजा वापी के नैऋत्ये, अर्हत् मंदिर मनहारी ।
जो भविजन पूजा करते वे, बन जाते शिव अधिकारी ।।
नंदीश्वर के दक्षिण॰

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणाञ्जनगिरिस्थाशोकद्रहनैऋत्यकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।32।।

द्रह अशोक नैऋत्य दिशा में, मंगलयुत जिनमंदिर है ।
वसु प्रतियुत जिनप्रतिमा सुंदर, पूजें हम निज अघहर हैं ॥
नंदीश्वर के दक्षिण०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणाञ्जनगिरिस्थाशोकद्रहनैऋत्यकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥33॥

द्रह अशोक वायव्य दिशा में, रत्नमणि निर्मित प्रासाद ।
शाश्वत प्राकृत रूप सहित जिन, पूज चखें निज आतम स्वाद ॥
नंदीश्वर के दक्षिण०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणाञ्जनगिरिस्थाशोकद्रहवायव्यकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥34॥

वायु कोण में मुख्य जिनालय, प्रातिहार्य युत शोभित है ।
निकट भव्य का मन श्रद्धा से, कुसुम अलीवत् मोहित है ॥
नंदीश्वर के दक्षिण०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणाञ्जनगिरिस्थवीतशोकद्रहवायव्यकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥35॥

दिशि ईशाने ईश विराजें, वसु उत्तर शत प्रतिमाएँ ।
शुद्ध रूप की कारक हैं वे, सुर गण नित महिमा गाएँ ॥
नंदीश्वर के दक्षिण०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणाञ्जनगिरिस्थवीतशोकद्रहीशानकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥36॥

अडिल्ल छंद

विजयाद्रह ईशान कोण रतिकर जजूँ ।
अकृत्रिम जिनबिंब पूजि शिव से सजूँ ॥
पश्चिम दिश वसु रतिकर शाश्वत जिन गृहा ।
पूज लहें भव्य शुभ अतिशय पुण्य अहा ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमाञ्जनगिरिस्थविजयावापीशानकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥37॥

जिन पद प्रीति प्रेरित करती भव्यों को ।
जिनबिंबों को पूज पाय शिव नव्य को ॥ पश्चिम०

SarvatoPooja 12 / 249

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमाञ्जनगिरिस्थविजयावाप्याग्नेयकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥38॥

वैजयन्ति के आग्नेया रतिकर शुभा ।
अष्टोत्तर शत जिन पूजि भवि धन्य हुआ ॥ पश्चिम०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमाञ्जनगिरिस्थवैजयन्तिवाप्याग्नेयकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥39॥

वैजयन्ति के नैऋत रतिकर अद्भुता ।
रत्नमयी प्रतिमा पूजें दुख सब मिटा ॥ पश्चिम०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमाञ्जनगिरिस्थवैजयन्तिवापिनैऋत्यकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥40॥

सुखकारी शुभ मूल मंदिर रतिकर के ।
पूजें सुरगण थाल रतनन भर भर के ॥ पश्चिम०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमाञ्जनगिरिस्थजयन्तिवापिनैऋत्यकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥41॥

अकृत्रिम जिनबिंबों का अतिशय महा ।
आज पूजता भक्ति युत चित से अहा ॥ पश्चिम०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमाञ्जनगिरिस्थजयन्तिवापिवायव्यकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥42॥

शुभ अपराजित द्रह मध्ये रतिकर महा ।
वंदूँ जिनवर मूल जिनालय के वहाँ ॥ पश्चिम०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमाञ्जनगिरिस्थापराजितवापिवायव्यकोणे रतिकरसम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥43॥

अपराजित इशान कोण रतिकर न्यारा ।
जिनबिंबों को पूजि होय भवि भव पारा ॥ पश्चिम०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पश्चिमाञ्जनगिरिस्थापराजितवापीशानकोणे रतिकरसम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥44॥

रूपकसवैया छंद (तर्ज - भला किसी का कर...)

रतिकर नग अत्यंत सुशोभित, रम्या सु वापि के ईशान ।
करूँ वहाँ थित अष्टोत्तर शत, श्री जिनेन्द्र महिमा का गान ॥

नंदीश्वर की दिशा उदीची, रतिकर अष्ट ये जग वंदित ।
अष्ट द्रव्य ले पूज रचाकर, होयें भव्य नित आनंदित ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तराञ्जनगिरिस्थरम्यावाप्याग्नेयकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।45।।

रम्या वापी अग्नि कोण में, रतिकर जिनमंदिर शिवकार ।
आष्टाह्निक में निर्मल श्रद्धा, युत पूजूँ होऊँ भव पार ।।
नंदीश्वर की दिशा०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तराञ्जनगिरिस्थरम्यावापीशानकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।46।।

रमणीया द्रह के आग्नेया, रतिकर का शाश्वत जिन धाम ।
भविजन मनवांछित फल पाते, लेय अहर्निश श्री जिन नाम ।।
नंदीश्वर की दिशा०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तराञ्जनगिरिस्थरम्यावाप्याग्नेयकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।47।।

रमणीया द्रह के नैऋत में, रतिकर गिरि शाश्वत स्वर्णाभ ।
जिनबिंबों की करें अर्चना, पाते नंत गुणों का लाभ ।।
नंदीश्वर की दिशा०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तराञ्जनगिरिस्थरमणीयावापिनैऋत्यकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।48।।

जल पूरित सुप्रभ सु वापि के, नैऋत में रतिकर गिरि मान ।
जिनगृह में जिनबिंब सुपूजूँ, दोषों का करने अवसान ।।
नंदीश्वर की दिशा०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तराञ्जनगिरिस्थसुप्रभावापिनैऋत्यकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।49।।

जिन, जिनश्रुत, जिन शासन के प्रति, प्रीत बढाये रतिकर शैल ।
तहँ थापित जिनबिंब सुपूजूँ, धुल जाए वसु कर्मनि मैल ।।
नंदीश्वर की दिशा०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तराञ्जनगिरिस्थसुप्रभावापिवायव्यकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।50।।

SarvatoPooja 12 / 250

भद्र सर्वतः द्रह वायव्ये, रतिकर नग पर जिन प्रासाद ।
अष्टोत्तर शत बिंब सुपूजें, भेद नहीं वहाँ दिन या रात ।।
नंदीश्वर की दिशा उदीची, रतिकर अष्ट ये जग वंदित ।
अष्ट द्रव्य ले पूज रचाकर, होयें भव्य नित आनंदित ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तराञ्जनगिरिस्थसर्वतोभद्रवापिवायव्यकोणे रतिकरसम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।51।।

द्रह सर्वतोभद्र ईशाने, रतिकर गिरि भक्ति आधार ।
श्री जिन की पूजा पहुँचाती, शीघ्र भवोदधि के उस पार ।।
नंदीश्वर की दिशा०

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे उत्तराञ्जनगिरिस्थसर्वतोभद्रवापीशानकोणे रतिकर-सम्बन्धिमुख्यजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।52।।

पूर्णार्घ्य

अडिल्ल छंद

नंदीश्वर जिनधाम जगत विख्यात है ।
करें भव्य उर में सम्यक्त्व प्रभाव है ।।
अष्टमद्वीप जिनेश जजूँ शुभ भाव से ।
अन्तर निधि पाने अर्चूं अति चाव से ।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे चतुर्दिक्सम्बन्धिपञ्चाशज्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

नंदीश्वर वंदन, हर सब क्रंदन, चित हो कुंदन जिनवर सा ।
सब अघमल घातक, पुण्य प्रकाशक, चित्त विकासक दिनकर सा ।।

चउबोला छंद

सर्व लोक आनंद प्रदाता, नंदीश्वर सुर सुखकारी ।
सुरगण पूज रचावें वसुदिन, अर्चन निश्चित अघहारी ।।

द्वीप आठवों अनुपम सोहे, अष्ट गुणों का दाता है ।
मोह आदि चउ घाति कर्म अरु, शेष अघाति नशाता है ॥

एक शतोत्तर त्रेसठ कोटि चौरासी लख महा योजन ।
विस्तृत अष्टम द्वीप जहाँ पर, पूजन करते हैं सुरगण ॥

चउ दिश में चउ अंजनगिरि हैं, श्याम वर्ण मन मोहित है ।
है मृदंगवत् गिरिवर अंजन, जिनपर मंदिर शोभित हैं ॥

इक मंदिर में अष्टोत्तर शत, गर्भ गृहा अनुपम जानो ।
तहँ थित प्रतिमा दिखती है ज्यों, बोल पडेंगी ही मानो ॥

सम्मुख मानथंभ है राजित, रत्नों से जो निर्मित है ।
प्रातिहार्य युत शोभित प्रतिमा, भव्यों का मन मोहित है ॥

नवस्तूप नव दोष विनाशे, नव ऊर्जा संचार करे ।
पूजक अर्चक भक्त उपासक, क्लेश वासना सर्व हरे ॥

चैत्य वृक्ष की शोभा अनुपम अर्हत बिम्ब विराजित हैं ।
अतुल विभव को दर्शाते नाना रत्नोंमय साजित है ॥

सिद्ध आयतन शोभा न्यारी, गणधर महिमा गा न सकें ।
भव्यदेव बिन कोई प्राणी, पूजन वहाँ रचा न सकें ॥

तदवत् अंजनगिरि की चउदिश, चार वापिका सुखकारी ।
धवल वर्ण के दधिमुख सोहे, जिन मंदिर अतिशयकारी ॥

सकल विभव अंजनगिरि वत् ही, दधिमुख में भी तुम जानो ।
मानस्तंभ स्तूप सिद्ध तरू, चैत्यवृक्ष जिनयुत मानो ॥

अंजन गिरि के चार जिनालय, जो भव्यों को सुखकारी ।
त्यों दधिमुख के षोडश मंदिर, सर्वभविक को हितकारी ॥

जिनगृह बत्तिस रतिकर गिरि पर, बाल सूर्य सम अरुण कहे ।
भक्तों का मन रंजित करते, द्वेष मोह को नित्य दहे ॥

सर्व जिनालय युक्त गर्भ गृह, अनुप्रेक्षा गृह तुम जानो ।
पौरी मंडप वेदि वीथिका, गोपुर द्वार सहित मानो ॥

SarvatoPooja 12 / 251

चिन्मयवत् दिखती जिनप्रतिमा, महापुरुष सम मनमोहक ।
भव्यों का चित हो आकर्षित, पापपंक की है शोधक ॥

बिंबाफल सम ओष्ठ दृष्टिगत, केश श्याम नख सुंदर हैं ।
स्वर्णिम सम वे भव्य जिनेश्वर, जिनसे शोभित मंदिर है ॥

कार्तिक फागुन अरु अषाढ़ के, अंत आठ दिन पावन हैं ।
चतुनिकाय के देव जजें नित, करें पूज मन भावन है ॥

वैमानिक अरु भौम निवासी, वाण सहित ज्योतिष जानो ।
पूरब दक्षिण पश्चिम उत्तर, में पूजा का क्रम मानो ॥

दो-दो पहर करें नित पूजन, सरल प्रदक्षिण के क्रम से ।
करें यथार्थ जिन भक्ति जो भी, डूबे ना वे भव भ्रम में ॥

जो नर पुंगव ढाइ द्वीप में, रहकर भी पूजन करते ।
वे भी निश्चित अल्प भवों में, मुक्ति रमा को हैं वरते ॥

मोह शोक दुखव्याधि नाशक, यह पूजन सुखकारी है ।
वसु गुण पाने नंदि जजे नित, चरणों पर बलिहारी हैं ॥

दोहा—करें प्रभु की अर्चना, ले श्रद्धा का थाल ।
लख जिनवर की सौम्य छवि, झुका रहे मम भाल ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपसम्बन्धिद्विपञ्चाशज्जिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ॥
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

(७४)

कुण्डलगिरि जिनालय पूजन

अथ स्थापना

वसंततिलिका छंद

देवाधिदेव परमेश्वर वीतद्वेषी ।
वंदूँ सदैव जिनदेव महाहितैषी ।।
सर्वज्ञ वंदन सुपूजन पापहारी ।
होता सुश्रेष्ठ शिव मंगल सौख्यकारी ।।

दोहा–कुंडलगिरि के जिनभवन, चउबत्तीस जिनेंद्र ।
आह्वानन कर पूजता, बनूँ स्वात्म माहेन्द्र ।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसम्बन्धिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसम्बन्धिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसम्बन्धिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

विष्णु छंद

सुरसरिता का प्रासुक जल ले, जिनवर पूज रचूँ ।
जन्मादिक त्रय रोग नशाने, जिनवर नित्य भजूँ ।।
कुण्डलगिरि के चार जिनालय, चउदिश में सोहें ।
भव्यजनों के पातक हरते, नर सुर मन मोहें ।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसम्बन्धिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

मलयागिरि का चंदन लाया, जिनवर पद भजने ।
चंदन पूजन ताप हरे चित, आते सुर जजने ।।
कुण्डलगिरि के०

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसम्बन्धिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

SarvatoPooja 12 / 252

मुक्ता सम तंदुल लेकर सुर, कुंडलगिरि आवें ।
शक्तिहीन हम मानव जासौं, पूजा इत गावें ।।
कुण्डलगिरि के चार जिनालय, चउदिश में सोहें ।
भव्यजनों के पातक हरते, नर सुर मन मोहें ।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसम्बन्धिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सुरतरु के शुभ कुसुम मनोहर, जिन पद जो धरते ।
कामवासना नाशें वे फिर, मुक्ति रमा वरते ।।
कुण्डलगिरि के०

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसम्बन्धिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

अमरत सम षट्रस मिश्रित शुभ, चरुवर जिन चरणा ।
क्षुधा रोग उनका मिट जाता, बसे प्रभो शरणा ।।
कुण्डलगिरि के०

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसम्बन्धिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

अंतस त्रयतम भव्य मिटाने, जिनपद दीप धरें ।
केवलबोधी पाकर वे भवि, वसुगुण चित्त वरें ।।
कुण्डलगिरि के०

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसम्बन्धिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

परमातम की गंध सु लेने जिनपद गंध चढा ।
निज वैभव को पाकर चेतन, वसुविधि धूल उडा ।।
कुण्डलगिरि के०

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसम्बन्धिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

शिवफल पर हम सब ललचाए, थे अनादि भूले ।
जिनपद श्रीफल भेंट चढा ना, भव शाखा झूलें ।।

कुण्डलगिरि के०

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसम्बन्धिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

पद अनर्घ्य के काबिल हैं हम, अतः अर्घ्य भेंटें ।
जिनवर भवि की सुने प्रार्थना, सब भवदुख मेंटे ॥
कुण्डलगिरि के०

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिसम्बन्धिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा–अंतरमन से नाथ तव, करूँ प्रार्थना नित्य ।
मम अंतर में आ बसो, शुद्ध हुआ मम चित्त ॥

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

पंच शतक धनु तुंग है, जिन प्रतिमा अभिराम ।
कुंडलगिरि में राजते, सबको करूँ प्रणाम ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अडिल्ल छंद

वलयाकृति कुण्डल नग की पूरब दिशा ।
पाँच कूट शुभ रत्नमयी राजें सदा ॥
अभ्यंतर का एक कूट भगवान का ।
पूजन कर खुद भक्त बने भगवान सा ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिस्थपूर्वदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

स्वर्णमयी कुण्डल गिरि की दक्षिण दिशा ।
पाँच कूट सोहें देखत मन हो मुदा ॥ अभ्यंतर०

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिस्थदक्षिणदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

सहस पिचहत्तर जोजन ऊँचा नग कहा ।
ता मधि पश्चिम पंच कूट शोभे अहा ॥ अभ्यंतर०

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिस्थपश्चिमदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

SarvatoPooja 12 / 253

कुण्डल नग की दिशा उदीची शोभते ।
पंच कूट सुर इंद्रनि का मन मोहते ॥ अभ्यंतर०॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिस्थोत्तरदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

पूर्णार्घ्य

रूपमाला छंद

अर्चना जिनदेव की शुभ, करुँ चित्त में धार ।
शीघ्र ही भव भ्रमण नाशे, लहि मोक्ष का द्वार ॥
श्री जिनेन्द्र निलय जहाँ वो, कुण्डलगिरि महान ।
भक्ति से नित पूजिये तो, पाओगे निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिस्थचतुर्दिक्चतुस्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

जिन शिवपद करना, भविलहि शरणा, भविजन मुक्ती वरण करें ।
वसु काट कर्म सब, समझ धर्म जब, लहें शर्म भव सिंधु तरें ॥

नरेंद्र छंद

ग्यारहवें कुंडलवर द्वीप सु, मध्यनि कुंडलगिरि है ।
वलयाकार मानुषोत्तर सा, स्वर्णमयी ये गिरि है ॥
इक लख दो सौ बीस योजना, भूमि व्यास बताया ।
चार सहस दो सौ चालिस योजन मुख व्यास कहाया ॥

पचहत्तर हजार योजन ये, ऊँचाई गिरि जानो ।
कूट चार दिश चार चार शुभ, रहे पंक्ति में मानो ॥
वज्र आदि पूरब में दक्षिण, में रजतादी सोहें ।
अंक आदि पश्चिम में उत्तर, में रुचकादी मोहे ॥

प्रति दिश में अभ्यंतर भागे, सिद्ध कूट सुखकारी ।
शाश्वत चैत्यालय है इस पर, निश्चित सब अघहारी ।।
सोलह कूटों पर कूटों के, नाम धारि सुर रहते ।
चउ कूटों पर देव जिनेश्वर, ऐसा गणधर कहते ।।

मुख विस्तार ढाई सौ योजन, सभी कूट का गाया ।
भू विस्तार पाँच सौ योजन, उदय यही बतलाया ।।
सिद्ध कूट पर शाश्वत मंदिर, श्री जिनवर प्रतिमाएँ ।
भक्तिसरस में आप्लावित मन, गीत प्रभो के गाए ।।

दोहा–कुंडलगिरि के जिनगृहा, नादि निधन पहचान ।
वंदूँ जिन जिनमंदिरं, करूँ सुमंगल गान ।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतसम्बन्धिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 12 / 254

(७५)

रुचकगिरि जिनालय पूजन

अथ स्थापना

अडिल्ल छंद

रुचकगिरि के शाश्वत जिनमंदिर महा ।
सुरगण पूजत नित्य करें वंदन अहा ।।
शक्तिहीन नर श्रेष्ठ अत्र थापन करें ।
आह्वानन कर भक्तिवश अर्चन करें ।।

दोहा - रुचकगिरि के भवन चऊ, जिन चउशत बत्तीस ।
कर्म कालिमा नाशने, धरें देव पद शीश ।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

चउबोला छंद

हीरक सम निर्मल कांतीयुत, हीरक भाजन जल लाए ।
जन्म जरा मृतु नाश करन को, धारा त्रय दे हर्षाए ।।
रुचकगिरि के शाश्वत मंदिर, शाश्वत पद के दाता हैं ।
अघहारक सुखकारक निश्चित, मुक्ती पंथ प्रदाता हैं ।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

कंचन कलश भरे चंदन से, जिनपद पंकज धार करूँ ।
भव संताप चित्त का हरके, शाश्वत शीतल भाव वरूँ ।। रुचकगिरि०

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

चंद्रचाँदनी सम अक्षत ले, जिनवर पूज रचाते हैं ।
अक्षय पद की प्राप्ति हेतु शुभ, अक्षत पुंज चढाते हैं ।। रुचकगिरि॰

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सुमनों सा निज सु मन बनाकर, सब ऋतु पुष्प चढाता हूँ ।
निर्विकार बनने को स्वामी, अविरल पूज रचाता हूँ ।। रुचकगिरि॰

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

जिनवचनामृत सम भवि चित को, तुष्टि पुष्टि नित देते हैं ।
चरुवर से जिनपद हम पूजें, क्षुधा रोग हर लेते हैं ।। रुचकगिरि॰

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

श्री जिनपद उर में नित धारूँ, अंतर तिमिर नशाने को ।
दीपक ले नीराजन करता, केवलबोधी पाने को ।। रुचकगिरि॰

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

शाश्वत चिन्मय शुद्ध चित्त की, गुणराशी हम पा जाएँ ।
अष्ट गंध पावक में खेकर, जिनचरणों में रम जाएँ ।। रुचकगिरि॰

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

स्वादहीन सब फल हैं जग के, जिनमुद्रा सुख देती है ।
जिनपद श्रीफल भेंट करें हम, भक्ति पाप हर लेती है ।। रुचकगिरि॰

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

जिन दर्शन वंदन अर्चन से, भवि अनर्घ पद पा जाते ।
अर्घ्य चढा जे शीश नवावें, सिद्ध सदन वे पा जाते ।। रुचकगिरि॰

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा—चित को रुचिकर नित लगें, रुचकगिरी भगवान ।
जे नहि जिनवंदन करें, हीन पुण्य नादान ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्यपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा—रुचकगिरि सुर को रुचे, करें पूज वसुयाम ।
सिद्धकूट के बिम्ब को, जजूँ बनूँ निष्काम ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

विधाता छंद

वलय आकार में शोभित, रुचकगिरि स्वर्णमय सुंदर ।
सु प्राची में विराजित हैं, रतनमय बिंब जिन मनहर ।।
रुचकवर दीप में सोहे, रुचकगिरि नाम का पर्वत ।
वहाँ शिवकूट पर राजित, जिनेश्वर को नमन शत-शत ।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थपूर्वदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

सुयोजन सहस चौरासी, गिरी उत्तुंग शोभित है ।
वहाँ दक्षिण जिनालय लख, इन्द्र सुरवृंद मोहित हैं ।। रुचकवर॰

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थदक्षिणदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

प्रतीची में सु गिरिवर के, कूट ग्यारह सदा राजे ।
वहाँ इक कूट अभ्यंतर, सदन जिनदेव का साजे ।। रुचकवर॰

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थपश्चिमदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

उदीची दिश बड़ी पावन, बड़ी पावन रुचक माटी ।
जगत जननी की सेवा में, वहाँ से देवियाँ जाती ।। रुचकवर॰

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थोत्तरसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

पूर्णार्घ्य

सुगीतिका छंद

वलयाकृति में स्वर्णमयी, शोभित रुचकगिरि शैल है ।
शुभ द्वीप तेरहवाँ रुचकवर, पूज लहि शिव गैल है ।।

गिरि शीश पर शाश्वत जिनेश्वर, सिद्धकूट महान है ।
शिव प्राप्त करते भव्य वो, जो करें इनका ध्यान है ।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

श्री जिन का दर्शन, पुण्यस्पर्शन, अघहारी जिनवंदन है ।
वसु द्रव्य सु अर्चन, निशदिन चर्चन, बने चित्त नित नंदन है ।।

नरेन्द्र छंद

तेरहवां शुभ द्वीप रुचकवर, मध्यलोक विख्याता ।
उसके मध्य वलयाकृति में, रुचिक महीधर ख्याता ।।
योजन चौरासी हजार ही, गिरी उदय बतलाया ।
इतना ही विस्तृत ये गिरिवर, स्वर्णमयी है काया ।।१।।

पंक्तिबद्ध चारों दिश में ही, आठ आठ शुभ कूटा ।
इन सब कूटों का वैभव भी, दिखता बडा अनूठा ।।
इनके अभ्यंतर चारों दिश, कूट एक-एक सोहे ।
पुनि इनके अंतर भागों में, भी इक इक मन मोहे ।।२।।

सबसे अभ्यंतर अब आया, सिद्धकूट अति प्यारा ।
जिस पर शाश्वत चैत्य सदन का, अतिशय युक्त नजारा ।।
कुल चौवालिस कूट चदुर्दिश, गिरी शिखर पर सज्जित ।
ज्योतिर्ग्रह की आभा भी, इनके सम्मुख है लज्जित ।।३।।

पूर्व दिशा वसु कनक आदि पर, विजयाआदिक देवी ।
ले भृंगार सदा ही बनती, जिनमाता की देवी ।।
दक्षिण में वसु कूटों पर इच्छादी देवकुमारी ।
लिए हाथ में दर्पण मंगल, माता पर बलिहारी ।।४।।

SarvatoPooja 12 / 256

पश्चिम माँहि अमोघ आदि पर, इलादेवी इत्यादी ।
जिनमाता पर धारण करने, तीन छत्र ले जाती ।।
उत्तर में विजयादि कूट वसु, अलंभूषा बहु देवी ।
प्रमुदित होकर जिनमाता पर, चंवर सदा ही ढोती ।।५।।

फिर चउदिश अभ्यंतर कूटों, की कनकादिक देवी ।
तीर्थंकर के जन्मकाल में, चउदिश निर्मल करती ।।
पुनि अभ्यंतर चउ कूटों की, रुचिकादि अतिधीरा ।
तीर्थंकर के जन्म समय में, जात करम परवीना ।।६।।

अब चारों दिश सिद्ध कूट जिनपर जिनमंदिर भाए ।
सम्यग्दृष्टि लोगों के चित, अपनी ओर लुभाएँ ।।
अब प्रत्यक्ष दरश करने को, जिनवर हम अकुलाए ।
नहीं शक्ति है अतः यहीं से, श्रीजिन पूज रचाएँ ।।७।।

सब कूटों का उदय व्यास तुम, कुण्डलगिरि सम जानो ।
निश्चित श्री जिन भक्ति मुक्ति दे, मन में यह सरधानो ।।
सारे बाह्य विकल्प छोड के, चैत्य रत्नमय लखता ।
आँख मूंदकर दरश करूँ मैं, पाप कर्म सब भगता ।।८।।

दोहा—रुचक गिरि पर चउ दिशा, चउ जिनमंदिर खास ।
पूजक पूजन से बने, पूज्य यही विश्वास ।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(७६)

भवनवासी जिनालय पूजन

अथ स्थापना

चउबोला छंद

दसविध भवनवासि देवों के, भवनों में जिन भवन बने ।
पूजकगण को पुण्य प्रदाता, अशुभ कर्म के मूल हनें ।।
विधिपूर्वक आह्वानन करके, हम जिनपूज रचाते हैं ।
देव भवन के जिनमंदिर को, शुद्ध हृदय से ध्याते हैं ।।
दोहा–सात करोड़ रु बहत्तरि, लाख भवन जिन जान ।
अष्टोत्तर शत बिम्ब प्रति, गृह पूजन शुभ जान ।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

चउबोला छंद

हम निर्मल जल ला जिनवर की, प्रतिदिन पूज रचाते हैं ।
जनम जरा मृतु नाश करन को, जल जिनचरण चढ़ाते हैं ।।
असुरकुमार आदि दसविध के, भवनों में जिनभवन सजे ।
शाश्वत सिद्ध सदन को पाने, आठ द्रव्य ले नित्य जजें ।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

बहु विध चंदन लाकर के हम, श्री जिन चरण चढ़ाते हैं ।
भवाताप हो नष्ट हमारा, यही भावना भाते हैं ।।
असुरकुमार आदि०

SarvatoPooja 16 / 257

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

सूर्यकिरण सम अक्षत निर्मल, जिन चरणों में पुंज धरें ।
अक्षय पद के प्राप्त करन को, जिनवर की शुभ भक्ति करें ।।
असुरकुमार आदि दसविध के, भवनों में जिनभवन सजे ।
शाश्वत सिद्ध सदन को पाने, आठ द्रव्य ले नित्य जजें ।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

मधुरिम सौरभ युत सुमनों को, चरण चढ़ाने आए हैं ।
काम वासना नष्ट होय सब, ऐसे भाव बनाये हैं ।।
असुरकुमार आदि०

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

इष्ट मिष्ट स्वादिष्ट मनोहर, नानाविध व्यंजन लाए ।
क्षुधा आदि सब रोग नशाने, लिए भक्ति जिन दर आए ।।
असुरकुमार आदि०

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

निज आतम में बसे तिमिर को, आज भगाने आए हैं ।
जिनवर चरणन दीप चढ़ा हम, मन में अति हर्षाए हैं ।।
असुरकुमार आदि०

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

वसुविध धूप जलाकर स्वामी, पूज भक्ति युत करते हैं ।
नष्ट होय मम अष्ट कर्म सब, यही भाव चित धरते हैं ।।
असुरकुमार आदि०

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

सकल फलों का सार देह को, रोग हीन अरु पुष्ट करे ।
श्रीफल नाथ चढ़ाते तुमको, शिवफल पाने कर्म हरें ।।
असुरकुमार आदि०

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

अंबु गंध अक्षत सु पुष्प चरु, दीप धूप फल हम लाए ।
पद अनर्घ के पाने को हम, अर्घ्य चढ़ा चित उमगाए ।।
असुरकुमार आदि०

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–**भवनवासि के भवन में, शाश्वत जे भगवान ।**
तिनकी पूजन हम करें, होय कर्म अवसान ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–**शाश्वत चैत्यालय जहाँ, वीतराग जयि अक्ष ।**
वंदन अर्चन नमन से, दहके भवविधि कक्ष ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

अथ भवनस्थित चैत्य चैत्यालय अर्घ्य

नरेंद्र छंद

असुर कुमारों का पहला है, 'चमर' इंद्र विख्याता ।
चौंतिस लाख भवन हैं इनके, जिन आगम में ख्याता ।।
भवनवासि के सब भवनों में, जिनवर मंदिर न्यारा ।
वहाँ विराजित जिन बिंबों को, शत शत नमन हमारा ।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः पङ्कभागे चमरेन्द्रस्य चतुस्त्रिंशल्लक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

'वैरोचन' शुभ नाम धारि यह, उत्तरेन्द्र कहलाता ।
तीस लाख भवनों का स्वामी, जिनवर के गुण गाता ।।
भवनवासि०

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः पङ्कभागे वैरोचनेन्द्रस्य त्रिंशल्लक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

नागकुमार सुरों में पहला, 'भूतानंद' कहाता ।
लाख चवालिस भवन सर्व हैं, आगम में विख्याता ।।
भवनवासि के सब भवनों में, जिनवर मंदिर न्यारा ।
वहाँ विराजित जिन बिंबों को, शत शत नमन हमारा ।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे भूतानन्देन्द्रस्य चतुश्चत्वारिंशल्लक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

भवन उत्तरेंद्र 'धरणानंद', चालिस लाख कहाएँ ।
उन सबमें थित चैत्यों की सुर, निशदिन पूज रचाएँ ।।
भवनवासि०

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे धरणानन्देन्द्रस्य चत्वारिंशल्लक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

सुपर्ण कुमार सुरों में मुख्य, दक्षिणेन्द्र है 'वेणू' ।
अड़तिस लाख भवन बतलाए, निशदिन जिन गुण वरणूँ ।।
भवनवासि०

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे वेण्वेन्द्रस्य अष्टत्रिंशल्लक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

उत्तरेन्द्र 'वेणूधारी' के, चौंतिस लख हैं भवना ।
जिनवर पूज करे जो उसका, निश्चित भव से तरना ।।
भवनवासि०

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे वेणुधार्येन्द्रस्य चतुस्त्रिंशल्लक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

द्वीपकुमार सुरों में पहिला, 'पूर्ण' इंद्र पहचानो ।
चालिस लाख भवन हैं इनके, उत्तम सबमें मानो ।।
भवनवासि०

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे पूर्णेन्द्रस्य चत्वारिंशल्लक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

छत्तिस लाख भवन का स्वामी, इंद्र 'वशिष्ट' कहाए ।
इन भवनों में बने जिनालय, सबका चित्त लुभाएँ ।।
भवनवासि०

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे वशिष्टेन्द्रस्य षट्त्रिंशल्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

उदधिकुमार सुरों में पहिला, 'जलप्रभ' इंद्र कहाए ।
चालिस लाख भवन में स्थित, चैत्यालय मन भाएँ ।।
भवनवासि०

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे जलप्रभेन्द्रस्य चत्वारिंशल्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

उत्तरेंद्र 'जलकांत' कहाता, लख छत्तिस हैं भवना ।
उतने ही जिनमंदिर सोहे, नित रहते जिन शरणा ।।
भवनवासि०

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे जलकान्तेन्द्रस्य षट्त्रिंशल्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

विद्युतकुमार सुरों में मुख्य, 'घोष' इन्द्र कहलाया ।
चालिस लाख भवन का स्वामी, जिन पद लख हर्षाया ।।
भवनवासि०

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे घोषेन्द्रस्य चत्वारिंशल्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

'महाघोष' नामक इंद्रनि के, छत्तिस लाख भवन हैं ।
जिनवर के चरणों में सुरगण, करते नित्य नमन हैं ।।
भवनवासि०

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे महाघोषेन्द्रस्य षट्त्रिंशल्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

स्तनित कुमार सुरों में पहला, दक्षिणेंद्र 'हरिषेणा' ।
चालिस लाख भवन हैं इनके, जिन पद लागे नैना ।।
भवनवासि०

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे हरिषेणेन्द्रस्य चत्वारिंशल्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

उत्तरेंद्र 'हरिकांत' कहाता, भवन लाख छत्तीसा ।
सब भवनों में इक इक सुंदर, सदन बना जगदीशा ।।
भवनवासि के सब भवनों में, जिनवर मंदिर न्यारा ।
वहाँ विराजित जिन बिंबों को, शत शत नमन हमारा ।।

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे हरिकान्तेन्द्रस्य षट्त्रिंशल्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

दिक्कुमार देवों में उत्तम, 'अमितगती' कहलाता ।
चालिस लाख भवन का स्वामी, जिन पद को नित ध्याता ।।
भवनवासि०

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे अमितगत्येन्द्रस्य चत्वारिंशल्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

इंद्र 'अमितवाहन' है दूजा, उत्तरेंद्र कहलाता ।
छत्तिस लाख भवन से मंडित, जिनगुण में रम जाता ।।
भवनवासि०

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे अमितवाहनेन्द्रस्य षट्त्रिंशल्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

अग्निकुमार भवनवासी में, 'अग्निशिखी' उत्तम है ।
चालिस लाख भवन उनके हैं, उर में भक्ति सुमन है ।।
भवनवासि०

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे अग्निशिख्येन्द्रस्य चत्वारिंशल्लक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

उत्तरेंद्र 'अग्निवाहन' है, दस धनु ऊँची काया ।
छत्तिस लाख भवन हैं फिर भी, जिन चरणों को ध्याया ।।
भवनवासि०

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे अग्निवाहनेन्द्रस्य षट्त्रिंशल्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

वायुकुमार भेद अंतिम है, भवनवासी देवों का ।
'वेलंब' इन्द्र प्रधान स्वामी, है पचास भवनों का ॥
भवनवासि०

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे वेलम्बेन्द्रस्य पञ्चाशल्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥19॥

अगला इंद्र 'प्रभंजन' स्वामी, छ्यालिस लाख भवन का ।
निज परिवार सहित वंदन, करता जिनदेव सदन का ।
भवनवासि०

ॐ ह्रीं अधोलोके रत्नप्रभापृथिव्याः खरभागे प्रभञ्जनेन्द्रस्य षट्चत्वारिंशल्लक्ष-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥20॥

अथ चैत्यवृक्ष संबंधी अर्घ्य

विधाता छंद

भवनवासी असुरकुल में, वृक्ष पीपल सुहाना है ।
चैत्य तरु नाम से शोभित, रत्नमणि का खजाना है ॥
वृक्ष के मूल में चउदिश, पंच जिनबिंब दुख हरते ।
दिशा पूरब जिनेश्वर को, नमन हम भाव से करते ॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थाश्वत्थचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥21॥

कोस इक गहन इक योजन, ऊँचा स्कंध जिन तरू का ।
चार योजन सु शाखा युत, रत्नमय वृक्ष जिनवर का ॥
वृक्ष के मूल में चउदिश, पंच जिनबिंब दुख हरते ।
दिशा दक्षिण जिनेश्वर को, नमन हम भाव से करते ॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थाश्वत्थचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥22॥

सप्तछद आम्र अरु चंपक, अशोका वन के मध्य में ।
चैत्य तरु शोभता मणिमय, करे आलोक ज्यों निशि में ॥
वृक्ष के मूल में चउदिश, पंच जिनबिंब दुख हरते ।
दिशा पश्चिम जिनेश्वर को, नमन हम भाव से करते ॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थाश्वत्थचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥23॥

SarvatoPooja 16 / 260

रत्नमय शाख उपशाखा, विविध पुष्पों सु सज्जित है ।
चैत्य तरु श्रेष्ठ मणि संयुत, देख रवि चन्द्र लज्जित हैं ॥
वृक्ष के मूल में चउदिश, पंच जिनबिंब दुख हरते ।
दिशा उत्तर जिनेश्वर को, नमन हम भाव से करते ॥

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थाश्वत्थचैत्यवृक्षमूलभागोत्तरदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥24॥

चैत्यतरु सप्तपर्णी जो, नागकुल चिह्न कहलाता ।
वहाँ जिनराज दर्शन से, भव्य चिर मोद को पाता ॥
वृक्ष के मूल में चउदिश, पंच जिनबिंब दुख हरते ।
दिशा पूरब जिनेश्वर को, नमन हम भाव से करते ॥

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थसप्तपर्णचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥25॥

सप्तपर्णी तरू प्यारा, जहाँ जिनराज राजित हैं ।
जिनेश्वर शीश पर रतनन, के अनुपम छत्र राजित हैं ॥
वृक्ष के मूल में चउदिश, पंच जिनबिंब दुख हरते ।
दिशा दक्षिण जिनेश्वर को, नमन हम भाव से करते ॥

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थसप्तपर्णचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥26॥

रतनमय चैत्य तरुवर है, मणी मरकतमयी पत्ते ।
जिनेश्वर बिम्ब पद्मासन, सभी के पाप को हरते ॥
वृक्ष के मूल में चउदिश, पंच जिनबिंब दुख हरते ।
दिशा पश्चिम जिनेश्वर को, नमन हम भाव से करते ॥

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थसप्तपर्णचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥27॥

सप्तपर्णी तरूवर की, अकथ शोभा निराली है ।
घंटा जालादि से मंडित, पूज मिटती भवाली है ॥
वृक्ष के मूल में चउदिश, पंच जिनबिंब दुख हरते ।
दिशा उत्तर जिनेश्वर को, नमन हम भाव से करते ॥

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थसप्तपर्णचैत्यवृक्षमूलभागोत्तरदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।28।।

सुपर्णों के भवन भीतर, चैत्य तरु शाल्मलि जानो ।
आदि अरु अंत से विरहित, ये हैं शाश्वत तरु मानो ।।
वृक्ष के मूल में चउदिश, पंच जिनबिंब दुख हरते ।
दिशा पूरब जिनेश्वर को, नमन हम भाव से करते ।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थशाल्मलिचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।29।।

चैत्य तरु चार ही दिश में, जिनेश्वर बिम्ब राजित हैं ।
सभी चउ तोरणों से युत, शुभ्र वसु द्रव्य साजित हैं ।।
वृक्ष के मूल में चउदिश, पंच जिनबिंब दुख हरते ।
दिशा दक्षिण जिनेश्वर को, नमन हम भाव से करते ।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थशाल्मलिचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।30।।

जहाँ तरु चैत्य स्थित हैं, पीठ वह चित्त मोहन है ।
भूमि छह योजना मुख दो, ऊँचाइ चार योजन है ।।
वृक्ष के मूल में चउदिश, पंच जिनबिंब दुख हरते ।
दिशा पश्चिम जिनेश्वर को, नमन हम भाव से करते ।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थशाल्मलिचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।31।।

शाल्मलि चैत्य तरु राजित, जिनेश्वर देव का दर्शन ।
भविक के नष्ट करता है, सर्व दुख पाप अरु क्रंदन ।।
वृक्ष के मूल में चउदिश, पंच जिनबिंब दुख हरते ।
दिशा उत्तर जिनेश्वर को, नमन हम भाव से करते ।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थशाल्मलिचैत्यवृक्षमूलभागोत्तरदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।32।।

भवन में द्वीप देवों के, चैत्य तरु जम्बु नित सोहे ।
वृक्ष के मूल पूरब दिश, पंच जिनबिम्ब मन मोहें ।।

SarvatoPooja 16 / 261

वीतरागी सु वंदन से, करम सब भाग जाते हैं ।
अतः वसु द्रव्य लेकर हम, यहाँ पूजा रचाते हैं ।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थजम्बूचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमानपञ्चजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।33।।

चैत्य तरु जम्बु की दक्षिण, दिशा अतिशय चमत्कारी ।
जहाँ जिनराज की प्रतिमा, रत्नमय दिव्य मनहारी ।।
वीतरागी०

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थजम्बूचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।34।।

चैत्य तरु जम्बु पश्चिम में, द्वीप शुभ देव नित आकर ।
करें भगवान की पूजा, भक्ति से गीत गा गाकर ।।
वीतरागी०

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थजम्बूचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।35।।

रत्नमय शुभ्र फल से युत, ये जम्बू वृक्ष अनुपम है ।
यहाँ उत्तर दिशा थापित, पंच जिन बिंब निरुपम हैं ।।
वीतरागी०

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थजम्बूचैत्यवृक्षमूलभागोत्तरदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।36।।

कुँवर उदधि कुलों में नित, चैत्य तरु शोभता 'वेतस' ।
वहाँ प्राची दिशा मंदिर, शुभ बरसता है भक्ति रस ।।
वीतरागी०

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थवेतसचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।37।।

वृक्ष 'वेतस' बड़ा पावन, धन्य दक्षिण दिशा होती ।
जहाँ जिनबिंब अर्चा नित, भविक के पाप मल धोती ।।
वीतरागी०

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थवेतसचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।38।।

उत्तमोत्तम रतन निर्मित, श्री जिनवर का सिंहासन ।
प्रतीचि चैत्य तरुवर की, रहे जिनधर्म का शासन ॥
वीतरागी०

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थवेतसचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥39॥

उदीची पंच जिन प्रतिमा, सुरों का चित्त हरती हैं ।
तजो अघ पंच व्रत पालो, यही संदेश देती हैं ॥
वीतरागी०

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थवेतसचैत्यवृक्षमूलभागोत्तरदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥40॥

दोहा

विद्युत देव कुलादि में, चैत्य तरु है कदंब ।
पूरब दिश के पंच जिन, जजूँ हरूँ सब दंभ ॥

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारदेवभवनस्थकदम्बचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥41॥

दक्षिण दिश जिन चैत्य की, पंच बिंब मनहार ।
पूजन से सब अघ मिटे, जीवन हो सुखकार ॥

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारदेवभवनस्थकदम्बचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥42॥

वृक्ष कदंब सु मूल में, रत्नमयी जिनबिंब ।
पश्चिम दिश जिन पूज लहुँ, निज में जिन प्रतिबिंब ॥

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारदेवभवनस्थकदम्बचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥43॥

नाना मणियों युक्त है, चैत्य तरु का मूल ।
तहँ उत्तर दिश जिन नमूँ, मिटे कर्म का शूल ॥

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारदेवभवनस्थकदम्बचैत्यवृक्षमूलभागोत्तरदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥44॥

स्तनित कुमार कुलादि में, प्रियंगु वृक्ष प्रधान ।
ताकी पूर्व दिशा विषै, पंच बिंब अघ हान ॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थप्रियङ्गुचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥45॥

वृक्ष प्रियंगु सुभग दिशा, दक्षिण मूल महान ।
पद्मासन में राजते, श्री जिनवर भगवान ॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थप्रियङ्गुचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥46॥

दिशा प्रतीचि में रहे, देवों का नित वास ।
चैत्य तरु की वंदना, करती पूरन आस ॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थप्रियङ्गुचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥47॥

उत्तर दिश तरु चैत्य में, जिन प्रतिमा अभिराम ।
तीन छत्र सिर शोभ रहें, पूज होय सब काम ॥

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थप्रियङ्गुचैत्यवृक्षमूलभागोत्तरदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥48॥

भवनवासी में एक कुल, दिक्कुमार शुभ जान ।
तरु शिरीष तहँ मुख्य है, जजूँ पूर्व भगवान ॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थशिरीषचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥49॥

दिक्कुमार कुल में रहा, शुभ शिरीष तरु चैत्य ।
दक्षिण दिश तरु मूल के, जिनवर पूजूँ नित्य ॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थशिरीषचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥50॥

चित्र विचित्र सुपुष्प युत, चैत्य शिरीष विशेष ।
दिशा प्रतीचि जिन जजूँ, होय कर्म निःशेष ॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थशिरीषचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥51॥

एक कोस अवगाढ़ तरु, इक योजन स्कंध ।
उत्तर दिश जिन भक्ति से, होय पुण्य का बंध ॥

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थशिरीषचैत्यवृक्षमूलभागोत्तरदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।52।।

अग्निकुमार कुलादि में, है पलाश तरु मुख्य ।
पूर्व दिशा जिनदेव की, पूजन करते विज्ञ ।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थपलाशचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।53।।

दक्षिण दिश तरु चैत्य की, सुरगण को सुखकार ।
चउ चउ तोरण युक्त है, जिन प्रतिमा अविकार ।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थपलाशचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।54।।

तरु पलाश आभा सुभग, पल में दुख हर लेय ।
पश्चिम दिश जिन वंदना, सर्व शांति सुख देय ।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थपलाशचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।55।।

अष्ट प्रातिहार्य संयुत, तिष्ठे श्री जिनराज ।
चैत्य तरु उत्तर दिशा, जिन पूजूँ धर आस ।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थपलाशचैत्यवृक्षमूलभागोत्तरदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।56।।

वायुकुमारों के यहाँ, राजद्रुम शुभ वृक्ष ।
प्राची के तरु मूल में, साजे जिनवर दक्ष ।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थराजद्रुमचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।57।।

वायुकुमार भवन विषै, चैत्य तरु के मूल ।
दक्षिण दिश जिन बिंब को, पूज लहूँ भव कूल ।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थराजद्रुमचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।58।।

दिशा प्रतीचि नित्य रहें, पंच बिंब अर्हंत ।
तिनके वंदन से बनें, सुरगण महिमावंत ।।

SarvatoPooja 16 / 263

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थराजद्रुमचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।59।।

उत्तर दिश में वृक्ष की, सिंहासन रमणीय ।
तहाँ विराजे देवजिन, सुरगण से वंदनीय ।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थराजद्रुमचैत्यवृक्षमूलभागोत्तरदिग्विराजमान-पञ्चजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।60।।

अथ मानस्तंभ अर्घ्य

अडिल्ल छंद

पूरब दिश में चैत्य वृक्ष के ही आगे ।
रत्नमयी शुभ थंभ जिनवर के राजे ।।
असुर मानथंभों पर नित्य मोहित हैं ।
इक शत चालिस बिंब प्रभु के शोभित हैं ।।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थाश्वत्थचैत्यवृक्षपूर्वदिग्पञ्चजिनबिम्बसन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।61।।

चैत्य तरु दक्षिण में मानस्थंभ कहे ।
पूजा करके भव्य अपने विघ्न हरे ।। असुर॰

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थाश्वत्थचैत्यवृक्षदक्षिणदिग्पञ्चजिनबिम्ब-सन्मुखस्थपञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।62।।

चैत्य तरु पश्चिम में मानस्तंभ महा ।
रत्नों से मैं जिनवर पूजा करूँ अहा ।। असुर॰

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थाश्वत्थचैत्यवृक्षपश्चिमदिग्पञ्चजिनबिम्ब-सन्मुखस्थपञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।63।।

चैत्य तरु उत्तर में मानस्तंभ कहे ।
भक्ति करके सुरगण अपने कर्म दहे ।। असुर॰

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवभवनस्थाश्वत्थचैत्यवृक्षोत्तरदिग्पञ्चजिनबिम्ब-सन्मुखस्थपञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।64।।

चैत्य तरु पूरब में मानस्तंभ कहे ।
दर्शन कर भवि पूर्ण चिरंतन सुख लहे ।।

नागकुमार मानथंभ पर मोहित हैं ।
इक शत चालिस बिंब प्रभु के शोभित हैं ।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थसप्तपर्णचैत्यवृक्षपूर्वदिग्पञ्चजिनबिम्बसन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।65।।

चैत्य तरु दक्षिण में मानस्तंभ कहे ।
भक्ति से निज में समत्व रस धार बहे ।। नाग०

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थसप्तपर्णचैत्यवृक्षदक्षिणदिग्पञ्चजिनबिम्ब-सन्मुखस्थपञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।66।।

चैत्य तरु पश्चिम में मानस्तंभ कहे ।
इक-इक में अठबीस श्री जिनबिंब रहे ।। नाग०

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थसप्तपर्णचैत्यवृक्षपश्चिमदिग्पञ्चजिनबिम्ब-सन्मुखस्थपञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।67।।

चैत्य तरु उत्तर में मानस्तंभ महा ।
मान घटे दर्शन से आगम में कहा ।। नाग०

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवभवनस्थसप्तपर्णचैत्यवृक्षोत्तरदिग्पञ्चजिनबिम्बसन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।68।।

चैत्यतरु के पूरब दिश में पंच हैं ।
दर्शन करके दुःख रहे ना रंच है ।।
मानस्तंभ विराजित जिन को चाव से ।
सुपर्णकुमार जजें नित भक्ति भाव से ।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थशाल्मलिचैत्यवृक्षपूर्वदिग्पञ्चजिनबिम्बसन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।69।।

दक्षिण में शुभ चैत्य तरू के पाँच हैं ।
जिनगुण संख्यातीत कथन यह साँच है ।। मानस्तंभ०

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थशाल्मलिचैत्यवृक्षदक्षिणदिग्पञ्चजिनबिम्ब-सन्मुखस्थपञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।70।।

पश्चिम में शुभ चैत्य तरु के सामने ।
मानस्तंभ जजूँ जिन सुबह शाम में ।। मानस्तंभ०

SarvatoPooja 16 / 264

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थशाल्मलिचैत्यवृक्षपश्चिमदिग्पञ्चजिनबिम्ब-सन्मुखस्थपञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।71।।

उत्तर में शुभ चैत्य तरू के सामने ।
मानस्तंभ जजूँ पहुँचूँ शिवधाम में ।। मानस्तंभ०

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवभवनस्थशाल्मलिचैत्यवृक्षोत्तरदिग्पञ्चजिनबिम्ब-सन्मुखस्थपञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।72।।

चैत्य वृक्ष के आगे प्राची शुभ दिशा ।
थंभ पूजते सुरगण दिनभर अरु निशा ।।
द्वीपकुमारों के शुभ मानस्तंभ हैं ।
इक पे अट्ठाइस राजित जिनबिंब हैं ।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थजम्बूचैत्यवृक्षपूर्वदिग्पञ्चजिनप्रतिमासन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।73।।

दक्षिण में थित पाँच थंभ शुभ जानते ।
मिथ्यादृष्टी कुलदेवा तिन मानते ।। द्वीप०

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थजम्बूचैत्यवृक्षदक्षिणदिग्पञ्चजिनप्रतिमासन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।74।।

पश्चिम दिश में मानथंभ को भाव से ।
सम्यग्ज्ञानी सुरगण पूजें चाव से ।। द्वीप०

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थजम्बूचैत्यवृक्षपश्चिमदिग्पञ्चजिनप्रतिमासन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।75।।

उत्तर में पन मानस्तंभ सुशोभते ।
वंदन कर भवि पाप पंक को धोवते ।। द्वीप०

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवभवनस्थजम्बूचैत्यवृक्षोत्तरदिग्पञ्चजिनप्रतिमासन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।76।।

पूरब में पन मानस्तंभ विशाल हैं ।
सुरगण गाते प्रभु की नित जयमाल हैं ।।
उदधिकुमार भवन में मानस्तंभ हैं ।
इक पे अट्ठाइस राजित जिनबिंब हैं ।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थवेतसचैत्यवृक्षपूर्वदिग्पञ्चजिनबिम्बसन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।77।।

दक्षिण में पन मानस्तंभ विशाल हैं ।
वहाँ विराजित प्रभु पद में नित भाल है ।। उदधि०

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थवेतसचैत्यवृक्षदक्षिणदिग्पञ्चजिनबिम्ब-सन्मुखस्थपञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।78।।

पश्चिम में पन मानस्तंभ विशाल हैं ।
प्रभो भक्ति ही भक्तों की शुभ ढाल है ।। उदधि०

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थवेतसचैत्यवृक्षपश्चिमदिग्पञ्चजिनबिम्बसन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।79।।

उत्तर में पन मानस्तंभ विशाल हैं ।
प्रभुवर दर्शन काटे दृढ़ विधि जाल हैं ।। उदधि०

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवभवनस्थवेतसचैत्यवृक्षोत्तरदिग्पञ्चजिनबिम्बसन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।80।।

पायत्ता छंद

पन मानथंभ साँची में, जिनबिंब कहे प्राची में ।
विद्युत्कुमार गृह सोहे, जिनवर प्रतिमा मन मोहे ।।

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारदेवभवनस्थकदम्बचैत्यवृक्षपूर्वदिग्पञ्चजिनबिम्बसन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।81।।

दक्षिण दिश थंभ बताए, जिनबिंब भव्य मन भाए ।
विद्युत्कुमार गृह सोहे, जिनवर प्रतिमा मन मोहे ।।

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारदेवभवनस्थकदम्बचैत्यवृक्षदक्षिणदिग्पञ्चजिनबिम्ब-सन्मुखस्थपञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।82।।

पश्चिम में मानस्तंभा, पूजें निश्चित गुणवंता ।
विद्युत्कुमार गृह सोहे, जिनवर प्रतिमा मन मोहे ।।

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारदेवभवनस्थकदम्बचैत्यवृक्षपश्चिमदिग्पञ्चजिनबिम्ब-सन्मुखस्थपञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।83।।

उत्तर दिश मानस्तंभा, जजकर हो भवि अघहंता ।
विद्युत्कुमार गृह सोहे, जिनवर प्रतिमा मन मोहे ।।

SarvatoPooja 16 / 265

ॐ ह्रीं विद्युतकुमारदेवभवनस्थकदम्बचैत्यवृक्षोत्तरदिग्पञ्चजिनबिम्बसन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।84।।

पूरब पन थंभ कहाए, शत चालिस प्रतिमा गाए ।
स्तनितों के यहाँ विराजे, पूजें जिनप्रतिमा साजे ।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थप्रियङ्गुचैत्यवृक्षपूर्वदिग्पञ्चजिनबिम्बसन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।85।।

दक्षिण पन थंभ सुहाने, जिनप्रतिमा युत अघहाने ।
स्तनितों के यहाँ विराजे, पूजें जिनप्रतिमा साजे ।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थप्रियङ्गुचैत्यवृक्षदक्षिणदिग्पञ्चजिनबिम्ब-सन्मुखस्थपञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।86।।

पश्चिम के मानस्तंभा, पूजक होते विधिहंता ।
स्तनितों के यहाँ विराजे, पूजें जिनप्रतिमा साजे ।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थप्रियङ्गुचैत्यवृक्षपश्चिमदिग्पञ्चजिनबिम्बसन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।87।।

उत्तर पन थंभ प्रसिद्धा, जजि होवें केवलबुद्धा ।
स्तनितों के यहाँ विराजे, पूजें जिनप्रतिमा साजे ।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवभवनस्थप्रियङ्गुचैत्यवृक्षोत्तरदिग्पञ्चजिनबिम्बसन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।88।।

प्राची दिश में शुभ साजे, श्री मानस्तंभ विराजे ।
जजकर श्री जिन भगवंता, हो दिक्कुमार सुखवंता ।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थशिरीषचैत्यवृक्षपूर्वदिग्पञ्चजिनबिम्बसन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।89।।

दक्षिण दिश में अति शोभे, पन थंभों पर सुर मोहे ।
जजकर श्री जिन भगवंता, हो दिक्कुमार सुखवंता ।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थशिरीषचैत्यवृक्षदक्षिणदिग्पञ्चजिनबिम्बसन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।90।।

हैं दिशा प्रतीची वाले, पन मानस्तंभ निराले ।
जजकर श्री जिन भगवंता, हो दिक्कुमार सुखवंता ।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थशिरीषचैत्यवृक्षपश्चिमदिग्पञ्चजिनबिम्बसन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।91।।

उत्तर दिश में सुर जावें, मद मानस्तंभ गलावें ।
जजकर श्री जिन भगवंता, हो दिक्कुमार सुखवंता ।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवभवनस्थशिरीषचैत्यवृक्षोत्तरदिग्पञ्चजिनबिम्बसन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।92।।

पूरब दिश दिव्य कहाए, पन मानस्तंभ लुभाए ।
अग्निकुमारों के जानो, जिनबिंब पूज अघहानो ।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थपलाशचैत्यवृक्षपूर्वदिग्पञ्चजिनबिम्बसन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।93।।

दक्षिण की ओर जु चालें, पन मानस्तंभ निराले ।
अग्निकुमारों के जानो, जिनबिंब पूज अघहानो ।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थपलाशचैत्यवृक्षदक्षिणदिग्पञ्चजिनबिम्ब-सन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।94।।

पश्चिम में मानस्तंभा, जहँ राजित जिन विधिहंता ।
अग्निकुमारों के जानो, जिनबिंब पूज अघहानो ।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थपलाशचैत्यवृक्षपश्चिमदिग्पञ्चजिनबिम्ब-सन्मुखस्थपञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।95।।

उत्तर त्रय पीठ सुसाजे, पन मानस्तंभ विराजे ।
अग्निकुमारों के जानो, जिनबिंब पूज अघहानो ।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवभवनस्थपलाशचैत्यवृक्षोत्तरदिग्पञ्चजिनबिम्बसन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।96।।

पूरब में पन अनियारे, हैं मानस्तंभ सुप्यारे ।
वायुकुमार गेह प्यारे, जिनबिंब पूजते सारे ।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थराजद्रुमचैत्यवृक्षपूर्वदिग्पञ्चजिनबिम्बसन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।97।।

दक्षिण दिश में कहलाए, मद मानस्तंभ गलाए ।
वायुकुमार गेह प्यारे, जिनबिंब पूजते सारे ।

SarvatoPooja 16 / 266

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थराजद्रुमचैत्यवृक्षदक्षिणदिग्पञ्चजिनबिम्ब-सन्मुखस्थपञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।98।।

पश्चिम दिश भाव सुयुक्ता, जज थंभनि कर्म विमुक्ता ।
वायुकुमार गेह प्यारे, जिनबिंब पूजते सारे ।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थराजद्रुमचैत्यवृक्षपश्चिमदिग्पञ्चजिनबिम्ब-सन्मुखस्थपञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।99।।

उत्तर वन थंभ हैं चोखे, मानो हों तीर्थ अनोखे ।
वायुकुमार गेह प्यारे, जिनबिंब पूजते सारे ।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवभवनस्थराजद्रुमचैत्यवृक्षोत्तरदिग्पञ्चजिनबिम्बसन्मुखस्थ-पञ्चमानस्तम्भेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।100।।

पूर्णार्घ्य

श्री नंदि छंद (तर्ज : मीठो मीठो बोल..)

भवनवासि के भवनविषैं जिनगेह,
चैत्यवृक्ष भी पूजें धरि मन नेह ।
मान गलाए मानस्तंभ महान,
अर्घ्य चढ़ाऊँ चैत्यालय भगवान ।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थजिनालयचैत्यवृक्षमानस्तम्भजिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता–जिनमूरत प्यारी, अतिशयकारी, भवदुखहारी मुक्तिकरं ।
जिनवर को ध्यावें, शुभ गुण गावें, पाप नशावें सौख्यकरं ।।

शंभु छंद (सुरनर किन्नर)

जय जय जिन शाश्वत चैत्यालय, नितभाव सहित भविजन अर्चें ।
जय जय जिनबिंब सुशाश्वत हैं, श्री वीतरागी गुण नित चर्चें ।।
चैत्यालय सात कोटि समधिक, अरु लाख बहत्तर पहचानो ।
है भवनवासि के भवनों में, मणिरत्नमयी निश्चित जानो ।।

दश विध सु भवनवासी कहते, जो असुरकुमारादिक मानो ।
सबके ही दो दो इंद्र कहे, जिन आगम में ये परमानो ।।
सुर 'असुरों' के चमरेन्द्र तथा वैरोचन इंद्र बताया है ।
अरु 'नागकुमारों' के वेणू, वेणूधारी बतलाया है ।।

'द्वीपों' के पूर्ण वशिष्ट कहे, जलप्रभ जलकांत 'उदधि सुर' के ।
'विद्युत' के घोष महाघोषा, हरिषेण हरिकांत स्तनितों के ।
हैं 'दिक्कुमार' के अमित गति, अरु इंद्र अमित वाहन गाया ।
'अग्नीकुमार' के अग्निशिखी, अरू अग्निवाहन बतलाया ।।

वेलंब प्रभंजन इंद्र उभय, वायुकुमारों के हर्षाए ।
सुरचमरादिक ये दक्षिणेन्द्र वैरोचनादि उत्तर गाए ।।
पच्चीस धनुष इन असुरों का, ये देहोत्सेध बताया है ।
नागादि नवविध देवों का, दस धनुष मात्र कहलाया है ।।

'असुरों' के चौंसठ लाख भवन, नागों के चौरासी सु लाख ।
बाहत्तर लाख सुपर्णों के, द्वीपों के छियत्तर है लाख ।।
सुर उदधि विद्युत स्तनित कुमार, अरू दिक्कुमार अग्निकुमार ।
है लाख छियत्तर भवन तथा, लख छियानव ही वायुकुमार ।।

चित्रा से दो हजार योजन, नीचे गृह अल्पऋद्धिधारी ।
सहस बयालिस योजन नीचे, भवना हैं महाऋद्धिधारी ।।
मध्यम ऋद्धी धारक सुर के, गृह योजन इक लख नीचे हैं ।
खरभाग में नागकुमारादि, नौ सुर के भवन समूचे हैं ।।

अरु असुरकुमारों के भवना, तुम पंक भाग में ही जानो ।
संख्यात करोड़ सुयोजन का, विस्तार जघन्य जु तुम मानो ।।
योजन करोड़ि यह असंख्यात, उत्कृष्ट सदा ही परमाणा ।
चौकोर भवन के ठीक मध्य, गिरि सौ योजन ऊँचा जाना ।।

इन पर शाश्वत चैत्यालय हैं, रतनों मणियों से खचित रहा ।
जिन बिम्ब एक सौ आठ कहे, पन शत योजन ऊँचे सु महा ।।

SarvatoPooja 16 / 267

चउदिश में मानथंभ सोहे, अरु चैत्यवृक्ष मनहारी है ।
वे सब जिनवर प्रतिमा निश्चित, सुख करती सब दुखहारी हैं ।।

कहें आयु असुर कुमारों की, उत्कृष्ट एक सागर मानी ।
भवनवासियों शेष नवक की, पुनि पल्यों में क्रमशः मानी ।।
आयु जघन्य वासी भवना, दस सहस वर्ष ही जानी है ।
मंद कषाय से बने देव वे, कहती ये जिनवाणी है ।।

जिन अर्चन से सम्यक्त्व रतन, अत्यंत सुरक्षित रहता है ।
शुभभावयुक्त जिनभक्त कदा, भव सागर में ना बहता है ।।
अतएव भक्ति युत मैं जिन की, पुनि पुनि पूजन अर्चन करता ।
हूँ धन्य धन्य जिन अर्चन कर, सब पाप ताप विधि मल हरता ।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(७७)

व्यंतरदेव जिनालय पूजन

अथ स्थापना

गीता छंद

भवनपुर आवास भवनों, में निवासें व्यंतरा ।
है अनादिअनिधन पूजित, देव चैत्यालय वरा ॥
उन असंख्यातों सदन जिन, चैत्य आह्वानन करूँ ।
भक्तियुत नित पूजहूँ पुनि, मोक्ष लक्ष्मी मैं वरूँ ॥

दोहा–व्यंतर भवनों में बने, शाश्वत जिनवर गेह ।
आह्वानन करि मैं जजूँ, निष्ठा भक्ति सनेह ॥

ॐ ह्रीं व्यन्तरदेवभवनभवनपुरावासस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं व्यन्तरदेवभवनभवनपुरावासस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं व्यन्तरदेवभवनभवनपुरावासस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

दोहा

शुक्ल ध्यान सम नीर शुभ, ले पूजूँ जिनराज ।
शाश्वत जिनगृह वंदकर, लहूँ स्वात्म साम्राज ॥

ॐ ह्रीं व्यन्तरदेवभवनभवनपुरावासस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

चंद्र रश्मि सम शीत है, शीतगंध सुखकार ।
बिंब जिनेश्वर के जजूँ, नमूँ अनंतों बार ॥

ॐ ह्रीं व्यन्तरदेवभवनभवनपुरावासस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

मुक्ता सम तंदुल महा, मुक्ति प्राप्ति के हेत ।
जिनवर की शुभ अर्चना, भवदधि शाश्वत सेत ॥

SarvatoPooja 16 / 268

ॐ ह्रीं व्यन्तरदेवभवनभवनपुरावासस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

श्रेष्ठ सुगंधित पुष्प ले, पद्म समा चित होय ।
मुक्ति सुपद्मा पा सकूँ, श्री जिन पद्म सजोय ॥

ॐ ह्रीं व्यन्तरदेवभवनभवनपुरावासस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

सर्व श्रेष्ठ स्वादिष्ट शुभ, व्यंजन दिव्य अनूप ।
क्षुधा नशाने जिन जजूँ, बनूँ स्वयं शिव भूप ॥

ॐ ह्रीं व्यन्तरदेवभवनभवनपुरावासस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

गौघृत दीपक विश्व में, सारभूत पहचान ।
उभय लोक सुख देत हैं, जिनपूजन गुणगान ॥

ॐ ह्रीं व्यन्तरदेवभवनभवनपुरावासस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

मैं अनादि से बद्ध हूँ, अष्ट कर्म के पाश ।
धूप जला जिन सेवता करूँ अष्ट विधि नाश ॥

ॐ ह्रीं व्यन्तरदेवभवनभवनपुरावासस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

सर्वोत्तम फल विश्व के, मात्र देह सुखकार ।
जिनपद धर नित अर्चता, लहूँ भवोदधि पार ॥

ॐ ह्रीं व्यन्तरदेवभवनभवनपुरावासस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

स्वर्ण रजत के पुष्प ले, भरूँ रत्न के थाल ।
पद अनर्घ मैं पा सकूँ, अर्घ चढ़ा तिहुँ काल ॥

ॐ ह्रीं व्यन्तरदेवभवनभवनपुरावासस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

सोरठा–व्यंतर देव निवास, जिन मंदिर शुभ शोभते ।
पाने को शिव वास, असंख्यात जिन को नमूँ ॥

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–व्यन्तर सुर के थान में, हैं असंख्य भगवान ।
नाना सुमनों से जजूँ, करूँ त्रिकाल प्रणाम ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ व्यंतर गृह स्थित चैत्य चैत्यालय अर्घ्य

रूपक सवैया छंद

किन्नर के अंजनक द्वीप में, दक्षिणेन्द्र किंपुरुष महान ।
भवनपुरावासों में राजित, रत्नमयी श्री जिन भगवान ।।
स्वर्ण रत्न से निर्मित जिनगृह, हरते भव्यों का क्रंदन हैं ।
संख्यातीत जिनों को मेरा, तीनों योग से वंदन है ।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकेऽञ्जनकद्वीपस्थकिंपुरुषेन्द्रस्य सङ्ख्यातीतभवनपुरावास-सम्बन्धिसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

किन्नर के अंजनक द्वीप में, उत्तरेन्द्र है किन्नर नाम ।
प्रियंगु वर्णी देव अर्चते, अपने जिनगृह के भगवान ।।
स्वर्ण रत्न से०

ॐ ह्रीं मध्यलोकेऽञ्जनकद्वीपस्थकिन्नरेन्द्रस्य सङ्ख्यातीतभवनपुरावास-सम्बन्धिसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

धवल वर्ण के किंपुरुषों का, द्वीप वज्रधातुक है महा ।
दक्षिणेन्द्र सत्पुरुष सु व्यंतर, अनुपम अर्चन करे अहा ।।
स्वर्ण रत्न से०

ॐ ह्रीं मध्यलोके वज्रधातुकद्वीपस्थसत्पुरुषेन्द्रस्य सङ्ख्यातीतभवनपुरावास-सम्बन्धिसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

धवल वर्ण के किंपुरुषों का, द्वीप वज्रधातुक है महा ।
उत्तरेन्द्र महापुरुष व्यंतर, अनुपम अर्चन करे अहा ।।
स्वर्ण रत्न से०

ॐ ह्रीं मध्यलोके वज्रधातुकद्वीपस्थमहापुरुषेन्द्रस्य सङ्ख्यातीतभवनपुरावास-सम्बन्धिसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

श्यामल वर्ण महोरग व्यंतर, द्वीप सुवर्ण सु पुर आवास ।
अर्चे दक्षिणेन्द्र महाकाय, जिनगृह जिनका दिव्य प्रकाश ।।
स्वर्ण रत्न से०

SarvatoPooja 16 / 269

ॐ ह्रीं मध्यलोके सुवर्णद्वीपदक्षिणदिक्स्थ महाकायेन्द्रस्य सङ्ख्यातीत-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

श्यामल वर्ण महोरग व्यंतर, द्वीप सुवर्ण सुपुर आवास ।
उत्तरेन्द्र अतिकाय सु अर्चे, जिनगृह जिनका दिव्य प्रकाश ।।
स्वर्ण रत्न से निर्मित जिनगृह, हरते भव्यों का क्रंदन हैं ।
संख्यातीत जिनों को मेरा, तीनों योग से वंदन है ।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके सुवर्णद्वीपोत्तरदिक्स्थातिकायेन्द्रस्य सङ्ख्यातीतजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

गंधर्वों का वर्ण सुवर्णिम, मनःशिलक शुभ द्वीप महान ।
दक्षिणेन्द्रों के गीतरति नित, आराधे श्री जिन भगवान ।।
स्वर्ण रत्न से०

ॐ ह्रीं मध्यलोके मनःशिलकद्वीपदक्षिणदिक्स्थगीतरत्येन्द्रस्य सङ्ख्यातीत-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

गंधर्वों का वर्ण सुवर्णिम, मनःशिलक शुभ द्वीप महान ।
उत्तरेन्द्र हैं गीतयशा जजते गिरि द्वीप उदधि भगवान ।।
स्वर्ण रत्न से०

ॐ ह्रीं मध्यलोके मनःशिलकद्वीपोत्तरदिक्स्थगीतयशेन्द्रस्य सङ्ख्यातीत-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

वज्रद्वीप के श्यामल यक्षा, माणिभद्र दक्षिणेन्द्र कहें ।
भवनपुरावासों में इनके, प्रभु भक्ति का स्रोत बहे ।।
स्वर्ण रत्न से०

ॐ ह्रीं मध्यलोके वज्रद्वीपदक्षिणदिक्स्थमाणिभद्रेन्द्रस्य सङ्ख्यातीतजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

वज्रद्वीप के श्यामल यक्षा, पूर्णभद्र उत्तरेन्द्र कहे ।
भवनपुरावासों में इनके, भक्ति सुनिर्झर स्रोत बहे ।।
स्वर्ण रत्न से०

ॐ ह्रीं मध्यलोके वज्रद्वीपोत्तरदिक्स्थपूर्णभद्रेन्द्रस्य सङ्ख्यातीतजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

रजत द्वीप के श्यामल राक्षस, दक्षिण इन्द्र है भीम प्रवर ।
रत्नप्रभा के पंकभाग में, सोलह सहस्र भवन सुन्दर ।।
स्वर्ण रत्न से०

ॐ ह्रीं अधोमध्यलोकयोः रजतद्वीपदक्षिणदिक्स्थभीमेन्द्रस्य सङ्ख्यातीत-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

रजत द्वीप के श्यामल राक्षस, उत्तरेन्द्र महाभीम प्रवर ।
रत्नप्रभा के पंकभाग में, सोलह सहस्र भवन सुन्दर ।।
स्वर्ण रत्न से०

ॐ ह्रीं अधोमध्यलोकयोः रजतद्वीपोत्तरदिक्स्थमहाभीमेन्द्रस्य सङ्ख्यातीत-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

द्वीप हिंगुलक भूत साँवले, दक्षिण इन्द्र सुरूप सु जान ।
इनके चित्रा भू के नीचे, चौदह सहस बने जिनधाम ।।
स्वर्ण रत्न से०

ॐ ह्रीं मध्यलोके हिंगुलकद्वीपदक्षिणदिक्स्थ सुरूपेन्द्रस्य सङ्ख्यातीत-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

द्वीप हिंगुलक भूत साँवले, उत्तरेन्द्र प्रतिरूप सु जान ।
रत्नप्रभा के पंकभाग में, चौदह सहस्र भवन निर्माण ।।
स्वर्ण रत्न से०

ॐ ह्रीं मध्यलोके हिङ्गुलकद्वीपोत्तरदिक्स्थ प्रतिरूपेन्द्रस्य सङ्ख्यातीत-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

दक्षिण में हरिताल द्वीप के, पाँच नगरियाँ हैं अभिराम ।
श्याम पिशाचों का अधिपति है, कालइन्द्र अति दिव्य ललाम ।।
स्वर्ण रत्न से०

ॐ ह्रीं मध्यलोके हरितालद्वीपदक्षिणदिक्स्थकालइन्द्रस्य सङ्ख्यातीत-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

उत्तरेन्द्र है महाकाल जो, कृष्ण पिशाच का स्वामी है ।
इनके ही हरिताल द्वीप में, सिरी जिनगृह अभिरामी हैं ।।
स्वर्ण रत्न से०

SarvatoPooja 16 / 270

ॐ ह्रीं मध्यलोके हरितालद्वीपोत्तरदिक्स्थमहाकालेन्द्रस्य सङ्ख्यातीत-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

अथ व्यंतर चैत्यवृक्ष अर्घ्य

शंभू छन्द

मणिमय अशोक तरु चैत्यवृक्ष, किन्नर पुरवासों में सोहे ।
तरु मूल भाग प्राची दिश में, चउ जिन प्रतिमा भवि मन मोहें ।।
पर्यंकासन जिनवर प्रतिमा, वसु प्रातिहार्य संयुक्त महा ।
श्रद्धा से वंदन कर उनको, पायें जिनत्व का सौख्य अहा ।।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवनिलयस्थाशोकतरुचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमानचतुर्जिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

है रत्नमयी शाखा वाला, तरुवर अशोक किन्नर पूजित ।
दक्षिण दिश के जिन बिंब महा, भव्यों के चित्त करें मोहित ।।
पर्यंकासन०

ॐ ह्रीं किन्नरदेवनिलयस्थाशोकतरुचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान-चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

मरकत मणि पत्रों से शोभित, तरु चैत्य अशोक सु मनहारी ।
शुभ दिक् प्रतीचि तरु मूल चार, जिन प्रतिमायें मंगलकारी ।।
पर्यंकासन०

ॐ ह्रीं किन्नरदेवनिलयस्थाशोकतरुचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान-चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

पृथ्वीकायिक शुभ चैत्य तरु, किन्नर जहँ पूज रचाते हैं ।
तरु के उदीचि दिक् मूल सजे, जिनबिंब चार मन भाते हैं ।।
पर्यंकासन०

ॐ ह्रीं किन्नरदेवनिलयस्थाशोकतरुचैत्यवृक्षमूलभागोत्तरदिग्विराजमान-चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

किंपुरुष भवनपुर वासों में, चंपक तरु चैत्य वृक्ष अनुपम ।
प्राची दिश दिव्य चार प्रतिमा, हैं रत्नमयी जिनवर निरुपम ।।
पर्यंकासन०

ॐ ह्रीं किम्पुरुषदेवनिलयस्थचम्पकतरुचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमान-चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

शाश्वत राजित शुभ चैत्यवृक्ष, जिसके दक्षिण दिश में जाकर ।
किंपुरुष रिझाते जिनवर को, जहँ वीतराग के गुण गाकर ।।
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं किम्पुरुषदेवनिलयस्थचम्पकतरुचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान-चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

चंपक तरु चैत्यवृक्ष मणिमय, है रत्नमयी बहु पुष्प खिले ।
पश्चिम के श्री जिन बिंब जजूँ, मुक्ति सुपंथ फिर सहज मिले ।।
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं किम्पुरुषदेवनिलयस्थचम्पकतरुचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान-चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

तरु पंचक चैत्य उदीचि दिशा, है पूज्य किंपुरुष इंद्रों से ।
क्योंकि वह शोभा पाती है, चउ राजित पूज्य जिनेंद्रों से ।।
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं किम्पुरुषदेवनिलयस्थचम्पकतरुचैत्यवृक्षमूलभागोत्तरदिग्विराजमान-चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

मणि खचित नागकेसर तरुवर, पूरब दिक् जिन मन भाते हैं ।
जिनकी शुभ अर्चन करने से, महोरग महान कहाते हैं ।।
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं महोरगदेवनिलयस्थनागकेसरचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमान-चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।25।।

चैत्य नागकेसर तरुवर जिसके दक्षिण चउ प्रतिमायें ।
महोरग सुदेव परिवार सहित, जिनवर भक्ति में रम जायें ।।
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं महोरगदेवनिलयस्थनागकेसरचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान-चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।26।।

शुभ चैत्यवृक्ष के पश्चिम में, जिनबिंब चार उनको वंदन ।
नित कीरत करते देव सभी, जिनसे होती आतम कुंदन ।।
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं महोरगदेवनिलयस्थनागकेसरचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान-चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।27।।

तरु चैत्य उदीची दिक् शोभा, जिनदेव तुम्हीं से आई है ।
भव शिव सुख संपत्ति सारी, जिनभक्तों ने ही पाई है ।।
पर्यंकासन जिनवर प्रतिमा, वसु प्रातिहार्य संयुक्त महा ।
श्रद्धा से वंदन कर उनको, पायें जिनत्व का सौख्य अहा ।।

ॐ ह्रीं महोरगदेवनिलयस्थनागकेसरचैत्यवृक्षमूलभागोत्तरदिग्विराजमान-चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।28।।

तुम्बरु नामक है चैत्यवृक्ष, पूरब दिश अनुपम प्रतिमायें ।
है नमन भाव युत उन सबको, जिनने जीती सब उपमायें ।।
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं गन्धर्वदेवनिलयस्थतुम्बरुचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमानचतुर्जिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।29।।

तुम्बरु सु चैत्य तरु मूल महा, चउ प्रतिमायें दक्षिण दिश में ।
जिन महिमा वर्णन करने की, सामर्थ्य भला रहती किस में ।।
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं गन्धर्वदेवनिलयस्थतुम्बरुचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमानचतुर्जिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।30।।

मणि रत्नों का शाश्वत तरुवर, तुम्बरु चैत्य महिमाशाली ।
पश्चिम में वीतरागता युत, चउ प्रतिमा प्रातिहार्य वालीं ।।
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं गन्धर्वदेवनिलयस्थतुम्बरुचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमानचतुर्जिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।31।।

शुभ चैत्य वृक्ष के उत्तर में, मणिमय जिन बिंब मनोहारी ।
गंधर्व पुरावासों में नित, होती जिन भक्ति अघहारी ।।
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं गन्धर्वदेवनिलयस्थतुम्बरुचैत्यवृक्षमूलभागोत्तरदिग्विराजमानचतुर्जिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।32।।

है चैत्यवृक्ष वट मनहारी, जिसमें रत्नों की शाखायें ।
जो यक्ष गणों से रक्षित हैं, पूरब दिश में चउ प्रतिमायें ।।
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं यक्षदेवनिलयस्थवटचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमानचतुर्जिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।33।।

यक्षों से अर्चित चैत्यवृक्ष, नाना रत्नों से संभूषित ।
तरु मूल विराजित दक्षिण में, जिन प्रतिमायें देवों वंदित ।।
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं यक्षदेवनिलयस्थवटचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमानचतुर्जिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।34।।

न्यग्रोध चैत्य तरुवर ऊँचा, फल पुष्प मणी पत्रों संयुत ।
तरु की प्रतीचि दिक् में सोहे, जिन प्रतिमायें कहता जिन श्रुत ।।
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं यक्षदेवनिलयस्थवटचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमानचतुर्जिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।35।।

नभ चुम्बित वह तरुवर प्यारा, तरु की उदीचि में जिन प्रतिमा ।
मणिमय रत्नों की सुर पूजित, जिनबिंब ही है इसकी गरिमा ।।
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं यक्षदेवनिलयस्थवटचैत्यवृक्षमूलभागोत्तरदिग्विराजमानचतुर्जिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।36।।

कण्टक तरु चैत्यवृक्ष मणिमय, राक्षस देवों के जिन मंदिर ।
प्राची दिश में दिनकर सम ही, राजित जिन प्रतिमायें अंदर ।।
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं राक्षससुरभवनस्थकण्टकचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमानचतुर्जिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।37।।

हिलता है पवन झकोरों से, पृथ्वीकायिक यह चैत्य तरू ।
जिसके दक्षिण दिक् चउ प्रतिमा, अर्चूं जिनत्व का रूप धरूँ ।।
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं राक्षससुरभवनस्थकण्टकचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान-चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।38।।

अपनी ऊँची शाखायों से, नभमण्डल जिसने चूमा है ।
कण्टक तरु के पश्चिम जिन का, अर्चक भव में ना घूमा है ।।
पर्यंकासन जिनवर प्रतिमा, वसु प्रातिहार्य संयुक्त महा ।
श्रद्धा से वंदन कर उनको, पायें जिनत्व का सौख्य अहा ।।

ॐ ह्रीं राक्षससुरभवनस्थकण्टकचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान-चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।39।।

कण्टक तरु की उत्तर दिश की चउ प्रतिमा उत्तर देती हैं ।
श्रद्धान रखो जिन भक्ति पर, भक्ति सब दुख हर लेती है ।।
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं राक्षससुरभवनस्थकण्टकचैत्यवृक्षमूलभागोत्तरदिग्विराजमानचतुर्जिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।40।।

भूतेन्द्र देव के जिनगृह में, तुलसी तरु अद्‌भुत दीप्त लिए ।
जजकर पूरब राजित प्रतिमा, हम भक्त सभी अभिभूत हुए ।।
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं भूतदेवभवनस्थतुलसीचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमानचतुर्जिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।41।।

तुलसी तरु चैत्यवृक्ष मनहर, जिसकी शोभा अनियारी है ।
दक्षिण में मंगल द्रव्य सुयुत, जिन प्रतिमा मणिमय न्यारी है ।।
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं भूतदेवभवनस्थतुलसीचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमानचतुर्जिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।42।।

नाना मणियों से अभिमण्डित, शुभ तुलसी चैत्य वृक्ष प्यारा ।
बहु कान्तिमान सा दिखता है, पश्चिम दिश प्रतिमाओं द्वारा ।।
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं भूतदेवभवनस्थतुलसीचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमानचतुर्जिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।43।।

अघ खण्ड करें दुख द्वंद हरें, जिन प्रतिमायें अतिशयकारी ।
तुलसी तरु चैत्य के उत्तर में, राजित है जो मंगलकारी ॥
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं भूतदेवभवनस्थतुलसीचैत्यवृक्षमूलभागोत्तरदिग्विराजमानचतुर्जिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥44॥

तरु चैत्य कदम्ब पिशाचों के, जिनगृह में शोभित होता है ।
प्राची दिश के जिन चैत्यों का, अर्चन सब कालुष धोता है ॥
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं पिशाचदेवनिलयस्थकदम्बचैत्यवृक्षमूलभागपूर्वदिग्विराजमानचतुर्जिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥45॥

इन चैत्यों की जिन प्रतिमायें, सम्यक्त्व निधि का कारण हैं ।
तरुवर कदम्ब दक्षिण दिश के, चउ जिनवर भवदधि तारण हैं ॥
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं पिशाचदेवनिलयस्थकदम्बचैत्यवृक्षमूलभागदक्षिणदिग्विराजमान-चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥46॥

तरु चैत्य कदम्ब प्रतीची में, जिन प्रतिमायें जीवन्त लगें ।
निशदिन उनकी भक्ति रस में, मेरा ये निर्मल चित्त पगे ॥
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं पिशाचदेवनिलयस्थकदम्बचैत्यवृक्षमूलभागपश्चिमदिग्विराजमान-चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥47॥

शुभ छत्र चँवर घंटा तोरण, मुक्ताफल से शोभित तरुवर ।
उस चैत्यवृक्ष उत्तरदिश के, जिन पूजक रहते नित्य निडर ॥
पर्यंकासन॰

ॐ ह्रीं पिशाचदेवनिलयस्थकदम्बचैत्यवृक्षमूलभागोत्तरदिग्विराजमानचतुर्जिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥48॥

अथ व्यंतर मानस्तंभ अर्घ्य

विधाता छन्द

चैत्य तरुवर कि प्राची में सु मानस्तंभ सोहित हैं ।
किन्नरों के पुरावासी, रत्न चैत्यों पे मोहित हैं ॥

SarvatoPooja 16 / 273

करो अर्चन जिनेश्वर का, यही शिवसौख्यदायी है ।
सभी जिन चैत्य को वंदूँ, आज मन में समाई है ॥

ॐ ह्रीं किन्नरदेवभवनस्थाशोकचैत्यवृक्षपूर्वदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थ-चतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥49॥

चैत्य तरुवर बृहद सोहें, दक्षिणी मानथंभ महा ।
विराजित बिंब जिनवर के, वीतरागी सु दिव्य अहा ॥
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं किन्नरदेवभवनस्थाशोकचैत्यवृक्षदक्षिणदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थ-चतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥50॥

अशोक तरुवर प्रतीचि के, मानथंभा गगन छूते ।
यहाँ राजित जिनेश्वर से, कभी मम प्रीत ना टूटे ॥
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं किन्नरदेवभवनस्थाशोकचैत्यवृक्षपश्चिमदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थ-चतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥51॥

मानस्तंभ सु रत्नों के, चैत्य तरु की उदीची में ।
जजूँ जिनबिंब अनियारे, फसूँ ना जगत वीची में ॥
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं किन्नरदेवभवनस्थाशोकचैत्यवृक्षोत्तरदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थ-चतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥52॥

चैत्य तरु किंपुरुष गृह के, पूर्व दिश चार थंभ लसें ।
पूजकर बिंब सब इनके, भला किसके न पाप नशें ॥
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं किम्पुरुषदेवनिलयस्थचम्पकचैत्यवृक्षपूर्वदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थ-चतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥53॥

चैत्य तरु की दिशा दक्षिण, सु मानस्तंभ चार कहे ।
जजें जिन बिंब अघहारी, सिद्ध सम नंत शर्म लहे ॥
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं किम्पुरुषदेवनिलयस्थचम्पकचैत्यवृक्षदक्षिणदिक्चतुर्जिनबिम्ब-सन्मुखस्थचतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥54॥

मानस्तंभ प्रतीची के, मानहारक व मनहारी ।
सु उपचित रत्नमय प्रतिमा, चैत्य तरु संग अघहारी ॥
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं किम्पुरुषदेवनिलयस्थचम्पकचैत्यवृक्षपश्चिमदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थचतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥55॥

चैत्यतरु की उदीची में, मानथंभा सुशोभित हैं ।
किंपुरुष देव से वंदित, चैत्य करते सु मोहित हैं ॥
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं किम्पुरुषदेवनिलयस्थचम्पकचैत्यवृक्षोत्तरदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थचतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥56॥

तरु के प्राची दिक् सोहें, मानथंभा सु मनहारी ।
जजें जिनबिंब शुभ इनके, महोरग देव परिवारी ॥
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं महोरगदेवभवनस्थनागकेसरचैत्यवृक्षपूर्वदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थचतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥57॥

नागकेसर तरू दक्षिण, सु मानस्तंभ की शोभा है ।
वीतरागी जिनेश्वर ने, भव्य का चित्त मोहा है ॥
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं महोरगदेवभवनस्थनागकेसरचैत्यवृक्षदक्षिणदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थचतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥58॥

चैत्य तरु की प्रतीची में, सु मानस्तंभ चउ साजे ।
महोरग देव से वंदित, बिंब जिनदेव के राजे ॥
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं महोरगदेवभवनस्थनागकेसरचैत्यवृक्षपश्चिमदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थचतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥59॥

चैत्य तरु की उदीची में, मानथंभों को सिर नाऊँ ।
जजूँ मणिमय सु जिन प्रतिमा, सुफल मुक्ति का नित चाहूँ ॥
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं महोरगदेवभवनस्थनागकेसरचैत्यवृक्षोत्तरदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थचतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥60॥

करें गन्धर्व नित पूजा, सु मानस्तंभ जिनवर की ।
तुम्बरु तरु की प्राची में, राजती दिव्य मनहर सी ॥
करो अर्चन जिनेश्वर का, यही शिवसौख्यदायी है ।
सभी जिन चैत्य को वंदूँ, आज मन में समाई है ॥

ॐ ह्रीं गन्धर्वदेवनिलयस्थिततुम्बरुचैत्यवृक्षपूर्वदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थचतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥61॥

तुम्बरु चैत्य तरुवर की, प्रतीची में गगन चुम्बित ।
मानथंभों में वैभव युत, बिंब जिनदेव के शोभित ॥
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं गन्धर्वदेवनिलयस्थिततुम्बरुचैत्यवृक्षदक्षिणदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थचतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥62॥

चैत्य तरु की प्रतीची में, ध्वजा घंटादि से सज्जित ।
मणीमय मानथंभ जहाँ, सजे जिनबिंब अघ वर्जित ॥
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं गन्धर्वदेवनिलयस्थिततुम्बरुचैत्यवृक्षपश्चिमदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थचतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥63॥

तुम्बरु चैत्य वृक्षों की, उदीचि चार मानस्तंभ ।
जजें गन्धर्व श्रद्धा से, जहँ राजित जिनेश्वर बिंब ॥
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं गन्धर्वदेवनिलयस्थिततुम्बरुचैत्यवृक्षोत्तरदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थचतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥64॥

चैत्य वट तरु की प्राची में, सु मानस्तंभ की गरिमा ।
अर्चना यक्ष करते जो, राजती दिव्य जिन प्रतिमा ॥
करो अर्चन जिनेश्वर का, यही शिवसौख्यदायी है ।
जगें हैं पुण्य भक्तों के, जु जिन पूजा रचाई है ॥

ॐ ह्रीं यक्षदेवनिलयस्थितवटचैत्यवृक्षपूर्वदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थचतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥65॥

दिशा दक्षिण सु वट तरु की, मानथंभ हैं चउ न्यारे ।
मणिमरकत की जिन प्रतिमा, पूजते यक्ष गण सारे ।।
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं यक्षदेवनिलयस्थवटचैत्यवृक्षदक्षिणदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थ-चतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।66।।

प्रतीची चैत्य तरुवर की, सु मानस्तंभ शुभ माने ।
चऊँ दिश शोभती प्रतिमा, जजें सुर यक्ष अघ हाने ।।
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं यक्षदेवनिलयस्थवटचैत्यवृक्षपश्चिमदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थ-चतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।67।।

हर इक जिनबिंब आगे शुभ, सु मानस्तंभ प्रतिमा युत ।
चैत्यतरु की उदीची में, यक्ष गण पूजते संयुत ।।
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं यक्षदेवनिलयस्थवटचैत्यवृक्षोत्तरदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थ-चतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।68।।

सु मानस्तंभ जिन प्रतिमा, लगे कुछ बोलने वाली ।
चैत्य तरु प्राची दिक् माँहि, जजें राक्षस सु बलशाली ।।
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं राक्षसदेवभवनस्थकण्टकचैत्यवृक्षपूर्वदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थ-चतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।69।।

चैत्य कण्टक सु तरु दक्षिण, मानथंभ हैं बहुरंगा ।
चतुर्दिक बिंब जिनवर के, पूजकर चित्त हो चंगा ।।
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं राक्षसदेवभवनस्थकण्टकचैत्यवृक्षदक्षिणदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थ-चतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।70।।

चैत्य तरु की प्रतीची में, मानथंभा सु जिनवर के ।
रत्नमय शोभती प्रतिमा, देख लूँ भाव उर भरके ।।
करो अर्चन॰

SarvatoPooja 16 / 275

ॐ ह्रीं राक्षसदेवभवनस्थकण्टकचैत्यवृक्षपश्चिमदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थ-चतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।71।।

चैत्य तरु की उदीची में, सु मानस्तंभ जिनवर के ।
सुसज्जित तोरणों से वो, बिंब शिवपुर महीश्वर के ।।
करो अर्चन जिनेश्वर का, यही शिवसौख्यदायी है ।
सभी जिन चैत्य को वंदूँ, आज मन में समाई है ।।

ॐ ह्रीं राक्षसदेवभवनस्थकण्टकचैत्यवृक्षोत्तरदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थ-चतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।72।।

मानथंभ के श्री जिनवर, मणि मरकतमय अनुपम हैं ।
भूत सुर चैत्य तरु प्राची, दिशा में शुभ्र निरुपम हैं ।।
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं भूतदेवनिलयस्थतुलसीचैत्यवृक्षपूर्वदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थ-चतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।73।।

चैत्य तुलसी सु तरुवर के, दिश दक्षिण में मनहारी ।
विराजित मानथंभों में, जिनेश्वर बिंब अघहारी ।।
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं भूतदेवनिलयस्थतुलसीचैत्यवृक्षदक्षिणदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थ-चतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।74।।

चैत्य तरु की प्रतीची दिक्, सु मानस्तंभ हैं शोभित ।
चतुर्मुख बिंब जिनवर के, जजें भूतेन्द्र मन मोहित ।।
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं भूतदेवनिलयस्थतुलसीचैत्यवृक्षपश्चिमदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थ-चतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।75।।

उदीचि दिश सुमानस्तंभ, विराजित चैत्य तरुवर के ।
सिरी जिनबिंब को चित से, निहारूँ नित्य मनभर के ।।
करो अर्चन॰

ॐ ह्रीं भूतदेवनिलयस्थतुलसीचैत्यवृक्षोत्तरदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थ-चतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।76।।

प्राची दिक् में तरुवर के, चार शुभ थंभ ऊँचे हैं ।
जजें जिनबिंब श्रद्धा से, भक्त सुरगण समूचे हैं ।।
करो अर्चन०

ॐ ह्रीं पिशाचदेवनिलयस्थकदम्बचैत्यवृक्षपूर्वदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थ-चतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।77।।

पिशाचों के निवासों में, चैत्य तरु की सु दक्षिण में ।
सु मानस्तंभ जिन प्रतिमा, लगन मेरी लगी उनमें ।।
करो अर्चन०

ॐ ह्रीं पिशाचदेवनिलयस्थकदम्बचैत्यवृक्षदक्षिणदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थ-चतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।78।।

प्रतीचि दिक् सु मानस्तंभ, जहाँ नित भक्ति रस बरसे ।
जजे भक्ति सुयुत प्रतिमा, चित्त की कालिमा विनशे ।।
करो अर्चन०

ॐ ह्रीं पिशाचदेवनिलयस्थकदम्बचैत्यवृक्षपश्चिमदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थ-चतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।79।।

मणिमय दिव्य मानस्तंभ, सु तरुवर चैत्य के सन्मुख ।
उदीची में सुराजित हैं, बिंब जिन के जजूँ उन्मुख ।।
करो अर्चन०

ॐ ह्रीं पिशाचदेवनिलयस्थकदम्बचैत्यवृक्षोत्तरदिक्चतुर्जिनबिम्बसन्मुखस्थ-चतुर्मानस्तम्भजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।80।।

पूर्णार्घ्य

दिग्पाल छन्द

पुर भवन आवास में, जिनालय की भव्यता ।
जजुँ महान चैत्य रुक्ष, मानस्तंभ नव्यता ।
मणि सुरत्न के जिनेश, व्यंतरों के थान में ।
शिवत्व प्राप्त हेतु नित्य, पूजूँ पुण्यवान मैं ।।

ॐ ह्रीं व्यन्तरदेवभवनभवनपुरावासस्थजिनालयचैत्यवृक्षमानस्तम्भजिन-बिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

SarvatoPooja 16 / 276

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता

श्री जिनवर भवना, शुभकृत सदना, भव्य जीव नित हितकारी ।
श्री जिनपद नमना, इंद्रिय दमना, तज कषाय हों अविकारी ।।

हरिगीतिका छंद

व्यंतर सुरों के भवन आदिक, के जिनालय अर्चता ।
मणिरत्नमय जिनबिंब शाश्वत, को सदा ही वंदता ।।
हैं आठ विध व्यंतर सुकिन्नर, किंपुरुष व महोरगा ।
गंधर्व सुर हैं यक्ष राक्षस, भूत सप्तम ही कहा ।।

अष्टम जु भेद पिशाच जानो, सबनि दो दो इंद्र हैं ।
सुर आठ के हैं वर्ण भी वसु, युँ बताते मुनींद्र हैं ।।
शुभ प्रियंगुफल व धवल काला, श्याम स्वर्ण स्वरूप है ।
तीन देव हैं श्यामसुवर्णी, अंत काला रूप है ।।

इक इंद्र के परिवार में हर, इक प्रतीन्द्र रहे सदा ।
चउ हजार सामानिक सहस, सोलह तनुरक्षक मुदा ।।
वसु सौ है आभ्यंतर व मध्य, सहस है सुर पारिषद ।
इक सहस दो सौ जानिए सुर, देवनि बाह्य पारिषद ।।

अड़तालिस लाख बयानवें सु, हजार दो कोटि अधिक ।
सातों अनीकों का प्रमाण सु, जानिए कहि जिनअधिप ।।
परिवार एक में आभियोग्य, सुर असंख्यातों कहे ।
एवं प्रकीर्णक भी सुजानो, की असंख्यातों रहे ।।

वसु द्वीप में दो दो रहें, दक्षिण व उत्तर इन्द्र हैं ।
अंजनक में किंपुरुष बसते व किन्नर इन्द्र हैं ।।
द्वीप वज्र धातुक के दक्षिण, दिशा में सत्पुरुष हैं ।
उस द्वीप की उत्तर दिशा में, इंद सु महापुरुष हैं ।।

सुवर्ण में महाकाय उत्तर, इंद्र सुर अतिकाय है ।
द्वीप मनः शिलक में गीतरति, गीतयश सुरगाय है ॥
पुनि वज्र दक्षिण माणिभद्रा, पूर्णभद्र उदीचि में ।
सुद्वीप रजत में भीम निवसे, महाभीम उदीची में ॥

श्री हिंगुलक दक्षिण दिशा में, भूत इंद्र सुरूप है ।
उत्तर दिशा में इंद्र दूजा, भूत का प्रतिरूप है ॥
हरिताल दक्षिण में है काल, उत्तर महाकाल है ।
प्रति इंद्र के पन पन नगर हैं, योजनों सुविशाल हैं ॥

अनेक द्वीप औ सागरों में, रहे सुर हु शेष हैं ।
सुर भूत राक्षस के भवन खर, पंक में अवशेष हैं ॥
खर भाग में चौदह सहस हैं, भूत देवों के भवन ।
अरु पंक में सोलह सहस्रा, राक्षसों के हैं सदन ॥

सुर व्यंतरों की जघन्य आयु, दस हजार वरष कही ।
मध्यम असंख्यातों बरस है, पल्य एक उत्तम सही ॥
अवगाहना दस धनुष शुभ सब, व्यंतरों की जानते ।
है त्रिविध निवास स्थान इनके, यूँ हि ज्ञाता मानते ॥

सम भूमि पर मधिलोक की ही, भवन पुर विख्यात हैं ।
भू से ऊँचे शैल वृक्षादि, पे भवन अरु ख्यात हैं ॥
नीचे चित्रा पृथ्वी के जो, हैं भवन वे हैं कहे ।
इन मध्य कूटों पर विराजित, नित्य चैत्यालय रहें ॥

अष्ट उत्तर शत जिनगृहे, प्रतिमाएँ नित्य शोभती ।
रत्नमयी अविछिन्न सुरजन, का सदा मन मोहती ॥
सम्यक्त्व युत सब देव करते, नित्य जिन की वंदना ।
'कुलदेव' हैं यह जान मिथ्यादृष्टि भी करि अर्चना ॥

जिन चैत्य चैत्यालय सु अर्चन, आज भक्ति भाव से ।
निर्मल हृदय वसु द्रव्य लेकर, नाथ करता चाव से ॥

जिननाथ की वसु याम थुति, शुभ वंदना पूजा करें ।
व व्यंतरादिक नहीं सताते, क्लेश बाधा सब हरें ॥

दोहा

व्यंतर सुर के थान शुभ, रहें जु गणनातीत ।
असंख्यात जिनधाम जिन, पूजूँ कर जिनप्रीत ॥

ॐ ह्रीं व्यन्तरदेवभवनभवनपुरावासस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ॥
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

(७८)

ज्योतिष्कदेवविमानस्थ जिनचैत्य-चैत्यालय पूजन

अथ स्थापना

नरेन्द्र छंद

मध्य लोक के मध्यभाग में, ज्योतिष ग्रह अनियारे ।
चन्द्र अर्क ग्रह भानि तथा हैं, कोटि असंख्यों तारे ॥
उन असंख्य ज्योतिर्विमान में, जिनवर गृह शुभ साजे ।
आह्वानन स्थापन करि यहाँ, हम जिनवर आराधें ॥

दोहा–श्रद्धायुत आराधना, कर्मनाश के हेत ।
अक्षय शिवपद पा सकूँ, शाश्वत मुक्ति निकेत ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

चउबोला छंद

निर्मल जल लेकर आये हैं, जिनवर पूज रचाने को ।
जन्म जरा मृतु रोग नशाने, शाश्वत वैभव पाने को ॥
ज्योतिष ग्रह के सर्व जिनालय, अरु जिनवर अघहारी हैं ।
अर्चन कीर्तन वंदन पूजन, युत नित धोक हमारी है ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

गंधसार जिनपद में लाये, भव आताप मिटाने को ।
सिद्धों सम शाश्वत शीतलता, निज में निज प्रकटाने को ॥
ज्योतिष ग्रह०

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

दुग्धफेन सम धवलित अक्षत, ले जिन पूजन को आये ।
जग के दुखद सर्व पद नशि के, अक्षत शिव पद पा जायें ॥
ज्योतिष ग्रह के सर्व जिनालय, अरु जिनवर अघहारी हैं ।
अर्चन कीर्तन वंदन पूजन, युत नित धोक हमारी है ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

काम वासना नशने हेतू, जिनपद अर्चन को आये ।
बहुविध पुष्प चढ़ा जिन पद में, चिर सु ब्रह्म में रमि जायें ॥
ज्योतिष ग्रह०

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

ले चरुवर जिनपूजन करते, शाश्वत क्षुधा मिटाने को ।
जिन चैत्यालय चैत्य जजूँ नित, निज जिनत्व के पाने को ॥
ज्योतिष ग्रह०

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

गौघृत दीप बनाकर लाये, जिन पूजन को हे स्वामी ।
नीराजन कर नी रज होऊँ, लहूँ स्वत्व मैं अभिरामी ॥
ज्योतिष ग्रह०

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

वसुविध धूप जला वह्नि में, जिनपद अर्चन करते हैं ।
अष्टकर्म को नष्ट करें भवि, मुक्ति रमा वे वरते हैं ॥
ज्योतिष ग्रह०

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

सफल करूँ मैं नरकाया को, जिनपद सुफल चढ़ा करके ।
अष्ट कर्म हनि सिद्ध बनूँ मैं, मुक्ति रमा परिणा करके ॥
ज्योतिष ग्रह०

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

बहुविध रत्न सजा थालों में, जिनवंदन को आये हैं ।
पद अनर्घ के पाने हेतू, पूजन भाव बनाये हैं ॥
ज्योतिष ग्रह०

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा–**ज्योतिष देव विमान में, शाश्वत जिनवर गेह ।**
तिन जिनगृह जिन पूजि करि, होऊँ नित्य विदेह ॥

शान्तये शान्तिधारा । दिव्यपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–**ज्योतिष देव विमान के, ज्योतिर्मय भगवान ।**
भक्ति सुमन अर्पित करूँ, लहूँ शिवालय थान ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

अथ चन्द्रविमानस्थ जिनचैत्य-चैत्यालय अर्घ्य

शंभु छंद

श्री जंबुदीप में दो शशांक, सित कांतिवान शुभ बतलाए ।
वसु शत अस्सी योजन ऊपर, चित्रापृथ्वी से कहलाए ॥
शुभ चंद्र विमान में जिनगृह रु, जिन प्रतिमाएँ सु मनोहर हैं ।
मैं भाव सहित वंदन करता, जो शाश्वत दिव्य धरोहर हैं ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थद्वयचन्द्रविमानस्थद्विजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

साधिक छत्तिस सौ बाहत्तर, कुछ मील विमान चंद्र जानो ।
लवणोदधि में है चार चंद्र, सब इंद्र समा तुम पहचानो ॥
शुभ चंद्र विमान०

ॐ ह्रीं लवणसमुद्रस्थचतुश्चन्द्रविमानस्थचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

SarvatoPooja 16 / 279

साधिक छत्तिस उत्तर अठदश, शत मील कहा बाहल्य घना ।
शुभ खंड धातकी चंद्र यान, जो बारह जिनगृह युक्त बना ॥
शुभ चंद्र विमान में जिनगृह रु, जिन प्रतिमाएँ सु मनोहर हैं ।
मैं भाव सहित वंदन करता, जो शाश्वत दिव्य धरोहर हैं ॥

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थद्वादशचन्द्रविमानस्थद्वादशजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

कालोदधि में शुभ इंदु इंद्र, के ब्यालिस यान सुशोभित हैं ।
आयाम अर्द्ध बाहल्य सभी का, तिस पर द्युति सुर मोहित हैं ॥
शुभ चंद्र विमान०

ॐ ह्रीं कालोदधिसम्बन्धिद्विचत्वारिंशत्चन्द्रविमानस्थद्विचत्वारिंशज्जिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

श्री पुष्करार्द्ध में बाहत्तर, शुभ चंद्र विमान सुभग जानो ।
निज चार क्षेत्र से गमन करें, मेरू प्रदक्षिणा दें मानो ॥
शुभ चंद्र विमान०

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपस्थद्वासप्ततिचन्द्रविमानस्थद्वासप्ततिजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

इस मर्त्यलोक के बाहर में, सब शशि विमान थित रहते हैं ।
शाश्वत जिनगृह राजित जिनवर, तहँ नित्य व्यवस्थित रहते हैं ॥
शुभ चंद्र विमान०

ॐ ह्रीं अपरपुष्करार्द्धप्रभृतिस्वयम्भूरमणसमुद्रपर्यन्तसङ्ख्यातीतचन्द्रविमानस्थ-सङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

पूर्णार्घ्य

सब चंद्र विमानों के सु मध्य, शाश्वत चैत्यालय पहचानो ।
अष्टोत्तर शतक बिम्ब जिनवर, प्रत्येक पुण्य कारक मानो ॥
इस मध्य लोक में है असंख्य शुभ, शशि विमान जहँ जिन राजित ।
सम्यक्त्व सहित सुर पूजन को, श्री जिनवर चरणों में साजित ॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकेऽसङ्ख्यातचन्द्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ सूर्यविमानस्थ जिनचैत्य-चैत्यालय अर्घ्य

रूपक सवैया (तर्ज - भला किसी का...)

अठशत योजन चित्रा भू के, ऊपर है शुभ सूर्य विमान ।
जंबू में शत चौरासी गलि, दो रवि का चर क्षेत्र सु जान ।।
ज्योतिष ग्रह के सूर्य प्रतीन्द्रा, जहाँ विमान में चैत्य सदन ।
श्री चैत्यालय चैत्य सुपूजूँ, नित्य श्रद्धा युत करूँ नमन ।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थद्वयसूर्यविमानस्थितद्वयजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

साधिक इकतिस सौ सैंतालिस, मील सु सूर्य आयाम कहा ।
लवणोदधि में चार सूर्य हैं, तहाँ विमान जिनदेव अहा ।।
ज्योतिष ग्रह०

ॐ ह्रीं लवणोदधिस्थचतुस्सूर्यविमानस्थितचतुर्जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

अर्कायाम अर्द्ध बाहल्या, खंड सु धातकी रवि [१]बारा ।
सूर्य सुचालित सिंह बैल गज, अश्व रूप देवों द्वारा ।।
ज्योतिष ग्रह०

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थद्वादशसूर्यविमानस्थितद्वादशजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

कालोदधि में सूर्य बयालिस, स्वकीय क्षेत्र परकाश करें ।
मेरु गिरि के चारों ओर ये, निज गलियों संचार करें ।।
ज्योतिष ग्रह०

ॐ ह्रीं कालोदधिसम्बन्धिद्विचत्वारिंशत्सूर्यविमानस्थितद्वाचत्वारिंशज्जिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

पुष्करार्द्ध में सूर्य बहत्तर, वे भी पूर्ववत् ही जाने ।
अपनी गलियों में नित भ्रमते, स्वकीय क्षेत्र का तम हाने ।।
ज्योतिष ग्रह०

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपस्थद्विसप्ततिसूर्यविमानस्थितद्विसप्ततिजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

१. बारह

ढाई द्वीप के बाह्य विमान, सारे भास्कर थिर नित जानो ।
अर्ध सु गोलक बहुत चमकते, सर्व चैत्यालय युत मानो ।।
ज्योतिष ग्रह के सूर्य प्रतीन्द्रा, जहाँ विमान में चैत्य सदन ।
श्री चैत्यालय चैत्य सुपूजूँ, नित्य श्रद्धा युत करूँ नमन ।।

ॐ ह्रीं अपरपुष्करार्द्धप्रभृतिस्वयम्भूरमणसमुद्रपर्यन्तसङ्ख्यातीतसूर्यविमानस्थ-सङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

पूर्णार्घ्य

विष्णु छंद

सूर्य विमानों में शोभित हैं, जिनवर जिन स्थान ।
उन असंख्य जिनवर गृह वंदूँ, वंदूँ श्री भगवान ।।
जिनवर की वंदन निश्चित ही, कर्म पंक धोते ।
अर्हत् भक्त कर्म सब नशके, निश्चित शिव होते ।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकेऽसङ्ख्यातसूर्यविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ ग्रह विमानस्थ चैत्य चैत्यालय अर्घ्य

नरेन्द्र छंद

अष्ट शतक अट्ठासी योजन, चित्रा भू से ऊपर ।
एक मील विस्तृत बुध ग्रह शुभ, जिनमें जिनगृह सुखकर ।।
शाश्वत ज्योतिष ग्रह पर साजे, शाश्वत जिनगृह पावन ।
जिनवर जिनगृह नित्य जजूँ मैं, लहूँ पुण्य मन भावन ।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

बुध से त्रय योजन ऊपर ही, होते शुक्र विमाना ।
दोय मील विस्तार सु जिसका, जड़ित हीर युत नाना ।।
शाश्वत०

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

पुनः शुक्र से तीन सुयोजन, ऊपर गुरु ग्रह जानो ।
पीत वर्ण द्वय मील न्यून कुछ, जिनवर युत पहचानो ।।
शाश्वत०

ॐ ह्रीं बृहस्पतिग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

गुरु से तीन सुयोजन ऊपर, अंगारक[1] बतलाया ।
रक्त वर्ण भू पुत्र कहाए, अर्द्ध कोस मुनि गाया ।।
शाश्वत०

ॐ ह्रीं मङ्गलग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

चित्रा भू से नव शत योजन, ऊपर यह ग्रह जानो ।
शनि विमान शुभ नील वर्ण का, अध्यातम गुण खानो ।।
शाश्वत०

ॐ ह्रीं शनिग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

है 'विकाल' नामनि धारक ग्रह मंद कांति का धारक ।
निज वीथी में विचरण करते, कहे काल को कारक ।।
शाश्वत०

ॐ ह्रीं विकालग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

'लोहित' नामक ज्योतिर्ग्रह ये, रत्नजड़ित वैमाना ।
अर्द्ध गोल ये ऊर्ध्वमुखी है, ऊर्ध्व भाग सम जाना ।।
शाश्वत०

ॐ ह्रीं लोहितग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

'कनक' नाम का ज्योतिर्ग्रह यह, नीचे से चमकीला ।
चित्रा भू से ज्ञानी देखें, कनक समा शुभ पीला ।।
शाश्वत०

ॐ ह्रीं कनकग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

१. मंगल

SarvatoPooja 16 / 281

कहा 'कनक संस्थान' सु ग्रह जो, बहु वैभव संयुक्ता ।
देव देवियाँ नित रहते हैं, श्री जिनभक्ति युक्ता ।।
शाश्वत ज्योतिष ग्रह पर साजे, शाश्वत जिनगृह पावन ।
जिनवर जिनगृह नित्य जजूँ मैं, लहूँ पुण्य मन भावन ।।

ॐ ह्रीं कनकसंस्थानग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

ज्योतिर्ग्रह 'अंतरद' सु जानो, देवों का शुभ धामा ।
जिन अर्चन में लीन रहें सुर, मानो आठों यामा ।।
शाश्वत०

ॐ ह्रीं अन्तरदग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

ज्योतिर्ग्रह 'कवयव' शुभ भासा, जिन आगम के माँही ।
जो जिनवर को नित्य जजत हैं, उन्हें शोक दुख नाँहि ।।
शाश्वत०

ॐ ह्रीं कवयवग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

'दुन्दुभक' सु ग्रह नभ में चाले, ज्योतिर्लोक विशेषा ।
परिक्रमा मेरू की करते, ढाई द्वीप निःशेषा ।।
शाश्वत०

ॐ ह्रीं दुन्दुभकग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

है विमान ज्योतिर्मय जिसका, नाम 'रत्ननिभ' जानो ।
रत्नकांतिमय यह नित भासे, आगम से पहचानो ।।
शाश्वत०

ॐ ह्रीं रत्ननिभग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

'रूपनिभ' शुभ ग्रह जु बताया, ज्योतिर्सुर आवासे ।
शाश्वत चैत्य जिनालय वहँ पर, रत्नजड़ित नित भासे ।।
शाश्वत०

ॐ ह्रीं रूपनिभग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

'नील' नाम का ग्रह अति उत्तम, नीलवर्ण का धारी ।
देव वृंद जिन पूजन करके, बन जाते अविकारी ।।
शाश्वत॰

ॐ ह्रीं नीलग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

'नीलाभास' नाम का ग्रह इक, ज्योतिर्लोक बखाना ।
जहाँ अनेक देवगण रहते, कहते हैं विद्वाना ।।
शाश्वत॰

ॐ ह्रीं नीलाभासग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

'अश्व' नाम का ग्रह सुरभासित, ज्योतिर्लोक अनूठा ।
मोह छोड़ जो जिनवर पूजे, सो भव बंधन छूटा ।।
शाश्वत॰

ॐ ह्रीं अश्वग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

ग्रह 'अशोक संस्थान' सु धारक, ज्योतिर्ग्रह यह उत्तम ।
आभियोग्य देवों से चालित, तहँ मंदिर परमोत्तम ।।
शाश्वत॰

ॐ ह्रीं अशोकसंस्थानग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

'केश' नाम का ज्योतिर्ग्रह शुभ, ज्योतिर्सुर आवासा ।
देव देवियाँ जिसमें रहते, देता मंद प्रकाशा ।।
शाश्वत॰

ॐ ह्रीं केशग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

'कंसवर्ण' का वर्ण कंस सम, ग्रह ये अनुपम गाया ।
भवि ज्योतिर्देवों को ही श्री, जिन का रूप सु भाया ।।
शाश्वत॰

ॐ ह्रीं कंसवर्णग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

'कंस' नाम का ज्योतिर्ग्रह शुभ, नभ मंडल में चालित ।
देव देवियों के होता है, शुभ सम्यक् परिपालित ।।
शाश्वत ज्योतिष ग्रह पर साजे, शाश्वत जिनगृह पावन ।
जिनवर जिनगृह नित्य जजूँ मैं, लहूँ पुण्य मन भावन ।।

ॐ ह्रीं कंसग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

ज्योतिर्ग्रह में मंद द्युतीयुत, ग्रह सु 'शंख परिणामा' ।
अष्टोत्तर शत जिनवर मुक्ता, जिनवर का शुभ धामा ।।
शाश्वत॰

ॐ ह्रीं शङ्खपरिणामग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

पायत्ता छंद

ग्रह 'शंखवर्ण' शुभ मानो, द्युति मंद रहे यह जानो ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ।।

ॐ ह्रीं शङ्खवर्णग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

है 'उदक' सुग्रह अलबेला, इक जिनगृह तहाँ अकेला ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ।।

ॐ ह्रीं उदकग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

ग्रह 'पंचवर्ण' शुभ ख्याता, जहँ देव रहें विख्याता ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ।।

ॐ ह्रीं पञ्चवर्णग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।25।।

'तिल' ग्रह में है जिन धामा, पूजक पाए गुणग्रामा ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ।।

ॐ ह्रीं तिलग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।26।।

'तिलपुच्छ' सुग्रह अविकारी, जहँ जिनमंदिर अघहारी ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ।।

ॐ ह्रीं तिलपुच्छग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।27।।

ग्रह 'क्षारराशि' शुभवंता, सुर पूज बनें भगवंता ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ।।

ॐ ह्रीं क्षारराशिग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।28।।

'उत्पात' विमान अनोखा, जिन देव सदन जहँ चोखा ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ।।

ॐ ह्रीं उत्पातग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।29।।

हम 'धूमकेतु' ग्रह देखें, जिन चैत्यालय नित पेखें ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ।।

ॐ ह्रीं धूमकेतुग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।30।।

ग्रह 'एक संस्थान' नामा, जहँ चैत्यालय अभिरामा ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ।।

ॐ ह्रीं एकसंस्थानग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।31।।

ग्रह 'काल' सदा परकाशे, देवों से अतिशय भासें ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ।।

ॐ ह्रीं कालग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।32।।

यह ग्रह 'कलेवर' जु भाई, जिनवर गृह तहँ सुखदायी ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ।।

ॐ ह्रीं कलेवरग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।33।।

SarvatoPooja 16 / 283

है 'विकट' सु ग्रह शुभ थाना, जिनवर राजे गुणखाना ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ।।

ॐ ह्रीं विकटग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।34।।

ग्रह 'अभिन्न' है सुखकारी, जिसमें जिनेन्द्र अविकारी ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ।।

ॐ ह्रीं अभिन्नग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।35।।

'ग्रंथी' ग्रह ग्रंथी खोले, भवि सुर जिनवर जय बोलें ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ।।

ॐ ह्रीं ग्रन्थिग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।36।।

'मानवक' शुभ्र विख्याता, तज मान बनो जिन ध्याता ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ।।

ॐ ह्रीं मानवकग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।37।।

ग्रह 'केतु' शुभ्र अति सोहे, तिन जिनमंदिर मन मोहे ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।38।।

है 'विद्युज्जिह्व' विमाना, ज्योतिष देवों का थाना ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ।।

ॐ ह्रीं विद्युज्जिह्वग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।39।।

'नभ' नाम ग्रह सुअनूपा, सुर पूजें नित जिनरूपा ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ।।

ॐ ह्रीं नभग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।40।।

'सदृश' विमान सुर गेहा, जिन पूजें सुर धरि नेहा ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ॥

ॐ ह्रीं सदृशग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥41॥

है 'निलय' सुग्रह जिनयुक्ता, भवि पूज बने विधिमुक्ता ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ॥

ॐ ह्रीं निलयग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥42॥

ग्रह 'कालक' काल विहंता, त्रैकाल जजूँ भगवंता ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ॥

ॐ ह्रीं कालकग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥43॥

अब 'काल केतु' ग्रह जानो, देवों का ग्रह शुभ मानो ।
शाश्वत चैत्यालय राजें, थित चैत्य पूज अघ भाजें ॥

ॐ ह्रीं कालकेतुग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥44॥

उभयलाघव छंद

'अनप' विमान माँहि जिन मंदिर, लोकत्रय में है अति सुंदर ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं अनपग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥45॥

'सिंह' विमान कहा है अति शुभ, जिनवर नाशै कर्म शुभाशुभ ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं सिंहग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥46॥

है विमान जिनयुक्त 'विपुल' भनि, सुरगण वंदें कहते जिन मुनि ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं विपुलग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥47॥

SarvatoPooja 16 / 284

'काल' विमान माँहि जिनभगवन, भाव सहित तिनको नित वंदन ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं कालग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥48॥

'महाकाल' में जिनग्रह पावन, भव्य सुरों को है मन भावन ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं महाकालग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥49॥

'रुद्र' विमाने चैत्य सदन जिन, देव वंदना करे रैन दिन ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं रुद्रग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥50॥

'महारुद्र' ग्रह चैत्य जिनेश्वर, पूजि बनूँ मैं भी परमेश्वर ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं महारुद्रग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥51॥

ग्रह 'संतान' विमान युक्त जिन, पूजक अर्चक को सुखकर नित ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं सन्तानग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥52॥

जिनगृह युक्त विमान सु 'संभव', जिन पूजन से सफल होय भव ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं सम्भवग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥53॥

'सर्वार्थी' ग्रह मध्य चैत्य जिन, जिनअर्चन बिन रहूँ न इक दिन ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं सर्वार्थीग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥54॥

'दिशसंस्थित' ग्रह चैत्य जिनालय, अघनाशक वर्द्धक पुण्यालय ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं दिशसंस्थितग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥55॥

'संधि' सुग्रह के गतरागी जिन, सुख वर्षे तहाँ नित्य रात दिन ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं सन्धिग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥56॥

पावन 'चन्द्र' विमान चैत्ययुत, देव जजैं जिनवर श्रद्धा युत ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥57॥

'निश्चल' ग्रह में जिनग्रह शाश्वत, आत्मशांति सुर पाते भास्वत ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं निश्चलग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥58॥

जिनग्रह युक्त विमान 'प्रलंभ' सु, जिनपद पूजि होत पावन मन ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं प्रलम्भग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥59॥

'निर्मन्त्रो' का चैत्य सदन जिन, भव्य सुरों को सुखकर प्रतिदिन ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं निर्मन्त्रोग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥60॥

'ज्योतिष मान' गेह जिन सुंदर, भव्य जजे शाश्वत जिन मंदिर ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं ज्योतिष्मानग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥61॥

शुभ्र विमान 'स्वयंप्रभ' सुखकर, वंदूँ शाश्वत मंदिर जिनवर ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं स्वयम्प्रभग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥62॥

जिनमंदिर युत ग्रह शुभ 'भासुर', जिन पूजक हो भावी जिनवर ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं भासुरग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥63॥

'विरल' विमान सु जिनग्रह मनहर, जिन अर्चक होते सिद्धीश्वर ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं विरलग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥64॥

'निर्दुःख' ग्रह माँहि जिन आलय, जिनपूजन करि लहे शिवालय ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं निर्दुःखग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥65॥

'वीतशोक' विमान के भीतर, विद्यमान तहँ शाश्वत मंदिर ।
तिनकी पूजन वंदन नित कर, अतिशय पुण्य पाप सब अघहर ॥

ॐ ह्रीं वीतशोकग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥66॥

दोहा

'सीमंकर' ग्रह पावना, शाश्वत जिनवर गेह ।
जिनवर जिनगृह मैं जजूँ, होने स्वयं विदेह ॥

ॐ ह्रीं सीमङ्करग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥67॥

शाश्वत मंदिर युक्त है, शुभ ग्रह 'क्षेम' सुजान ।
पूजन करके अघ नशे, क्षेमंकर गुणखान ॥

ॐ ह्रीं क्षेमग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥68॥

प्रति चैत्यालय जानिए, अष्टोत्तर शत ईश ।
'अभयंकर' ग्रह मध्य में, नमूँ नित्य जगदीश ।।

ॐ ह्रीं अभयङ्करग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।69।।

'विजय' विमान सु वंदिए, शाश्वत जिनवर देव ।
जिनमंदिर पूजन करें, निज गुण लहि स्वयमेव ।।

ॐ ह्रीं विजयग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।70।।

'वैजयंत' सु विमान शुभ, जहँ जिनवर का वास ।
पूजन भक्ति सु नित करें, पायें पुण्य उजास ।

ॐ ह्रीं वैजयन्तग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।71।।

'जयंत' विमान सु कीजिए, पूजन नित सर्वज्ञ ।
जिन थुति वंदन से बनें, भवि प्राणी नित विज्ञ ।।

ॐ ह्रीं जयन्तग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।72।।

कर्म पराजित मैं करूँ, अपराजित जिन वंद्य ।
ग्रह 'अपराजित' में लखो, जिनवर सुरगण नंद्य ।।

ॐ ह्रीं अपराजितग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।73।।

शाश्वत जिनेन्द्र चैत्य शुभ, चैत्यालय अमलान ।
'विमल' सुग्रह में बिम्ब जिन, नमि पाऊँ वरदान ।।

ॐ ह्रीं विमलग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।74।।

'अलक' विमान सु पूजिये, वीतराग जिनबिम्ब ।
जिन गुण अर्चन से दिखे, निज में जिन शिवबिम्ब ।।

ॐ ह्रीं अलकग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।75।।

SarvatoPooja 16 / 286

'विजिष्णु' शुभग्रह में बने, शाश्वत जिनवर धाम ।
चैत्य चैत्यालय भजकर, लहूँ स्वात्म गुणधाम ।।

ॐ ह्रीं विजिष्णुग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।76।।

'विकस' विमान सु चिर बनें, मंदिर देव जिनेन्द्र ।
श्रद्धा युत वंदन करें, बनें स्वयं सिद्धेन्द्र ।।

ॐ ह्रीं विकसग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।77।।

ग्रह 'काष्ठी' अति पावना, निर्मित जिनवर गेह ।
जिनवर गुण निज उर धरूँ, पाऊँ मुक्ति सनेह ।।

ॐ ह्रीं काष्ठीग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।78।।

ग्रह सु 'कज्जली' में बना, चैत्यालय सुखकार ।
जिनवर जिनग्रह मैं जजूँ, पाऊँ सौख्य अपार ।।

ॐ ह्रीं कज्जलीग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।79।।

'अग्निज्वाल' विमान शुभ, गतरागी जिनदेव ।
जिनमंदिर युत जिन जजूँ, जिनपद करि अति सेव ।।

ॐ ह्रीं अग्निज्वालग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।80।।

है विमान 'जलकेतु' शुभ, ता मधि जिनवर थान ।
वसु द्रव ले हम नित जजें, पायें शिव गुण खान ।।

ॐ ह्रीं जलकेतुग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।81।।

वर्तुल पावन 'केतु' ग्रह, सहित चैत्य जिन धाम ।
वीतराग जिन पूजकर, उर से करूँ प्रणाम ।

ॐ ह्रीं केतुग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।82।।

है विमान 'क्षीरस' महा, तहँ जिनेन्द्र प्रभु वास ।
गतरागी जिनदेव की, करूँ भक्ति बन दास ।

ॐ ह्रीं क्षीरसग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।83।।

'अघ' विमान के गेह जिन, अघ नाशक सुख हेतु ।
तिनकी भक्ति सु वंदना, भवदधि तारन सेतु ।।

ॐ ह्रीं अघग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।84।।

'श्रवण' सु ग्रह में पेखिये, वीतराग जिन बिंब ।
जिनवर जिनगृह पूजि सुर, लखें स्वात्म प्रतिबिंब ।।

ॐ ह्रीं श्रवणग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।85।।

'अशोक' ग्रह के मध्य में, नित्य चैत्य जिनगार ।
भाव सहित जो पूजते, लहे भवोदधि पार ।।

ॐ ह्रीं अशोकग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।86।।

चैत्य जिनालय युक्त है, ये 'महाग्रह' विमान ।
वीतराग की अर्चना, कारक पद निर्वाण ।।

ॐ ह्रीं महाग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।87।।

'भाव' सुग्रह अंतिम कहा, जिन जिनगृह संयुक्त ।
भाव सहित जो जिन जजें, होय कर्म नशि मुक्त ।।

ॐ ह्रीं भावग्रहज्वालग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।88।।

पूर्णार्घ्य

गीतिका

इक चंद्र के परिवार में, सब ग्रह सु अट्ठासी कहे ।
होय असंख्य चंद्र अंतिम, द्वीप तक ग्रह भी रहे ।।

SarvatoPooja 16 / 287

उन ग्रह असंख्यों में रहे शाश्वत सु जिन चैत्यालया ।
अर्घ्य जिनवर को चढ़ाऊँ, मैं बनूँ पुण्यालया ।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकेऽसङ्ख्यातग्रहविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ नक्षत्रविमानस्थ चैत्य चैत्यालय अर्घ्य

नरेन्द्र छंद

'कृतिका' भानि बीजना जैसा, नाथ 'अग्नि' शुभ धारे ।
छ्यासठ सौ छ्यासठ परिवारा, मूल षटक हैं तारे ।।
नक्षत्रों के सुमध्य विराजित, चैत्यालय अघहारी ।
जिनवर जिनगृह नित्य जजूँ मैं, भविजन मंगलकारी ।।

ॐ ह्रीं सकलतारासहितकृत्तिकानक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

गाड़ी उद्धिकाकृति 'रोहिणी', कहे 'प्रजापति' स्वामी ।
पचपन सौ पचपन परिवारा, मूल पाँच हैं नामी ।। नक्षत्रों॰

ॐ ह्रीं सकलतारासहितरोहिणीनक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

मृगशिर जैसा 'मृगशिर' मानो, स्वामी 'सोम' सु धारा ।
तैंतिस सौ तैंतिस परिवारा, तीन मूल हैं तारा ।। नक्षत्रों॰

ॐ ह्रीं सकलतारासहितमृगशीर्षानक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

'आर्द्रा' दीपक जैसा स्वामी, 'रुद्र' रूप अनियारा ।
ग्यारह सौ ग्यारह परिवारा, मूल एक है तारा ।। नक्षत्रों॰

ॐ ह्रीं सकलतारासहिताद्रानक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

'पुनर्वसू' शुभ तोरण जैसा, 'अदिति' नाथ परकाशे ।
छ्यासठ सौ छ्यासठ परिवारा, मूल तार छः भासे ।। नक्षत्रों॰

ॐ ह्रीं सकलतारासहितपुनर्वसुनक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

छत्र समाना 'पुष्य' भानि शुभ, 'स्वामी' देव हमारा ।
तैंतिस सौ तैंतिस परिवारा, मूल तीन हैं तारा ।। नक्षत्रों॰

ॐ ह्रीं सकलतारासहितपुष्यनक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

'आश्लेषा' बामी जैसा है, स्वामी 'सूर्य' विचारे ।
छ्यासठ सौ छ्यासठ परिवारा, मूल कहे छः तारे ।। नक्षत्रों॰

ॐ ह्रीं सकलतारासहिताश्लेषानक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

'मघा' भानि गोमूत्र समा है, नाथ 'पिता' अवतारे ।
चूवालिस शत चौवालिस परिजन, मूल दोय शुभ तारे ।। नक्षत्रों॰

ॐ ह्रीं सकलतारासहितमघानक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

'पूर्वफाल्गुनि' बाणाकृति है, 'भग' स्वामी अघहारे ।
बाईस शत बाइस परिवारा, मूल दोय शुभ तारे ।। नक्षत्रों॰

ॐ ह्रीं सकलतारासहितपूर्वाफाल्गुनिनक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

'उत्तरा फाल्गुन' युगाकृति है, नाथ 'अर्यमा' जाने ।
बाईस शत बाइस परिवारा, तारि मूल दो माने ।। नक्षत्रों॰

ॐ ह्रीं सकलतारासहितउत्तराफाल्गुनिनक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

हस्ताकार 'हस्त' भानि शुभ, 'दिनकर' नाथ सम्हारे ।
पचपन सौ पचपन परिवारा, पंच मूल शुभ तारे ।। नक्षत्रों॰

ॐ ह्रीं सकलतारासहितहस्तनक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

'नीलोत्पल' सम चित्रा भानी, 'त्वष्टा' नाथ त्रिलोका ।
ग्यारह सौ ग्यारह परिवारा, मूल सितारा एका ।। नक्षत्रों॰

ॐ ह्रीं सकलतारासहितचित्रानक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

SarvatoPooja 16 / 288

दीप सदृश नक्षत्र 'स्वाति' शुभ, 'अनिल' नाथ उच्चारा ।
ग्यारह सौ ग्यारह परिवारा, मूल एक है तारा ।।
नक्षत्रों के सुमध्य विराजित, चैत्यालय अघहारी ।
जिनवर जिनगृह नित्य जजूँ मैं, भविजन मंगलकारी ।।

ॐ ह्रीं सकलतारासहितस्वातिनक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

शुभाधार सम भानि 'विशाखा', नाथ 'इंद्राग्नि' जाने ।
चूवालिस शत चौवालिस परिजन, तारे चार सुमाने ।। नक्षत्रों॰

ॐ ह्रीं सकलतारासहितविशाखानक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

हार समा 'अनुराधा' जानो, स्वामी 'मित्र' सु प्यारे ।
छ्यासठ सौ छ्यासठ परिवारा, मूल षटक हैं तारे ।। नक्षत्रों॰

ॐ ह्रीं सकलतारासहितानुराधानक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

'ज्येष्ठ' कृति वीणाश्रृंग समझो, 'इंद्र' नाथ सुखधारे ।
तैंतिस सौ तैंतिस परिवारा, तीन मूल हैं तारे ।। नक्षत्रों॰

ॐ ह्रीं सकलतारासहितज्येष्ठानक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

बिच्छु जैसा 'मूल' भानि है, नाथ 'नैऋति' विचारे ।
निन्यानव शत निन्यानव परिजन नव मूल सितारे ।। नक्षत्रों॰

ॐ ह्रीं सकलतारासहितमूलनक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

'पूर्वाषाढ़ा' दुष्कृत वापी, सम स्वामी 'जल' कहते ।
चउवालिस शत चउवालिस परिजन चउ मूल सु रहते ।। नक्षत्रों॰

ॐ ह्रीं सकलतारासहितपूर्वाषाढनक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

सिंहकुंभ सम 'उतराषाढ़ा', 'विश्व' नाथ हैं न्यारे ।
चउवालिस शत चउवालिस परिजन चउ मूल सितारे ।। नक्षत्रों॰

ॐ ह्रीं सकलतारासहितोत्तराषाढनक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥19॥

'अभिजित्' की गजकुंभ सुआकृति, 'ब्रह्मा' नाथ सम्हारे ।
तैंतिस सौ तैंतिस परिवारा, तीन मूल में तारे ॥ नक्षत्रों०

ॐ ह्रीं सकलतारासहिताभिजित्नक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥20॥

'श्रवण' ऋक्ष की मुरज आकृति, नाथ 'विष्णु' हैं प्यारे ।
तैंतिस सौ तैंतिस परिवारा, तीन मूल में तारे ॥ नक्षत्रों०

ॐ ह्रीं सकलतारासहितश्रवणनक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥21॥

गिरते पक्षी समा 'धनिष्ठा', स्वामी 'वसु' अति प्यारे ।
पचपन सौ पचपन परिवारा, पाँच मूल हैं तारे ॥ नक्षत्रों०

ॐ ह्रीं सकलतारासहितधनिष्ठानक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥22॥

नाथ 'वरुण' 'शतभिषा' सैन्य सम, इक शत ग्यारह तारे ।
इक शत तेइस सहस तीन सौ, इक्किस परिजन तारे ॥ नक्षत्रों०

ॐ ह्रीं सकलतारासहितशतभिषानक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥23॥

गज के पूर्व देहवत् 'पूर्वाभाद्र' सु पद 'अज' स्वामी ।
बाईस शत बाइस परिवारा, तारे मूल दु[1] नामी ॥ नक्षत्रों०

ॐ ह्रीं सकलतारासहितपूर्वाभाद्रपदनक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥24॥

गज उत्तर शरीरवत् 'उत्तरा भाद्र' सुपद अभिवृद्धि ।
बाईस सौ बाइस परिवारा, तारे मूल दो वृद्धि ॥ नक्षत्रों०

ॐ ह्रीं सकलरतारासहितोत्तराभाद्रपदनक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥25॥

नावाकृति सु 'रेवती' पूषानाथ कहे अनुकूला ।
पैंतिस सहस पाँच सौ बावन, परिजन बत्तिस मूला ॥ नक्षत्रों०

१. दो

SarvatoPooja 16 / 289

ॐ ह्रीं सकलतारासहितरेवतीनक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥26॥

हय सिर सम 'अश्विनी' सुजानो, 'अश्व' नाथ उच्चारे ।
पचपन सौ पचपन परिवारा, मूल पाँच हैं तारे ॥
नक्षत्रों के सुमध्य विराजित, चैत्यालय अघहारी ।
जिनवर जिनगृह नित्य जजूँ मैं, भविजन मंगलकारी ॥

ॐ ह्रीं सकलतारासहिताश्विनीनक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥27॥

चूल्हे पत्थर सम 'भरणी' है, 'यम' स्वामी अवतारे ।
तैंतिस सौ तैंतिस परिवारा, मूल तीन हैं तारे ॥ नक्षत्रों०

ॐ ह्रीं सकलतारासहितभरणीनक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥28॥

पूर्णार्घ्य

श्रीनंदि छंद (तर्ज - मीठो मीठो बोल...)

इक शशि के अट्ठाइस भानि जान,
हैं असङ्ख्य शशि तो असंख्य उडु मान ।
उन पर जिनगृह जिनवर नित सुखकार,
अर्घ्य चढ़ाएँ होवे हर्ष अपार ॥

ॐ ह्रीं मध्यलोकेऽसङ्ख्यातनक्षत्रविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ प्रकीर्णक तारक विमानस्थ चैत्य-चैत्यालय अर्घ्य

शंभु छंद

इक लख तैंतीस सहस साढ़े, नौ सौ कोड़ा कोड़ी सारे ।
शुभ जंबूद्वीप में दो इंदु, हैं जिनके परिवारी तारे ।
नित सर्व विमानों में शोभित, श्री चैत्यालय जिनवर वंदूँ ।
शुभ भाव सहित पूजन अर्चन, कर चित में प्रतिपल आनंदूँ ॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थद्वयचन्द्रपरिवारैकलक्षत्रयस्त्रिंशत्सहस्रनवशतपञ्चाशत्कोटि-कोटिताराविमानस्थसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

लवणोदधि में हैं चार चंद्र, तिनके परिवारी तारे हैं ।
दो लख सड़सठ सहस्र नौ सौ, कोड़ाकोड़ी ये तारे हैं ।। नित०

ॐ ह्रीं लवणोदधिसम्बन्धिचतुश्चन्द्रपरिवारद्विलक्षसप्तषष्टिसहस्रनवशतकोटि-कोटिताराविमानस्थसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

शुभ खण्ड धातकी में बारह, इन्द्रों के परिवारी तारे ।
वसु लख त्रय सहस सात सौ हैं, कोड़ाकोड़ी मिलकर सारे ।। नित०

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपसम्बन्धिद्वादशचन्द्रपरिवाराष्टलक्षत्रिसहस्रसप्तशत-कोटिकोटिताराविमानस्थसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

कालोदधि में ब्यालिस इंदू, तारे कोड़ाकोड़ी गाए ।
अट्ठाइस लख बारह हजार, नवसौ पचास ही बतलाए ।। नित०

ॐ ह्रीं कालोदधिसम्बन्धिद्विचत्वारिंशत्चन्द्रपरिवाराष्टाविंशतिलक्षद्वादश-सहस्रनवशतपञ्चाशत्कोटिकोटिताराविमानस्थसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

अध पुष्कर बाहत्तर चंदा, तारे कोड़ा कोड़ी रहते ।
अड़तालिस लख बाइस हजार, दो सौ सब मिलकर के कहते ।। नित०

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपस्थद्विसप्ततिचन्द्रपरिवाराष्टचत्वारिंशल्लक्षद्वाविंशति-सहस्रद्विशतकोटिकोटिताराविमानस्थसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

मनुजोत्तर आगे अंत द्वीप, तक चंद्र असंख्यातों देखे ।
उनके अनुसार असंख्यातों, तारे जिन आगम में लेखें ।। नित०

ॐ ह्रीं अपरपुष्करार्द्धप्रभृतिस्वयम्भूरमणसमुद्रपर्यन्तासङ्ख्यातचन्द्रपरिवार-सङ्ख्यातीतताराविमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति० ।।6।।

अथ ध्रुवतारा विमानस्थ चैत्यचैत्यालय अर्घ्य

शेर चाल

जंबूद्वीप में कहे छत्तिस हजार हैं ।
ये ध्रुव सितारे थिर रहें उत्तम प्रसार[1] हैं ।।
इन पर सुरत्नमय जिनालया सदा रहें ।
जिनबिंब पूजकर भवि अघ कर्म को दहें ।।

१. व्यवस्थित फैले हुए

SarvatoPooja 16 / 290

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपस्थषट्त्रिंशद्ध्रुवताराविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

लवणोदधि में इक सौ उन्तालीस बखाने ।
ये ध्रुव सितारे थिर रहें ज्ञानी यही माने ।।
इन पर सुरत्नमय जिनालया सदा रहें ।
जिनबिंब पूजकर भवि अघ कर्म को दहें ।।

ॐ ह्रीं लवणोदधिसम्बन्ध्येकशतैकोनचत्वारिंशद्ध्रुवताराविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

इक हजार दस कहें शुभ खंड धातकी ।
जिनभक्ति में चित न लगे जो तीव्र पातकी[1] ।। इन पर०

ॐ ह्रीं धातकीखण्डद्वीपस्थैकसहस्रदशध्रुवताराविमानस्थजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

सहस इकतालीस अधिक इक सौ बीस हैं ।
शुभ ध्रुव सितारे जिनके शीश विश्व ईश हैं ।। इन पर०

ॐ ह्रीं कालोदधिसम्बन्ध्यैकचत्वारिंशत्सहस्रैकशतविंशतिध्रुवताराविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

त्रेपन हजार दो सौ तीस तारे ध्रुव कहे ।
ये अर्द्ध पुष्करार्द्ध में स्थिर सदा रहें ।। इन पर०

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपस्थत्रिपञ्चाशत्सहस्रद्विशतत्रिंशद्ध्रुवताराविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

पूर्णार्घ्य

नरेन्द्र छंद

ढाई द्वीप के चन्द्र इन्द्र के, परिवारी जो तारे ।
असंख्यात द्वीपों सागर में, संख्यातीत सितारे ।।
अथवा थिर रहते जो ध्रुव हैं, तारे वो भी प्यारे ।
उन पर शाश्वत जिनगृह जिनवर, पूजूँ चित गुण धारे ।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकेऽसङ्ख्यातीततारावीमानस्थसङ्ख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा । शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

१. पापी

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

जिनवर गुणधारी, भवि सुखकारी, नित अविकारी मंगलकर ।
निज पाप नशाऊँ, जिनगुण गाऊँ, निजगुण पाऊँ अर्चनकर ।।

नरेन्द्र छंद

मध्य लोक में चित्रा भू से, सात सौ नब्बे योजन ।
ऊपर नौ सौ योजन तक ज्योतिर्विमान संयोजन ।।
लोक अंत में स्पर्श घनोदधि, करे ये तिर्यक् रूपा ।
अर्द्ध गोल ये ऊर्ध्वमुखी हैं, ग्रह आदि शुभ रूपा ।।

सात शतक योजन ऊपर शुभ, तारा मंडल सच्ची ।
आठ शतक योजन पर सूरज, चंद्र आठ सौ अस्सी ।।
आठ चौरासि योजन ऊपर, फिर नक्षत्र कहाए ।
आठ अठासी बुध अठ इक्यानव पर शुक्र बताए ।।

योजन आठ शतक नवति चउ, पर गुरु ग्रह विख्याता ।
आठ सतानव योजन मंगल, नौ सौ पर शनि ख्याता ।
सात नब्बे से नौ सौ तक इक दस योजन में सारे ।
ज्योतिर्देवों के विमान हैं, कांति दीप्ति बहु धारे ।।

ग्रह तेरासी की ये नगरी, तेरासी ही जानो ।
बुध विमान व शनि विमान के, मध्यथान पहचानो ।।
चंद्र इंद्र का ही विमान शुभ, सबसे बड़ा कहाया ।
अरु तारों का विविध विविध पर, छोटा ही कहलाया ।।

एक सूर्य नक्षत्र अठाइस, अट्ठासी ग्रह सारे ।
छ्यासठ सहस नौ सौ पछत्तर, कोड़ाकोड़ी तारे ।।
एक चन्द्रमा के परिवारी, जिन आगम में इतने ।
सूर्य ऋक्ष आदि भी बढ़ते, बढ़ते चन्द्रमा जितने ।।

SarvatoPooja 16 / 291

पाँच सौ दस सही अड़तालिस, बटे सुइकसठ योजन ।
चंद्र सूर्य का चार क्षेत्र यह, जंबूद्वीप संयोजन ।
शत चौरासी वीथि सूर्य की, शशि की पंद्रह कहते ।
अन्य ग्रहों की अपनी अपनी है, वीथि उनमें रहते ।।

ग्यारह सौ इक्कीस सुयोजन, छोड़ मेरु से रहते ।
चारों ओर प्रदक्षिण क्रम में, ये संचार सु करते ।
ढाई द्वीप संचार करें उससे बाहर थिर रहते ।
स्थिर रहकर वहीं से सारे, बिंब प्रकाशित करते ।।

सूर्य चन्द्र के गमन से जाने, पक्ष मास निशि प्रातः ।
इनकी गति को जानने वाला, बनता ज्योतिष ज्ञाता ।
शशि विमान के चउ प्रमाण, अंगुल नीचे ग्रह राहू ।
सूर्य विमान के चतुः अंगुल, नीचे केतु कहि साधु ।।

कुछ कम इक योजन विस्तृत ये, राहु केतु ग्रह जानो ।
चंद्र सूर्य को आवरणित जब, करें ग्रहण तब मानो ।
जंबूद्वीप में दो चंदा हैं, चार कहे लवणोदक ।
खंड धातकी में बारह हैं, चालिस दो कालोदक ।।

पुष्करार्द्ध में कहे बहत्तर, ये सब है गतिशीला ।
मानुषोत्तर आगे पहले, इक शत चउवालीसा ।
आगे आगे द्वीप सिंधु में, दूने दूने जानो ।
दो शत अट्ठासी शुभ पुष्कर, सागर में पहचानो ।

इन सब पर रमणीक नगरियाँ, इंद्र सुरों की सोहें ।
शाश्वत चैत्यालय जिन प्रतिमा, देवों का मन मोहें ।
नादि निधन जिन प्रतिमा वंदन, सर्व पाप परिहारे ।
जिन भक्ति का चला चक्र जब, विधि निश्चित संहारे ।।

जिनमत के विपरीत चलें जो, खोटा तप नित धरते ।
चारित दोष सहित पालें अरु, युत निदान तप करते ।

जल अग्नि आदी से मृत्यु हो, वा मिथ्यादृष्टी हो ।
अरु अकाम निर्जरा करें जो, वो भवनत्रय सुर हों ।।

धर्म श्रवण जिनमहिमा दर्शन, देव ऋद्धि वैभव से ।
स्मरण जाति से हों सम्यक्त्वी, फिर क्या डर हो भव से ।।
सम्यक्दर्शन निर्मल करता, जिन भक्ति में झूमे ।
अधिक समय तक नहीं कदापि, फिर भव वन में घूमे ।।

सूर्य चंद्र ग्रह तारक ऋक्षों, में चैत्यालय भारी ।
जहाँ जहाँ हैं उन सब जिनबिंबों को धोक हमारी ।
आठ द्रव्य ले अर्घ्य चढ़ाऊँ, जिन अब तुम सा होऊँ ।
निश्चय रत्नत्रय के बल से, कर्म पंक सब धोऊँ ।।

दोहा

ज्योतिष देवों के कहे, असंख्यात जिन गेह ।
इक सौ आठ प्रतिमा सभी, मैं पूजूँ अतिनेह ।।

ॐ ह्रीं चन्द्रसूर्यनक्षत्रप्रकीर्णकतारकज्योतिष्कदेवविमानस्थसङ्ख्यातीत-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 16 / 292

(७१)

सकल वैमानिक देव जिनालय पूजन

अथ स्थापना

पृथ्वी छंद (तर्ज : अताम्रनयनोत्पलं...)

जिनालय सुपुण्यदा सकल शुभ्र वैमानिका,
जिनालय जिनेन्द्र से गलत मान अज्ञानि का ।
करें विमल भावना सहित चैत्य आह्वाननं,
हरें सकल पीर दुःख जिनदेव दिव्याननं ।।

दोहा—चौरासी लख नवति शत, सहस रु तेइस खान ।
ऊर्ध्वलोक जिन भवन को, जजूँ करूँ अघहान ।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोके वैमानिकदेवविमानस्थचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशतिजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोके वैमानिकदेवविमानस्थचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशतिजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोके वैमानिकदेवविमानस्थचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशतिजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

गीतिका छंद

नीर निर्मल लाय जिनवर, भक्तिवश अर्चन करें ।
जन्म मृत्यु जरा सु आदिक, रोग सब निश्चित हरें ।।
ऊर्ध्व लोकनि लख चुरासी, सहस सत्तावन कहे ।
तेईस उत्तर भवन में, जिन जजूँ सब अघ दहें ।।

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

गोशीर चंदन लाय भवि, नित्य जिन वंदन करें ।
नादि ताप विनाशने को, जिनचरण चंदन धरें ।। ऊर्ध्व०

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

पर्याय वैभाविक सभी, हैं अनित्या भासती ।
शालि पूज रचाय पाएँ, सिद्धि कन्या शाश्वती ।। ऊर्ध्व॰

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सब ऋतुज शुभ मंजरी ले, पराजित मनसित करें ।
हेतु इस जिनदेव पद में, सुमन माला नित धरें ।। ऊर्ध्व॰

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

क्षुधा तन की नाशने को, अशन ये विख्यात है ।
जिन पद चढ़ा नाशे क्षुधा, रोग तन अभिजात है ।। ऊर्ध्व॰

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

अर्क शशि सी दिव्य ज्योती, ले करें नीराजना ।
पा सकें हम ज्ञान अक्षर, शुद्ध निर्मल उर बना ।। ऊर्ध्व॰

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

धूप वैश्वानर सु खेकर, जिन चरण वंदन करूँ ।
पा सकूँ वसु सुगुण निज के, चित्त का क्रंदन हरूँ ।। ऊर्ध्व॰

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति-जिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

पा सका ना मोक्ष फल जो, आज चित्त लुभावता ।
विश्व के सब फल समर्पित, जिन चरण नित ध्यावता ।। ऊर्ध्व॰

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति-जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

शक्ति के अनुसार उत्तम, रतन रजत सु अर्घ्य ले ।
अभिलषित बहुमूल्य पद ये, पाद जिन में ले भले ।। ऊर्ध्व॰

SarvatoPooja 16 / 293

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा

ऊर्ध्व लोक के चैत्य जिन, अरु जिनभवन विशेष ।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, कर्म रहें ना शेष ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जयमाला

घत्ता

वैमानिक भवना, जिनवर सदना, भविजन यजना नित्य करे ।
निज दोष मिटाने, निज गुण पाने, शिव प्रकटाने पूज करें ।।

शंभु छंद

जय तीन लोक के चैत्यालय, जय जय शाश्वत जिन पुण्यालय ।
जय ऊर्ध्वलोक में स्थित जो, जिनवर के रत्नमयी आलय ।।
है सप्त राजू में ऊर्ध्वलोक, छः राजू में दिवि षोडश हैं ।
ग्रैवेयक आदिक से आगे, सब एक राजू में सोहत हैं ।।

वैमानिक के कल्पोपपन्न, अरु कल्पातीत दु भेद कहे ।
सोलह दिवि में बारह सुकल्प, कल्पों से अग्र अतीत रहे ।।
सौधर्म सु पहला कल्प कहा, दूजा इशान है विख्याता ।
सानत तीजा माहेन्द्र चतुः, ब्रह्मब्रह्मोत्तर पंचम ख्याता ।।

लांतव कापिष्ठ कहा षष्टम, है शुक्र महाशुक्रा सप्तम ।
अष्टम शतार अरु सहस्रार, आनत नौवाँ प्राणत सु दशम ।।
आरण एकादशवाँ अच्युत, बारहवाँ कल्प सदा जाने ।
ग्रैवेयक नव अनुदिश पंचानुत्तर शिवलोक क्रमिक मानें ।।

सौधर्म कल्प लख बत्तिस हैं, ईशान कहे लख अट्ठाईस ।
सानत् के बारह लाख तथा, माहेन्द्र के आठ लक्ष भाई ।।
पंचम सु कल्प के चार लाख, षष्टम के सहस पचास कहे ।
सप्तम के चालिस हैं हजार, कल्पाष्टक के छः सहस रहे ।।

आनत प्राणत आरण अच्युत, मिलकर विमान हैं सात शतक ।
ग्रैवेयक तीन शतक नौ हैं, अनुदिश के नौ कहते गणधर ।।
हैं पंच अनुत्तर के विमान, सब रत्नजड़ित अनियारे हैं ।
इन सब विमान में जिनमंदिर, जिनबिम्ब मनोहर प्यारे हैं ।।

कुल लख चौरासी सत्तानव, हजार तेईस विमान कहे ।
अतएव कहे इतने मंदिर, जिनमें जिनवर शुभ साज रहे ।।
उन सब जिनवर की भक्ति भावयुत नित्य वंदना करते हैं ।
जो पंच शतक धनु ऊँचे हैं, उनकी शुभार्चना करते हैं ।।

कोई रोग शोक ना कष्ट रहे, जो प्रभु को हृदय बसाता है ।
यश कीर्ति त्रिभुवन में फैले, जो जिनवर के गुण गाता है ।।
भक्ती परिभाषा आगम में, निज अनुसंधान कराती है ।
पावन जिनभक्ति निश्चित ही, इस भव से पार लगाती है ।।

दोहा

ऊर्ध्व लोक जितने रहे, चैत्यालय अविनाश ।
जिनगृह जिनप्रतिमाओं को, वंदूँ हो अघ नाश ।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोके वैमानिकदेवविमानस्थचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्र-त्रयोविंशतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

SarvatoPooja 16 / 294

(८०)

द्वादश कल्प जिनालय पूजन

अथ स्थापना

नरेन्द्र छंद

बारह कल्पों में इन्द्रों के, शुभ विमान कहलाए ।
चौरासी लख सहस छियानव, सात शतक बतलाए ।।
इतने ही चैत्यालय हैं उन, का आह्वानन करता ।
जिनबिंबों की पूज रचाकर, सौख्य सुधारस भरता ।।
दोहा—सोलह स्वर्गों में महा, चैत्यालय नित जान ।
भावों से पूजन करे, निकट भव्य पहचान ।।

ॐ ह्रीं द्वादशकल्पचतुरशीतिलक्षषण्णवतिसहस्रसप्तदशविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं द्वादशकल्पचतुरशीतिलक्षषण्णवतिसहस्रसप्तदशविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं द्वादशकल्पचतुरशीतिलक्षषण्णवतिसहस्रसप्तदशविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

कुण्डलिया

इन्दु रश्मि सम धवल शुभ, निर्मल जल की धार ।
जिनवर अर्चन नित्य करि, लहूँ भवोदधि पार ।।
लहूँ भवोदधि पार, मार्ग संयम का पाऊँ ।
रत्नत्रय को धारि, सफल जीवन करि जाऊँ ।।
कहि निर्ग्रंथ गणेश, धर्म बिन सुख ना बिन्दु ।
धर्म धरि निज चित में, बनो खुद ही पूर्ण इन्दु ।।

ॐ ह्रीं द्वादशकल्पचतुरशीतिलक्षषण्णवतिसहस्रसप्तदशविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

पाने शाश्वत शांति को, चंदन मलयज लाय ।
जिनवर पूजन भक्ति वश, सुर वसु याम रचाय ।।

SarvatoPooja 17 / 294

सुर वसु याम रचाय, होंय वे सुकृत वंता ।
आगे मुनि पद धारि, बने कर्मों के हंता ।।
कहि निर्ग्रंथ गणेश, कर्म फल भगवन जाने ।
करि सच्चा श्रद्धान, अगर तोहि मुक्ति पाने ।।

ॐ ह्रीं द्वादशकल्पचतुरशीतिलक्षषण्णवतिसहस्रसप्तदशविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

तंदुल दधि सम लायके, जिनपद पूज रचाय ।
जिनवर पूजा नियम से, अक्षय गुण सुखदाय ।।
अक्षय गुण सुखदाय, जजो जिनवर दिन रैना ।
तजो मोह मिथ्यात्व, धरो उर जिनवर चैना ।।
कहि निर्ग्रंथ गणेश, भाव से मिला सु शुभ कुल ।
लखि भावों का खेल, नरक में राघव तंदुल ।।

ॐ ह्रीं द्वादशकल्पचतुरशीतिलक्षषण्णवतिसहस्रसप्तदशविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

रतिपति की बहुमार से, कभी न डरियो भाय ।
गर उर में द्वय चरण जिन, पुष्प पूज सुखदाय ।।
पुष्प पूज सुखदाय, काम के बाण नशावे ।
ब्रह्मचर्य को देय, सुखद अनुभूति करावे ।।
कहि निर्ग्रंथ गणेश, काम जित मानो यतिपति ।
यथाजात निर्ग्रंथ सदा, वरते मुक्ती रति ।।

ॐ ह्रीं द्वादशकल्पचतुरशीतिलक्षषण्णवतिसहस्रसप्तदशविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

स्वामी जी को नित जजूँ, ले उत्तम मिष्ठान्न ।
चरु से जिन पूजन करें, क्षुधा रोग अवसान ।।
क्षुधा रोग अवसान, भव्य सब दोष नशावे ।
घाती कर्म विनाश, नंत गुण चित में पावें ।।
कहि निर्ग्रंथ गणेश, बनें वे शिवपथ गामी ।
सब परिग्रह त्यागी, बने जो निज का स्वामी ।।

ॐ ह्रीं द्वादशकल्पचतुरशीतिलक्षषण्णवतिसहस्रसप्तदशविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

दिनकर सम शुभ दीप ले, जिनवर पूज रचाय ।
मोह कर्म का नाश कर, होते क्षीण कषाय ।।
होते क्षीण कषाय, ज्ञान क्षायिक वे पावें ।
हो सर्वज्ञ जिनेश, अनंतर शिवपथ पावें ।।
कहि निर्ग्रंथ गणेश, भक्ति जिन होती अघहर ।
जिन वच उर में धारि, बनो तुम निज के दिनकर ।।

ॐ ह्रीं द्वादशकल्पचतुरशीतिलक्षषण्णवतिसहस्रसप्तदशविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

हंता बनि वसु कर्म के, जिन पद धूप चढ़ाय ।
अघहर अर्चन नित करो, शाश्वत गुण प्रकटाय ।।
शाश्वत गुण प्रकटाय वरो तुम मुक्ति सु वामा ।
लो शाश्वत विश्राम पहुँचकर सिद्ध सु धामा ।।
कहि निर्ग्रंथ गणेश, बनो तुम सुकृतवंता ।
जिन अर्चन सम नाँहि, जग में अवर अघहंता ।।

ॐ ह्रीं द्वादशकल्पचतुरशीतिलक्षषण्णवतिसहस्रसप्तदशविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

पूजूँ प्रतिदिन देव जिन, ले श्री फल बादाम ।
निश्चय भक्ति नित्य धरें, भवि को शिवपुर धाम ।।
भवि को शिवपुर धाम, भव्य जो शिव को ध्यावे ।
पावें चिद्‌गुण कोष, पाप अपने विनशावे ।।
कहि निर्ग्रंथ गणेश, भक्ति करि मैं जिन हूजूँ ।
शाश्वत सिद्धी हेतु, जिनेश्वर फल ले पूजूँ ।।

ॐ ह्रीं द्वादशकल्पचतुरशीतिलक्षषण्णवतिसहस्रसप्तदशविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

वंदूँ जिनवर नित्य मैं, रत्नत्नि अर्घ चढ़ाय ।
गुण रत्नाकर मैं बनूँ, शाश्वत मुक्ति सु पाय ।

शाश्वत मुक्ति सुपाय, शुद्ध निज आतम होवे ।
पनविध भव को छोड़ि, सिद्धगति शाश्वत होवे ।।
कहि निर्ग्रंथ गणेश, सदा निज गुण आनंदूँ ।
करि त्रियोग को शुद्ध, सदा जिनवर को वंदूँ ।।

ॐ ह्रीं द्वादशकल्पचतुरशीतिलक्षषण्णवतिसहस्रसप्तदशविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–शाश्वत चैत्यालय जजूँ, जिन प्रतिमा अभिराम ।
सोलह स्वर्गों की सदा, पुनि निवसूँ शिवधाम ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

रोग शोक पीड़ा सभी, नाम लेत मिट जाय ।
जिन मंदिर जिनदेव के, भाव सहित गुण गाय ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

चउबोला छन्द (तर्ज : धीमे-धीमे पगिया...)

प्रथम कल्प का प्रथम सुइंद्रक, 'ऋतु' विमान अति शुभ जानो ।
लख पैंतालिस योजन विस्तृत, देव देवियों युत मानो ।।
इन विमान में जिन चैत्यालय, रत्नमयी शुभ सज्जित हैं ।
पूजूँ जिनगृह जिनवर आगे, कोटि अर्क शशि लज्जित हैं ।।

ॐ ह्रीं ऋत्वेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

इस विमान के चारों दिश में, पंक्तिबद्ध सुविमान कहे ।
बासठ बासठ सभी दिशाओं, में मणिमय ये साज रहें ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं ऋत्वेन्द्रकविमानतच्चतुर्दिग्द्वाषष्टिद्वाषष्टिश्रेणीबद्धविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

इस विमान की विदिशाओं में, बिखरे पुष्प समा थित हैं ।
वे प्रकीर्ण शुभ कहलाते हैं, रहते सुर देवी नित हैं ।।
इन विमान॰

SarvatoPooja 17 / 296

ॐ ह्रीं ऋत्वेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

'विमल' नाम का इन्द्रक दूजा, जलाधार इसका होता ।
देव देवियाँ नित प्रभु पूजें, जीवन मंगलमय होता ।।
इन विमान में जिन चैत्यालय, रत्नमयी शुभ सज्जित हैं ।
पूजूँ जिनगृह जिनवर आगे, कोटि अर्क शशि लज्जित हैं ।।

ॐ ह्रीं विमलेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

इस विमान के चारों दिश में, इकसठ-इकसठ नित्य कहे ।
श्रेणिबद्ध ये सब विमान हैं, सुर देवी संयुक्त रहे ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं विमलेन्द्रकविमानचतुर्दिगेकषष्ट्येकषष्टिश्रेणीबद्धविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

यहीं चार विदिशाओं में हैं, कहे प्रकीर्णक पहचानो ।
इनमें बहु उत्तम वैभव है, रत्नमयी युत सच मानो ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं विमलेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

'चंद्र' नाम का इंद्रक तीजा, देव नगरियाँ शोभित हैं ।
पंच वर्ण रत्नों से निर्मित, इन पर सुर चित मोहित हैं ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं चन्द्रेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

पूरब दक्षिण पश्चिम उत्तर, पंक्तियुक्त ये शोभ रहे ।
साठ-साठ सारे विमान है, जिनगृह पर सुर मोह रहे ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं चन्द्रेन्द्रकविमानचतुर्दिक्षष्टिषष्टिश्रेणीबद्धविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

ईशानादि विदिशाओं में, सुर विमान जो उच्चारे ।
उनमें देव नगर विस्तृत हैं, देव युगल रहते प्यारे ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं चन्द्रेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

स्वर्ग विमान 'वल्गु' इंद्रक शुभ, जिनमें देव सदा रहते ।
पंच कल्याणक मना प्रभु के, पुण्यार्जन अतिशय करते ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं वल्गवेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

पूर्वादिक शुभ दिशा पंक्ति में, उनसठ-उनसठ ही रहते ।
असंख्यात योजन वाले ये, ऐसा आगम में कहते ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं वल्गवेन्द्रकविमानचतुर्दिगेकोनषष्ट्येकोनषष्टिश्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

विदिशाओं में पंक्तिहीन सब, आगे पीछे को दीखें ।
इन प्रकीर्णकों में रहते हैं, देव देवियाँ सब नीके ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं वल्गवेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

'वीर' पाँचवा इंद्रक है ये, पीत लेश्य युत देव रहें ।
है संख्यात सुयोजन वाला, ऐसा मुनिगण नित्य कहें ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं वीरेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

इनके पूरब आदिक दिश में, चारों ओर विराज रहे ।
अट्ठावन-अट्ठावन श्रेणी, बद्ध जहाँ नित साज रहे ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं वीरेन्द्रकविमानचतुर्दिगष्टपञ्चाशदष्टपञ्चाशत्श्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

ईशानादिक कोणों में मुनि, रत्न दीप्ति ले बतलाए ।
सब प्रकीर्णकों में जिनगेहा, उनके नित-नित गुण गाएँ ।।
इन विमान॰

SarvatoPooja 17 / 297

ॐ ह्रीं वीरेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

'अरुण' सुइंद्रक है विमान शुभ, जलाधार इनका जाना ।
जिन अर्चन से भक्त सुनिश्चित, पहने शिवपुर का बाना ।।
इन विमान में जिन चैत्यालय, रत्नमयी शुभ सज्जित हैं ।
पूजूँ जिनगृह जिनवर आगे, कोटि अर्क शशि लज्जित हैं ।।

ॐ ह्रीं अरुणेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

इसके चारों दिश में सुन्दर, श्रेणीबद्ध कहाए हैं ।
सत्तावन-सत्तावन न्यारे, सुरविमान बतलाए हैं ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं अरुणेन्द्रकविमानचतुर्दिक्सप्तपञ्चाशत्सप्तपञ्चाशत्श्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

अरुण सुइंद्रक चार विदिश में, शुभ प्रकीर्णका बतलाए ।
जिसने जिनवर अर्चा की दुख, उसके पास नहीं आए ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं अरुणेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

'नंदन' इंद्रक कहा सातवाँ, देव नगर युत शोभ रहा ।
शाश्वत जिनगृह करें वंदना, इनका चित नित मोह रहा ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं नन्दनेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

नंदन के चारों दिश में ही, श्रेणीबद्ध विमाना हैं ।
छप्पन-छप्पन देव देवियों, के विमान परमाना हैं ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं नन्दनेन्द्रकविमानचतुर्दिक्षट्पञ्चाशत्षट्पञ्चाशत्श्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

ईशानादिक विदिशाओं में, बहु विमान बतलाए हैं ।
उनका भव ही सफल हुआ जिन ने जिनवर गुण गाए हैं ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं नन्दनेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

'नलिन' सु इंद्रक रहे मध्य में, यही आठवाँ मनहारी ।
इनके श्री जिनगृह जिन पूजूँ, शाश्वत हैं वे अघहारी ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं नलिनेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

इसके चारों दिश में मोहक, श्रेणीबद्ध कहाए हैं ।
पचपन-पचपन संख्या में जिन, आगम में बतलाए हैं ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं नलिनेन्द्रकविमानचतुर्दिक्पञ्चपञ्चाशत्पञ्चपञ्चाशत्श्रेणीबद्धविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

ईशानादिक चउ विदिशा में, जो प्रकीर्णका रहते हैं ।
उनमें देव अंगनाओं युत, श्री जिनवर गुण कहते हैं ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं नलिनेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

'कांचन' नामक नवम सु इंद्रक, जो विमान मणियुक्ता है ।
श्री जिनवर का पूजक ही तो, होता कर्म विमुक्ता है ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं काञ्चनेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।25।।

'कांचन' के पूर्वादिक दिश में श्रेणिबद्ध मन भाए हैं ।
संख्या में चउवन-चउवन वे, प्रतिदिश में कहलाए हैं ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं काञ्चनेन्द्रकविमानचतुर्दिक्चतुःपञ्चाशत्चतुःपञ्चाशत्श्रेणीबद्धविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।26।।

'कांचन' के ही विदिशाओं में, सुरविमान दीखें अद्भुत ।
प्रभु जिनेन्द्र को पूज उपासक, बनता है उपास्य वो खुद ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं काञ्चनेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।27।।

'रोहित इंद्रक कहें सु दसवाँ, है संख्यात योजनों का ।
जिन अर्चन से होवे शिव पद अतिशय शुभ परिणामों का ।।
इन विमान में जिन चैत्यालय, रत्नमयी शुभ सज्जित हैं ।
पूजूँ जिनगृह जिनवर आगे, कोटि अर्क शशि लज्जित हैं ।।

ॐ ह्रीं रोहितेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।28।।

'रोहित' के पूर्वादिक दिश में, श्रेणिबद्ध कहते मनहर ।
त्रेपन त्रेपन चारों दिश में, तहँ जिनमंदिर हैं अघहर ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं रोहितेन्द्रकविमानचतुर्दिक्त्रिपञ्चाशत्त्रिपञ्चाशत्श्रेणीबद्धविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।29।।

'रोहित' इंद्रक विदिशाओं में, गगन सितारों सम छाए ।
वे प्रकीर्णका जिनमें जिनगृह, जिनवर जजि भवि सुख पाए ।।
इन विमान॰

ॐ ह्रीं रोहितेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।30।।

श्री नंदि छंद (तर्ज : मीठो-मीठो बोल...)

चंच सु इंद्रक एकादशवाँ जान, सुरविमान यह रत्नमयी पहचान ।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम ।।

ॐ ह्रीं चञ्चेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।31।।

चारों दिश में बावन-बावन भाय, सुरांगना जिनवर प्रभु के गुण गाय ।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम ।।

ॐ ह्रीं चञ्चेन्द्रकविमानचतुर्दिग्द्विपञ्चाशत्द्विपञ्चाशत्श्रेणीबद्धविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।32।।

विदिशाओं में जो विमान बतलाए, है प्रकीर्णका जिनके जिनगृह भाए ।।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम ।।

ॐ ह्रीं चञ्चेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।33।।

'मरुत्' सुइंद्रक बारहवाँ अमलान, जिनमंदिर तहँ शोभे नित्य महान ।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम ।।
ॐ ह्रीं मरुदेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।34।।

पूर्वादिक में श्रेणीबद्ध विमान, इक्यावन-इक्यावन हैं अभिराम ।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम ।।
ॐ ह्रीं मरुदेन्द्रकविमानचतुर्दिगेकपञ्चाशदेकपञ्चाशत्श्रेणीबद्धविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।35।।

'मरुत' कि विदिशाओं में कहे विमान, हैं प्रकीर्णका सुर देवी युत जान ।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम ।।
ॐ ह्रीं मरुदेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।36।।

तेरहवाँ 'ऋद्धीश' सुइंद्रक जान, जलाधार इनका होता ये मान ।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम ।।
ॐ ह्रीं ऋद्धीशेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।37।।

चारों दिश में सुर विमान कहलाय, अर्द्धशतक अरु अर्द्धशतक बतलाय ।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम ।।
ॐ ह्रीं ऋद्धीशेन्द्रकविमानचतुर्दिक्पञ्चाशत्पञ्चाशत्श्रेणीबद्धविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।38।।

विदिशाओं में हैं प्रकीर्णका जान, करें निरंतर सुर देवी जिन ध्यान ।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम ।।
ॐ ह्रीं ऋद्धीशेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।39।।

जानो सुइंद्रक 'वैडूर्य' सुखखान, चौदहवाँ जिसमें जिनगृह अघहान ।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम ।।
ॐ ह्रीं वैडूर्येन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।40।।

'वैडूर्या' के चारों दिश शुभ जान, उनन्चास अरु उनन्चास पहचान ।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम ।।

ॐ ह्रीं वैडूर्येन्द्रकविमानचतुर्दिगेकोनपञ्चाशदेकोनपञ्चाशत्श्रेणीबद्धविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।41।।

इनके विदिशाओं में शुभ्र विमान, है प्रकीर्णका युत मंदिर भगवान ।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम ।।
ॐ ह्रीं वैडूर्येन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।42।।

पंद्रहवाँ इंद्रक शुभ 'रक्षक' जान, सुरदेवी करते जिनवर गुणगान ।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम ।।
ॐ ह्रीं रुचकेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।43।।

'रुचक' के पूर्वादि दिश में सुविमान, अड़तालिस-अड़तालिस ही पहचान ।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम ।।
ॐ ह्रीं रुचकेन्द्रकविमानचतुर्दिगष्टचत्वारिंशदष्टचत्वारिंशत्श्रेणीबद्धविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।44।।

ईशानादिक में प्रकीर्णका होय, गतरागी जिन जजि सब अघ मल धोय ।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम ।।
ॐ ह्रीं रुचकेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।45।।

'रुचिर' सुइंद्रक सोलहवाँ कहलाय, योजन शुभ संख्यात साधु बतलाय ।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम ।।
ॐ ह्रीं रुचिरेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।46।।

'रुचिर' के चतुर्दिश श्रेणीबद्ध विमान, सैंतालिस-सैंतालिस मनु गुणधाम ।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम ।।
ॐ ह्रीं रुचिरेन्द्रकविमानचतुर्दिक्सप्तचत्वारिंशत्सप्तचत्वारिंशत्श्रेणीबद्धविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।47।।

पुनः प्रकीर्णक विदिशाओं में जान, सुर श्रद्धा से करें सु मंगलगान ।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम ।।
ॐ ह्रीं रुचिरेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।48।।

'अंक' सुइंद्रक जिनगण कहे प्रधान, जिनगृह शाश्वत जिनवृष की पहचान।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम॥

ॐ ह्रीं अङ्केन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥49॥

इस इंद्रक के चारों दिश में भाय, छ्यालिस-छ्यालिस ग्रंथ सर्वदा गाय।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम॥

ॐ ह्रीं अङ्केन्द्रकविमानचतुर्दिक्षट्चत्वारिंशत्षट्चत्वारिंशत्श्रेणीबद्ध-विमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥50॥

अंक सु ईशानादिक कोण बखान, कहे योजनों विस्तृत ये अभिराम।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम॥

ॐ ह्रीं अङ्केन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥51॥

मुख्य स्फटिक इंद्रक है शुभ मनहार, अट्ठारहवाँ जहँ जिनगृह अघहार।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम॥

ॐ ह्रीं स्फटिकेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥52॥

पैंतालिस पैंतालिस अतिशय वान, कहलाते हैं श्रेणीबद्ध विमान।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम॥

ॐ ह्रीं स्फटिकेन्द्रकविमानचतुर्दिक्पञ्चचत्वारिंशत्पञ्चचत्वारिंशत्श्रेणीबद्ध-विमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥53॥

इनकी विदिशाओं में देव विमान, कहें प्रकीर्णक रत्नमयी अभिराम।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम॥

ॐ ह्रीं स्फटिकेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥54॥

उन्निसवाँ इंद्रक सु 'तपनीय' देख, जिनगृह जिनवर जजि बदले कर रेख।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम॥

ॐ ह्रीं तपनीयेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥55॥

चउवालिस चउवालिस ये कहलाए, पंक्तिबद्धा ये विमान बतलाए।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम॥

ॐ ह्रीं तपनीयेन्द्रकविमानचतुर्दिक्चतुश्चत्वारिंशत्चतुश्चत्वारिंशत्श्रेणीबद्ध-

SarvatoPooja 17 / 300

विमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥56॥

शुभ्र 'तपनीय' विदिशाओं में जान, प्रकीर्णकों में जिनमंदिर सुखखान।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम॥

ॐ ह्रीं तपनीयेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥57॥

'मेघ' सुइंद्रक कहे बीसवाँ मान, पंचवर्णी कहलाएँ देव विमान।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम॥

ॐ ह्रीं मेघेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥58॥

पूर्वादिक दिश श्रेणीबद्ध विमान, तैंतालिस-तैंतालिस शुभ सुख पान।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम॥

ॐ ह्रीं मेघेन्द्रकविमानचतुर्दिक्त्रिचत्वारिंशत्त्रिचत्वारिंशत्श्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥59॥

विदिशाओं में रहे प्रकीर्णक मान, देवदेवियाँ पूजें नित अघहान।
इनमें जिन चैत्यालय नित्य प्रणाम, भाव सहित पूजूँ प्रतिमा अभिराम॥

ॐ ह्रीं मेघेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥60॥

पायत्ता छंद

इंद्रक शुभ 'अभ्र' कहाया, जिसमें जिनगृह मनभाया।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ॥

ॐ ह्रीं अभ्रेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥61॥

'चारों' दिश में शुभ सोहे, ब्यालिस ब्यालिस मन मोहे।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ॥

ॐ ह्रीं अभ्रेन्द्रकविमानचतुर्दिग्द्विचत्वारिंशद्द्विचत्वारिंशत्श्रेणीबद्ध-विमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥62॥

विदिशा में रहे प्रकीर्णा, जिनगृह को जजें नवीना।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ॥

ॐ ह्रीं अभ्रेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥62॥

इंद्रक 'हरिद्र' बतलाया, जिनपूजन को अकुलाया ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ।।

ॐ ह्रीं हरिद्रेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।64।।

इकतालिस प्रती दिशा में, पंक्तिबद्ध चार दिशा में ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ।।

ॐ ह्रीं हरिद्रेन्द्रकविमानतश्चतुर्दिगेकचत्वारिंशदेकचत्वारिंशत्श्रेणीबद्ध-विमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।65।।

शुभ ये प्रकीर्णका जानो, इनमें सुर नगर बखानो ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ।।

ॐ ह्रीं हरिन्द्रेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।66।।

इंद्रक है 'पद्म' निराला, संख्यात योजनों वाला ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ।।

ॐ ह्रीं पद्मेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।67।।

प्रति दिश में शुभ कहलाए, चालिस-चालिस बतलाए ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ।।

ॐ ह्रीं पद्मेन्द्रकविमानचतुर्दिक्चत्वारिंशत्चत्वारिंशत्श्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।68।।

इनकी विदिशाओं में जो, कहे जाते प्रकीर्णका वो ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ।।

ॐ ह्रीं पद्मेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।69।।

'लोहित' इंद्रक पहचानो, इसमें जिनगृह परमानो ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ।।

ॐ ह्रीं लोहितेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।70।।

इसके पूर्वादिक सोहे, उनतालिस प्रतिदिश सोहे ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ।।

ॐ ह्रीं लोहितेन्द्रकविमानचतुर्दिगेकोनचत्वारिंशदेकोनचत्वारिंशत्श्रेणीबद्ध-विमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।71।।

जो विदिशाओं में राजे, उनमें जिनसदन विराजे ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ।।

ॐ ह्रीं लोहितेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।72।।

इंद्रक शुभ 'वज्र' बताए, सुर देवी जिनगुण गाए ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ।।

ॐ ह्रीं वज्रेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।73।।

इंद्रक चउ दिश कहलाए, अड़तिस-अड़तिस बतलाए ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ।।

ॐ ह्रीं वज्रेन्द्रकविमानचतुर्दिगष्टात्रिंशदष्टात्रिंशत्श्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।74।।

शुभ विदिशाओं में राजें, जिनगृह जिनबिंब विराजें ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ।।

ॐ ह्रीं वज्रेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।75।।

इंद्रक 'नन्द्यावर्ता' है, जिनभक्त पुण्य भरता है ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ।।

ॐ ह्रीं नन्द्यावर्तेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।76।।

तिन श्रेणीबद्ध सु गाए, सैंतिस-सैंतिस बतलाये ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ।।

ॐ ह्रीं नन्द्यावर्तेन्द्रकविमानचतुर्दिक्सप्तत्रिंशत्सप्तत्रिंशत्श्रेणीबद्ध-विमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।77।।

सोहे प्रकीर्णका भारी, जिनगृह जिनवर अविकारी ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ।।

ॐ ह्रीं नन्द्यावर्तेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।78।।

इंद्रक सु 'प्रभाकर' भाया, जिनगृह उत्तम बतलाया ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ।।

ॐ ह्रीं प्रभाकरेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥79॥

चउदिश शुभ श्रेणीबद्धा, छत्तिस-छत्तिस अविरुद्धा ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ॥

ॐ ह्रीं प्रभाकरेन्द्रकविमानचतुर्दिक्षट्त्रिंशत्षट्त्रिंशत्श्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥80॥

इसके प्रकीर्णका माँही, जिनमंदिर शुभ बतलाही ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ॥

ॐ ह्रीं प्रभाकरेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥81॥

इंद्रक 'पृष्ठक' बतलाऊँ, जिनगृह जजि पुण्य कमाऊँ ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ॥

ॐ ह्रीं पृष्ठकेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥82॥

पैंतिस-पैंतिस ही देखे, चउ दिश में जिनगृह लेखे ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ॥

ॐ ह्रीं पृष्ठकेन्द्रकविमानचतुर्दिक्पञ्चत्रिंशत्पञ्चत्रिंशत्श्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥83॥

इसके प्रकीर्णका भाई, इनके जिनगृह नित ध्यायी ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ॥

ॐ ह्रीं पृष्ठकेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥84॥

'गज' इंद्रक खूब सुहाए, शाश्वत जिनगृह मन भाए ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ॥

ॐ ह्रीं गजेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥85॥

हैं श्रेणीबद्ध विमाना, चौंतिस-चौंतीस बखाना ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ॥

ॐ ह्रीं गजेन्द्रकविमानचतुर्दिक्चतुस्त्रिंशत्चतुस्त्रिंशत्श्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥86॥

विदिशा प्रकीर्णका ज्ञाता, जिनगृह नित देता साता ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ॥

ॐ ह्रीं गजेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥87॥

शुभ इंद्रक 'मित्र' कहाए, जिनमें जिनगृह बतलाए ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ॥

ॐ ह्रीं मित्रेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥88॥

तैंतिस-तैंतिस बतलाए, ये श्रेणीबद्ध कहलाए ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ॥

ॐ ह्रीं मित्रेन्द्रकविमानचतुर्दिक्त्रयस्त्रिंशत्त्रयस्त्रिंशत्श्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥89॥

इनके प्रकीर्ण विख्याता, जिनमें जिनमंदिर ख्याता ।
मणिमय जिनबिंब सुध्याएँ, रत्नों से पूज रचाएँ ॥

ॐ ह्रीं मित्रेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥90॥

दोहा

इकत्तीसवाँ जानिए, इंद्रक 'प्रभा' सु नाम ।
पूजूँ शाश्वत जिनभवन, जिन प्रतिमा अभिराम ॥

ॐ ह्रीं प्रभेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥91॥

पूर्वादिक दिश में सदा, श्रेणीबद्ध कहाय ।
बत्तिस-बत्तिस में सदा, जिनगृह जिन मन भाय ॥

ॐ ह्रीं प्रभेन्द्रकविमानचतुर्दिग्द्वात्रिंशद्द्वात्रिंशत्श्रेणीबद्धविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥92॥

कहे प्रकीर्णक नित्य शुभ, विदिशाओं में जान ।
पूजूँ मणिमय जिन भवन, वीतराग भगवान ॥

ॐ ह्रीं प्रभेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥93॥

बत्तिसवाँ इंद्रक कहा, 'अंजन' नाम महान ।
नित प्रति जिनमंदिर जजूँ, वंदूँ श्री भगवान ॥

ॐ ह्रीं अञ्जनेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥94॥

चउदिश श्रेणीबद्ध हैं, इकतिस-इकतिस भाइ ।
वंदूँ जिनगृह जिनप्रभो, तव भक्ति मनभायी ॥

ॐ ह्रीं अञ्जनेन्द्रकविमानचतुर्दिगेकत्रिंशदेकत्रिंशत्श्रेणीबद्धविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥95॥

कहे प्रकीर्णक शाश्वता, जिनमंदिर अमलान ।
रत्नमयी प्रतिमा जजूँ, जपूँ सदा जिननाम ॥

ॐ ह्रीं अञ्जनेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥96॥

तैंतिसवाँ 'वनमाल' है, इंद्रक शुभ मनहार ।
जिनगृह श्री जिनवर जजूँ, वे निश्चित अघहार ॥

ॐ ह्रीं वनमालेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥97॥

यहाँ चउदिश श्रेणिबद्ध, तीस-तीस कहलाय ।
नादि निधन जिनगेह जिन, जजूँ वही मन भाय ॥

ॐ ह्रीं वनमालेन्द्रकविमानतच्चतुर्दिक्त्रिंशत्त्रिंशत्श्रेणीबद्धविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥98॥

रहे प्रकीर्णक देव के, शुभ विमान अमलान ।
जिनमंदिर जिनवर जजूँ, करूँ देव परणाम ॥

ॐ ह्रीं वनमालेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥99॥

'नाग' सुइंद्रक मध्य का, जिनगृह अतिशय वान ।
मनहारी जिनबिम्ब को, जजि करता गुणगान ॥

ॐ ह्रीं नागेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥100॥

'नाग' चतुर्दिश में सदा, उनतिस-उनतिस जान ।
तिन विमान चैत्यालया, जिन पूजूँ गुणखान ॥

ॐ ह्रीं नागेन्द्रकविमानचतुर्दिगेकोनत्रिंशदेकोनत्रिंशत्श्रेणीबद्धविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥101॥

विदिशाओं में मानिए, सुर विमान सुखखान ।
जिनगृह शाश्वत पूजकर, लहूँ मोक्ष विश्राम ॥

SarvatoPooja 17 / 303

ॐ ह्रीं नागेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥102॥

पैंतिसवाँ इंद्रक 'गरुड़', रहे वायु आधार ।
जिनगृह जिन जजि होय मम, सिद्ध रूप साकार ॥

ॐ ह्रीं गरुडेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥103॥

श्रेणिबद्ध प्रतिदिश कहे, अट्ठाईस विमान ।
जिनमंदिर शाश्वत जजूँ, पूजूँ जिन भगवान ॥

ॐ ह्रीं गरुडेन्द्रकविमानचतुर्दिगष्टाविंशत्यष्टाविंशतिश्रेणीबद्धविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥104॥

विदिशा देव विमान थित, चैत्यालय हैं भव्य ।
शाश्वत जिन प्रतिमा जजूँ, कर-कर अर्चन नव्य ॥

ॐ ह्रीं गरुडेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥105॥

छत्तिसवाँ इंद्रक महा, 'लांगल' सु दिव्य कहा ।
तिनके जिनमंदिर जजूँ, पूजूँ उन्हें अहा ॥

ॐ ह्रीं लाङ्गलेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥106॥

सत्ताइस सत्ताइसा, श्रेणीबद्ध महान ।
जिनमें चैत्यालय जजूँ, अर्चन जिन भगवान ॥

ॐ ह्रीं लाङ्गलेन्द्रकविमानचतुर्दिक्सप्तविंशतिसप्तविंशतिश्रेणीबद्धविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥107॥

विदिश प्रकीर्णक हैं शुभा, जिनगेह रत्नमयी ।
अर्चूं वंदूँ जिनप्रभो, जिन तव शरण गही ॥

ॐ ह्रीं लाङ्गलेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥108॥

सैंतिसवाँ बलभद्र है, इंद्रक ये मनहार ।
जिनगेह जिन नित्य नमूँ, जिन अर्चन अघहार ॥

ॐ ह्रीं बलभद्रेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥109॥

छब्बिस-छब्बिस चउ दिशा, पूर्वादिक में जान ।
श्रेणिबद्ध में जिनसदन, पूजूँ जिन शिवराम ।।

ॐ ह्रीं बलभद्रेन्द्रकविमानचतुर्दिक्षड्विंशतिषड्विंशतिश्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।110।।

कहे प्रकीर्णक चउ विदिश, जिनमें जिनगृह चैत्य ।
नमस्कार सबको करूँ, हरें अष्ट विधि दैत्य ।।

ॐ ह्रीं बलभद्रेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।111।।

अड़तिसवाँ है 'चक्र' शुभ, वायु जहँ आधार ।
तहँ थित जिनगृह को नमूँ, प्रणमूँ जिन अघहार ।।

ॐ ह्रीं चक्रेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।112।।

पच्चिस-पच्चिस जानिए, श्रेणीबद्ध विमान ।
जिनवर जिनगृह नित जजूँ, करूँ सुमंगल गान ।।

ॐ ह्रीं चक्रेन्द्रकविमानचतुर्दिक्पञ्चविंशतिपञ्चविंशतिश्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।113।।

विदिशाओं में जानिए, सुर विमान सुखकार ।
जिनमंदिर शाश्वत जजूँ, पूजूँ जिन गुणधार ।।

ॐ ह्रीं चक्रेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।114।।

उनतालिसवाँ मानिए, इंद्रक शुभ्र 'अरिष्ट' ।
जिनगृह जिन पूजूँ सदा, टाले सभी अनिष्ट ।।

ॐ ह्रीं अरिष्टेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।115।।

चौबिस-चौबिस शुभ्र हैं, श्रेणीबद्ध विमान ।
पूजूँ जिनमंदिर करूँ, त्रिपुरारी तव ध्यान ।।

ॐ ह्रीं अरिष्टेन्द्रकविमानचतुर्दिक्चतुर्विंशतिचतुर्विंशतिश्रेणीबद्ध-विमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।116।।

चउ 'अरिष्ट' विदिशा रहे, बहू प्रकीर्णक धाम ।
जिनमंदिर जिनवर जजूँ, पूजूँ प्रातः शाम ।।

SarvatoPooja 17 / 304

ॐ ह्रीं अरिष्टेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।117।।

चालिसवाँ शुभ रत्नमय, इंद्रक 'सुरस' विचार ।
जिनमंदिर जिन पूजहूँ, नमन करूँ शत बार ।।

ॐ ह्रीं सुरसेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।118।।

तेइस-तेइस चउ दिशा, श्रेणीबद्ध नवीन ।
इनके शाश्वत जिनभवन, पूजूँ जिन विधिहीन ।।

ॐ ह्रीं सुरसेन्द्रकविमानचतुर्दिक्त्रयोविंशतित्रयोविंशतिश्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।119।।

'सुरस' सु विदिशा में कहे, दिवि के दिव्य विमान ।
उनके जिनमंदिर जजूँ, पाऊँ सौख्य निधान ।।

ॐ ह्रीं सुरसेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।120।।

इकतालिसवाँ भाषिए, इंद्रक पावन 'ब्रह्म' ।
जिनमंदिर जिनपूजकर, पाऊँ मैं पद ब्रह्म ।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।121।।

बाइस-बाइस चउ दिशा, श्रेणीबद्ध विशाल ।
जिनगृह जिन जजि नित रखूँ, जिनवर पद मम भाल ।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्रकविमानचतुर्दिग्द्वाविंशतिद्वाविंशतिश्रेणीबद्धविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।122।।

श्रेणीबद्ध विचारिये, चार विदिश के माँहि ।
जिनगृह जिन जो पूजता, रोग शोक दुख नाँहि ।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।123।।

श्री नंदि छंद (तर्ज - मीठो मीठो बोल...)

'ब्रह्मोत्तर' इंद्रक अतिशुभ्र विमान,
कृष्ण नील बिन त्रयवर्णी पहचान ।
उनके शाश्वत चैत्य तथा जिनधाम,
अर्घ्य चढ़ाऊँ स्वामी करूँ प्रणाम ।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मोत्तरेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।124।।

इक्किस इक्किस चतुर्दिशा में ख्यात,
है विमान युँ श्रेणीबद्ध विख्यात ।। उनके॰

ॐ ह्रीं ब्रह्मोत्तरेन्द्रकविमानचतुर्दिगेकविंशत्येकविंशतिश्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।125।।

चउ विदिशा में कहे प्रकीर्णक सार,
नीर वायु है जिनका शुभ आधार ।। उनके॰

ॐ ह्रीं ब्रह्मोत्तरेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।126।।

'ब्रह्महृदय' शुभ इंद्रक एक विमान,
देव देवि करते जिनवर गुणगान ।। उनके॰

ॐ ह्रीं ब्रह्महृदयेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।127।।

बीस बीस चारों दिश में हैं गाए,
श्रेणिबद्ध में जिनगृह अतिशय भाए ।। उनके॰

ॐ ह्रीं ब्रह्महृदयेन्द्रकविमानचतुर्दिग्विंशतिविंशतिश्रेणीबद्धविमानजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।128।।

रहें प्रकीर्णक चउ विदिशा के माँहि,
जिनगृह पूजें उनके भव दुख नाँहि ।। उनके॰

ॐ ह्रीं ब्रह्महृदयेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।129।।

लांतव नामक इंद्रक एक विचार,
जिनवर अर्चन हो मम प्राणाधार ।। उनके॰

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।130।।

उन्निस-उन्निस चारों दिश में राज,
अर्चन कर पाएँ शाश्वत साम्राज ।। उनके॰

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्रकविमानचतुर्दिगेकोनविंशत्येकोनविंशतिश्रेणीबद्ध-विमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।131।।

SarvatoPooja 17 / 305

शुभ्र प्रकीर्णक विदिशा में परकीर्ण,
जिन अर्चन से कर्म बंध हों जीर्ण ।।
उनके शाश्वत चैत्य तथा जिनधाम,
अर्घ्य चढ़ाऊँ स्वामी करूँ प्रणाम ।।

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।132।।

कल्पशुक्र अरु महाशुक्र का जान,
एक सु इंद्रक 'शुक्र' नाम का मान ।। उनके॰

ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।133।।

अठदस-अठदस चउदिश आप विचार,
सब में जिनगृह श्री जिनवर अविकार ।। उनके॰

ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्रकविमानचतुर्दिगष्टादशाष्टादशश्रेणीबद्धविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।134।।

चउ विदिशा में श्रेणीबद्ध विमान,
प्रभु अर्चन से आतम होय महान ।। उनके॰

ॐ ह्रीं शुक्रेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।135।।

कल्प शतार व सहस्रार का जान,
एक सु इंद्रक है 'शतार' यह मान ।। उनके॰

ॐ ह्रीं शतारेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।136।।

सतरह-सतरह चउदिश है विख्यात,
श्रेणीबद्धों में जिनगृह शुभ ख्यात ।। उनके॰

ॐ ह्रीं शतारेन्द्रकविमानचतुर्दिक्सप्तदशसप्तदशश्रेणीबद्धविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।137।।

विदिशाओं में हैं प्रकीर्णका जान,
जिन चैत्यालय पूज बनें गुणवान ।। उनके॰

ॐ ह्रीं शतारेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।138।।

'आनत' नामक इंद्रक है मनहार,
शुद्धाकाश कहा इनका आधार ।। उनके॰

ॐ ह्रीं आनतेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।139।।

श्वेतवर्ण के श्रेणीबद्ध विमान,
सोलह सोलह चार दिशा में जान ।। उनके॰

ॐ ह्रीं आनतेन्द्रकविमानचतुर्दिक्षोडशषोडशश्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।140।।

रहे प्रकीर्णक विदिशाओं में मान,
सुर देवी जहँ पूजें नित अघहान ।। उनके॰

ॐ ह्रीं आनतेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।141।।

अड़तालिसवाँ इंद्रक शुभ्र विमान,
'प्राणत' है उज्ज्वल व धवल सुजान ।। उनके॰

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।142।।

पंद्रह-पंद्रह चारों दिश पहचान,
पंक्तिबद्ध रहते हैं देव विमान ।। उनके॰

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्रकविमानचतुर्दिक्पञ्चदशपञ्चदशश्रेणीबद्धविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।143।।

बिखरे फूलों सम हैं देव विमान,
विदिशाओं में श्वेत हि उनको मान ।। उनके॰

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।144।।

उनन्चासवाँ इंद्रक देव विमान,
'पुष्पक' नामक मानो सुख की खान ।। उनके॰

ॐ ह्रीं पुष्पकेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।145।।

चौदह चौदह पूर्वादिक में गाए,
देव देवियाँ वास करें बतलाए ।। उनके॰

ॐ ह्रीं पुष्पकेन्द्रकविमानचतुर्दिक्चतुर्दशचतुर्दशश्रेणीबद्धविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।146।।

SarvatoPooja 17 / 306

'पुष्पक' के विदिशा चारों ही कही,
रहे प्रकीर्णका मुनिगण बात सही ।।
उनके शाश्वत चैत्य तथा जिनधाम,
अर्घ्य चढ़ाऊँ स्वामी करूँ प्रणाम ।।

ॐ ह्रीं पुष्पकेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।147।।

है पचासवाँ 'शातक' एक विमान,
इंद्रक में सुर करते जिन गुणगान ।। उनके॰

ॐ ह्रीं शातकेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।148।।

तेरह तेरह पूर्वादिक बतलाए,
देव देवियाँ अर्चन कर हर्षाए ।। उनके॰

ॐ ह्रीं शातकेन्द्रकविमानचतुर्दिक्त्रयोदशत्रयोदशश्रेणीबद्धविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।149।।

विदिशाओं में कहे प्रकीर्णक थान,
जिन चैत्यालय जिन शासन की शान ।। उनके॰

ॐ ह्रीं शातकेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।150।।

इक्यावनवाँ 'आरण' इंद्रक मान,
शुद्ध गगन आधार यही पहचान ।। उनके॰

ॐ ह्रीं आरणेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।151।।

इनके चउदिश बारह-बारह गाए,
श्रेणिबद्ध नित श्वेतवर्णि बतलाए ।। उनके॰

ॐ ह्रीं आरणेन्द्रकविमानचतुर्दिग्द्वादशद्वादशश्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।152।।

'आरण' के सब कहे प्रकीर्णक थान,
देव देवियाँ करते मंगल गान ।। उनके॰

ॐ ह्रीं आरणेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।153।।

बावनवाँ 'अच्युत' इंद्रक अभिराम,
जिन अर्चन कर लहूँ नित्य शिव धाम ।। उनके॰

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।154।।

ग्यारह ग्यारह चउदिश में कहलाए,
धवल वर्ण के जिनवर ने बतलाए ।। उनके॰

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्रकविमानचतुर्दिगेकादशैकादशश्रेणीबद्धविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।155।।

विदिशाओं में हैं विमान सुविशाल,
कहे प्रकीर्णक जिन जजि होय निहाल ।। उनके॰

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।156।।

अथ इंद्र भवन सम्बन्धि चैत्य वृक्ष अर्घ्य

नरेन्द्र छंद

प्रथम सु इंद्रक दक्षिण में, सौधर्म इन्द्र का वासा ।
अट्ठारहवें श्रेणिबद्ध में, सुरपति करे निवासा ।।
उनके भवन सु सम्मुख पूजें, चैत्य वृक्ष सुखकारी ।
है न्यग्रोध चतुर्दिश चउ जिनवर को धोक हमारी ।।

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्रभवनसन्मुखस्थन्यग्रोधचैत्यवृक्षचतुर्दिकचतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।157।।

प्रभा सुइंद्रक उत्तर में ईशान इन्द्र का वासा ।
अट्ठारहवें श्रेणिबद्ध में सुरपति करे निवासा ।। उनके॰

ॐ ह्रीं ईशानेन्द्रभवनसन्मुखस्थन्यग्रोधचैत्यवृक्षचतुर्दिकचतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।158।।

चक्र सुइंद्रक दक्षिण में, सानत् कुमार का वासा ।
सोलहवें सु श्रेणीबद्ध में, करते इन्द्र निवासा ।। उनके॰

ॐ ह्रीं सानत्कुमारेन्द्रभवनसन्मुखस्थन्यग्रोधचैत्यवृक्षचतुर्दिकचतुर्जिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।159।।

चक्र सुइंद्रक उत्तर में, माहेन्द्र इन्द्र का वासा ।
सोलहवें सु श्रेणीबद्ध में, करते इन्द्र निवासा ।। उनके॰

SarvatoPooja 17 / 307

ॐ ह्रीं माहेन्द्रेन्द्रभवनसन्मुखस्थन्यग्रोधचैत्यवृक्षचतुर्दिकचतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।160।।

ब्रह्मोत्तर इंद्रक के दक्षिण चौदहवें में वासा ।
ब्रह्म इंद्र शुभ श्रेणिबद्ध में, नित ही करें निवासा ।।
उनके भवन सु सम्मुख पूजे, चैत्य वृक्ष सुखकारी ।
है न्यग्रोध चतुर्दिश चउ जिनवर को धोक हमारी ।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्रभवनसन्मुखस्थन्यग्रोधचैत्यवृक्षचतुर्दिकचतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।161।।

लांतव इंद्रक के दक्षिण पुनि बारहवें में वासा ।
लांतव इंद्र सुश्रेणिबद्ध में नित ही करें निवासा ।। उनके॰

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्रभवनसन्मुखस्थन्यग्रोधचैत्यवृक्षचतुर्दिकचतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।162।।

महाशुक्र इंद्रक के उत्तर, श्रेणीबद्ध कहाते ।
महाशुक्र है इंद्र दसम में, श्री जिन पूज रचाते ।। उनके॰

ॐ ह्रीं महाशुक्रेन्द्रभवनसन्मुखस्थन्यग्रोधचैत्यवृक्षचतुर्दिकचतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।163।।

सहस्रार इंद्रक के उत्तर, श्रेणी बद्ध कहाते ।
सहस्रार इंद्रक अष्टम में, श्री जिनवर गुण गाते ।। उनके॰

ॐ ह्रीं सहस्रारेन्द्रभवनसन्मुखस्थन्यग्रोधचैत्यवृक्षचतुर्दिकचतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।164।।

आनत इंद्रक के दक्षिण में, श्रेणीबद्ध कहाए ।
छटवें में है इंद्र सु आनत, श्री जिन पूज रचाये ।। उनके॰

ॐ ह्रीं आनतेन्द्रभवनसन्मुखस्थन्यग्रोधचैत्यवृक्षचतुर्दिकचतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।165।।

प्राणत इंद्रक के उत्तर में, श्रेणीबद्ध कहाए ।
छटवें में श्री प्राणतेन्द्र जिन वर का ध्यान लगाए ।। उनके॰

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्रभवनसन्मुखस्थन्यग्रोधचैत्यवृक्षचतुर्दिकचतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।166।।

दक्षिणेन्द्र आरण विमान में, दक्षिण में सुख पाए ।
छटवें श्रेणीबद्ध रहे वह, श्री जिनवर को ध्याए ।। उनके०

ॐ ह्रीं आरणेन्द्रभवनसन्मुखस्थन्यग्रोधचैत्यवृक्षचतुर्दिकचतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।167।।

उत्तरेंद्र अच्युत विमान के, उत्तर में हर्षाए ।
छटवें श्रेणीबद्ध रहे श्री, जिन प्रतिमा मन भाए ।। उनके०

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्रभवनसन्मुखस्थन्यग्रोधचैत्यवृक्षचतुर्दिकचतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।168।।

अथ इंद्र नगर सम्बन्धि चैत्य वृक्ष अर्घ्य

सुरपति की नगरी विस्तृत है, सहस चुरासी योजन ।
नगर दूर पर चार दिशाओं, में चतु वन संयोजन ।।
चंपक सप्तच्छद अशोक अरु, आम्र वृक्ष कहलाए ।
प्रतिदिश चैत्य वृक्ष के मूला, चउ जिनबिम्ब लुभाएँ ।।

ॐ ह्रीं सौधर्मेन्द्रनगरसम्बन्धिचतुर्दिकचतुर्वनस्थचतुश्चैत्यवृक्षमूलभाग-विराजमानचतुश्चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।169।।

ईशानेन्द्र सु नगर कहाया, अस्सी हजार योजन ।
नगर दूर पर चार दिशाओं, में चतु वन संयोजन ।। चंपक०

ॐ ह्रीं ईशानेन्द्रनगरसम्बन्धिचतुर्दिकचतुर्वनस्थचतुश्चैत्यवृक्षमूलभाग-विराजमानचतुश्चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।170।।

सानत की शुभ नगरी विस्तृत, सहस बहत्तर योजन ।
नगर दूर पर चार दिशाओं, में चतु वन संयोजन ।। चंपक०

ॐ ह्रीं सानत्कुमारेन्द्रनगरसम्बन्धिचतुर्दिकचतुर्वनस्थचतुश्चैत्यवृक्षमूलभाग-विराजमानचतुश्चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।171।।

श्री महेन्द्र सुनगर है विस्तृत, सत्तर हजार योजन ।
नगर दूर पर चार दिशाओं, में चतु वन संयोजन ।। चंपक०

ॐ ह्रीं माहेन्द्रेन्द्रनगरसम्बन्धिचतुर्दिकचतुर्वनस्थचतुश्चैत्यवृक्षमूलभाग-विराजमानचतुश्चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।172।।

ब्रह्मेन्द्र शुभ नगर है विस्तृत, साठ हजार सुयोजन ।
नगर दूर पर चार दिशाओं, में चतु वन संयोजन ।। चंपक०

SarvatoPooja 17 / 308

ॐ ह्रीं ब्रह्मेन्द्रनगरसम्बन्धिचतुर्दिकचतुर्वनस्थचतुश्चैत्यवृक्षमूलभाग-विराजमानचतुश्चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।173।।

लान्तवेंद्र का नगर सु विस्तृत, साठ हजार सुयोजन ।
नगर दूर पर चार दिशाओं, में चतु वन संयोजन ।।
चंपक सप्तच्छद अशोक अरु, आम्र वृक्ष कहलाए ।
प्रतिदिश चैत्य वृक्ष के मूला, चउ जिनबिम्ब लुभाएँ ।।

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्रनगरसम्बन्धिचतुर्दिकचतुर्वनस्थचतुश्चैत्यवृक्षमूलभाग-विराजमानचतुश्चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।174।।

महाशुक्र का नगर सु विस्तृत, चालिस सहस सुयोजन ।
नगर दूर पर चार दिशाओं, में चतु वन संयोजन ।। चंपक०

ॐ ह्रीं महाशुक्रेन्द्रनगरसम्बन्धिचतुर्दिकचतुर्वनस्थचतुश्चैत्यवृक्षमूलभाग-विराजमानचतुश्चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।175।।

सहस्रार सुर नगर सु विस्तृत, तीस हजार सुयोजन ।
नगर दूर पर चार दिशाओं, में चतु वन संयोजन ।। चंपक०

ॐ ह्रीं सहस्रारेन्द्रनगरसम्बन्धिचतुर्दिकचतुर्वनस्थचतुश्चैत्यवृक्षमूलभाग-विराजमानचतुश्चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।176।।

आनत सुर विस्तार नगर का, बीस हजार सुयोजन ।
नगर दूर पर चार दिशाओं, में चतु वन संयोजन ।। चंपक०

ॐ ह्रीं आनतेन्द्रनगरसम्बन्धिचतुर्दिकचतुर्वनस्थचतुश्चैत्यवृक्षमूलभाग-विराजमानचतुश्चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।177।।

प्राणत सुर विस्तार नगर का, बीस हजार सुयोजन ।
नगर दूर पर चार दिशाओं, में चतु वन संयोजन ।। चंपक०

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्रनगरसम्बन्धिचतुर्दिकचतुर्वनस्थचतुश्चैत्यवृक्षमूलभाग-विराजमानचतुश्चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।178।।

आरण सुर विस्तार नगर का, बीस हजार सुयोजन ।
नगर दूर पर चार दिशाओं, में चतु वन संयोजन ।। चंपक०

ॐ ह्रीं आरणेन्द्रनगरसम्बन्धिचतुर्दिकचतुर्वनस्थचतुश्चैत्यवृक्षमूलभाग-विराजमानचतुश्चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।179।।

अच्युत सुर विस्तार नगर का, बीस हजार सुयोजन ।
नगर दूर पर चार दिशाओं, में चतु वन संयोजन ।। चंपक०

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्रनगरसम्बन्धिचतुर्दिकचतुर्वनस्थचतुश्चैत्यवृक्षमूलभाग-विराजमानचतुश्चतुर्जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।180।।

अथ लौकान्तिक देव विमानस्थ चैत्यालय अर्घ्य

शंभु छंद

ईशान दिशा में 'सारस्वत', देवों के भवन सदा रहते ।
शुभ सात शतक अरु सात कहे, इक भवअवतारी जहँ रहते ।।
देवर्षी लौकान्तिक सुर के, इन भवनों में शाश्वत राजें ।
मणिमय चैत्यालय नित्य नमूँ, पूजूँ जिन चैत्य सदा साजें ।।

ॐ ह्रीं सप्ताधिकशतीसारस्वतलौकान्तिकदेवविमानस्थजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।181।।

पूरब में गोल रहे प्रकीर्ण, जिनमें 'आदित्य' देव रहते ।
ये कहे सात सौ सात सदा, आध्यात्मिक धारा में बहते ।।
देवर्षी०

ॐ ह्रीं सप्ताधिकसप्तशत्यादित्यसारस्वतलौकान्तिकदेवविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।182।।

आग्नेय दिशा में हैं 'प्रकीर्ण', वह्नि सुदेवों के भवन कहे ।
वे सात हजार सात सोहें, वे ब्रह्मचर्य अनुरक्त रहें ।।
देवर्षी०

ॐ ह्रीं सप्ताधिकसहस्रवह्निलौकान्तिकदेवविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।183।।

दक्षिण दिश में है अरुण देव, नित पूजन अर्चन रत रहते ।
उनके भी सात हजार सात, शुभ वृत्त भवन गणधर कहते ।।
देवर्षी०

ॐ ह्रीं सप्ताधिकसप्तसहस्रारुणलौकान्तिकदेवविमानस्थजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।184।।

नैऋत दिश में है 'गर्दतोय' जिनके प्रकीर्ण सुविमान लहें ।
वे नौ हजार नौ कहलाते, नित जिन अर्चा अनुरक्त रहें ।।
देवर्षी०

ॐ ह्रीं नवाधिकनवसहस्रगर्दतोयलौकान्तिकदेवविमानस्थजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।185।।

पश्चिम दिश में है 'तृषित' देव, ये नौ हजार नौ बतलाए ।
इनके विमान गोलक प्रकीर्ण, वे मनुज बनें शिवपद पाएँ ।।
देवर्षी लौकान्तिक सुर के, इन भवनों में शाश्वत राजें ।
मणिमय चैत्यालय नित्य नमूँ, पूजूँ जिन चैत्य सदा साजें ।।

ॐ ह्रीं नवाधिकनवसहस्रतुषितलौकान्तिकदेवविमानस्थजिनालयजिन-बिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।186।।

वायव्य में है 'अव्याबाध', ग्यारह हजार ग्यारह कहते ।
आयु शुभ सागर अष्ट मानी, निश्चित जिन पूजत रत रहते ।।
देवर्षी०

ॐ ह्रीं एकादशाधिकैकादशसहस्राव्याबाधलौकान्तिकदेवविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।187।।

उत्तर में देव 'अरिष्ट' कहे, नव सागर आयु जहाँ भाषें ।
ग्यारह हजार ग्यारह श्रेणी बद्धों में देव सभी वासे ।।
देवर्षि०

ॐ ह्रीं एकादशाधिकैकादशसहस्रारिष्टलौकान्तिकदेवविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।188।।

सारस्वत अरु आदित्य मध्य, दो कुल लौकान्तिक के राजे ।
अग्न्याभ और सूर्याभ देव, चौदह पूरव बुध शुभ साजे ।।
पहले के सात हजार सात, नव सहस सु नव दूजा जानो ।
इनके चैत्यालय जिन प्रतिमा, पूजें शिव श्रेणी ही मानो ।।

ॐ ह्रीं सप्ताधिकसप्तसहस्राग्न्याभलौकान्तिकदेवविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।189।।

आदित्य और वह्नि के मध्य, दो कुल लौकान्तिक सुखकारी ।
चंद्राभ और सत्याभ देव, उज्ज्वल शुभ श्वेत वस्त्रधारी ।।
एकादश सहस रु एकादश, पहले देवों के कहलाए ।
दूजे तेरह हजार तेरह, जिनगृह जिन को जजि सुख पाए ।।

ॐ ह्रीं एकादशाधिकैकादशसहस्रचन्द्राभलौकान्तिकदेवविमानस्थत्रयोदश-सहस्रत्रयोदशसत्याभनामलौकान्तिकदेवविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।190।।

वह्नि व अरुण के मध्य रहते, दो कुल लौकान्तिक मनहारी ।
श्रेयस्कर के पंद्रह हजार, पंद्रह विमान हैं सुखकारी ।।
क्षेमंकर के सत्रह हजार, सत्रह जिन गुणगण गाते हैं ।
शाश्वत चैत्यालय पूज्य चैत्य, हम नित नित शीश झुकाते हैं ।।

ॐ ह्रीं पञ्चदशाधिकपञ्चदशसहस्रश्रेयस्करलौकान्तिकदेवविमानस्थसप्तदश-सहस्रसप्तदशक्षेमंकरलौकान्तिकदेवविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।191।।

श्री अरुण गर्दतोये मध्ये, लौकान्तिक दो कुल सुखकारी ।
'वृषभेष्ट' देव उन्निस हजार, उन्निस कहते हैं त्रिपुरारी ।।
हैं देव 'कामधर' इक्किस अरु, इक्किस हजार शुभ बतलाए ।
उनके चैत्यालय जिन प्रतिमा, भावों से पूजें हर्षाएँ ।।

ॐ ह्रीं एकोनविंशत्याधिकैकोनविंशतिसहस्रवृषभेष्टलौकान्तिकदेव-विमानस्थैकविंशतिसहस्रैकविंशतिकामधरलौकान्तिकदेवविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।192।।

श्री गर्दतोय अरु तुषित मध्य, लौकान्तिक द्वय कुल कहलाए ।
'निर्वाण रजस' तेइस हजार, तेइस आगम में बतलाए ।।
सुर ये 'दिगंतरक्षित' पच्चिस, अरु सहस्र पच्चिस ही जानो ।
इनके जिनगृह जिन को वंदूँ, भव छेदन अस्त्र भक्ति मानो ।।

ॐ ह्रीं त्रयोविंशत्यधिकत्रयोविंशतिसहस्रनिर्वाणरजोलौकान्तिकदेवविमानस्थ-पञ्चविंशतिदिगन्तरक्षितलौकान्तिकदेवविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।193।।

श्री तुषित व अव्याबाध बीच, लौकान्तिक द्वय कुल अनियारे ।
सुर 'आतमरक्षित' सत्ताइस, अरु सहस सताइस हैं न्यारे ।।
हैं देव सर्वरक्षित उनतिस, अरु सहस उनत्तिस विख्याता ।
इनके जिनगृह जिनवर पूजन, भवि को देती निश्चित साता ।।

SarvatoPooja 17 / 310

ॐ ह्रीं सप्तविंशत्याधिकसप्तविंशतिसहस्रसहस्रसप्तविंशत्यात्मरक्षित-लौकान्तिकदेवविमानस्थैकोनत्रिंशत्सहस्रैकोनत्रिंशत्सर्वरक्षितलौकान्तिकदेवविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।194।।

श्री अव्याबाध अरिष्ट बीच, लौकान्तिक दो कुल साज रहे ।
सुर मरुत इकत्तिस अरु हजार, इकतीस विमाना राज रहे ।।
वसुदेव के तैंतिस सहस अरु, तैंतिस विमान शुभ कहलाए ।
इनके शाश्वत जिनगृह वंदूँ, वंदूँ जिन प्रतिमा मन भाए ।।

ॐ ह्रीं एकत्रिंशतधिकैकत्रिंशत्सहस्रमरुत्लौकान्तिकदेवविमानस्थत्रयस्त्रिंशत-सहस्रत्रयस्त्रिंशतवसुदेवलौकान्तिकजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।195।।

श्री अरिष्ट सारस्वत मध्ये, दो कुल लौकांतिक पहचानो ।
श्री अश्वदेव के पैंतिस अरु, पैंतिस हजार तुम शुभ मानो ।।
श्री विश्वदेव सैंतिस हजार, सैंतिस आगम में गाए हैं ।
सब भवनों में शाश्वत मंदिर, अरु जिनप्रतिमा को ध्याये हैं ।।

ॐ ह्रीं पञ्चत्रिंशताधिकपञ्चत्रिंशत्सहस्राश्वदेवलौकान्तिकदेवविमानस्थ-सप्तत्रिंशत्विश्वदेवलौकान्तिकदेवविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।196।।

पूर्णार्घ्य

नरेन्द्र छंद

इंद्रक श्रेणीबद्ध प्रकीर्णक, सोलह दिवि कहलायें ।
इंद्र भवन मुख[१] नगर चतुर्दिश, चैत्यवृक्ष मन भायें ।।
ब्रह्म लोक अंतक में लौकान्तिक के दिव्य विमाना ।
इन सबके शाश्वत चैत्यालय, चैत्य जजूँ अघहाना ।।

ॐ ह्रीं द्वादशकल्पेष्वेन्द्रकश्रेणीबद्धप्रकीर्णकविमानस्थद्वादशेन्द्रभवनसन्मुख-चैत्यवृक्षस्थद्वादशेन्द्रनगरसम्बन्धिचैत्यवृक्षस्थलौकान्तिकविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

---

१. सम्मुख

जयमाला

घत्ता छंद

शुभ स्वर्ग विमाना, जिनगृह जाना, शाश्वत श्री जिनधाम भजूँ ।
जिन प्रतिमा ध्याऊँ, प्रभु गुण गाऊँ, गुण वर्धन कर कर्म तजूँ ।।

शेरचाल

जयवंत सदा वंद्य अकृत्रिम जिनालया,
जयवंत श्री जिनेन्द्र बिम्ब पुण्य आलया ।
जयवंत कल्प द्वादशों में नित्य स्थिता,
जयवंत श्री महागुरु जिनवर परम पिता ।।

त्रैविध विमान देवों के कल्पों में बताए,
इंद्रक व श्रेणीबद्ध फिर प्रकीर्णका गाए ।
इक मुख्य मध्य में रहे इंद्रक सु जान लो,
चउदिश क्रमिक रहें वो श्रेणीबद्ध मान लो ।।

चउ कोण में पुष्पों समा बिखरे हुए हैं जो,
देवों के हैं विमान शुभ प्रकीर्णका हैं वो ।
संख्यात योजनों के सब इंद्रक विमान हैं,
व श्रेणीबद्ध योजन असंख्यातवान हैं ।।

दोनों प्रकार के रहे हैं ये प्रकीर्णका,
संख्यात असंख्यात योजनों मुनि कहा ।
उत्तर दिशा वायव्य व ईशान के कहे,
इनके विमान उत्तरेंद्र देव के रहे ।।

इन्द्रक व अन्य दिश विदिशा के विमान हैं ।
सब दक्षिणेंद्रों के कहे वैभव विशाल हैं ।
सौधर्म कल्प का प्रथम इंद्रक विमान जो,
'ऋतु' मेरु चूल से है एक बाल अग्र वो ।।

SarvatoPooja 17 / 311

योजन सु पैंतालीस लख इसका अयाम[१] है,
उपरि उपरि घटते हुए फिर अयाम है ।
इकतीस प्रथम द्वितीय कल्प में है इंद्रका,
तृतिय व चौथे कल्प में है सात इंद्रका ।।

पंचम में चार दोय सुषष्टम में कहे हैं,
सप्तम व अष्ट कल्प में इक एक रहे हैं ।
अंतिम के चार कल्प में कुल छः ही बताए,
इंद्रक विमान बारह यूँ कल्पों में कहाए ।।

प्रकीर्णका व श्रेणीबद्ध संख्या नियत है,
राजें जिनालया व चैत्य दोष विगत हैं ।
'कुलदेव' मान पूजते जु मिथ्यादृष्टि हैं,
आराध्य पूजते सदा सम्यग् सु दृष्टि हैं ।।

पहले 'दो कल्प' के विमान 'पंचवर्णि' हैं,
फिर 'दोय' के सुकृष्ण विना 'चारवर्णि' हैं ।
पुनि कृष्ण नील के बिना 'दो' 'तीन वर्णि' हैं,
'दो' कृष्ण नील रक्त बिना 'दोयवर्णि' हैं ।।

आगे सभी विमान सु उज्ज्वल व धवल हैं,
इन बारह सुकल्पों में देव देवी अमल हैं ।
उत्पाद देवियों का प्रथम दो ही स्वर्ग में,
किन्तु रहें ये देवियाँ सोलह ही स्वर्ग में ।।

दक्षिणेन्द्र लोकपाल अरू शची कही,
अगले ही भव सु मोक्ष पाएँ बात ये सही ।
सौधर्म इंद्र का विभव है जग में निराला,
कल्याण पंच शुभ करे तब होय निहाला ।।

१.विस्तार

चउ ओर सर्व दक्षिणेंद्रों के विमान के,
'वैडूर्य' 'रजत' व 'अशोक' नामवान ये ।
'मृषकत् सुसार' ये विमान पार्श्व भाग में,
पूर्वादि दिशा में रहें क्रम से विभाग में ।।

यूँ उत्तरेंद्रों के विमान के भी चार ओर,
रहते विमान 'रुचक' 'मंदरा' 'अशोक' और ।।
'सप्तच्छदा' ये चार दिशा क्रम से रहे हैं,
इंद्रों को तो वैभव विशेष नित्य कहे हैं ।।

सौधर्म व ईशान में थित मानथंभ जो,
सुदिव्य वस्त्र भूषणों से युक्त रहे वो ।
शुभ क्षेत्र भरत और एरावत के महाना,
जिन तीर्थ जब हुये ये तब उनके लिये माना ।।

सानत्कुमार व माहेन्द्र कल्प में है जो,
है विदेह के जिनेशों की व्यवस्था वो ।
देवों के नगर बाह्य चार वन्य खंड हैं ।
इक इक सु चैत्य वृक्ष युक्त नित प्रणम्य है ।।

पंचम दिवि के अंत में रहते जु देव हैं,
लौकांतिका कहें सु ब्रह्मचारी एव हैं ।
अस्तित्व देवियों का नहिं होता वहाँ पे,
भवावतारी एक देवर्षि हैं जहाँ पे ।।

तीर्थंकरों को होता जु वैराग्य अपारा,
अनुमोदना को आते लेय हर्ष सुसारा ।
सारस्वतादि कुल सदा चौबीस बताए,
इनमें श्रीजिनभवन सदा हम शीश झुकाएँ ।।

बारह सु कल्प में यथा जिनदेव भवन हैं,
सुपूर्ण भक्ति भाव से जिनदेव नमन हैं ।

नैनों में देव तेरी छवि नित्य बसाऊँ,
आठों ही याम हे जिनेन्द्र आपको ध्याऊँ ।।

बोधि का लाभ श्रेष्ठ समाधि सु मरण हो,
प्रभु शीघ्र आए दिन वो मुक्ति वाम वरण हो ।
तब तक मेरे उर में सु भक्ति विद्यमान हो,
पल पल जिनेन्द्र भक्ति नाथ वर्धमान हो ।।

ॐ ह्रीं द्वादशकल्पचतुरशीतिलक्षषण्णवतिसहस्रसप्तदशविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(८१)

नवग्रैवेयक जिनालय पूजन

अथ स्थापना

दोहा

ऊपर सोलह स्वर्ग के, नवग्रैवेयक जान ।
तिनमें शाश्वत जिन भवन, अरु केवलि भगवान ।।
भाव भक्ति आह्वान करि, योगत्रय से ध्याय ।
कर्म काट शिवपुर लहूँ, शाश्वत वैभव पाय ।।

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थनवाधिकत्रिशतकजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थनवाधिकत्रिशतकजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थनवाधिकत्रिशतकजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

रोला छंद

योगी चित सम नीर, ले जिन पूज रचावें ।
शाश्वत पद को पाय, सारे रोग नशावें ।।
ग्रैवेयक जिनराज, जिनमंदिर नित वंदन ।
जजें सभी अहमिंद्र, काटें भवविधि बंधन ।।

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थनवाधिकत्रिशतकजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

मलयागिरि का श्रेष्ठ, चंदन सुपद चढ़ाऊँ ।
शाश्वत शांति हेतु, जिनवर पूज रचाऊँ ।। ग्रैवेयक०

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थनवाधिकत्रिशतकजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

अक्षत मोति समान, जिनवर पूजन लाए ।
अक्षय पद के काज, हम भी आन चढ़ाए ।। ग्रैवेयक०

SarvatoPooja 17 / 313

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थनवाधिकत्रिशतकजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

पुष्पों के सरताज, जिनवर पाद धरे हैं ।
नाशें काम विकार, नित अविकार बने हैं ।।
ग्रैवेयक जिनराज, जिनमंदिर नित वंदन ।
जजें सभी अहमिंद्र, काटें भवविधि बंधन ।।

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थनवाधिकत्रिशतकजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

नाना व्यंजन लाय, जिनपद पंकज अर्चूं ।
अठदस दोष नशाय, जिनवर गुण नित चर्चूं ।। ग्रैवेयक०

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थनवाधिकत्रिशतकजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

रत्नों के शुभ दीप, ले नीराजन करते ।
नाशें तम त्रय नाथ, आतम ज्ञान सु भरते ।। ग्रैवेयक०

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थनवाधिकत्रिशतकजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

दशविध धूप मँगाय, जिनपद में हम खेवें ।
अष्ट कर्म नशि जाय, जासौ जिनपद सेवें ।। ग्रैवेयक०

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थनवाधिकत्रिशतकजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

जग के फल निस्सार, शिवफल मैं नित चाहूँ ।
श्रद्धा भक्ति अपार, श्री फल पाद चढ़ाऊँ ।। ग्रैवेयक०

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थनवाधिकत्रिशतकजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

श्रेष्ठ दरब वसु लाय, जिनपद नित्य चढ़ावें ।
अनरघ पद मिल जाय, भावन ये शुभ भावें ।। ग्रैवेयक०

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थनवाधिकत्रिशतकजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोह–ग्रैवेयक के जिनभवन, अरु जिनेंद्र भगवान ।
अष्ट द्रव्य ले नित जजूँ, पाऊँ पद निर्वाण ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–नवग्रैवेयक जिन जजूँ, करूँ पाप सब नाश ।
कर्म नाश वसुविध करूँ, पाऊँ सिद्धि निवास ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

शुभ गीता छंद

ग्रैवेयक पहला 'सुदर्शन', योजनों विस्तृत महा ।
सु शोभते जिनगेह मणिमय, दर्श मनहारी अहा ।।
ग्रैवेयक नव सुभग राजे, चैत्य चैत्यालय जजूँ ।
नाशकर निज पाप सारे, नित्य जिनवर मैं भजूँ ।।

ॐ ह्रीं अधोग्रैवेयके सुदर्शनेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

दस-दस चतुर्दिक श्रेणिबद्ध, प्रथम इन्द्रक के कहे ।
जिनमें विराजित देव बिंब, दर्शकर हम शिव लहें ।।
ग्रैवेयक नव०

ॐ ह्रीं अधोग्रैवेयके सुदर्शनेन्द्रकविमानचतुर्दिग्दशदशश्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

'अमोघ' इन्द्रक सुरविमाना, नित जिनालय वंदिता ।
अत्यन्त निर्मल भाव कर सु, लहूँ सौख्य सुनंदिता ।।
ग्रैवेयक नव०

ॐ ह्रीं अधोग्रैवेयकेऽमोघेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

अधो मध्यम ग्रैवेयक नव, नवचतुर्दिक राजते ।
छत्तिस हैं सुखकर जिनालय, पूज तिन अघ भाजते ।।
ग्रैवेयक नव०

ॐ ह्रीं अधोग्रैवेयकेऽमोघेन्द्रकविमानचतुर्दिङ्नवनवश्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

अधो मध्यम ग्रैवेयक में, प्रकीर्णक हैं शोभते ।
सर्व जिनालय पूजते भवि, नित्य मन को मोहते ।।
ग्रैवेयक नव सुभग राजे, चैत्य चैत्यालय जजूँ ।
नाशकर निज पाप सारे, नित्य जिनवर मैं भजूँ ।।

ॐ ह्रीं अधोग्रैवेयकेऽमोघेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

अधो अन्तिम ग्रैवेयक में, 'सुप्रबुद्ध' इन्द्रक कहा ।
सु भव्य पूजें जिन जिनालय, नित्य नंदामृत लहा ।।
ग्रैवेयक नव०

ॐ ह्रीं अधोग्रैवेयके सुप्रबुद्धेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

अधो अंतिम ग्रैवेयक में, श्रेणि कुल बत्तीस हैं ।
जिन रु जिनालय पूजते भवि, होय त्रिभुवन ईश हैं ।।
ग्रैवेयक नव०

ॐ ह्रीं अधोग्रैवेयके सुप्रबुद्धेन्द्रकविमानचतुर्दिगाष्टाष्टश्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

अधो अंतिम ग्रैवेयक में, विद्यमान प्रकीर्णका ।
चैत्यालय सब नित जजें हम, सौख्य पायें मुक्ति का ।।
ग्रैवेयक नव०

ॐ ह्रीं अधोग्रैवेयके सुप्रबुद्धेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

दोहा

मध्यम ग्रैवेयक प्रथम, नाम यशोधर जान ।
इन्द्रक चैत्यालय जजूँ, हृदय धरूँ भगवान ।।

ॐ ह्रीं मध्यमग्रैवेयके यशोधरेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

मध्यम ग्रैवेयक प्रथम, श्रेणिबद्ध अठबीस ।
चैत्य जिनालय देव जिन, धरूँ चरण निज शीश ।।

ॐ ह्रीं मध्यमग्रैवेयके यशोधरेन्द्रकविमानचतुर्दिक्सप्तसप्तश्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

मध्यम ग्रैवेयक प्रथम, सर्व प्रकीर्णक जान ।
चैत्य जिनालय पूजकर, करूँ कर्म की हान ।।

ॐ ह्रीं मध्यमग्रैवेयके यशोधरेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

मधि ग्रैवेयक मध्य का, इन्द्रक 'सुभद्र' जान ।
भद्र प्रणामनि कर जजूँ, करूँ स्वात्म पहचान ।।

ॐ ह्रीं मध्यमग्रैवेयके सुभद्रेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

मधि ग्रैवेयक मध्य का, मंदिर श्रेणीबद्ध ।
चैत्यालय चौबीस जजि, पाऊँ मुक्ति निबद्ध ।।

ॐ ह्रीं मध्यमग्रैवेयके सुभद्रेन्द्रकविमानचतुर्दिक्षट्षट्श्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

मधि ग्रैवेयक मध्य का, सर्व प्रकीर्णक इष्ट ।
चैत्य जिनालय पूजकर, शाश्वत बनूँ विशिष्ट ।।

ॐ ह्रीं मध्यमग्रैवेयके सुभद्रेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

अंतिम ग्रैवेयक मध्य, इन्द्रक है 'सुविशाल' ।
चैत्यालय की वंदना, काटे भव जंजाल ।।

ॐ ह्रीं मध्यमग्रैवेयके सुविशालेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

अंतिम ग्रैवेयक मध्य, श्रेणी युत जिनगेह ।
भाव सहित बीसों नमूँ, उर में धर अति नेह ।

ॐ ह्रीं मध्यमग्रैवेयके सुविशालेन्द्रकविमानचतुर्दिक्पञ्चपञ्चश्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

अंतिम ग्रैवेयक मध्य, सर्व प्रकीर्णक मान्य ।
भाव सहित वंदन करूँ, मम शरण नहीं आन्य ।।

SarvatoPooja 17 / 315

ॐ ह्रीं मध्यमग्रैवेयके सुविशालेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।17।।

सोरठा

'सुमनस' नाम सुजान, ऊर्ध्व ग्रैवेयक सुप्रथम ।
बन जाऊँ भगवान, सर्व जिनालय पूजके ।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वग्रैवेयके सुमनसेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।18।।

श्रेणीबद्ध विमान, ऊर्ध्व ग्रैवेयक सुप्रथम ।
करूँ कर्म की हान, सोल जिनालय पूजके ।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वग्रैवेयके सुमनसेन्द्रकविमानचतुर्दिक्चतुश्चतुस्श्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।19।।

सर्व प्रकीर्णक नव्य, ऊर्ध्व ग्रैवेयक सुप्रथम ।
शाश्वत सुख लें भव्य, चैत्यालय जिन अर्चकर ।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वग्रैवेयके सुमनसेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।20।।

नाम 'सौमनस' शुद्ध, मधि ग्रैवेयक ऊर्ध्व का ।
करके भाव विशुद्ध, पूजा करि वसु द्रव्य ले ।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वग्रैवेयके सौमनसेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।21।।

बारह श्रेणीबद्ध, मधि ग्रैवेयक ऊर्ध्व का ।
होऊँ कर्म अबद्ध, निश दिन जिन वंदन करूँ ।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वग्रैवेयके सौमनसेन्द्रकविमानचतुर्दिक्त्रित्रिश्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।22।।

सर्व प्रकीर्णक सार, मधि ग्रैवेयक ऊर्ध्व का ।
हो जाऊँ भव पार, योगत्रय से भक्तिकर ।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वग्रैवेयके सौमनसेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।23।।

'प्रीतिंकर' शुभ जान, ऊर्ध्व सु ग्रैवेयक कहे ।
पाऊँ केवलज्ञान, परम प्रीति से अर्चकर ।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वग्रैवेयके प्रीतिङ्करेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।24।।

श्रेणीबद्ध सु आठ, चार दिशा में शोभते ।
जला कर्म का काठ, पूजा करि निज शिव लहूँ ।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वग्रैवेयके प्रीतिङ्करेन्द्रकविमानचतुर्दिग्द्वयद्वयश्रेणीबद्धविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।25।।

अहो प्रकीर्णक सर्व, विदिशाओं में जानिये ।
त्यागूँ मिथ्या गर्व, जिनवर दर्शन पाय के ।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वग्रैवेयके प्रीतिङ्करेन्द्रकविमानसम्बन्धिप्रकीर्णकविमानस्थ-जिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।26।।

पूर्णार्घ्य

चउबोला छंद

अति निर्मल परिणाम बनाकर, चैत्य जिनालय वंदन को ।
अतिशय पुण्य लाभ पाने अरु, शाश्वत पाप निकंदन को ।।
ग्रैवेयक नव ऊर्ध्वलोक में, शाश्वत जहाँ जिन थान हैं ।
चैत्य जिनालय सुरगण वंदें, करते अशुभ अघ हान हैं ।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वग्रैवेयकेन्द्रकश्रेणीबद्धप्रकीर्णकविमानस्थसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता

नव दिव्य विमाना, बृहद् प्रमाणा, श्री भगवाना नित ध्याऊँ ।
शुभ भाव भक्ति से, आत्मशक्ति से, सद्सुयुक्ति से शिव पाऊँ ।।

चाल - श्री सिद्धचक्र का पाठ

नव ग्रैवेयक शुभ जान, जिनालय वान, नित्य सुखकारी ।
पूजूँ प्रतिमा अघहारी ।।

SarvatoPooja 17 / 316

जानो अधोसु ग्रैवेयक में, इंद्रक विमान त्रय हैं तिन में ।
श्रेणी सुबद्ध हैं इक शत वसु सुखकारी, पूजूँ प्रतिमा अघहारी ।।

मध्यम में इंद्रक तीन कहे, बाहत्तर श्रेणीबद्ध रहे ।
सतरह प्रकीर्णका कहते मुनि श्रुतधारी, पूजूँ प्रतिमा अघहारी ।।
उपरिम में इंद्रक तीन कहे छत्तीस श्रेणीबद्ध शोभ रहे ।
बावन प्रकीर्णका कहे गणधर अविकारी, पूजूँ प्रतिमा अघहारी ।।

अपने विमान के केतु दंड, छठवीं पृथ्वी तक ज्ञानवंत ।
जाने अवधि से अहमिंद्रा मनहारी, पूजूँ प्रतिमा अघहारी ।।

अब नहीं देवियों का वासा, प्रविचार रहित सुर आवासा ।
नहिं छोड़ थान कहिं जाएँ सुर ब्रह्मचारी, पूजूँ प्रतिमा अघहारी ।।

संयम का दिव्य प्रभाव कहो, संयम बिन नहिं यहँ थान अहो ।
यहाँ आ सकते केवल मुनिमुद्रा धारी, पूजूँ प्रतिमा अघहारी ।।

जिन प्रतिमाएँ तैंतिस हजार, त्रय शत बाहत्तर बार-बार ।
वंदे पूजे निश्चित हो शिव अधिकारी, पूजूँ प्रतिमा अघहारी ।।

ॐ ह्रीं नवग्रैवेयकविमानस्थनवाधिकत्रिशतकजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(८२)

नवअनुदिश जिनालय पूजन

अथ स्थापना

दोहा

ऊर्ध्वलोक की नासिका, सम अनुदिश नव जान ।
शाश्वत जिनवर चैत्य तँह, अरु चैत्यालय मान ॥
आह्वानन करि पूजते तिनको भव्य हमेश ।
अहमिंद्रा जिन अर्चकर करते कर्म अशेष ॥

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थनवजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थनवजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थनवजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

तर्ज - श्री वीर महाअतिवीर...

ले प्रासुक निर्मल नीर, श्री जिनवर पूजो ।
नशि जन्मादिक की पीर, निज में निज हूजो ॥
अनुदिश विमान के चैत्य, भविजन सुखकारी ।
अतिशय शुभ पुण्य सुकोष, निश्चित अघहारी ॥

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थनवजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

शीतल हिमसित शुभ लाय, चरणों का अर्चन ।
मम चिदाताप नशि जाय, जिन गुण का चर्चन ॥ अनुदिश॰

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थनवजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

हीरक सम अक्षत श्वेत, जिनपद भरि थाली ।
अक्षय पद मुक्ति निकेत, नाशूँ भव आली ॥ अनुदिश॰

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थनवजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

सुरभित सुमनों का पुंज, नासा तृप्त करे ।
जिन पाद जजूँ धरि कुंज, दुर्गुण सर्व हरे ॥
अनुदिश विमान के चैत्य, भविजन सुखकारी ।
अतिशय शुभ पुण्य सुकोष, निश्चित अघहारी ॥

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थनवजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

नैवेद्य थाल भरि आज, चरणों में भेंटूँ ।
लहि सिद्धीश्वर साम्राज, रोग क्षुधा मेटूँ ॥ अनुदिश॰

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थनवजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

आदित्य रश्मि सम दीप, आरति शुभ कर लूँ ।
जिनपद धरि नित्य सुदीप, नंत ज्ञान वर लूँ ॥ अनुदिश॰

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थनवजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

दश गंध हुताशन खेय, चरणन नित वंदन ।
मोहादि नाशि वसु हेत, जिन का अभिनंदन ॥ अनुदिश॰

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थनवजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

शुभ श्रेष्ठ फलादिक लाय, मन में हरषत हैं ।
श्री जिनपद नित्य चढ़ाय, शिवफल तरसत हैं ॥ अनुदिश॰

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थनवजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

नीरादिक द्रव्य मिलाय, जिन पद अर्पित हो ।
पाने अनर्घपद श्रेष्ठ, पूर्ण समर्पित हो ॥ अनुदिश॰

ॐ ह्रीं नवानुदिशविमानस्थनवजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा

नव अनुदिश के जिनसदन, श्री युत सर्व विमान ।
जिनवर जिनगृह नित जजूँ, बनने को भगवान ॥

शान्तये शांतिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा–असंख्यात योजन बृहद, नव अनुदिश सु विमान ।
मणिमय जिनवरबिंब का, करूँ अहर्निश ध्यान ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

शुद्धगीता छंद

बना [1]'आदित्य' अनुदिश शुभ, इन्द्र सम मध्य में सोहे ।
धवलता सूर्य सी दिखती, रतनमय जिनभवन मोहे ।
धनुष पन शत जिनेश्वर के, बिंब ऊँचे सुहाने हैं ।
रीझकर अर्चना उनकी, रचाकर मुक्ति पाने हैं ।।

ॐ ह्रीं आदित्येन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

दिशा प्राची में 'अर्चि' शुभ, जु अनुदिश का विमाना है ।
सुरों अहमिन्द्र से अर्चित, जिनालय शिव समाना है ।
वीतरागी छवी धारी, दिव्य जिनबिंब मणि युक्ता ।
पूजते स्वात्म गुण हेतू, लिए कर में मणि मुक्ता ।।

ॐ ह्रीं आदित्येन्द्रकपूर्वदिगर्चिनामश्रेणीबद्धविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

'अर्चिमालिनि' सुदक्षिण में, अहमिन्द्रों का वासा है ।
श्वेत अरु गोल मणि निर्मित, जहाँ जिनवर निवासा है ।
करें दुर्धर तपस्या जो, वही शुभ दर्श पाते हैं ।
भक्ति श्रद्धा लिए हम भी, पूज उनकी रचाते हैं ।।

ॐ ह्रीं आदित्येन्द्रकविमानदक्षिणदिगर्चिमालिनीनामश्रेणीबद्धविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सु अनुदिश 'वैर' पश्चिम में, जहाँ जिन धाम हीरों का ।
लहे प्रविचार विन इंद्रा योगि सम सौख्य वीरों सा ।
चैत्य शाश्वत निराले हैं, मोक्ष की प्रेरणा देते ।
भटकते ना जगत में हम, अगर पूजन रचा लेते ।।

ॐ ह्रीं आदित्येन्द्रकविमानपश्चिमदिग्वैरनामश्रेणीबद्धविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

'वैरोचन' दिश उदीचि में, विमाना शोभता भारी ।
जजूँ जिन चैत्य उनके भी, वरूँ मैं शिवपुरी नारी ।।

---

* नवअनुदिश के नामों का यह कथन त्रिलोकसार ग्रंथ के अनुसार है । तिलोय पण्णत्ती ग्रंथ में नामों में विभिन्नता है ।

शुक्ल लेश्या सहित अहमिंद्र का ही नित बसेरा है ।
दर्श जिनदेव शुभ पाकर, लहा शिवलोक डेरा है ।।

ॐ ह्रीं आदित्येन्द्रकविमानोत्तरदिग्वैरोचननामश्रेणीबद्धविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

'सोम' अनुदिश विमाना शुभ दिशा पूजित सु ईशाना ।
जहाँ अहमिंद्र अरत्नि के कहे ऊँचे धवल बाना ।।
बनी शाश्वत जहाँ प्रतिमा, जिनेश्वर की सु मनहारी ।
अर्चना कर बनूँ स्वामी, सिद्ध सम अष्ट गुण धारी ।।

ॐ ह्रीं सोमप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

अग्नि[1] में है सु मनभावन, 'सोमप्रभ' सोम सम न्यारा ।
जिनालय दिव्य जिनवर के, रत्नमणिमय बड़ा प्यारा ।।
अर्चते नित्य अहमिन्द्रा, द्विभव में मोक्ष जाते हैं ।
भव्य नित अर्चना करके, आत्म रस पान पाते है ।।

ॐ ह्रीं सोमप्रभप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

दिशा नैऋत्य में दिपता 'अंक' अनुदिश विमाना है ।
चंद्र रश्मि सा चैत्यालय, मणी पर्वत समाना है ।।
तत्त्व चर्चा निरत अहमिन्द्र जिनका ध्यान करते हैं ।
नित्य जिनदेव की अर्चन से, भव्य शिवधाम वरते हैं ।।

ॐ ह्रीं अङ्कप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

'स्फटिक' है दिव विमाना शुभ, दिशा वायव्य दिपता है ।
दिवाकर की छवी वाला, जिनालय दिव्य दिखता है ।।
वंदन करके दो भव में, वरें मुक्ति को अहमिन्द्रा ।
अर्चन ऐसे जिनवर की, नशाते मोह की तन्द्रा ।।

ॐ ह्रीं स्फटिकप्रकीर्णकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

---

१. आग्नेय कोण

पूर्णार्घ्य

चन्द्रवर्त्य छंद (चाल - चालीसा)

सूर्य चन्द्र किरणों सम लगते, शुक्लमान अहमिन्द्र सु जजते ।
ऊर्ध्वलोक दिपते अनुदिश हैं, चैत्य पूज कर कर्म नशत हैं ।।

ॐ ह्रीं नवानुदिशसम्बन्धिनवजिनालयनवशतद्वासप्ततिजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

जिनगृह अनुदिश में, भेद न निशि में, नित्य भाव से हम वंदें ।
पूजन जिन प्यारी, अघमलहारी, करें शुद्ध चित आनंदें ।।

चौपाई

नव अनुदिश जिनगेह लुभाएँ, शाश्वत जिनवर के गुण गाएँ ।
इंद्रक इक विमान पहचानो, आदित्या शुभ नाम बखानो ।।

श्रेणिबद्ध चउदिश में राजे, एक-एक वे धवल विराजें ।
'अर्चि' 'अर्चिमालिनी' कहा है, 'वेर' 'वेरोचन' सुखद अहा है ।।

पूर्वादिक में क्रम से जाने, चउ श्रेणीबद्ध बखाने ।
ईशानादि चऊविदिशा में, रहे प्रकीर्णक वक्र दिशा में ।।

सोम सोमप्रभ अंक कहाए, नाम 'स्फटिक' जिनागम गाए ।
यूँ नव अनुदिश दिव्य विमाना, कुन्द पुष्प सा उज्ज्वल माना ।।

उनमें है प्रासाद समूचे, योजन अर्द्ध शतक ये ऊँचे ।
दश योजन की है लम्बाई, और पंच योजन चौड़ाई ।।

कनक स्फटिकमणिमय शुभ भायी, प्रासादों की महिमा गायी ।
चतुष्कोण सम आकृति वाले, मणिमय शय्या शाश्वत सारे ।।

सुंदर द्वार तोरणों युक्ता, धूप गंध मणिदीप सुयुक्ता ।
रत्न खचित ध्वज शोभित सारे, अहमिंद्रों के भवन सु प्यारे ।।

उनमें जिन चैत्यालय न्यारा, जिन प्रतिमा को नमन हमारा ।
आठ अधिक सौ जिन प्रतिमाएँ, इन्द्रदेव जिनगुण नित गाएँ ।।

सुर सम्यग्दृष्टि ही होते, बहुत अधिक भव बीज न बोते ।
सागर बत्तिस ही है गायी, आयु उत्तम सदा बतलायी ।।

रत रहते नित जिनवर अर्चा, द्रव्य तत्त्व की करते चर्चा ।
मैं भी नित जिनवर गुण ध्याऊँ, जिससे आत्म रसिक बन जाऊँ ।।

करके जिनवर का शुभ वंदन, मम चित सिद्ध समा हो कुंदन ।
अपना सम्यक् रूप सु जानूँ, शाश्वत सिद्ध रूप पहचानूँ ।।

निश्चय रत्नत्रय मैं पाऊँ, आत्मरसास्वादी हो जाऊँ ।
शुक्ल ध्यान से वसु विधि नाशूँ, शाश्वत केवलज्ञान प्रकाशूँ ।।

ॐ ह्रीं नवानुदिशसम्बन्धिनवजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(८३)

पंच अनुत्तर विमानस्थ जिनालय जिनेन्द्र पूजन

अथ स्थापना

चौबोला - छंद

विजय अरू वैजंत जयंता, अपराजित सु चार विमान ।
मध्य माँहि सर्वार्थ सुशोभित, सब में जिनमंदिर पहचान ।।
जिनगृह अरु जिनबिम्बों का हम, आह्वानन करने आये ।
शक्तिहीन भावों से अर्चे, भाव मोक्ष पद के लाये ।।

दोहा–पंचानुत्तर में बने, शाश्वत जिनवर गेह ।
जे प्रतच्छ पूजा करें, शिव पा होय विदेह ।।

ॐ ह्रीं पञ्चानुत्तरविमानस्थपञ्चजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं पञ्चानुत्तरविमानस्थपञ्चजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं पञ्चानुत्तरविमानस्थपञ्चजिनालयजिनबिम्बसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

अडिल्ल छंद

क्षीरोदधि का निर्मल अंबु सु लाय के ।
निज गुण चाहें, जिन पद नीर चढ़ाय के ।।
पंचानुत्तर लोक श्रेष्ठ जिन गेह हैं ।
वंदन अर्चन करें सफल सुरदेह है ।।

ॐ ह्रीं पञ्चानुत्तरविमानस्थपञ्चजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

बावन विध चंदन ले भवि जिन अर्चते ।
इंद्रादिक जिनदेव सुगुण नित चर्चते ।। पंचानुत्तर०

ॐ ह्रीं पञ्चानुत्तरविमानस्थपञ्चजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

SarvatoPooja 17 / 320

अक्षय पद के हेतू अक्षत लायके ।
करूँ जिनेश्वर पूजा पुंज चढ़ायके ।।
पंचानुत्तर लोक श्रेष्ठ जिन गेह हैं ।
वंदन अर्चन करें सफल सुरदेह है ।।

ॐ ह्रीं पञ्चानुत्तरविमानस्थपञ्चजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सुमनों सा सौरभ पाऊँ ना कामना ।
पुष्प चढ़ा अविकार होउँ यह भावना ।। पंचानुत्तर०

ॐ ह्रीं पञ्चानुत्तरविमानस्थपञ्चजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

षट्रस मिश्रित भोजन नाथ चढ़ायके ।
रोग क्षुधादिक मेटूँ पूज रचायके ।। पंचानुत्तर०

ॐ ह्रीं पञ्चानुत्तरविमानस्थपञ्चजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

दीपों का परकाश, न रुचिकर भासता ।
जजूँ चरण जिनदेव, लहूँ बुध शासता ।। पंचानुत्तर०

ॐ ह्रीं पञ्चानुत्तरविमानस्थपञ्चजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

धूप अनल में खेय, चित्त सुवासित हो ।
जिनवर चरण जजूँ, आत्म अनुशासित हो ।। पंचानुत्तर०

ॐ ह्रीं पञ्चानुत्तरविमानस्थपञ्चजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

लौकिक फल की मन में ना कुछ चाहना ।
श्रीफल जिनपद धरूँ लिए शिव भावना ।। पंचानुत्तर०

ॐ ह्रीं पञ्चानुत्तरविमानस्थपञ्चजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

तीन लोक में शिवपुर शाश्वत थान है ।
अर्घ्य चढ़ा मैं पाऊँ पद निर्वाण है ।। पंचानुत्तर०

ॐ ह्रीं पञ्चानुत्तरविमानस्थपञ्चजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

दोहा–पूजूँ शाश्वत जिनभवन, पंच अनुत्तर थान ।
अठ प्रतिमा इक शत नमूँ, प्रति जिनगृह भगवान ।।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

पंच अनुत्तर राजते, चैत्यालय मनहार ।
पंचम गति के कारणे, जिन चरणा चित धार ।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

शंभु छंद

'सर्वार्थसिद्धि' इंद्रक विमान, जैसे मृगांक का पूर्ण वदन ।
हीरक मणियों से निर्मित है, जिनदेव आपका दिव्य सदन ।
शुभ गोल लाख योजन विस्तृत, आधार शुद्ध नभ का अनुपम ।
निर्मल भावों से अर्घ चढ़ा, हे नाथ बने हम भी तुम सम ।।

ॐ ह्रीं सर्वार्थसिद्धचेन्द्रकविमानस्थजिनालयजिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

सर्वार्थसिद्धि की प्राची में, मुक्ता सम श्रेणीबद्ध धवल ।
उस 'विजय' अनुत्तर के जिनगृह, लगते जैसे हो हीरक जल ।।
द्विचरम देह अहमिन्द्र वहाँ, प्रत्यक्ष प्रभु गुण गाते हैं ।
हम भी परोक्ष शिव पाने को, श्रद्धा से अर्घ चढ़ाते हैं ।।

ॐ ह्रीं सर्वार्थसिद्धिविमानपूर्वदिग्विजयनामश्रेणीबद्धविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

सर्वार्थसिद्धि के दक्षिण में, है 'वैजयन्त' शोभा भारी ।
शुभ कुंद पुष्प सम शुक्ल विमल, जिनगृह मणियों के मनहारी ।।
राजित जिसमें जिन मूरतियाँ, धनु पंच शतक ऊँची प्यारी ।
चिंतन में देव विराजित कर, हम करते अर्चन मनहारी ।।

ॐ ह्रीं सर्वार्थसिद्धिविमानदक्षिणदिग्वैजयन्तनामश्रेणीबद्धविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सर्वार्थसिद्धि के पश्चिम में, संख्या-अतीत योजन विस्तृत ।
है शुक्ल जयंत विमान जहाँ, जिनगृह अहमिन्द्रों से संस्तुत ।।

SarvatoPooja 17 / 321

जिन प्रतिमायें ऐसी लगती, जैसे कुछ कहने वाली हैं ।
पूजूँ शिवफल दायक जिनवर, जिनकी अर्चना निराली है ।।

ॐ ह्रीं सर्वार्थसिद्धिविमानपश्चिमदिग्जयन्तनामश्रेणीबद्धविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

सर्वार्थसिद्धि के उत्तर में, 'अपराजित' विमान न्यारा है ।
जिसमें हीरक निर्मित धवलिम, चैत्यालय अनुपम प्यारा है ।।
हैं वीतरागमय सौम्य छवी, वाले जिनबिंब जहाँ शोभित ।
वसु द्रव्य सजा कर पूज करूँ, शिववामा करती है मोहित ।।

ॐ ह्रीं सर्वार्थसिद्धिविमानोत्तरदिगपराजितनामश्रेणीबद्धविमानस्थजिनालय-जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

पूर्णार्घ्य

वसंततिलका छंद

सर्वोच्च है पन अनुत्तर लोक माँही ।
चैत्यालया जहँ सु हीरक पुंज का ही ।।
श्री वीतराग जिन की महिमा निराली ।
पूजा करे शिव नशे भवि की भवाली ।।

ॐ ह्रीं पञ्चानुत्तरविमानस्थपञ्चजिनालयपञ्चशतचत्वारिंशज्जिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नमः । (9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता छंद

शुभ पंचविमाना, दिव्य महाना, जिनभगवाना रत्नमयी ।
जो पूज रचावे, ध्यान लगावे, शीघ्र हि पावे सिद्ध मही ।।

विधाता छंद

अनुत्तर पन विमानों में, चैत्य मंदिर सुशोभित है ।
दरश नहिं आज तक कीना, मगर मम चित्त मोहित है ।।

जिनागम रूप शुभ चक्षु, लिए जिन दर्श करता हूँ ।
रत्नमय जिन सुप्रतिमाएँ, नमन कर शीश धरता हूँ ॥

मध्ये सर्वार्थ सिद्धि का, विमानोत्तम विराजित है ।
सुइंद्रक ही इसे जानो, फटिकमय शुभ्र साजित है ॥
सुयोजन लाख इक विस्तृत, सुजंबूद्वीप सम जानो ।
योजन बारह ही नीचे, इसे शिवक्षेत्र से मानो ॥

यहाँ तैंतीस सागर शुभ, कही उत्कृष्ट आयु है ।
तत्त्वचर्चा अपुनरुक्ता इंद्रों की प्राणवायु है ॥
ज्ञान मति श्रुत तथा अवधी सदा संयुक्त होते हैं ।
सिद्धि सर्वार्थ से च्युत हो, ज्ञानत्रय युत जनमते हैं ॥

चतुर्दिक एक इक राजित, विमाना शुक्लवर्णी हैं ।
गोल रत्नों जड़ित अनुपम, हीर[१] सी मानु धरणी है ॥
पूर्व में है विजय दक्षिण, शोभता वैजयंता है ।
सु अपराजित उदीची में, प्रतीची में जयंता है ॥

विमानों में भवन ऊँचे, पाँच विंशति सुयोजन हैं ।
पाँच योजन कहे लंबे, सुविस्तृत ढाइ योजन हैं ॥
कालागुरु आदि धूपों कि, गंध से ये सुवासित हैं ।
रत्नदीपक व कुसुमों से, कांतिमय दिव्य शाश्वत हैं ॥

मोतियों से समुज्वल हैं, धवल हीरकमयी मंदिर ।
सभी अहमिन्द्र नित पूजें, भाव लेके सदा सुंदर ॥
किया निर्दोष चारित का, सुपालन तब हुए इंद्रा ।
करोड़ों पुण्य से लहते, ये परजाय सु अहमिंद्रा ॥

रत्नसम्यक्त्व युत होते, यहाँ अहमिन्द्र शुभ सारे ।
जिनेश्वर की पूजन से, कर्म निश्चित स्वयं हारे ॥
पन[२] विमानों जु पन मंदिर, पाप हारक सदा वंदें ।
गेह प्रति एक शत वसु जिन, बिंब पूजें सु आनंदें ॥

---
१. हीरा २. पाँच

SarvatoPooja 17 / 322

अकृत्रिम जिन सदन सोहें, जिनेन्द्रा राजते स्वामी ।
नित्य मम नेत्र में जिनवर, ज्योतिवत् लीन हो स्वामी ॥
चित्त नित देव गुणगण का, सदा चिंतन करे निर्मल ।
समाधी बोधि मैं पाऊँ, जिनेश्वर श्वास में प्रतिपल ॥

दोहा

पंच अनुत्तर में सदा, पाँच जिनालय जान ।
पंचशतक चालीस जिन, प्रतिमा जजूँ महान ॥

ॐ ह्रीं पञ्चानुत्तरविमानस्थपञ्चजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ॥
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

(८४)

सिद्धशिला पूजन

अथ स्थापना

गीतिका छंद

लोकाग्र स्थित सिद्ध भूमि, सर्व शिव निवसे जहाँ ।
धर सुसंयम भव्य योगी, कर्म हन पहुँचे वहाँ ।।
सिद्ध लोक रु भूमि सिद्धा, शिला सिद्धि हित जजें ।
सदा आह्वानन करें हम, सिद्धिपति बनने भजें ।।

दोहा

रजत मयी शुभ सिद्ध हैं, शाश्वत शिला पुनीत ।
भव्य सिद्ध वंदन करें, करें इन्हीं से प्रीत ।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थसिद्धशिलोपरि विराजमानानन्तानन्तसिद्धसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थसिद्धशिलोपरि विराजमानानन्तानन्तसिद्धसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थसिद्धशिलोपरि विराजमानानन्तानन्तसिद्धसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम् ।

अथ अष्टक

विष्णुपद

केवल मिहिर रश्मि सम अनुपम, पुष्कर[1] हम लाए ।
अंबुसार[1] से जज नित चाहें, रोग विनश जाए ।
सिद्धक्षेत्र सिद्धों से शोभित, शाश्वत गुणधारी ।
स्वयं सिद्ध पद पाने को नित, पूजूँ अविकारी ।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थसिद्धशिलोपरि विराजमानानन्तानन्तसिद्धेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।1।।

नित्य निरंजन पद मैं चाहूँ, जिनवर अर्चन से ।
चंदन ले सिद्धीश्वर पूजूँ, नित मन वच तन से ।। सिद्धक्षेत्र०

१. जल

SarvatoPooja 17 / 323

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थसिद्धशिलोपरि विराजमानानन्तानन्तसिद्धेभ्यः चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।2।।

अक्षत सम मम शील[1] सुअक्षत, उसको नित भजता ।
सिद्ध शिला के सब सिद्धों को, शालि चढ़ा जजता ।।
सिद्धक्षेत्र सिद्धों से शोभित, शाश्वत गुणधारी ।
स्वयं सिद्ध पद पाने को नित, पूजूँ अविकारी ।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थसिद्धशिलोपरिविराजमानानन्तानन्तसिद्धेभ्योऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।।3।।

सब ऋतु के शुभ कुसुम मनोहर, शिव अर्चन लाया ।
निर्विकार मन्मथजयि होने, तव पद सिर नाया ।। सिद्धक्षेत्र०

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थसिद्धशिलोपरि विराजमानानन्तानन्तसिद्धेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।4।।

शुद्ध ब्रह्म के शुद्ध गुणों का, मैं नित भोग करूँ ।
उत्तम षट्रस मिश्रित चरुवर, मुक्ति नारी वरूँ ।। सिद्धक्षेत्र०

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थसिद्धशिलोपरि विराजमानानन्तानन्तसिद्धेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।5।।

क्षायिक दर्शन ज्ञान दीप का, नित्य उजास भरे ।
दीप चढ़ा शिवलोक जजूँ मैं, अघ सब नाश करे ।। सिद्धक्षेत्र०

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थसिद्धशिलोपरि विराजमानानन्तानन्तसिद्धेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।6।।

धूप दशांगी ले नित पूजूँ, सिद्ध शिला भायी ।
वसुविधि नाशूँ गुण वसु पाने, पूजन सुखदायी ।। सिद्धक्षेत्र०

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थसिद्धशिलोपरि विराजमानानन्तानन्तसिद्धेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।7।।

जग के श्रेष्ठ सुखद फल लेकर, सिद्ध शिला वंदूँ ।
सिद्ध क्षेत्र में हम भी निवसें, शाश्वत आनंदूँ ।। सिद्धक्षेत्र०

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थसिद्धशिलोपरि विराजमानानन्तानन्तसिद्धेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

उत्तम रतन मिलाकर हमने, अर्घ्य बनाया है ।
पद अनर्घ्य अरु सिद्धक्षेत्र मन, मेरे भाया है ।। सिद्धक्षेत्र०

१. स्वभाव

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थसिद्धशिलोपरि विराजमानानन्तानन्तसिद्धेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

दोहा

सिद्धक्षेत्र अरु सिद्ध सब, होय चित्त मम वास ।
सिद्ध अर्चना मैं करूँ, पाऊँ सिद्ध निवास ॥

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

अष्टम भूमि रूप्यमयी, है ईषत् प्राग्भार ।
सिद्ध नमूँ जिन पा लिया, शुद्धातम का सार ॥

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

हरिगीतिका छंद

इस भव भ्रमण का मुख्य कारण, मोहनी जिनवर कहा ।
श्री सिद्ध प्रभु ने मोह रिपु को, ध्यान पावक में दहा ॥
प्रगटा जहाँ सम्यक्त्व क्षायिक, आत्म सुख रस पीवते ।
सम्यक्त्व पावे सिद्ध शाश्वत, शुद्ध चिन्मय जीवते ॥

ॐ ह्रीं पूर्णसम्यक्त्वगुणसहितायानन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

ज्ञानावरण की पाँच प्रकृती, क्षीण मोहे नाशकर ।
शुभ पा लिया प्रभु ज्ञान केवल, आतमा में वासकर ॥
मार्तण्ड केवल उदय चित में, सर्वगुण द्रव[1] झलकते ।
पर्याय नंत सुयुक्त लोकालोक बुध में अलखते[2] ॥

ॐ ह्रीं क्षायिकज्ञानगुणसहितायानन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

नश दर्श आवरणी प्रकृति नव, सर्व दर्शी जिन भये ।
अरु सर्व गुण पर्याय द्रव शिव, सहज अवलोकन थये ॥
दर्शन सु क्षायिक सिद्ध पाया, नहीं हो विकृत कभी ।
जिन सिद्ध जो ध्याये सदा ही, शील पाते हैं सभी ॥

१. द्रव्य २. प्रकाशित होना

SarvatoPooja 17 / 324

ॐ ह्रीं क्षायिकदर्शनगुणसहितायानन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

विधि अन्तराय की पाँच प्रकृति, क्षीण करि जिनदेव ने ।
पाया सु वीर्य अनंत तब, सक्षम बने स्वयमेव में ॥
वीरज अनंता सिद्ध सम हम, पा सकें जिन पूज कर ।
पाय क्षयोपशम विघ्न नाशूँ, नाथ को निज चित्त धर ॥

ॐ ह्रीं क्षायिकवीर्यगुणसहितायानन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

सब द्रव्य इष्टानिष्ट दायक, वेदनी विख्यात है ।
साता असाता रूप भविजन, भोगता दिनरात है ॥
विधि वेदनी को नाश अव्याबाध गुण शिव पा लिया ।
शाश्वत निराकुल सहज आविर्भूत गुण जिन भा लिया ॥

ॐ ह्रीं अव्याबाधगुणसहितायानन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

तिर्यंच नर सुर नरक आयु, जीव को तन रोकते ।
गुण पा लिया अवगाहनत्वा, नाश आयु सु योगते ॥
संसार कारा सम ये आयु, दुःख की ही मूल है ।
जिनअर्चना कर शिव लहूँ अवगाह गुण अनुकूल है ॥

ॐ ह्रीं अवगाहनत्वगुणसहितायानन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

ज्यों चित्रकार सु चित्र करता, नेक विधि संसार में ।
त्यों नाम विधि को भाषते श्री, जैन मुनि श्रुतसार[1] में ॥
है तीन ऊपर प्रकृति नब्बे, नाश गुण सूक्षम लहा ।
श्री सिद्धगुणगण अर्चना कर, पा सकूँ निजगुण महा ॥

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वगुणसहितायानन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

है गोत्र कर्म कुलाल सम कुल, नीच ऊँच सु देत है ।
दुर्धर तपस्या कर विनाशा गोत्र फिर शिव लेत है ॥

१. शास्त्र

निज शुभ अगुरुलघु गुण सु पाने, सिद्ध गुण मैं ध्यावता ।
अगुरूलघु गुण पाने नित ही, भावना नित भावता ।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वगुणसहितायानन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।8।।

अडिल्ल छंद

ढाइ द्वीप में भरत क्षेत्र पन जानिए,
शुक्ल ध्यान से कर्म नशें सच मानिए ।
अशरीरी सिद्धों को सदा प्रणाम हो,
तव बस्ती ही मेरा शाश्वत धाम हो ।।

ॐ ह्रीं अढाईद्वीपसम्बन्धिपञ्चभरतक्षेत्रेभ्यो मोक्षगतसर्वसिद्धेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।9।।

ऐरावत है पाँच सुमानुष लोक में ।
कर्म नाश कर पहुँचे जिन शिवलोक में ।। अशरीरी॰

ॐ ह्रीं अढाईद्वीपसम्बन्धिपञ्चैरावतक्षेत्रेभ्यो मोक्षगतसर्वसिद्धेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।10।।

पन विदेह शुभ कर्म भूमि नित ही कही ।
कर्म नाश वैदेही पहुँचे शिव मही ।। अशरीरी॰

ॐ ह्रीं अढाईद्वीपसम्बन्धिपञ्चविदेहक्षेत्रेभ्यो मोक्षगतसर्वसिद्धेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।11।।

उत्तम भोग भूमि दस निश्चित जानते ।
हुए वहाँ से भी शिव ऐसा मानते ।। अशरीरी॰

ॐ ह्रीं अढाईद्वीपसम्बन्धिदशोत्तमभोगभूमिभ्यो मोक्षगतसर्वसिद्धेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।12।।

मध्यम भोग भूमि दस ही परमानतें ।
आत्मगुणों को पाया है उस स्थान से ।। अशरीरी॰

ॐ ह्रीं अढाईद्वीपसम्बन्धिदशमध्यमभोगभूमिभ्यो मोक्षगतसर्वसिद्धेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।13।।

दस जघन्य है भोग मही नरलोक में ।
विधि तम हारे शुक्ल ध्यान आलोक में ।। अशरीरी॰

SarvatoPooja 17 / 325

ॐ ह्रीं अढाईद्वीपसम्बन्धिजघन्यभोगभूमिभ्यो मोक्षगतसर्वसिद्धेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।14।।

कूप नदी वापी सर सागर झील से,
कर्म हने जिन युक्त हुए निज शील से ।।
अशरीरी सिद्धों को सदा प्रणाम हो,
तव बस्ती ही मेरा शाश्वत धाम हो ।।

ॐ ह्रीं लवणसागरादिजलस्थानेभ्यो मोक्षगतसर्वसिद्धेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।15।।

कृत्रिम अकृत्रिम कूट पर्वत आदि से ।
कर्म बंध तोड़े थे संग अनादि से ।। अशरीरी॰

ॐ ह्रीं मेर्वादिकृत्रिमाकृत्रिमपर्वतेभ्यो मोक्षगतसर्वसिद्धेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।16।।

पूर्णार्घ्य

श्री नंदि छंद

नित्य निरंजन अचल अनघ सुखधाम,
शिव निष्कर्म नमन हो आतम राम ।
चरिम देह से न्यून सु आत्मप्रदेश,
शिव पूजूँ अब चलूँ निजातम देश ।।

ॐ ह्रीं अष्टगुणसहितायाढाईद्वीपसागरेभ्यो मोक्षगतसर्वसिद्धेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शान्तये शान्तिधारा । दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री अनन्तानन्तसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नमः ।
(9, 27 या 108 बार)

जयमाला

घत्ता

जय देव अनंता, लोक महंता, करि विधि हंता, सिद्ध भए ।
भवि तुमको ध्याके, पूज रचाके, गुणगण गाके, पूज्य भए ।

अशोकपुष्प मञ्जरी छंद

सिद्ध देव वंदनीय सिद्ध क्षेत्र वास होय,
लोक अग्रवासि सिद्ध देव को प्रणाम हो ।
नंत नंत राजते सु एक में अनेक होय,
दिव्य ज्योतिवान सिद्ध नंत को प्रणाम हो ।।

आठ कर्म नाश कीन शाश्वता स्वभाव युक्त,
नित्य आत्मलीन सुप्रणाम हो, प्रणाम हो, ।
आठवीं मही कही सु रूप्य आभवान हो,
श्री शिलासु सिद्ध को प्रणाम हो प्रणाम हो ।।

दक्षिणा उदीचि सात रज्जु सु प्रमाणि येह,
आठ योजनों हि मोटि ये शिला महान है ।
एक रज्जु व्यास युक्त शुभ्र श्वेत कांतिवान,
आकृति शिला कि मान अर्द्धचंद्रवान है ।।

होय मुक्त जीव नंतकाल के लिये यहाँ हि,
एक सिद्ध में अनंत सिद्ध विद्यमान हैं ।
आत्म पुण्य कोष पाय कर्म सर्व ही नशाय,
सिद्ध देव नित्य ही अनंत सौख्यवान हैं ।।

स्पर्श रूप गंध हीन पाप पुण्य से विहीन,
सिद्ध है घनत्व रूप शुद्ध रूपवान हैं ।
राग द्वेष मोह सर्व दोष आदि से विहीन,
शुद्ध बुद्ध विश्वनाथ पूर्ण ज्ञानवान हैं ।।

बंध निर्जरा व आस्त्रवादि से विहीन होय,
सर्व ही विकारहीन ये स्वभाववान हैं ।
रत्न तीन को लिए सु शुक्ल ध्यान अस्त्र से,
कर्म नाश पाय सु अनंत सौख्य धाम हैं ।।

न्यून अंत देह से निरंजना अजन्म ब्रह्म,
स्तुत्य आतमा विशुद्ध तीन रत्न मंडिता ।

SarvatoPooja 17 / 326

धर्म अस्तिकाय के अभाव में सु लोक अग्र,
जा विराजते अनंत ज्ञानयुक्त पंडिता ।।

कार्य कोई शेष नाहि आतमा निमग्न नित्य,
वीर्य ज्ञान दर्श नंत युक्त ये अखंडिता ।
ढाई द्वीप सागरों व काल लिंग आदि भेद,
भूत भावि वर्तमान सिद्ध नित्य वंदिता ।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थसिद्धशिलोपरि विराजमानानन्तानन्तसिद्धेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ।।
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

बृहद् जयमाला

नरेन्द्र छंद

नमूँ नमूँ त्रैलोक्य विराजित, चैत्यालय जिन सारे ।
नमूँ नमूँ कृत्रिम व अकृत्रिम, जिनगृह जिनवर प्यारे ॥
काल अतीत अनागत संप्रति, संबंधी भी वंदूँ ।
भाव भक्ति युत चैत्य जिनालय, का वंदन कर नंदूँ ॥१॥

सातकोटि बाहत्तर लक्षा, अधोलोक में गाए ।
चउशत अट्ठावन चैत्यालय, मध्यलोक बतलाए ॥
लख चौरासी सहस अठानव तेइस ऊरध लोके ।
शाश्वत नादि निधन जिनालय, भव्य सदा अवलोके ॥२॥

नौ सौ पच्चिस कोटि तरेपन, लाख अधिक बतलायी ।
सहस सताइस नवशत अड़तालिस प्रतिमा मन भायीं ॥
पाँच शतक धनु ऊँची सारी, रत्नमयी अति प्यारी ।
देख रही हों, बोल रही हों, यूँ लगती मनहारी ॥३॥

भद्रशाल नंदन वन नंदीश्वर विमानगत जाने ।
ये उत्कृष्ट जिनालय जिन आगम में खूब बखाने ॥
इष्वाकार मानुषोत्तर नग, कुंडल रुचक महीधर ।
कुल वक्षार गिरी सौमनसा, के मध्यम गृह जिनवर ॥४॥

पांडुक वन में कहे जघन्या, श्री जिनवर शुभ भवना ।
विजयारध जम्ब्वादि वृक्ष पर, एक कोस के सदना ॥
भवनवासि व्यंतर देवों के, विविध-विविध कहलाए ।
उन सब शाश्वत जिनभवनों जिनवर को शीश झुकाएँ ॥५॥

उत्तम मध्यम और जघन्या चैत्यालय भी जानो ।
सौ पचास पच्चीस सुयोजन लम्बाई पहचानो ॥
इसके आधे चौड़े रहते, फिर कहते ऊँचाई ।
लम्बाई अरु व्यास जोड़कर, आधा कर दो भाई ॥६॥

SarvatoPooja 17 / 327

चउ गोपुर द्वारों युत मणिमय, तीन कोट से वेष्टित ।
जिनभवनों की दिव्य सुआभा, पर सुर जन सब मोहित ॥
चारों दिश में चार वीथि मधि, मानस्तंभ विराजित ।
रत्न खचित जिन प्रतिमा उपचित, नव नव स्तूप सु साजित ॥७॥

कोट अंतरालों में रहती, तीन भूमियाँ शोभित ।
बाह्य प्रथम अंतर में करती, वन भूमी मन मोहित ॥
सप्तच्छद अशोक चंपक अरु, आम्र चार वन रहते ।
दसविध सुरतरु स्वर्ण फूलयुत, मरकत मणिमय पत्ते ॥८॥

वैडूर्यमणीमय फल प्यारे, मूंगामय शुभ डाली ।
चउ वन मध्ये तीन पीठ पर, चैत्यवृक्ष सुखकारी ॥
चैत्यवृक्ष के चारों दिश में, श्री जिनराज विराजें ।
नमन करुँ सब जिनराजों को, मम निर्मल कर साजें ॥९॥

दूजे अंतर में ध्वज भूमी, जहँ शुभ ध्वज लहरायें ।
ऊँचे योजन सोल कोस इक, चौड़ाई कहलाए ॥
ऐसे कनकमयी स्तंभों पर, दस चिह्नों युत रहतीं ।
प्रति शत वसु महाकेतु साथ में, शत वसु सबके होतीं ॥१०॥

तृतीय कोट सु मध्य सुशोभित, चैत्यभूमि सुखकारी ।
करें वंदना भव्य भाव युत, जिनपूजा अघहारी ॥
बारह वेदी युक्त कांतिमय, स्वर्ण पीठ पर शोभित ।
मणिमय तीन कोट वेष्टित तरु, जिन पर सब मन मोहित ॥११॥

चार योजन लंबे स्कंध युत, इक योजन चौड़ाई ।
सिद्धारथ अरु चैत्यवृक्ष में, पृथ्वीकायिक भाई ॥
बारह योजन दीर्घ चतुर्दिश, चउ शाखा कहलाए ।
हैं अनेक छोटी शाखा भी, मरकत मणिमय भाए ॥१२॥

चार दिशा में वृक्ष मूल में, चउ जिनप्रतिमा वंदूँ ।
अर्हत् सिद्ध जजूँ मैं निशदिन, अर्चन कर आनंदूँ ॥

इक लख चालिस सहस्र एक सौ, बीस कहे परिवारा ।
इन तरुओं पर चैत्य विराजित, उनको नमन हमारा ।।१३।।

फिर अस्थान सु प्रेक्षण मंडप, मुख मंडप मनहारी ।
पूर्व मुखी जिनमंदिर मध्ये, महाद्वार सुखकारी ।।
दक्षिण उत्तर पार्श्वभाग में, दो लघु द्वार कहाए ।
शाश्वत जिनमंदिर की महिमा, सच वरणी ना जाए ।।१४।।

चौबिस सहस धूप घट अरु [१]वसु, सहस मणीमय माला ।
इन्हीं मधि हैरण्यमयी है, चौबिस सहस सु माला ।।
महाद्वार के बाह्य भाग में, मालाएँ मन भाएँ ।
चौबिस सहस धूप घट अंतः, पार्श्व भाग में पाएँ ।।१५।।

बत्तिस सहस्र स्वर्ण रजत के, कलशों से अति सज्जित ।
मंदिर मध्ये देख सुवैभव, कोटि अर्क द्युति लज्जित ।।
इक शत आठ गर्भ गृह भारी, स्वर्ण रत्नमय न्यारे ।
प्रति में पाँच शतक धनु ऊँचे, हैं जिनदेव हमारे ।।१६।।

सिंहासन पर रहे विराजित, नील केश छवि वाले ।
मूंगा से शुभ लाल अधर हैं, जिनवर बड़े निराले ।।
अति नवीन कोंपल से दिखते, हाथ पैर अनियारे ।
दशक ताल की प्रतिमा सारी, श्री जिन सबसे प्यारे ।।१७।।

नागकुमार यक्ष के बत्तिस, युगल चमर शुभ ढोरें ।
पार्श्वभाग में श्री देवी श्रुत, देवी प्रतिमा मोहे ।।
अरु सर्वाह्न यक्ष की मूरत, सानत्कुँवर[२] कि प्रतिमा ।
प्रति मंगल द्रव आठ एक सौ, मनु कहते जिन महिमा ।।१८।।

ढाइ द्वीप में कर्म भूमियाँ पंद्रह ही कहलायीं ।
पाँच भरत अरु पाँच इरावत में होती वरदायी ।।
दुखमा सुखमा काल सु होते, धर्म प्रवर्तक ईश्वर ।
भूत भावि अरु वर्तमान के, चौबीसों तीर्थेश्वर ।।१९।।

१. आठ २. सानत्कुमार

SarvatoPooja 17 / 328

यूँ त्रिंशति चौबीसी को मैं, नित नित वंदन करता ।
विदेह क्षेत्र सु विद्यमान जिन, का अभिनंदन करता ।।
ढाइ द्वीप के सब अरिहंतों, का मैं अर्चन करता ।
सिद्ध क्षेत्र में नित्य विराजित, शिव का पूजन करता ।।२०।।

मनुज लोक में सूरी पाठक और साधु वैरागी ।
उन सबको नित नित नमता हूँ, उन पद का अनुरागी ।।
तीन लोक में शाश्वत वृष जिन, उनको नित नित ध्याऊँ ।
श्री सर्वज्ञ प्रभू की वाणी, जिन आगम में गाऊँ ।।२१।।

कृत्रिम व अकृत्रिम जिनबिंबों, को नित हृदय बसाऊँ ।
तीन लोक के जिनभवनों को, नित नित शीश झुकाऊँ ।।
निर्मल निज परिणाम बनाकर, जिनवर नित आराधूँ ।
पुण्य उदय से अवसर पाकर, धर्म साधना साधूँ ।।२२।।

मैं भी निकट भव्य प्राणी हूँ, ऐसा मम मन भासे ।
अर्हत् सिद्ध दशा शुभ मेरी, अचिर काल परकाशे ।।
ज्यों सछिद्र अंजुलि में जल नहि, सुचिर काल तक रहता ।
त्यों जिनभक्त सु पुण्य पुरुष का, अघ गल गल कर बहता ।।२३।।

वसु[१]नरभव वा वसु[२]अवसर, ये वसू[३] पुण्य से पाया ।
वसुभूमी[४]वासी वसुओं[५] को वसुक्षेत्र[६] पर ध्याया ।।
जिन भक्ति से ज्ञान वसु[७] सु आत्म वसु[८] पा जाऊँ ।
भक्ति वसू[९] से वसु भू पहुँचूँ, **'वसुनंदी'**[१०] हो जाऊँ ।।२४।।

दोहा

अशुभ विनाशक शुभ लहूँ, शुद्ध योग शुभ काज ।
सर्वतोभद्र पूज कर, धन्य हुए हम आज ।।

१. बहुमूल्य २. अच्छा ३. सर्वोत्तम ४. अष्टमभूमिसिद्धशिला ५. सिद्धों ६. सिद्धक्षेत्र ७. सूर्य (केवलज्ञानरूपी सूर्य) ८. वैभव ९. रस्सी १०. आठ गुणों में आनंद युक्त

ॐ ह्रीं त्रिलोकसम्बन्धिसर्वार्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हरिगीतिका छंद

निज आत्म वैभव प्राप्त करने, जिन सदन अर्चन करें ।
आसन्न भविजन स्वयं जजकर, मुक्तिवामा को वरें ॥
सौभाग्य से अब मनुजकुल जिनदेव शरणा हम गही ।
वसुगुण प्रकाशें कर्म नाशें, लहें शिवपुर की मही ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

SarvatoPooja 17 / 329

प्रशस्ति

चउबोला छंद

नादिनिधन इस जिनशासन में, नंत केवली संत हुए ।
धर्म प्रवर्तक तीर्थंकर जिन, भरतादिक में नित्य हुए ।
जंबूद्वीप सु भरत क्षेत्र में, आर्यखण्ड अति प्यारा है ।
संप्रति युग में वृषभ आदि ने, जैनधर्म उच्चारा है ॥१॥

अंतिम तीर्थंकर श्री जिनवर, वर्धमान शासन स्वामी ।
अति निर्मल अक्षुण्ण प्रवाहा, गणधर आदि मुनी ज्ञानी ॥
वृषभसेन आदिक गणधर से, श्रुतकेवलि वृष प्राप्त किया ।
नंतर अंग पूर्वधर ज्ञाता, जिन शासन को थाम लिया ॥२॥

भद्रबाहु धरसेन आदि श्री, कुन्दकुन्द आचार्य हुए ।
उसी अखंडित परंपरा में, शांतिसिंधु आचार्य हुए ॥
गुणग्राहक गुरु पग अनुचारी, पायसिंधु ये तपधारी ।
उनकी वरद कृपा दृष्टी के, हुए जयकीर्ति अधिकारी ॥३॥

भारत गौरव सूरीश्वर श्री, आचार्यों में हुए महान् ।
सूरि देशभूषण मुनिवरजी, जैन धर्म कि उत्तम शान ॥
उनके पाद कमल शुभ सेवक, राष्ट्र संत विख्यात हुए ।
श्री सिद्धान्त चक्रवर्ति गुरु, आत्म सौख्य को प्राप्त हुए ॥४॥

सूरी विद्यानंद मुनीश्वर, नित विद्या आनंद लहें ।
क्षपक शिरोमणि युग संवाहक, ऐसा भक्त समाज कहे ॥
निज गुरुवर के चरण कमल युग, निज उर सदा बसाएँ हैं ।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित तप, बहुगुण गुरु से पाएँ हैं ॥५॥

इनकी वरद छत्रछाया चउ, युग तक पा जो हुए निहाल ।
श्रमण सूरि वसुनंदी निज गुरु, चरणों शीश नमें त्रिकाल ॥
परम पूज्य सूरी गुरुओं का, लहुँ परोक्षनि शुभ आशीष ।
श्री सर्वतोभद्र महपूजन, रचकर गुरु नवाऊँ शीश ॥६॥

अल्पबोधवश या प्रमाद से, विद्यमान त्रुटि हो कोई ।
क्षमाभाव राखें सब संयत, पात्र क्षमा का हूँ सोई ॥
साढ़े तीन कोटि मुनिवर ने, मुक्ति पुर में किया प्रयाण ।
तारंगा शुभ सिद्ध क्षेत्र है, जहँ विराजित श्री भगवान ॥७॥

क्षेत्र तलहटी में तपवन है, विद्यासिंधु सुखद सुनाम ।
पच्चिस सौ अड़तालिस संवत्, वीराब्दे भविक गुणधाम ॥
वर्षायोग सुपावन अवसर, एक पक्ष में हि परिपूर्ण ।
जिन अर्चन कर मैं भी पाऊँ, सिद्धोंवत् हि गुण संपूर्ण ॥८॥

दोहा

भाद्र पूर्णिमा शुरु किया, 'सर्वत भद्र' विधान ।
जन्म वर्ध तिथि पर हुआ, पूर्ण अहो गुणखान ॥९॥

SarvatoPooja 17 / 330

आरती

चाल - भक्ति अपरंपार है...

सर्वतोभद्र महान् की, अमित सौख्य गुण खान की,
चलो उतारें आज आरती, सर्व पूज्य भगवान् की ।
अधो लोक के सुरभवनों में श्री जिनराज विराजे हैं,
मानथंभ अरु चैत्यालय युत, रत्नमयी शुभ साजे हैं,
वीतराग भगवान की, प्रातिहार्य युत थान की,
चलो उतारें...

मध्यलोक में ढाई द्वीप अरु, नंदीश्वर शुभ द्वीप कहा,
कुण्डल रुचक गिरी मानुष पर, चैत्यालय हैं सुखद अहा,
जिनभक्ति रसपान की, गुण चैतन्य निधान की,
चलो उतारें...

ऊर्ध्वलोक के सुर विमान में, चैत्य जिनालय शोभित हैं,
वीतरागता के अभिलाषी, सुरगण का मन मोहित है,
शुद्धातम श्रद्धान की, निर्मल क्षायिक ज्ञान की,
चलो उतारें...

अर्हत् सिद्ध सूरी सब पाठक, साधु लोक मंगलकारी,
भविजन के दुख हर्ता निश्चित, स्वर्ग मोक्ष के दातारी,
धर्ममूर्ति भगवान् की, चिन्मय शुभ गुणवान की,
चलो उतारें...

कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, तीन लोक के मैं वंदूँ,
जिनवाणी जिनधर्म चित्तधर, वसुधाम नित नित वंदूँ,
जीव मात्र कल्याण की, तीनों लोक प्रधान की,
चलो उतारें...

समाप्त